भूतनाथ – २

देवकीनन्दन खत्री

उपन्यास

पृष्ठ ३३४

अनुक्रमणिका

१.	चौथा भाग	२
	अध्याय १	२
	अध्याय २	६
	अध्याय ३	१५
	अध्याय ४	१७
	अध्याय ५	२२
	अध्याय ६	२६
	अध्याय ७	३७
	अध्याय ८	४१
	अध्याय ९	४९
	अध्याय १०	५४
	अध्याय ११	५७
	अध्याय १२	६६
	अध्याय १३	६९
	अध्याय १४	८२
	अध्याय १५	९३
	अध्याय १६	९९

	अध्याय १७	१०२
२.	पाँचवा भाग	११७
	अध्याय १	११७
	अध्याय २	१२१
	अध्याय ३	१२७
	अध्याय ४	१३०
	अध्याय ५	१४३
	अध्याय ६	१४९
	अध्याय ७	१५६
	अध्याय ८	१६७
	अध्याय ९	१६९
	अध्याय १०	१७६
	अध्याय ११	१८८
	अध्याय १२	१९७
	अध्याय १३	२०४
	अध्याय १४	२१५
३	छठवाँ भाग	२२८
	अध्याय १	२२८

अध्याय २	२३५
अध्याय ३	२३९
अध्याय ४	२४३
अध्याय ५	२४७
अध्याय ६	२५४
अध्याय ७	२७३
अध्याय ८	२८६
अध्याय ९	२९१
अध्याय १०	२९३
अध्याय ११	२९५
अध्याय १२	३००
अध्याय १३	३१५
अध्याय १४	३१७
अध्याय १५	३२५
अध्याय १६	३३२

खण्ड-दो

चौथा भाग

[१]

दारोगा के चले जाने के बाद थोड़ी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा, इसके बाद उन तीनों में इस तरह की बातचीत होने लगी:-
जमना : देखो बहिन, जमाने ने कैसा पलटा खाया है !

सरस्वती: बहिन, किस्मत ने तो बहुत दिनों से पलटा खाया हुआ है, यह कहो कि उतना दुःख देकर भी विधाता को चैन न पड़ा और अब वह अपनी निर्दय आँखों के सामने एकदम से ही हम लोगों का निपटारा किया चाहता है. दुनिया में लोग किस तरह कहा करते हैं कि धर्म की सदा जय रहती है ?
जमना : हाय, अब मैं क्या करूं ? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता. (इन्दुमति से) बहिन, तुम चुप क्यों हो ? तुम ही कुछ बताओ कि अब क्या किया जाय ? इस कैदखाने से छुटकारा मिलना तो बड़ा कठिन जान पड़ता है.

इन्दु० : बहिन, मैं क्या कहूँ ? मेरी किस्मत तो बिल्कुल ही फूटी हुई है, मैं इस योग्य कहाँ हूँ कि कुछ राय दूँ !
जमना : नहीं बहिन, तुम्हारी किस्मत फूटी हुई नहीं थी बल्कि मेरे साथ आ रहने ही से तुम्हारी भी किस्मत फूट गई, बदकिस्मतों के साथ रहने वाला भी कुछ दिन में बदकिस्मत हो जाता है, मेरी ही संगत ने तुम्हें भी बर्बाद कर दिया. आह, हम दोनों बहिनें वास्तव में.....
सरस्वती: अब इन सब बातों के सोचने-विचारने का यह समय नहीं है, इस समय अपना कर्तव्य सोचना और बहुत जल्द निश्चय करना चाहिये कि जब थोड़ी देर में दारोगा आवेगा तो उसे क्या जवाब दिया जाएगा.

हाय, हम लोगों की नादानी और जल्दबाजी ही के सबब से यह बुरा दिन देखना नसीब हुआ, नहीं तो बड़े मजे से उस घाटी के अन्दर हम लोग पड़े हुए थे. अगर थोड़े दिन और प्रकट न होते तो अच्छा था, शीघ्रता से उछल पड़े, यही बुरा हुआ.
जमना : (ऊँची साँस लेकर) खैर जो हुआ सो हुआ.

सरस्वती: मेरी राय में तो अब दारोगा की बात मान ही लेनी चाहिए.
जमना : वह जरूर कहेगा कि तुम एक चिट्ठी लिख दो कि भूतनाथ बेकसूर है इत्यादि इत्यादि.
सरस्वती: बेशक ऐसा लिखने के लिए कहेगा, परन्तु यह बताओ कि इस कैद में पड़े सड़ने से ही लाभ क्या है ? हाँ कुछ उम्मीद हो तो कहो.

जमना : उम्मीद तो कुछ भी नहीं है.
सरस्वती: बस फिर, जो कुछ दारोगा कहे सो लिख दो और भूतनाथ से सुलह करके बखेड़ा तै करो, अपने साथ क्यों बेचारी इन्दुमति और प्रभाकरसिंहजी को जहन्नुम में मिला रही हो ?
जमना : और अगर उसकी इच्छानुसार लिख देने पर भी वह बदल जाय अर्थात् अपना काम पूरा करके हम लोगों को मार डाले तब ?

सर: तब क्या ? जो होगा सो होगा, उसकी बात न मानने से तो निश्चित है कि वह हम लोगों को कभी जीता न छोड़ेगा, और लिख देने पर आशा होती है कि शायद वह अपने कौल का सच्चा निकले और हम लोगों पर रहम करे !
जमना : हाँ, सो हो सकता है. (कुछ गहरी चिन्ता करके) अच्छा निश्चय हो गया कि ऐसा ही किया जायगा अर्थात् जो कुछ दारोगा कहेगा उसे मंजूर कर लेंगे. कुछ देर तक जमना और सरस्वती में इसी तरह की और भी बातें होती रहीं, इसके बाद समय पूरा हो जाने पर कैदखाने का दरवाजा खुला और तिलिस्मी दारोगा किवाड़ बन्द करता हुआ आकर उन तीनों के सामने खड़ा हो गया.

दारोगा: कहो क्या निश्चय किया ?
जमना : हम लोगों को क्या निश्चय करना है, जो कुछ कहोगे करने के लिए तैयार हैं.

दारोगा: शाबाश, यही बुद्धिमानी है, अच्छा तो तुम अपने हाथ से एक चीठी भूतनाथ के नाम की लिख दो जिसमें यह मजमून होना चाहिए—"मेरे प्यारे गदाधरसिंह, बड़े अफसोस की बात है कि तुम अभी तक हमारे पति के घातक का पता लगा कर वादा पूरा न कर सके. मुझे पता लग चुका है कि दलीपशाह मेरे पति का घातक है, इसके लिए मुझे कई सबूत मिल चुके हैं. अब तुम शीघ्र मेरे पास आओ तो मैं वह सबूत तुम्हें दिखाऊँ. आशा है कि उसके सहारे तुम जल्द असली बात का पता लगा लोगे."

बस इसी मजमून का पत्र लिख दो और तुम दोनों बहिन उस पर अपना हस्ताक्षर भी कर दो, कलम-दवात और कागज मैं अपने साथ लेता आया हूँ.

जमना : (कुछ बिगड़ कर) वाह वाह, क्या खूब ! तुम तो ऐसी बात लिखाना चाहते हो जिससे कि मैं जीती रह कर भी किसी के आगे मुँह न दिखा सकूँ. इससे तो साफ जाहिर होता है कि ये बातें लिखाने के बाद तुम हम लोगों को मार डालोगे. बेशक ऐसी ही बात है. दलीपशाह बेचारे ने मेरा क्या बिगाड़ा है जो मैं उसे इस तरह हलाल करूँ ?

दारोगा: ऐसा लिखने में तुम्हारा कोई भी नुकसान नहीं है, और बिना इस तरह पर लिखे तुम्हें छुटकारा भी नहीं मिल सकता.
जमना : चाहे जो हो, मगर मैं दलीपशाह के बारे में कदापि ऐसा न लिखूँगी, वह बेचारा बिल्कुल निर्दोष है.

दारोगा: देखो नादानी मत करो और मुफ्त में अपने साथ इन्दुमति और प्रभाकरसिंह की भी जान मत लो.
जमना : अब जो कुछ किस्मत में लिखा है सो होगा मगर मैं ऐसा अन्धेर नहीं कर सकती.

दारोगा: खैर जब तुम्हें यही धुन समाई हुई है तो देखो तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया जाता है ! अच्छा मैं जाता हूँ, थोड़ी देर में बन्दोबस्त करके पुनः आऊँगा.

इतना कह कर दारोगा वहाँ से चला गया और आधे घण्टे के बाद पुनः लौट आया, अबकी दफे और भी दो आदमी उसके साथ थे जिनके चेहरों पर स्याह नकाब और हाथ में नंगी तलवारें थीं.

दारोगा ने पुनः उसी सुरंग का दरवाजा खोला जिसमें जमना, सरस्वती और इन्दुमति को प्रभाकरसिंह के कैद की अवस्था दिखाने के लिए ले गया था, इसके बाद दोनों नकाबपोशों से कुछ कहा जिसके सुनते ही वे जमना, सरस्वती और इन्दुमति के पास चले गये और उन तीनों को खम्भे से खोल उसी सुरंग में ले गये.

वह खिड़की खोल दी गई थी जिसमें से पहिले दफे उन तीनों ने झांक कर प्रभाकरसिंह को देखा था. दारोगा की आज्ञानुसार दोनों नकाबपोशों ने जमना, सरस्वती और इन्दुमति को उस खिड़की के पास खड़ा कर दिया और स्वयं नंगी तलवार लिए उनके पीछे खड़े हो गये.

उस समय दारोगा ने पुनः उन तीनों से कहा, "एक दफे फिर नीचे की तरफ झाँक कर अपने प्रभाकरसिंह की दुर्दशा देखो. मैं उनके पास जाता हूँ और तुम्हारे देखते-ही-देखते उनका काम तमाम करता हूँ।"

इतना कह दारोगा वहाँ से चला गया और ये तीनों बड़ी ही बेचैनी के साथ नीचे की तरफ देखने और रक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगीं.

हथकड़ी-बेड़ी से मजबूर और पेड़ के साथ बंधे हुए प्रभाकरसिंह सिर झुकाए जमीन की तरफ देख रहे थे जिस समय हाथ में नंगी तलवार लिए दारोगा उनके पास पहुँचा.

[२]

जमना, सरस्वती और इन्दुमति डबडबाई हुई आँखों से झाँकती हुई देख रही थीं कि प्रभाकरसिंह हथकड़ी-बेड़ी से मजबूर पेड़ के साथ बंधे हुए हैं और दारोगा नंगी तलवार लिए उनके सामने खड़ा है. अब दारोगा और प्रभाकरसिंह में कुछ बातें होने लगीं जो कि उन दोनों की आकृति और हाव-भाव से मालूम होता था मगर दूर होने के कारण उनके शब्द जमना, सरस्वती और इन्दुमति को सुनाई नहीं देते थे, फिर कुछ देर बाद मालूम हुआ कि दारोगा उन्हें किसी काम के लिए मजबूर किया चाहता है मगर प्रभाकरसिंह लापरवाही के साथ इनकार कर रहे हैं और दारोगा की धमकियों तथा क्रोध में आकर उसके दांत पीसने पर कुछ भी खयाल नहीं करते.

इसी समय इन्दुमति की निगाह एक मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ के नीचे पड़ी जो बहुत ही बड़ा और छतनार था, तथा ऊपर मालती की लता चढ़े रहने के कारण जिसकी अवस्था घने कुँज की-सी हो रही थी. वह पेड़ वहाँ से थोड़ी दूर पर था जहाँ दारोगा खड़ा प्रभाकरसिंह से बातें कर रहा था.

इन्दु ने देखा कि उस कुँज के अन्दर से एक नकाबपोश झाँक कर दारोगा और प्रभाकरसिंह की तरफ देख रहा है. इन्दु ने जमुना और सरस्वती को भी उसी तरफ देखने का इशारा किया और वे भी बड़े गौर से उस नकाबपोश की तरफ देखने लगीं जिसका बदन धीरे-धीरे पत्तों के झुरमुट में से बाहर निकलता आ रहा था, यहाँ तक कि अब उसका आधा बदन और दाहिना हाथ जिसमें नंगी तलवार थी, नजरों के सामने आ चुका था.

मौत के पंजे में फँसे हुए बेचारे प्रभाकरसिंह की अवस्था की तरफ से ध्यान हटा कर उस नकाबपोश की तरफ देखने का कारण है, इन्दुमति को और साथ ही उसके जमना, सरस्वती को भी विश्वास हो गया कि यह नकाबपोश जो पत्तों की आड़ में से ताक-झाँक कर रहा है जरूर दारोगा का दुश्मन है और प्रभाकरसिंह की मदद के लिए आया है.

वास्तव में बात भी ऐसी ही थी. जिस समय अपनी बात न मानने के कारण झुँझला कर दारोगा ने प्रभाकरसिंह को मारने के लिए तलवार वाला हाथ उठाया उसी समय वह नकाबपोश जो दूर न था दारोगा पर झपट पड़ा और उसके पीछे पहुँच कर उसने दारोगा का तलवार वाला उठा हुआ हाथ पकड़ लिया. दारोगा ने घबड़ा कर पीछे की तरफ देखा मगर चेहरे पर नकाब पड़े रहने के कारण इसे पहिचान न सका. झटका देकर हाथ छुड़ाना और घूम जाना चाहा मगर ऐसा भी न कर सका. मालूम होता था कि किसी फौलादी पंजे ने उसकी कलाई पकड़ ली है. कुछ देर तक दोनों की हालत एक तस्वीर की-सी बनी रही और इसके बाद नकाबपोश ने डपट कर दारोगा से कहा, "क्यों बे कम्बख्त बेईमान, यहाँ के सीधे-सादे राजा ने क्या इसीलिए तुझे इतना अधिकार दे रक्खा है कि तू अपने स्वार्थ के लिए अन्धा होकर उनके रिश्तेदारों पर और गरीबों पर हद दर्जे का जुल्म करे और उनकी जान तक ले लेना खिलवाड़ समझे ?

अफसोस, उस बेचारे सीधे राजा को तेरी करतूतों की कुछ भी खबर नहीं है ! वह तेरी खुशामद से अन्धा हो रहा है और नहीं जानता कि एक दिन तू इसी तरह उसके ऊपर भी बेईमानी और नमकहरामी का हाथ साफ करेगा, बल्कि यों कहना चाहिए कि एक दिन तू उसे और उसके खानदान को मिट्टी में मिला देगा और स्वयं राजा बन बैठेगा. (कुछ रुक कर और दारोगा की तरफ कड़ी निगाह से घूर कर) नहीं-नहीं, मैं तुझे ऐसा न करने दूँगा. (दारोगा का हाथ झटक कर और उसे एक लात मार कर) तुफ़ है तेरी औकात पर, निस्सन्देह तेरी पैदाइश में फर्क है और अवश्य तू हरामी का पिल्ला है."

इस आदमी के चेहरे पर यद्यपि नकाब पड़ी हुई थी मगर सिर्फ आवाज ही सुन कर दारोगा ने इसे पहिचान लिया और डर तथा ताज्जुब की निगाहों से इसको देखने लगा. उधर खिड़की से झाँकती हुई जमना, सरस्वती और इन्दुमति ने भी पहिचान लिया कि यही बहादुर हमारा तिलिस्मी मददगार नारायण है.
नारायण की डपट और बातों ने दारोगा का कलेजा हिला दिया. डर के मारे उसका दिल बेतरह उछलने लगा क्योंकि उसके खयाल से नारायण ने नहीं बल्कि यमराज ने अपने पंजे में उसे दबा लिया था, उसमें उतनी ताकत न रह गई थी कि नायारण की बातों का जवाब देता या उसका मुकाबला करता और अगर ताकत होती भी तो उसके हाथ नारायण से मुकाबला करने के लिए तैयार न होते.

यहाँ पर हम अपने पाठकों को इस नारायण का कुछ परिचय दे देना उचित समझते हैं.
हमारे पाठक जमानिया के राजा गोपालसिंह को बखूबी जानते हैं तथा इन्दिरा के बयान में उनके पिता राजा गिरधरसिंह का भी कुछ जिक्र सुन चुके हैं. इस समय वही राजा गिरधरसिंह जमानिया का राज्य कर रहे हैं और यह कम्बख्त तिलिस्मी दारोगा उन्हीं का प्यारा मुसाहब है, तथा यह नकाबपोश जिसे हम नारायण के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं राजा गिरधरसिंह के छोटे भाई शंकरसिंह हैं.

राजा गिरधरसिंह बिल्कुल ही सीधे-सादे और सरल स्वभाव के आदमी हैं. छल-प्रपंच को यह लेश मात्र भी नहीं जानते तथा राज-काज के मामलों और बारीकियों को भी वे अच्छी तरह नहीं समझ सकते, परन्तु उनके छोटे भाई शंकरसिंह बड़े बुद्धिमान, तेज, समझदार और बहादुर आदमी हैं. हिम्मत, उत्साह और जवांमर्दी इनके रग-रग में भरी हुई है तथा दुष्टों को सजा देने और सज्जनों को प्रसन्न करने में भी वैसे ही दत्तचित्त रहते हैं जैसाकि राजा लोगों का धर्म है.

उनकी रिआया का कथन है कि यदि शंकरसिंहजी हमारे जमानिया के राजा हुए होते तो बहुत ही अच्छा था परन्तु नियमानुसार बड़े भाई होने के कारण गिरधरसिंहजी ही जमानिया के राजा हुए और वहाँ की प्रजा बल्कि स्वयं राजा गिरधरसिंह की इच्छा होने पर भी शंकरसिंह ने धर्म-विरुद्ध कार्य करना और बड़े भाई के रहते राजा बनना स्वीकार नहीं किया. फिर भी राजा हो जाने पर भी गिरधरसिंह अपने छोटे भाई शंकरसिंह की इज्जत करते हैं और एक तौर पर इनसे दबते ही रहते हैं तथा तिलिस्मी मामलों में भी ज्यादा जानकारी शंकरसिंह ही को है.

यह तिलिस्मी दारोगा जिसका असल नाम यदुनाथ शर्मा था इस राज्य के गुरु तथा पुरोहित खानदान का लड़का अर्थात् इसके बुजुर्ग लोग राजा साहब के बुजुर्गों के गुरु और पुरोहित होते आये हैं और सदैव से इन लोगों को मुसाहिब की इज्जत मिलती आई है. आज भी उसी पुराने सम्बन्ध से राजा गिरधरसिंह इसे मानते और इसकी इज्जत करते हैं.
मगर इस दारोगा के बुजुर्ग लोग चाहे जैसे भी नेक और ईमानदार होते आये हों फिर भी यह बड़ी ही दुष्ट प्रकृति का आदमी है.

लालच, बेईमानी, नमकहरामी, बदमाशी, ऐयाशी और दगाबाजी का तो इसे पुतला ही समझना चाहिये, मगर वह अपने भेद और भाव को ऐसा छिपाये और बनाये रहता है कि किसी को इसके ऊपर बदगुमान होने का जरा भी मौका नहीं मिलता. अपनी चापलूसियों से यह राजा गिरधरसिंह को अपना आशिक बनाये हुए था मगर शंकरसिंह इस पर विश्वास नहीं करते और हमेशा इसके भेदों की खोज में लगे रहते हैं, और इसी तरह दारोगा भी इनसे हमेशा चौकन्ना बना रहता है. शंकरसिंह को किसी तरह इस बात का भी पता लग गया था कि दारोगा ने कोई गुप्त कमेटी[१] बनाई हुई है जिसके सभासद लोग इसी शहर के रहने वाले तथा इसी दरबार के बड़े-बड़े ओहदेदार लोग हैं, यद्यपि उसका ठीक-ठीक पता शंकरसिह को अभी तक मालूम नहीं हुआ था, तथापि उन्होंने अपने बड़े भाई राजा साहब से इसका जिक्र कर दिया था जिस पर उन्होंने यह कह कर बात टाल दी थी कि यह खबर बेबुनियाद है, हमारा दारोगा ऐसा बेईमान नहीं है बल्कि जती और सती महात्मा आदमी है.

शंकरसिंह की तरह दारोगा भी इनसे चौकन्ना बना रहता और इनको अपना जानी दुश्मन समझता हुआ बराबर इस बात की धुन में लगा रहता था कि किसी तरह इन्हें इस दुनिया से उठा दिया जाय, मगर बात यह थी कि जमानिया के सभी आदमी बल्कि दारोगा वाली गुप्त कमेटी के मेम्बर लोग भी शंकरसिंह को दिल से प्यार करते थे और इसलिए बेईमान दारोगा की इच्छा पूरी नहीं होती थी.

अब हम अपने किस्से की तरफ झुकते हैं.
शंकरसिंह ने दारोगा को कई कदम पीछे हटा कर उसका हाथ छोड़ दिया और कहा, "दारोगा साहब, यह तो बताइए कि इन बेचारे प्रभाकरसिंह ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप इनकी जान लेने के लिए तैयार हो रहे हैं ?"

---

१. इस कमेटी का खुलासा हाल (इंदिरा के बयान में) चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है. इसलिए इस ग्रंथ में इसका जिक्र जरूरत के माफिक ही किया गया है ज्यादा नहीं.

दारोगा ने तलवार जमीन पर फेंक दी और हाथ जोड़ कर शंकरसिंह के सामने खड़ा होकर बोला, "यद्यपि आपके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है मगर मैं आपको पहिचान गया, मेरा दिल गवाही देता है कि आप मेरे मालिक भैयाराजा हैं.[१] अगर मेरा विचार ठीक है तो कृपा करके चेहरे पर से नकाब हटा दीजिए जिसमें मेरी दिलजमयी हो जाय और मैं जी खोल कर जो कुछ कहना है कहूँ, मेरी बातें सुनने के बाद मेरे विषय में फैसला करें."

शंकर: (नकाब उलट कर) लो मुझे अच्छी तरह पहिचान लो कि मैं कौन हूँ. मैं तुम्हारी सभी बातें सुनने के लिए भी तैयार हूँ मगर पहिले उस बात का जवाब दो जो मैं पूछ चुका हूँ अर्थात् प्रभाकरसिंह ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो उन्हें कत्ल किया चाहते थे ?

दारोगा: (हाथ जोड़े हुए) प्रभाकरसिंह ने तो मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा है मगर हमारे महाराज के साथ और इस राज्य के साथ उन्होंने बहुत बुरा बर्ताव किया है. आपको कदाचित् मालूम नहीं है कि जमानिया तिलिस्म के अन्दर घुस कर इन्होंने बहुत उपद्रव मचाया और बहुत कुछ नियम-विरुद्ध काम किया है, जिसकी सजा ही यह है कि ये कत्ल किये जायें. आप खूब जानते हैं कि तिलिस्मी नियम कैसे कड़े हैं.

शंकर: तिलिस्मी नियमों को जो मैं जानता हूँ वह तुम क्या तुम्हारे बाप भी नहीं जानते होंगे और प्रभाकरसिंह ने तिलिस्म के अन्दर जो कुछ खराबी की है उसे भी मैं खूब जानता हूँ. यह कोई भी नहीं कह सकता कि प्रभाकरसिंह किसी बदनीयती से या अपने किसी फायदे के लिए तिलिस्म के अन्दर आये हों. वास्तव में उन्हें तिलिस्म के अन्दर लाने वाला या लाने का कारण भूतनाथ ही है जो तुम्हारा दोस्त है और जिसकी प्रसन्नता के लिए इस समय तुम अनुचित से अनुचित कार्य करने के लिए तैयार हो गये हो.

---

१. शंकरसिंह को लोग भैयाराजा कहते थे.

अगर जमना, सरस्वती और इन्दुमति को भूतनाथ धोखा देकर तिलिस्म में फँसा न देता तो प्रभाकरसिंह भी कदापि तिलिस्म के अन्दर न आते. कहो इसके विपरीत कोई बात साबित करने के लिए तुम्हारे पास क्या मसाला है ?

दारोगा: आप बड़े हैं और मालिक हैं, मैं आपका गुलाम हूँ, अतएव मुझे उचित नहीं कि मैं आपसे बहस करूँ. मुझे इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि प्रभाकरसिंह इस तिलिस्म के अन्दर क्यों आए ? मुझे तो इस बात की खबर लगी कि प्रभाकरसिंह कई औरतों को साथ लेकर तिलिस्म के अन्दर विचर रहे हैं अस्तु मैंने अपने मालिक की भलाई सोच कर इन्हें गिरफ्तार कर लिया.....

शंकर: (बात काट कर) भला यह भी कोई समझाने की बात है ? तुम्हें इनके विषय में क्योंकर खबर लगी ? क्या तुम्हारे जासूस तिलिस्म के अन्दर घूमा करते हैं ? या तिलिस्म का कोई खास शैतान तुम्हें रोज-रोज की खबर सुना जाता है ? या खुद तुम नियमित रूप से रोज तिलिस्म के अन्दर घूम-घूम कर उसके दरोदीवार तथा पेड़-पत्तों की खबरदारी किया करते हो और ऐसा करने के लिए महाराज ने तुम्हें ताकीद की है ?

दारोगा: (कुछ लाजवाब-सा होकर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि आपसे बहस करने की मेरी नीयत नहीं है. और न ऐसा करना मेरे लिए उचित ही है.
शंकर: यह कोई बहस की बात नहीं है. मैं तो सिर्फ इतना तुमसे पूछता हूँ कि इनके विषय में तुम्हें किसने खबर दी और किसने कहा कि प्रभाकरसिंह तिलिस्म के अन्दर ऊधम मचा रहे हैं.

दारोगा: (कुछ घबड़ाना-सा होकर) जी ई...ई...ई...मुझे कुछ यों ही खुटका-सा हो गया, और मैं....
शंकर: (रोक कर) बस बस बस, खबरदार, झूठ बोलना तुम्हारे हक में अच्छा न होगा, तुम ठीक-ठीक जवाब देने के लिए तैयार हो जाओ ! (प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर) अच्छा कृपा कर आप ही कह जाइए कि इसके फन्दे में आप क्योंकर फँस गये ?

मगर प्रभाकरसिंह ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया जिस पर शंकरसिंह ने फिर पूछा, "आप मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देते ? (कुछ आगे बढ़ कर) आपका चुप रहना मुझे ताज्जुब में डालता है. (और आगे बढ़ कर और उनके चेहरे की तरफ गौर से देख कर) क्या आपके चुप रहने की कोई खास वजह है ? हैं यह क्या ? आपका शरीर कांपता क्यों है ? बस ठीक-ठीक बता ! मैं समझ गया, ओ बेईमान, तू भी प्रभाकरसिंह नहीं है, सच बता तू कौन है ? अच्छा मैं तेरे हाथ-पैर खोल देता हूँ !"

इतना कह कर शंकरसिंह ने नकली प्रभाकरसिंह के हाथ-पैर खोल दिये और कहा, "ले अब ठीक-ठीक बोल कि तू कौन है और प्रभाकरसिंह की सूरत बनने की तुझे क्या जरूरत पड़ी ? यह क्या, तू दारोगा की तरफ क्यों देखता है ? क्या इशारे ही इशारे से उससे सलाह करना चाहता है ? खबरदार, जल्द बोल तू कौन है !"

जब शंकरसिंह ने देखा कि नकली प्रभाकरसिंह उनकी बातों का कुछ जवाब नहीं देते तब उन्होंने पीछे की तरफ घूम कर देखा और जोर से चार दफे सीटी बजाई, सीटी की आवाज के साथ ही चार आदमी उसी झाड़ी के अन्दर से निकल-कर शंकरसिंह के पास चले आये जिसमें से स्वयं शंकरसिंह प्रकट हुए थे. शंकरसिंह की आज्ञा पा दो आदमी तो खड़े हो गये, एक आदमी नकली प्रभाकरसिंह के पास जा खड़ा हुआ, और एक आदमी पानी लेने के लिए कहीं चला गया जो बात-की-बात में पानी से भरी हुई गगरी लेकर वहाँ मौजूद हुआ.

शंकरसिंह ने आज्ञा दी कि नकली प्रभाकरसिंह का चेहरा पानी से साफ किया जाय. उसी समय उसका चेहरा साफ किया गया और असली सूरत पर निगाह पड़ते ही आश्चर्य में आकर शंकरसिंह बोल उठे, "अख्खाह ! आप जयपालसिंह हैं !!"

शंकर: (दारोगा की तरफ देखकर) जब अपने दोस्त जयपाल को तूने प्रभाकरसिंह बना रक्खा है तो इसमें कोई खास बात जरूर है और निश्चय है कि तेरा तलवार का हाथ उठाना इसे मारने के लिए नहीं था बल्कि किसी को धोखा देने के लिए था. (कुछ सोच कर और इधर-उधर देख कर) तुम जिसको धोखा दे रहे थे वह जरूर कहीं पास ही में होगा.

ऊपर की दरीची में से जमना, सरस्वती और इन्दुमति बड़ी दिलचस्पी के साथ यह तमाशा देख रही थीं, इस बात का पता लग जाने पर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई कि प्रभाकरसिंह वास्तव में प्रभाकरसिंह न थे बल्कि दारोगा का कोई दोस्त था और हम लोगों को धोखे में डालने के लिए यह ढंग रचा गया था अस्तु उन्होंने जब शंकरसिंह को किसी खोज में चारों तरफ निगाह दौड़ाते देखा तो जमना ने हाथ उठाया. उसी समय शंकरसिंह की भी निगाह उन तीनों पर जा पड़ी, उन्होंने बड़ी खुशी के साथ अपना हाथ उठा कर जवाब दिया और तब यह भी कहा, "घबड़ाना नहीं, अब मैं आ पहुँचा हूँ."

इसके बाद शंकरसिंह ने पुनः दारोगा की तरफ देख कर कहा, "देखते हो उस (ऊपर की तरफ हाथ का इशारा करके) दरीची में से कौन झाँक रहा है ? भला इन तीनों औरतों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? तुम साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि यह सब कार्रवाई केवल गदाधरसिंह की मदद के लिए की गई है ! बोलो वास्तव में यही बात है या नहीं ?"

दारोगा ने शंकरसिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया और सिर नीचा करके जमीन की तरफ देखने लगा. शंकरसिंह ने क्षणमात्र तक कुछ विचार किया और इसके बाद पुनः दारोगा से कहा, "अच्छा मैं इस समय तुम दोनों को छोड़ देता हूँ, इस मामले का फैसला भाई साहब (महाराज) के सामने ही किया जाएगा, और इस समय तुम मुझे अपने साथ जमना, सरस्वती और इन्दुमति के पास ले चलो जो उस दरीची में से झांक कर तुम्हारी बेईमानी का तमाशा देख रही हैं."

'चलिए मैं आपको ले चलता हूँ" कह कर दारोगा मकान की तरफ रवाना हुआ. शंकरसिंह उसके साथ-साथ चलने लगे.
वह दारोगा का मकान कुछ अजीब ढंग का बना हुआ था, देखने वाला यही कहेगा कि इस मकान का भी किसी तिलिस्म से सम्बन्ध है मगर ऐसी बात न थी. दारोगा ने सिर्फ अपनी ही कारीगरी और बुद्धिमानी से इस मकान को तैयार कराया था.
इस मकान में कई दालान, कई कमरे, कई कोठरियाँ, कई तहखाने और कई सुरंगें बनी हुई थीं. एक-एक कमरे और कोठरी में जाने के लिए कई रास्ते थे. किसी अनजान आदमी को यदि अकेले उस मकान में छोड़ दिया जाए तो वह घूमता-ही-घूमता परेशान हो जाय और घबड़ा जाय तथा उसे बाहर निकलने के लिए रास्ते का पता न लगे.

शंकरसिंह को आज से पहिले इस मकान में आने का कभी इत्तिफाक न पड़ा था, अस्तु वे इस मकान की कैफियत को देख कर आश्चर्य करने लगे. जैसे-जैसे दारोगा उन्हें कोठरियों, कमरों और दालानों में घुमाता था तैसे-तैसे उन्हें उसकी चालबाजी और बदनीयती का ख्याल बढ़ता जाता था. दारोगा यह नहीं चाहता था कि शंकरसिंह को जमना, सरस्वती और इन्दुमति के सामने ले जाय और इसीलिए वह उन्हें अन्दाज से ज्यादा घुमाता और चक्कर दिलाता हुआ धीरे-धीरे ऊपर की तरफ लिये जा रहा था !

इसी तरह घूमते-फिरते वे एक ऐसे दरवाजे के पास पहुँचे जिसमें बहुत बड़ा ताला लगा हुआ था और उसी की बगल में एक और भी छोटा-सा दरवाजा था जिसके दोनों पल्ले खुले हुए थे. वहाँ पर दारोगा रुक गया और उसने शंकरसिंह की तरफ देख कर कहा, "जरा-सा आप यहाँ पर खड़े रहने की तकलीफ गवारा कीजिए तो मैं जाकर इस दरवाजे को खोलने के लिए ताली ले आऊँ क्योंकि वे तीनों औरतें इसी के अन्दर हैं."

इसके जवाब में शंकरसिंह न-मालूम क्या सोच कर कुछ देर तक तो दारोगा का मुँह देखते रहे और तब बोले, "खैर कोई चिन्ता नहीं आप जाइये और ताली लेकर जल्द आइये."
दारोगा फुर्ती के साथ उस दूसरे छोटे दरवाजे के अन्दर घुस गया और शंकरसिंह वहाँ खड़े रह कर उसके आने का इन्तजार करने लगे. ज्यों-ज्यों दारोगा के आने में देरी होती थी त्यों-त्यों शंकरसिंह का क्रोध बढ़ता जाता था और इस बात का भी शक हो रहा था कि वह हमें धोखा देकर यहाँ से निकल भागा.

घण्टे-भर तक शंकरसिंह चुपचाप वहाँ खड़े रह गए और दारोगा लौट कर नहीं आया, अन्त में वे बहुत झुँझलाये और वहाँ से दारोगा की खोज में चल खड़े हुए. जिस छोटे दरवाजे के अन्दर दारोगा घुस गया था उसी दरवाजे के अन्दर शंकरसिंह भी चले गये मगर आगे जाने के लिए उन्हें कोई रास्ता नहीं मिला क्योंकि उस दरवाजे के अन्दर घुसने के बाद वे एक ऐसी कोठरी में पहुँचे जिसके दोनों बगल और भी दरवाजे थे मगर वे सभी इस समय बन्द थे. शंकरसिंह झुँझलाते हुए कोठरी में से बाहर निकले और मकान के बाहर हो जाने के लिए उद्योग करने लगे.

मगर वास्तव में यह मकान भूलभुलैया था. शंकरसिंह को घूमते हुए कई घण्टे बीत गये, यहाँ तक कि सूर्य भगवान अस्ताचल की तरफ चले गए और उस मकान के अन्दर अन्धकार ने धीरे-धीरे अपना दखल जमाना शुरू कर दिया. घूमते-फिरते उन्हें कई बन्द दरवाजे भी मिले जिन्हें देख कर उन्होंने समझा कि यह दारोगा की शैतानी है, भागते समय उसने उन दरवाजों को बन्द कर दिया जिनके जरिये से बाहर हो जाने की उम्मीद हो सकती थी अस्तु उन्होंने पुनः घूमना आरम्भ किया मगर जब कोठरियों और कमरों में पूरा अन्धकार छा गया तब लाचार होकर एक ठिकाने बैठ गए और चिन्ता करने लगे कि अब क्या करना चाहिये.

[३]

जमना, सरस्वती और इन्दुमती उस दरीची में से झाँक कर देख रही थीं और इस आशा में थीं कि अब शंकरसिंह शीघ्र यहाँ आकर हम लोगों को इस कैद से छुटकारा देंगे. जब शंकरसिंह दारोगा को साथ लिए हुए उस मकान की तरफ बढ़े तब उन तीनों औरतों ने अपने विचार की पुष्टि समझी और जमुना के मुँह से निकल पड़ा 'लो अब तो वे हमारी तरफ चले आ रहे हैं !"

हम ऊपर लिख आये हैं कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति के पीछे दारोगा के दो आदमी नंगी तलवार लिये खड़े हो गये थे और वे तीनों खिड़की के नीचे झाँक रही थीं. अस्तु उन दोनों नकाबपोशों ने भी झाँक कर नीचे की अवस्था देख ली थी. दारोगा का दिल चाहे कैसा ही मजबूत हो परन्तु उन दोनों नकाबपोशों के कलेजे हिल गये और उन दोनों ने निश्चय कर लिया कि अगर शंकरसिंहजी हम दोनों को यहाँ देख लेंगे तो निश्चय ही हम जान से मारे जायेंगे, यह विचार उनका मजबूत होता चला गया और जब उन दोनों ने देखा कि दारोगा को साथ लिये हुए शंकरसिंह इसी तरफ चले आ रहे हैं तब वे दोनों एकदम से ही भाग खड़े हुए, जमना, सरस्वती और इन्दुमती को मालूम भी न हुआ कि हमारे निगहबान कब और कहाँ भाग गये.

शंकर सिंह को अपनी तरफ आते देख प्रसन्नता के साथ घूम कर जमना ने इन्दुमति से कुछ कहने के लिये पीछे की तरफ देखा तब मालूम हुआ कि वे दोनों नकाबपोश गायब हो गये. तीनों को आश्चर्य हुआ मगर साथ ही यह भी विश्वास हो गया कि शंकरसिंह के डर से वे दोनों भाग गये.
कई क्षण आश्चर्य करने के बाद जमना ने इन्दुमति और सरस्वती की तरफ देखकर कहा—

जमना० :क्या हम लोगों को इसी जगह पर खड़े रहना चाहिये ?
सरस्वती : फिर और क्या किया जायगा ?
जमना० :अगर उस कमरे में जहाँ हम कैद थे चलें तो क्या हर्ज है ? शायद हमारे नारायणजी उसी तरफ आवें.

इन्दु० : इसका कौन ठिकाना है ? देखो इधर भी तो एक दरवाजा है. शायद इसी राह से आवें, इसके अतिरिक्त उन्होंने इस ठिकाने हम लोगों को देख लिया है इसलिये उनका सबसे ज्यादा विचार इसी स्थान पर आने का होगा, दूसरी जगह चले जाने से कदाचित मुलाकात में देर हो !
सरस्वती : तुम्हारा विचार बहुत ठीक है.
जमना० :बेशक हम लोगों को इसी जगह अटकना चाहिए. (रुक कर और किसी आहट की तरफ ध्यान देकर) मालूम नहीं क्या बात है, उन्हें आने में इतनी देर क्यों हुई !

इन्दु० : बेशक देर तो जरुर हुई, कहीं दारोगा को साथ लिए दूसरी तरफ तो नहीं चले गये.
सरस्वती : ईश्वर ही जाने !
इसी तरह के विचारों के साथ जमना, सरस्वती और इन्दुमति को इन्तजार करते हुए कई घण्टे बीत गये मगर शंकरसिंह उनके पास न आये. अन्त में पहर-भर से ज्यादे रात बीत जाने के बाद लाचार हो कर वे तीनों वहाँ से हटीं और धीरे-धीरे से उस कमरे की तरफ रवाना हुईं जिसमें कैद थीं मगर उसी समय पीछे की तरफ से किवाड़ खुलने की आवाज आई और जब घूमकर पीछे की तरफ देखा तो नकाबपोशों पर निगाह पड़ी।

बात-की-बात में वे दोनों नकाबपोश जमना, सरस्वती इन्दुमति के पास जा पहुँचे, बिना कुछ कहे-सुने दोनों ने अपनी कमर से एक-एक चादर खोलकर उन तीनों औरतों के ऊपर फेंक दी और चेहरे पर दो-तीन दफे लपेट कर हाथ से कुछ क्षण के लिए थाम लिया. उन चादरों में से एक तरह की बहुत तेज खुशबू आ रही थी जो बेहोशी पैदा करने वाली थी, अस्तु उसकी खुशबू से बहुत जल्द बेहोश होकर जमना, सरस्वती और इन्दुमति जमीन पर गिर पड़ीं और जब कई पहर बीत जाने के बाद उनकी बेहोशी दूर हुई और उन्होंने आँखें खोलकर आश्चर्य से चारों तरफ देखा तो अपने को एक भयानक जंगल में पड़े और भूतनाथ को सामने खड़े पाया. अनुमान से इस समय दिन एक पहर से ज्यादा चढ़ चुका था.

[४]

आँख खुलने के साथ ही भूतनाथ को सामने देख कर जमना, सरस्वती और इन्दुमति चौंक पड़ीं और घबरा कर अपनी अवस्था की तरफ देखने लगीं. कपड़े से उन तीनों के हाथ-पैर बँधे हुए थे और कलम-दवात तथा कागज का एक सादा टुकड़ा जमना के सामने पड़ा हुआ था.

भूत० : (तीनों की तरफ देख के) बस मुझे विशेष कहने की कोई जरूरत नहीं जितना ही तुम लोगों का मुलाहिजा किया गया उतना ही तुम लोग शेर होती गईं, अस्तु अब तुम लोगों के साथ अन्तिम व्यवहार किया जाता है. यह कलम-दवात और कागज का टुकड़ा तुम लोगों के सामने पड़ा हुआ है, तुम तीनों में से कोई एक इस कागज पर जो कुछ मैं कहूँ सीधी तरह लिख दो तब तो तुम लोगों को छोड़ दूँगा नहीं तो खूब समझ रखना की बेंत और कमचियों से मार-मार कर तुम लोगों की खाल उधड़वा दूँगा और तड़पा कर तुम लोगों की आत्मा को उस तरफ रवाना कर दूँगा जहाँ को जाने वाला फिर इस सूरत में लौट कर नहीं आता ....

जमना० : बस-बस, अपना लम्बा-चौड़ा व्याख्यान रहने दे, हम लोगों को तेरे हाथ से जान बचाने की अब कोई जरूरत नहीं.

सर ०: चाहे किसी तरह की मौत मिले हम लोगों को वह जरूर प्यारी होगी.
इन्दु० : हम लोग इस दुनिया को छोड़ जाना ही पसन्द करती हैं, इस दुनिया से कूच कर जायँगे मगर तुझे खुश करने के लिए पूरा सामान छोड़ जायेंगे.

जमना० :इन लोगों के साथ वैसा ही सलूक कर जैसा कि तू बर्दाश्त कर सके, उतना ही मार जितना कि तेरे शरीर सह सके, और उसी जगह भेज जहाँ जाना तू पसन्द करे.
भूत० (क्रोध से दाँत पीस कर) मालूम होता है कि तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है, तुम लोगों को...

भूतनाथ और कुछ कहा है चाहता था कि पीछे से आवाज आई, "जरा ठहरना, जल्दी न करना." भूतनाथ ने पीछे फिरकर देखा तो दारोगा साहब के प्यारे दोस्त जैपालसिंह पर निगाह पड़ी. थोड़ी दूर आगे बढ़कर जैपाल रुक गया और उसने हाथ का इशारा करके भूतनाथ को अपने पास बुलाया।

भूतनाथ ने समझा कि वह कोई ऐसा सन्देश कहने के लिए आया है जो जमना, सरस्वती और इन्दुमती के सुनने लायक नहीं और इसीलिए वह इन लोगों के पास से हटकर मुझे अलग बुला रहा है, अस्तु वह तेजी के साथ जैपाल[1] के पास चला गया और बोला, "कहो क्या बात है ?"

जैपाल : मैं दारोगा साहब का भेजा आपके पास आया हूँ.
भूत० : क्या उनके पास कोई आदमी उस वक्त न था जो उन्होंने आपको परेशान किया ?
जैपाल : आदमी तो बहुत थे मगर मामला कैसा नाजुक है इसे भी तो सोचिये !

---

१. जैपाल का कुछ परिचय चन्द्रकान्ता सन्तति में दिया जा चुका है.

भूत० : बेशक इस मौके पर दूसरे आदमी का आना अच्छा न होगा. जमना, सरस्वती और इन्दुमति पर किसी की भी निगाह न पड़नी चाहिये.
जैपाल : आप समझते हैं तो फिर ऐसा सवाल क्यों करते हैं ?
भूत० : (मुस्कराता हुआ) बेशक मेरी भूल थी जो मैंने ऐसा पूछा, अच्छा बताइये आपका आना किस लिए हुआ ? क्या कोई पत्र लाये हैं ?

जैपाल : नहीं, पत्र तो नहीं लाया हूँ परन्तु जुबानी सन्देश के साथ-साथ एक डिबिया है जिसके विषय में दारोगा साहब ने कहा है कि इसे खोल कर जमना, सरस्वती और इन्दुमती को दिखा देना और अगर इस पर भी वे तुम्हारी बात न मानें तो उन्हें अवश्य कत्ल कर डालना. इसके अतिरिक्त यह भी कहा है कि 'सन्ध्या समय मुझसे 'बसन्त बाग' में जरूर मिलना'.

इतना कह कर जैपाल ने अपनी कमर से चाँदी की एक डिबिया निकाली और भूतनाथ के हाथ में दी. डिबिया का ढकना बहुत सख्त बैठा हुआ था परन्तु भूतनाथ ने उसे जोर से खोला, देखा कि उसके अन्दर मरहम की तरह जंगारी रंग का कोई जमाया हुआ पदार्थ है जिसके बीचोबीच में रक्खा हुआ एक हीरे का टुकड़ा अपनी तड़प दिखा रहा है. यह मरहम निहायत ही खुशबूदार था, बिना नाक के साथ लगाये ही उसकी खुशबू से दिमाग मुअत्तर हो रहा था और खुशबू भी ऐसी प्यारी थी कि बिना सूँघे भूतनाथ से रहा न गया. उसके नाक के साथ डिबिया लगा कर उसको सूँघा और साथ ही चक्कर खाकर जमीन पर गिर के बेहोश हो गया.

भूतनाथ यदि नाक लगा कर उस मरहम को न भी सूँघता तो भी बेहोश हो जाता, परन्तु कुछ समय के बाद, क्योंकि बेहोश करने वाली उस मरहम की खुशबू से उसका दिमाग मुअत्तर हो चुका था.
जमना, सरस्वती और इन्दुमति दूर से इस तमाशे को देख रही थीं. बेहोश भूतनाथ को उसी जगह छोड़ जैपाल जमना, सरस्वती और इन्दुमति के पास गया और बोला, "मैं हूँ आदित्यमण्डल !" यह अनूठा शब्द सुनते ही वे तीनों प्रसन्न हो गईं, उनकी आँखें डबडबा आईं और तीनों ने सर झुका कर नकली जैपाल को प्रणाम किया.

इस जैपाल ने फुरती के साथ उनके हाथ-पैर खोल दिये और तीनों को साथ लिये हुए घने जंगल में घुस कर बात-की-बात में नजरों से गायब हो गया.

इस वारदात को दो घण्टे गुजर गये, भूतनाथ अभी तक बेहोश पड़ा हुआ है, यद्यपि दोपहर की करारी धूप बड़ी ही दुखदायी हो रही थी परन्तु भूतनाथ एक घने पेड़ के नीचे है जहाँ और भी दो घण्टे धूप के आने की उम्मीद नहीं. पाठक महाशय, देखिये एक बार पुनः जमना,सरस्वती और इन्दुमति उसी स्थान की तरफ आ रही हैं जहाँ उनकी बेहोशी दूर हुई थी या जहाँ आँख खुलने के साथ ही उन्होंने अपने सामने भूतनाथ को मौजूद पाया था.

मगर ये जमना, सरस्वती और इन्दुमति अपनी खुशी से वहाँ नहीं आ रही हैं बल्कि जबरदस्ती के साथ लाई जा रही हैं, तीन आदमी मजबूती के साथ पकड़े हुए उन्हें उसी स्थान पर ले आये तथा पहिले की तरह मजबूती के साथ फिर उनके हाथ-पैर बाँध कर उसी तरफ जमीन पर बैठा दिया.

उसी समय एक चौथा आदमी भी आया जो अपनी पीठ पर बेहोश जैपाल को लादे हुए था, उसने भूतनाथ के पास पहुँच कर गठरी उतारी और जैपाल को जमीन पर सुला जिधर से आया था उधर ही चला गया, ये तीनों आदमी भी जो जमना, सरस्वती और इन्दुमति को गिरफ्तार कर लाये थे अपना काम पूरा करके चले गये और फिर लौट कर न आये.

कुछ देर और बीतने के बाद भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई, उसने करवट बदली और दो-चार दफे अंगडाई लेकर उठ खड़ा हुआ. थोड़ा विचार करते ही उसे विश्वास हो गया कि जरूर उसके साथ चालाकी खेली गई और जैपाल की सूरत बन कर जरूर कोई ऐयार आया जो उसको धोखा देकर बेहोश करने के बाद अपना काम कर गया, परन्तु उसी समय उसकी निगाह बेहोश जैपाल पर पड़ी और साथ ही इसके जमना सरस्वती और इन्दुमति को भी उसने देखा जो हाथ-पैर बँधे रहने के कारण ज्यों-की-त्यों बैठी हुई लम्बी साँसें ले रही थीं, अस्तु उसका विचार पलट गया और अब वह सोचने लगा कि 'नहीं, जैपाल ने मुझे कोई धोखा नहीं दिया, अगर वह कोई ऐयार होता तो जरूर अपना काम कर यहाँ से चला जाता.

मगर मैं देखता हूँ कि उसके साथ-साथ जमना, सरस्वती और इन्दुमति भी ज्यों-की-त्यों मौजूद हैं और मेरी अवस्था में भी किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा है यहाँ तक कि ऐयारी का बटुआ भी कमर में मौजूद है, साथ ही इसके जैपाल भी इसी जगह बेहोश पड़ा हुआ है जिससे मालूम होता है कि जिस डिबिया को सूँघ कर मैं बेहोश हो गया उसी खुशबू ने जैपाल को भी बेहोश कर दिया है. (कुछ सोच कर और चौंक कर) मगर आश्चर्य की बात है कि वह डिबिया दिखाई नहीं देती. शायद जैपाल ने उठा कर अपने पास रख ली है, अब इसे होश में लाया जाय तो पता लगे'. इत्यादि बातें सोच कर भूतनाथ जैपाल के पास गया और अपने बटुए में से लखलखा निकाल कर उसे सुँघाने लगा मगर वह होश में न आया, भूतनाथ बोल उठा, "ओफ बड़ी कड़ी बेहोशी है ! ईश्वर की ही कृपा थी कि मैं इतनी जल्दी होश में आ गया."

दो-तीन बार लखलखा सुँघाने पर भी जब जैपाल होश में न आया तो भूतनाथ ने उसे छोड़ दिया और जमना, सरस्वती और इन्दुमति के पास जाकर क्रोध-भरी निगाहों से उनकी तरफ देख के बोला, "बस अब मैं ज्यादे इन्तजार नहीं कर सकता, साफ जवाब दो कि जो कुछ मैंने कहा था वह लिख देने के लिए तुम तैयार हो या नहीं."

इसके जवाब में उन औरतों ने मुँह से कुछ नहीं कहा मगर हाथ से जरूर कुछ इशारा किया जिसे भूतनाथ कुछ समझ न सका. उसे विश्वास हो गया कि मेरे कहे के मुताबिक ये औरतें कदापि न लिखेंगी. अस्तु उसने चिन्ता और क्रोध से व्याकुल होकर तलवार खैंच ली और यह कह कर कि, अच्छा फिर जो कुछ होगा देखा जायगा, एक ही तलवार में जमना का सर अलग कर दिया, इतने पर भी भूतनाथ को सब्र न हुआ और लगे हाथ सरस्वती और इन्दुमति को भी मार कर अपने हिसाब से निश्चिन्त और बेफिक्र हो गया.

हाय हाय, भूतनाथ ने कैसी संगदिली का काम किया ! कैसी बेदर्दी के साथ इन बेचारियों पर तलवार का वार किया ! उसका कलेजा कैसा पत्थर का-सा था बल्कि ऐसा अंधेर करते समय भी जरा न हिला और मामूली ढंग पर बकरी या भेंड़ समझ कर उसने उन्हें लापरवाही के साथ मार डाला. आह भूतनाथ, तूने यह काम अच्छा नहीं किया, निःसन्देह इसका बहुत बुरा नतीजा तुझको भोगना पड़ेगा.

उस भयानक जंगल में इन लोगों को गाड़ने के लिए एक गड्हा भी भूतनाथ ने पहिले से तजवीज कर रक्खा था जो उस स्थान से थोड़ी ही दूर पड़ता था. तीनों लाशों को उसी गड्हे में फेंक कर भूतनाथ ने ऊपर से मिट्टी और कतवार वगैरह डाल कर अच्छी तरह ढंक दिया और तब जहाँ-जहाँ पर उनका खून गिरा था वहाँ की मिट्टी रगड़ कर उसका निशान भी मिटा दिया.

इन सब बातों से निश्चिंत होकर भूतनाथ पुनः जैपाल के पास आया, उसे उसी तरह बेहोश पाया, पुनः लखलखा सुँघाया मगर कुछ फायदा न हुआ, नब्ज पर हाथ रख कर देखा तो बहुत बारीक और सुस्त चल रही थी जिससे भूतनाथ को गुमान हुआ कि कहीं इस बेहोशी के कारण यह मर ही न जाय, मगर ऐसा नहीं हुआ और कुछ देर बाद दो-चार करवटें बदल कर जैपाल उठ बैठा. अपने सामने भूतनाथ को देख उसने सलाम किया. भूतनाथ ने उससे मिजाज का हाल पूछा मगर उसने कुछ जवाब न दिया, भूतनाथ ने समझा कि अभी इसका मिजाज ठिकाने नहीं हुआ, कुछ देर और ठहर जाने पर यह इस लायक हो जायगा कि मेरी बातों का जवाब दे, अस्तु कुछ समय और ठहर जाने के बाद पुनः उसके मिजाज का हाल पूछा, इस बार वह कुछ इशारा करके उठ खड़ा हुआ आश्चर्य के साथ चारों तरफ देखने लगा, उसी समय दूर से कई सवारों के आने की आहट मिली, कुछ ही देर बाद जिन्हें भूतनाथ ने भी देखा और तुरत वहाँ से हट जाने का इरादा किया. जैपाल को इशारे में और जुबानी भी यह कह कर कि 'खैर तुम दारोगा साहब के पास लौट जाओ, मैं कल उनसे मिलूँगा', भूतनाथ ने एक तरफ का रास्ता लिया और उसका इशारा समझ जैपाल भी वहाँ से कहीं हट गया.

[५]

शंकरसिंह को धोखा देकर दारोगा निकल गया और उन्हें उसी भूलभुलैया में उलझा हुआ छोड़ गया जिसका कारण यह था कि इनका वह किसी तरह भी मुकाबला नहीं कर सकता था और उसका भेद इन पर प्रकट हो जाने से उसे विश्वास हो गया कि ये अब मुझे सताये बिना न रहेंगे.

यदि ये महाराज से इन बातों की शिकायत कर देंगे तो उनके दिल से तो मैं उतर ही जाऊँगा और ताज्जुब नहीं कि फिर मुझे जन्म-भर के लिए कैदखाने की अंधेरी कोठरी नसीब हो.
दारोगा कमबख्त बड़ा ही बेरहम आदमी था, किसी की जान ले लेना तो उसके लिये एक अदनी बात थी, अस्तु बहुत कुछ सोच-विचार कर शंकरसिंह के विषय में भी उसने यही मुनासिब समझा कि इन्हें गुप्त रीति से मार कर बखेड़ा तय किया जाय क्योंकि तब किसी को इस मामले की खबर ही न होगी. यही सबब था कि वह अब शंकरसिंह की जान लेने की फिक्र करने लगा.

आखिर दारोगा अपने उस कमरे में गया जो उसका गुप्त घर था और जिसमें वह तरह-तरह की दवाइयाँ, ऐयारी का सामान, अजीब ढंग की पोशाकें, तरह-तरह के औजार और हर्बे तथा इसी तरह के और बहुत-से सामान रक्खा करता था, यद्यपि वह घबड़ाया हुआ था परन्तु फिर भी यहाँ एकान्त में आकर बैठ गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये, बहुत जल्द उसने यह निश्चय कर लिया कि फलाने ढंग से शंकरसिंह को मार कर बखेड़ा तै कर डालना ही अब सबसे अच्छा है, फिर जो कुछ होगा देखा जायगा. ऐसा निश्चय करने के साथ ही वह उठ खड़ा हुआ, जो कपड़े पहिने हुए था उन्हें उतार कर दूसरी स्याह पोशाक पहिनी और मामूली तौर पर अपना चेहरा रंग कर ऊपर से स्याह नकाब डाली. इसके बाद एक छुरा, एक खंजर और एक तमंचा तथा एक चोर लालटेन लेकर वह कमरे के बाहर निकला और अपने विचित्र मकान की कोठरियों में घूम-घूम कर शंकरसिंह को खोजने लगा. उसके दोनाली तमंचे में गोलियाँ भरी हुई थीं और रात पहर-भर से ज्यादे जा चुकी थी.

शंकरसिंह घूमते-फिरते किस जगह तक पहुँचे होंगे या किस अवस्था में होंगे इसे वह नहीं कह सकता था, अस्तु उनका पता लगाने के लिए दारोगा विचित्र ढंग से उन्हें खोजने लगा. उस मकान की बहुत-सी कोठरियाँ और दालानों में कोई-न-कोई सूराख, दरीची, रोशनदान या बालाखाना जरूर था, जिसमें से झाँक कर दारोगा उन कोठरियों और कमरों की अवस्था दूर से ही देख रहा था, इस समय उसने निश्चय किया कि पहिले उन्हीं कोठरियों और कमरों में देखना चाहिये जिनमें मैं दूर से देख सकता हूं, अगर वहाँ पता न लगेगा तब बाकी कोठरियों में घूम कर देखा जायगा.

आखिरकार उस अंधकार के समय में भी घूम-फिर कर दारोगा ने थोड़ी ही देर की मेहनत में शंकरसिंह को खोज निकाला, ऊपर-ही-ऊपर वह एक ऐसे बालाखाने में पहुँचा जिसके नीचे की तरफ एक छोटा-सा चौखूटा कमरा बना हुआ था, चोर लालटेन के जरिये से देखने पर मालूम हुआ कि इसी कमरे में शंकरसिंह जमीन के ऊपर बेहोश पड़े हुए हैं. दारोगा ने उनके चेहरे पर लालटेन की रोशनी डाली परन्तु शंकरसिंह की निद्रा भंग नहीं हुई, साथ ही इसके यह भी दिखाई दिया कि उनका दाहिना हाथ छाती के ऊपर है और वहाँ से निकला हुआ बहुत-सा खून चारों तरफ फैल रहा है. शंकरसिंह की ऐसी अवस्था देखते ही दारोगा चौंक पड़ा और बोल उठा, "मालूम होता है कि इन्होंने आत्महत्या कर ली ! घूमते-घूमते जब निकल जाने के लिए कहीं रास्ता न मिला तब घबड़ा कर ऐसा किया होगा. खैर यह भी अच्छा हुआ, मुझे इनके खून से अपना हाथ रंगना न पड़ा."

जिस जगह पर दारोगा खड़ा होकर शंकरसिंह को देख रहा था उसके दोनों बगल दो छोटे-छोटे दरवाजे थे. एक दरवाजा जिसमें से होकर दारोगा यहाँ आया था खुला हुआ था मगर दूसरा बन्द था. दारोगा ने उस बन्द दरवाजे को खोला और अन्दर जाकर एक सुरंग में पहुँचा जो दस-बारह हाथ से ज्यादे लम्बी न थी. सुरंग के अन्त में भी एक दरवाजा था जिसे दारोगा ने खोला. यहाँ पर नीचे उतर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं. उन्हीं की राह से नीचे उतर कर दारोगा उस कमरे में पहुँचा जिसमें शंकरसिंह पड़े हुए थे. दारोगा को इस बात का निश्चय नहीं था कि वे मर गये या जीते हैं इसलिए एकाएक पास जाते वह डरा और दूर ही से कुछ सायत तक देखता रहा, इसके बाद हाथ में भरा हुआ तमंचा लिए आगे बढ़ा, कुछ देर लालटेन की रोशनी उनके चेहरे पर डाल कर गौर से देखता रहा. अन्त में उसे निश्चय हो गया कि ये जीते नहीं बल्कि मरे हुए हैं, तब पास गया और नब्ज पर हाथ रख कर अपना शक मिटाने के बाद देखा कि दाहिने हाथ में छुरे का कब्जा है और छुरा कलेजे में अन्दर घुसा हुआ है.

"अब इन्हें ठिकाने पहुँचाना चाहिये." कह कर दारोगा वहाँ से लौट पड़ा और थोड़ी देर में और दो आदमियों को साथ लिए पुनः शंकरसिंह की लाश के पास पहुँचा. इन दोनों के चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई थी. दारोगा की आज्ञानुसार दोनों नकाबपोशों ने शंकरसिंह की लाश उठाई और दारोगा के पीछे रवाना हुए.

इस कमरे में तीन दरवाजे थे, एक तो वह जिस राह से दारोगा आया था, दूसरा दरवाजा वह था जिस राह शंकरसिंह आये थे, और तीसरा दरवाजा इस समय बन्द था. उसी तीसरे दरवाजे को खोलकर दारोगा उसके अन्दर गया और लाश उठाये हुए दोनों नकाबपोश भी उसके पीछे-पीछे चले गए. यह भी पहिले कमरे की तरह का ही एक चौखूटा कमरा था पर उसके चारों तरफ दीवार में चार बड़ी-बड़ी आल्मारियाँ थीं जिन्हें खोलने या बन्द करने के लिए कोई खास खटका बना हुआ था.

दारोगा ने एक अलमारी का पल्ला खोला, उसमें किसी तरह का कोई सामान न था और न वह वास्तव में आलमारी ही थी बल्कि उसके अन्दर एक छोटी-सी कोठरी थी जिसमें मुश्किल से चार या पाँच आदमी खड़े हो सकते थे. कोठरी में से ही नीचे उतर जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, शंकरसिंह की लाश उठवाये हुए दारोगा नीचे तहखाने में उतर गया जो एक गोल कमरे के ढंग का बना हुआ था. इस कमरे के नीचे एक और तहखाना था जिसमें उतर जाने के लिए कमरे के बीचोंबीच में रास्ता बना हुआ था और उसका मुँह लकड़ी के तख्ते से ढका हुआ था. दारोगा ने तख्ता उठाया और शंकरसिंह की लाश उसके अन्दर फेंक देने के लिये अपने दोनों आदमियों को कहा.

शंकरसिंह की लाश उसके अन्दर फेंक दी गई, तख्ता गिरा कर तहखाने का मुँह ढक दिया गया और तीनों आदमी नाक दबाये हुए जल्दी-जल्दी ऊपर की तरफ रवाना हुए क्योंकि तख्ता खोलने के साथ ही उसके अन्दर से बदहवास कर देने वाली ऐसी सड़ी बदबू निकली कि जिससे वे तीनों ही आदमी परेशान हो गये थे.

अपने पीछे के सब दरवाजे बन्द करते हुए तीनों आदमी ऊपर चले आये जहाँ दारोगा ने अपने दोनों साथियों को विदा किया और तब अपने गुप्त कैदखाने में चला गया जहाँ पहिले ही से भूतनाथ बैठा हुआ उसका इन्तजार कर रहा था. दारोगा वहाँ ठहरा नहीं बल्कि भूतनाथ को लेकर उसी तरफ पलट पड़ा जहाँ जमुना, सरस्वती और इन्दुमति शंकरसिंह के आने का इन्तजार कर रही थीं और उन तीनों औरतों के साथ जो कुछ सलूक इन दोनों ने किया वह पहिले के बयान में लिखा जा चुका है, मतलब यह कि दारोगा ने जमना, सरस्वती और इन्दुमति को भूतनाथ के हवाले कर दिया.

[६]

आधी रात का समय है, चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, सिर्फ गली-कूचों में कभी-कभी पहरा देने वालों की आवाज 'जागते रहियो, होशियार रहियो' सुनाई दे जाती है. जमानिया तिलिस्म के दारोगा साहब भी, जिनका दिमाग तरह-तरह के तरद्दुओं का शिकार हो रहा है बहुत देर तक जाग कर और सैकड़ों करवटें बदल कर अब सो गये हैं मगर थोड़ी-थोड़ी देर में उनका शरीर चौंक जाता और क्षणभर के लिए निद्रा भंग हो जाती है.

जिस कमरे में दारोगा साहब सो रहे हैं वह बहुत ही खूबसूरती के साथ बेशकीमती सामान से सजा हुआ है. चारों तरफ की दीवारों पर बहुत अच्छा रंगसाजी का काम किया हुआ है, दरवाजों पर किमख्वाब के पर्दे पड़े हुए हैं, मौके-मौके पर दीवारों के साथ बिल्लौरी दीवारगीरें लगी हुई हैं, तथा छत के साथ बेशकीमत कन्दीलें और झाड़ लटक रहे हैं. आलों पर सुन्दर जड़ाऊ गुलदस्ते सजाये हुए हैं जिनमें रक्खे हुए खुशबूदार फूल-पत्तों के गुच्छे तमाम कमरे को सुअत्तर कर रहे हैं, इस समय यहाँ रोशनी बहुत कम है क्योंकि सिर्फ दो ही तीन दीवारगीरों में काफूरी मोमबत्ती जल रही है.

कई घण्टे तक बेआरामी की नींद लेने के बाद दारोगा चौंक कर जाग पड़ा और उठ कर चारपाई के ऊपर बैठ गया, उसे ऐसा मालूम हुआ मानों उसके पैर में किसी जानवर ने काट लिया परन्तु उठ कर बैठ जाने पर उस कमरे की अवस्था देख कर वह घबड़ा गया और आँखें फाड़ चारों तरफ देखने लगा. उसने देखा कि जिन दीवारगीरों में काफूरी बत्तियाँ जल रही थीं वे बुझी हुई हैं और सिर्फ एक बत्ती जल रही है मगर उस पर भी किसी ने स्याह चादर या इसी तरह की कोई चीज डाल दी है जिससे रोशनी बहुत गंदली हो रही है यहाँ तक कि कमरे की चीजें साफ नहीं दिखाई देतीं.

दारोगा के दिल में एक प्रकार का डर पैदा हो गया और उस समय तो उसका कलेजा और भी उछलने लग गया जब उसे कमरे के कोने में कोई स्याह रंग की मूरत धुँधली-सी दिखाई दी.

निःसन्देह पापियों का हृदय बड़ा ही छोटा, बहुत ही कमजोर और अत्यन्त डरपोक होता है, दारोगा कोई बहादुर आदमी नहीं था, बहादुर लोग ऐसे नीच कामों को पसन्द नहीं करते जिन्हें दारोगा ने अपना नित्यकर्म ही समझ रक्खा था. दारोगा केवल चालाकी और दगाबाजी से अपना काम निकालता था.
यद्यपि किसी की जान लेने के विषय में वह बड़ा निर्दय था परन्तु इस काम में उसका दिल उन बहादुरों का-सा न था जो लड़ाई के मैदान में खुल्लमखुल्ला लड़ कर दुश्मनों का सिर काटते हैं बल्कि उसका दिल उन पापियों का-सा था जो केवल लाभ के लिए निर्दोष पुरुषों को अंधकार के समय छिप कर मारते हैं या जहर से किसी की जान लेकर छिपे फिरते हैं और डरते हैं कि हमारा यह भेद किसी पर खुल न जाय. इन दोनों दिलों में जमीन-आसमान का फर्क है, मगर इससे भी बढ़ कर उस आदमी का दिल पापमय और कमीना है जो अपने मालिक के साथ नमकहरामी और राजा के साथ दगाबाजी करता है.

शंकरसिंह के साथ दगाबाजी करके और उनको जमीन के अन्दर दफन करके दारोगा का दिल बहुत ही घबड़ाया और बेचैन हुआ. उसे दिन-रात की साठ घड़ियों में से कोई बेफिक्री की नसीब नहीं होती थी. शंकरसिंह की लाश को जमीन के अन्दर पहुँचाने के बाद दूसरे दिन वह दरबार में राजा साहब के पास गया परन्तु उसके दिल ने घण्टे-भर भी उसे बैठने की इजाजत न दी. राजा साहब के मुँह से एक दफे केवल इतना ही निकल गया, "आज भैया राजा नहीं दिखाई दिये, क्या मामला है !" बस दारोगा के हवास जाते रहे और वह सरदर्द तथा बीमारी का बहाना करके वहां से चलता बना. घर आने पर भी उसका दिल बड़ी बेचैनी के साथ गुजरा और रात को जब वह खा-पीकर सोने के लिए अपने पलंग पर गया तो बड़ी मुश्किल से उसे नींद आई.

दूसरा दिन भी उसका उसी तरह बेचैनी के साथ गुजरा और वह राजा साहब के पास दरबार में न जा सका. सिर्फ अपनी बीमारी का सन्देशा कहला भेजा. वहाँ आज भी शंकरसिंह के न होने से बड़ी बेचैनी फैली हुई थी और सैंकड़ों आदमी उनकी खोज में चारों तरफ भेजे जा चुके थे. रात्रि के समय आज भी दारोगा की वही दशा रही अर्थात् बड़ी कठिनता से नींद आई और किसी कारण से जब उसकी आँख खुली तो उसने वही कैफियत देखी जो हम ऊपर कह चुके हैं.

धुंधली-सी स्याह रंग की मूरत देख कर वह डर गया. अपने सिरहाने से उसने तलवार उठा ली और कुछ देर तक एकटक उस मूरत की तरफ देखता रहा. अब वह मूरत हिलती दिखाई दी और फिर धीरे-धीरे दारोगा की तरफ बढ़ने लगी यहाँ तक कि चारपाई के पास आकर खड़ी हो गई. इस बीच में दारोगा ने कई दफे उठ कर चारपाई के नीचे खड़े होने की कोशिश की मगर कृतकार्य न हुआ, अर्थात् उसके पैरों ने उसे हिलने की इजाजत न दी, मालूम हुआ कि जैसे पैरों में कुछ दम नहीं रह गया है. इस कैफियत से दारोगा का डर और भी बढ़ गया तथा वह घबड़ाना-सा होकर एकटक उस मूरत की तरफ देखने लगा क्योंकि उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कोई आदमी सिर से पैर तक काला कपड़ा ओढ़े सामने खड़ा है.

कुछ सायत के बाद उस मूरत ने अपने चेहरे पर से स्याह कपड़ा हटा दिया, अब दारोगा को ठीक शंकरसिंह की सूरत दिखाई दी जिसे देखने के साथ ही वह चिल्ला उठा, उसके सर में चक्कर आने लगे और वह घूम कर चारपाई पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया.

अबकी दफे जब दारोगा होश में आया अर्थात् उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि सवेरा हो चुका है और कमरे के अन्दर कुदरती रोशनी पहुँच कर वहाँ की हर चीज को अच्छी तरह दिखा रही है मगर वह मूरत वहाँ नहीं दिखाई देती और न-किसी दीवारगीर के ऊपर स्याह कपड़ा ही दिखाई पड़ता है. दीवारगीरों के ऊपर निगाह डालने से यह भी मालूम होता था कि सभी बत्तियाँ जो संध्या के समय जलाई गई थीं रात-भर जल कर बुझी हैं क्योंकि कोई काफुरी बत्ती का टुकड़ा इतना बड़ा नहीं दिखाई देता था जिससे यह समझा जाय कि वह थोड़ी देर तक जलने के बाद बुझा दी गई थी.

कमरे की ऐसी अवस्था देखकर दारोगा तरह-तरह की बातें सोचने लगा, "क्या मैंने कोई स्वप्न देखा है ? नहीं नहीं, यह स्वप्न नहीं हो सकता. वह स्याह मूरत स्वप्न में नहीं देखी थी ! जरूर वह कोई आदमी था, साथ ही इसके मैंने यह भी देखा था कि दीवारगीरों की मोमबत्तियाँ एक को छोड़ कर बाकी की सभी बुझा दी गई हैं, परन्तु अब उन बचे हुए टुकड़ों पर ध्यान देने से जाना जाता है कि सभी बत्तियाँ एक साथ रात-भर जली हैं, इससे विश्वास होता है कि मैंने जरूर कोई स्वप्न देखा है. मगर नहीं, देखो यह तलवार जो कि मेरे सिरहाने थी इस समय बगल में पड़ी है क्योंकि मैंने उस स्याह मूरत को देखकर सिरहाने से उठा ली थी, तो क्या वास्तव में यह बात सच थी ?

लेकिन सच भी क्योंकर हो सकती है ? शंकरसिंह को मैं अपने हाथ से जमीन के अन्दर दफन कर आया हूँ, अब वह मेरे सामने क्योंकर आ सकते हैं ? तो क्या कोई ऐयार उनकी सूरत बन कर आया ?
नहीं, किसी ऐयार को यह बात मालूम ही कैसे हो सकती है जो वह मुझे डराने के लिए शंकरसिंह की सूरत बन कर आवेगा. तब क्या मेरे दोनों साथी ऐसा कर सकते हैं ? नहीं नहीं, राम राम ! उन बेचारों पर किसी तरह का शक करना अपने ही ऊपर शक करने के बराबर है, फिर क्या शंकरसिंह भूत बन कर मेरे कमरे में आये थे ? छिः छिः, भला भूत-प्रेत का शक करने से हम लोगों का काम कैसे चल सकता है ? भूत कोई पदार्थ नहीं है और जरूर वह स्वप्न था जो कि मैंने देखा."

दारोगा चारपाई के ऊपर बैठा हुआ बड़ी देर तक इसी प्रकार की चिन्ताएँ करता रहा और आखिर उसने निश्चय कर लिया कि जो कुछ उसने देखा वह जरूर स्वप्न था.
आखिर आँखें मलता हुआ दारोगा चारपाई से नीचे उतरा और धीरे-धीरे चल कर कमरे के बाहर आया जहाँ कई खिदमतगार खड़े उसके आने का इन्तजार कर रहे थे. हाथ-मुँह धोने के बाद कुर्सी पर बैठा ही था कि राजा साहब का एक चोबदार आ पहुँचा जिसने उनसे कहा कि 'महाराज ने आपको याद किया है'.

दारोगा: (चोबदार से) क्यों क्यों ? आज यह गैरकानूनी बात कैसी ! खैरियत तो है ?
चोब० : सो तो मुझे कुछ मालूम नहीं सिर्फ यही हुक्म हुआ है कि आपको जल्द हाजिर होने के लिए इत्तिला दी जाय. मगर हाँ, महाराज कुछ चिन्तित से जरूर दिखलाई देते हैं, सूर्योदय के पहिले ही स्नान तथा सन्ध्योपासन से निवृत हो आया करते थे परन्तु आज उन्होंने चारपाई से उठ कर मुँह तक नहीं धोया है, चारपाई से उठ कर सीधे 'मुक्ता भवन' में चले आये हैं और वहीं आपको भी याद किया है. आज्ञा है कि बिना कुछ विलम्ब किये शीघ्र उनके पास पहुँचें.

दारोगा : निःसन्देह कोई जरूरी बात है ?
चोब० : जी हाँ, तभी तो यह अवस्था है.

चोबदार की बातें सुन दारोगा साहब और परेशान हुए. महाराज के पास जाने की इच्छा तो नहीं होती थी परन्तु लाचार थे, बिना वहाँ गये रह भी नहीं सकते थे. कई क्षण तक चिन्ता करने के बाद वे उठे और अपने तोशेखाने वाले कमरे में चले गये. कुछ देर बाद मरीजों की-सी सूरत बनाये हुए दारोगा साहब कमरे के बाहर निकले और चोबदार के साथ महाराज की तरफ रवाना हुए.

जमानिया के राजा गिरधरसिंह अपने मुक्ता-भवन में चाँदी की एक आराम कुर्सी पर बैठे हुए दारोगा के आने का इन्तजार कर रहे हैं. यह स्थान खास महाराज के रहने का है, जनाना महल या दरबार अथवा खास बाग से इसका कोई सम्बन्ध नहीं. हाँ, जनाना महल इस मकान के साथ ही सटा हुआ है तथा खास बाग जाने का एक रास्ता भी इस मकान में से है.

इस मकान के पीछे की तरफ एक छोटा-सा नजर बाग तथा एक सुन्दर बारह-दरी है। इसी बारहदरी में इस समय महाराज उदास और विषण्ण बदन बैठे न-मालूम किस विषय की चिन्ता कर रहे हैं. उनके पास किसी तरह की भीड़-भाड़ नहीं है, केवल खास-खास चार-पाँच आदमी और पाँच-सात खिदमतगार नजर आते हैं और वे सब भी महाराज की उदासी के कारण उदास हो रहे हैं।

कुछ देर बाद दारोगा साहब आ पहुँचे. महाराज से कुछ हट कर एक कुर्सी रक्खी हुई थी जिस पर बैठने के लिए महाराज ने इशारा किया और दारोगा साहब बैठ गये. महाराज ने कहा, "आपको कुछ भैयाराजा की खबर है ?'
दारोगा : जी मुझे तो कुछ खबर नहीं, क्या उनका पता नहीं लगता ?

महाराज : हाँ, दो दिन से पता नहीं लगता, मगर क्या आपको किसी ने खबर नहीं दी ? आश्चर्य है कि आप हम लोगों की तरफ से इस तरह बेखबर रहते हैं !
दारोगा : (हाथ जोड़ कर) महाराज, मैं सरकार की तरफ से बेफिक्र नहीं रह सकता परन्तु यह एक साधारण-सी बात थी जिसके विषय में मैंने कुछ विचार नहीं किया. इसके अतिरिक्त मुझे किसी ने इस मामले की खबर भी नहीं दी.

शायद इसका सबब हो कि मैं दो दिन से सख्त बीमार हूँ, सर और पेट-दर्द ने मुझे अधमुआ कर डाला है. मगर महाराज, भैयाराजा के लिए आपको इतनी चिन्ता नहीं करनी चाहिए. आप जानते ही हैं कि वे प्रायः ही गायब रहा करते हैं और जब आते हैं तो दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह दिन तक घर की खबर नहीं लेते...

महा० : ठीक है मगर वे ऐसा कभी नहीं करते कि मुझसे आज्ञा लिए बिना या मुझे इत्तिला दिये बिना कहीं चले जाते हों. अगर कभी ऐसा मौका पड़ भी गया है कि दो एक दिन लिए कह कर कहीं गये हैं और कई दिन लग गये हैं तो बाहर रहने पर भी नित्य अपने कुशल-मंगल का समाचार भेजते रहे हैं, परन्तु अबकी दफे इनका गायब होना मामूल के खिलाफ है....

महाराज ने इतना ही कहा था कि बाहर से एक चोबदार आया और हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गया. जब महाराज ने उसकी तरफ देखा और इशारे में इजाजत दी तब उसने अर्ज किया कि इन्द्रदेवजी आये हैं और सरकार में हाजिर हुआ चाहते हैं.
इस समय इन्द्रदेव के आने से महाराज खुश हुए और उन्हें बहुत जल्द ले आने के लिए चोबदार से कहा. खिदमतगार ने महाराज की मर्जी समझ कर एक कुर्सी वहाँ लाकर रख दी और जब इन्द्रदेव हाजिर हुए तो सलाम करने के बाद इशारा पाकर उसी कुर्सी पर बैठ गये.

मामली कुशल-मंगल पूछने के बाद महाराज ने प्रश्न किया—
महाराज : अबकी तो बहुत दिनों बाद तुम्हारा आना हुआ !
इन्द्रदेव : जी हाँ, कई झंझटों में फँसे रहने के कारण मैं बहुत दिनों तक हाजिर न हो सका, इधर कई दिनों से मेरे श्वसुर किसी कार्यवश मुझे बुला रहे थे, कल उनका बहुत शिकायत भरा हुआ पत्र पहुँचा तो लाचार होकर आना पड़ा, सबसे पहिले महाराज का दर्शन करना फर्ज था इसलिये हाजिर हुआ हूँ परन्तु महाराज कुछ खिन्न से दिखाई पड़ते हैं जिससे आश्चर्य होता है....

महा० : हाँ ठीक है, मैं जरूर उदास और दुःखी हो रहा हूँ और इसका कारण यह है कि आज तीन दिन से भैयाराजा का कहीं पता नहीं लगता. उनकी यह आदत नहीं थी कि मुझसे पूछे बिना एक दिन से ज्यादा के लिये कहीं जाते.
इन्द्रदेव : निःसन्देह यह आश्चर्य की बात है, परन्तु महाराज, वे कुछ नादान बालक तो हैं ही नहीं, होशियार हैं, बुद्धिमान हैं, बहादुर तथा नीति-कुशल हैं, अतएव उनका गायब होना जरूर किसी खास कारण से होगा.

महाराज : खयाल तो मेरा भी ऐसा है परन्तु न-मालूम क्यों उनके लिये मेरा जी बहुत बेचैन हो रहा है.
इन्द्र : यह केवल सच्चे प्रेम के कारण है.
महाराज : इसके अतिरिक्त एक बात और भी है.

इन्द्रदेव : वह क्या ?
महाराज : तुम लड़के हो, दामोदरसिंह के लिहाज तथा तुम्हारी लियाकत, हमदर्दी और प्रेम के कारण मैं तुम्हें अपने लड़के के बराबर ही समझता हूँ, इसके अतिरिक्त मेरे लड़के के तुम मित्र भी हो इसलिए भी तुम लड़के के बराबर ही हुए अतएव तुमसे कोई बात छिपाना पसन्द नहीं करता. आज रात को जबकि मैं अपने कमरे में बेखबर सो रहा था एक अजीब घटना देखने में आई.

इन्द्र० : (आश्चर्य प्रकट करता हुआ) वह क्या महाराज ?
महाराज : (कुछ सोच कर) मैं चाहता हूँ कि गोपाल भी आ जाय तो मैं इस किस्से को बयान करूँ.
इन्द्रदेव : क्या चिन्ता है जरा देर के लिए ठहर जाइये, गोपालसिंहजी भी आते ही होंगे, मैं यहाँ ड्योढ़ी तक उनके साथ-ही-साथ आया था, किसी कार्यवश वे महल में चले गये और मुझसे कह गये कि तुम महाराज के पास चलो मैं अभी आता हूँ ! (चौंक कर) वह देखिये वे भी आ गए !

इतने में ही गोपालसिंह भी आ गए, उनके लिए भी कुर्सी लाई गई और वे महाराज को प्रणाम करके कुर्सी पर बैठ गये.

महाराज : (गोपालसिंह से) तुम तो जानते ही हो कि आज तीन दिन से भैया राजा गायब हैं.
गोपाल : (हाथ जोड़ के) जी हाँ, आज तीसरा दिन है. बिना इत्तिला दिये कहीं चले जाने की आदत तो चाचाजी में नहीं थी. यह बड़े आश्चर्य की बात है. उनका पता लगाने के लिए मैं बहुत उद्योग कर रहा हूँ. परन्तु अभी तक मेरी मेहनत का कोई नतीजा नहीं निकला.
महाराज : इसके अतिरिक्त मैं रात की एक अजीब घटना का बयान करने वाला हूँ जिसके लिए तुम्हारा इन्तजार कर रहा था.
गोपाल : आज्ञा.

महाराज : रात को भैयाराजा की चिन्ता में डूबा हुआ मैं समय के कुछ पहिले ही सोने के लिये अपने कमरे में चला गया था. बहुत देर तक पड़ा तरह-तरह की बातें सोचता रहा पर अन्त में नींद आ गई और मैं बेखबर सो गया. दो पहर रात बीत जाने के बाद मेरी आँख खुली तो सोने वाले कमरे में अन्धकार पाया, सिर्फ पूरब तरफ वाली खिड़की खुली हुई थी और उसमें से आती हुई चन्द्रमा की चाँदनी फर्श के ऊपर पड़ रही थी जिससे कमरे के अन्दर इतना उजाला हो रहा था कि नित्य मिलने-जुलने वाले आदमी को मैं पहिचान सकता था. उसी चाँदनी के पास खड़ा मुझे एक आदमी दिखाई पड़ा. मुझे आश्चर्य हुआ कि इस समय छिप कर मेरे कमरे में कौन आया, अस्तु मैं बगल से तलवार लेकर उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे उस आदमी की तरफ बढ़ने लगा. मुझे अपनी तरफ बढ़ते देख वह आदमी चन्द्रमा की रोशनी में चला गया और इस ढंग से खड़ा हो गया कि चन्द्रमा की रोशनी बखूबी उसके चेहरे पर पड़ने लगी. मैंने साफ-साफ पहिचाना कि यह भैयाराजा हैं."

भैयाराजा को देख कर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ, मगर जब उनके पास जाने लगा तो उन्होंने हाथ के इशारे से मुझे मना किया और जब मैंने इसका सबब पूछा तो उन्होंने अपनी उँगली से फर्श के ऊपर लिख कर जवाब दिया, चाँदनी में काले हरूफ अच्छी तरह पड़े जाते थे, मैंने पढ़ा, यह लिखा हुआ था, "मैं जीता नहीं हूँ, मुझे दारोगा ने मार कर अपने मकान में गाड़ दिया है."

बस इतना लिख कर वह खिड़की के बाहर कूद गये. मैं बड़ी देर तक खड़ा-खड़ा उन बड़े-बड़े हरूफों को देखता रहा, इसके बाद झाँक कर खिड़की के बाहर देखा तो किसी की सूरत दिखाई नहीं पड़ी. मैं घबड़ाया हुआ चारपाई पर जाकर लेट रहा और इस खयाल से खिड़की की तरफ देखने लगा कि शायद वह सूरत पुनः दिखाई दे मगर फिर कुछ दिखाई न दिया और बहुत जल्द मुझे नींद आ गई. फिर जब आँख खुली तो सवेरा हो चुका था. जहाँ पर वे अक्षर लिखे गये थे वहाँ जाकर देखा तो फर्श पर एक अक्षर भी दिखाई न पड़ा तभी से इस समय तक मेरे दिल की विचित्र अवस्था हो रही है.

इस किस्से को सुन कर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ मगर जब गोपालसिंह की निगाह दारोगा पर पड़ी तो उन्होंने देखा कि उनके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है और बदन काँप रहा है. महाराज ने भी दारोगा की यह अवस्था देख आश्चर्य में आकर पूछा, "यह क्या, आपका शरीर इतना काँप क्यों रहा है ?"

दारोगा : मैं निवेदन कर चुका हूँ कि दो-तीन दिन से बुखार ने मुझे पीड़ित कर रक्खा है, मैं यहाँ आने के योग्य नहीं था परन्तु महाराज की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता था इसीलिए किसी तरह उठता-बैठता चला आया, इस समय पुनः सर्दी मालूम हो रही है, जान पड़ता है फिर बुखार चढ़ेगा.
महाराज : ठीक है, अच्छा तो इस समय आप घर जाइये; जब आपकी तबीयत ही ठीक नहीं है तो मेरे इस तरह तरद्दुद में आप किस तरह शरीक हो सकते हैं.

दारोगा : (हाथ जोड़ता हुआ) जो आज्ञा, तो मैं बिदा होता हूँ, जी ठिकाने होने पर पुनः हाजिर हो जाऊँगा मगर आपने जो कुछ रात का हाल बयान किया है उसे सुन कर तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ. मैं वास्तव में इस समय कुछ भी निश्चय नहीं कर सकता कि यह क्या मामला है.
आश्चर्य नहीं कि यह किसी ऐयार की ऐयारी हो और वह आपको अथवा भैयाराजा को धोखे में डालने के इरादे से किसी विशेष घटना की भूमिका बाँध रहा हो अथवा किसी ढंग का स्वप्न आपने देखा हो जो कि .....मैं क्या कहूँ कुछ समझ में नहीं आता. आश्चर्य तो यह है कि उसने बदनाम करने के लिए मुझी को चुना !

महाराज : आपको भला कोई क्या बदनाम करेगा ! मुझे कब विश्वास हो सकता है कि आप हम ही लोगों की जान के ग्राहक हो जायँगे ! नहीं-नहीं-नहीं, मुझे ऐसा खयाल कभी नहीं हो सकता, परन्तु यह मामला क्या है इसका पता जरूर लगाना चाहिये.
दारोगा : (जोर देने के ढंग पर) जरूर इसका पता लगाया जायगा, जरा मेरी तबीयत ठिकाने हो जाय तो मैं उद्योग करूँ.
महाराज : (इन्द्रदेव से) कहो बेटा, तुम इस बारे में क्या खयाल करते हो !

इन्द्र० : महाराज, मैं इस विषय में यकायक अपनी राय नहीं दे सकता हूँ, पर दुनिया में भूत-प्रेत तथा आत्मा के विषय में जो कुछ कहानियाँ लोग कहते हैं मैं उन्हें अवश्य मानता हूँ, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आदमी मरने के बाद नाश नहीं होता, इस पंचभौतिक स्थूल शरीर को छोड़ने के साथ ही आत्मा को जो अविनाशी और अमर है एक दूसरा सूक्ष्म शरीर मिल जाता है जिसे पाकर वह जीव इधर-उधर घूमा या उड़ा करता है अथवा अपने कर्मानुसार तब तक दुख-सुख का भोग करता है जब तक वह किसी ऊँचे पद को प्राप्त न करे अथवा पुनः पंचभौतिक शरीर में प्रवेश न करे अर्थात् जब तक उसका पुनर्जन्म नहीं होता तब तक उसकी वासनानुसार उसको तरह-तरह के तमाशे दिखाई दे सकते हैं और यदि मरते समय कोई प्रबल वासना उसके अन्दर रह गई हो तो निश्चय रूप से किसी के शरीर में प्रवेश करके अथवा यों ही छाया की तरह वह लोगों को दिखाई भी दे जाता है अथवा इसी ढंग पर कभी अपनी थोड़ी-बहुत वासना भी पूरी कर लेता है.

इस विषय में मेरे पिताजी ने मुझे बड़े-बड़े तमाशे दिखलाये हैं और बहुत-सी बातें सिखलाई भी हैं जिनको खयाल में रखते हुए मैं निश्चय रूप से कह सकता हूँ कि ईश्वर न करे यदि चाचाजी (भैयाराजा) की अकाल मृत्यु हुई है और किसी ने धोखा देकर उन्हें मार डाला है तो उनकी आत्मा बदला लेने की नीयत से इस रूप में जरूर दिखाई दे सकती है जैसाकि आपने रात को देखा. . अगर वह वास्तव में भैयाराजा जी की आत्मा है तो कम-से-कम एक-दो दफे आपको और जरूर दिखाई देगी क्योंकि भूत-प्रेत जब दिखाई देता है तब केवल एक ही दफे नहीं दिखाई देता, और अगर वह राजाभैया की आत्मा नहीं किसी ऐयार की है तो मैं बहुत जल्द इसका पता लगा कर आप से निवेदन करूँगा.
महा० : (आश्चर्य से) क्या तुम भूत-प्रेतादि का होना मानते हो ?

इन्द्र० : निःसन्देह ! जैसाकि मैं अर्ज कर चुका हूँ उन पर मेरा दृढ़ विश्वास है और मैंने इस सम्बन्ध में बहुत से खेल देखे भी हैं, यही नहीं, यदि महाराज देखा चाहेंगे तो मैं इस विषय के अपूर्व तमाशे दिखा सकूँगा.
महा० : मैं तो समझता हूँ कि तुम्हारे खयाल से भैयाराजा का मारा जाना सम्भव है.

इन्द्रदेव : जी सम्भव भी है, असम्भव भी है, दोनों बातों में से किसी पर मैं जोर नहीं दे सकता, दो दिन की मोहलत मुझे मिले इसके बाद मैं निश्चय करके जवाब दूँगा. (दारोगा की तरफ देख कर) भाई साहब, आपकी तबीयत अब बहुत खराब होती जाती है, आप अब पधारिये.
महा० : (दारोगा से) हाँ-हाँ, अब आप जाइये, फिर देखा जायगा.

दारोगा उठ खड़ा हुआ और सलाम करके धीरे-धीरे बीमारों की-सी नकल करता हुआ वहाँ से रवाना हुआ. उसके चले जाने के बाद इन्द्रदेव ने महाराज से कहा, "महाराज, यदि पुनः आपको वह जीव दिखाई पड़े तो आप उससे बातचीत चाहे जिस तरह की करें परन्तु उसे छूने या पकड़ने का उद्योग न करें, यही मेरी प्रार्थना है."
महा० : क्यों ?

इन्द्र० : सम्भव है कि वह कोई प्रेत हो और आपको धोखा देने के लिए भैयाराजा की सूरत बन कर आपके पास आया हो या पुनः भी आवे. जो लोग उपासक होते हैं और सन्ध्योपासन से विमुख नहीं होते उनके शरीर को प्रेत स्पर्श नहीं कर सकता और ऐसी अवस्था में अपने को भी उसे स्पर्श करने का उद्योग न करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से उसके पुनः आने की आशा नहीं रहती.

महा० : हाय, भैयाराजा के विषय मैं कोई भी निश्चय नहीं रख सकता और कोई भी पता नहीं लगा सकता ! जरूर यह हमारे मन्द भाग्य की निशानी है.....
इतना कहते-कहते उनकी आँखें डबडबा आयीं और आँसू की बूँदे टपाटप गिरने लगीं.

इन्द्र० : महाराज, आप हताश क्यों होते हैं ! मैं कह चुका हूँ कि दो –तीन दिन के अन्दर ही उनका ठीक-ठीक पता लगा कर आपको समचार दूँगा, मुझे विश्वास है और मैं जोर देकर कहता हूँ कि भैयाराजा जीते हैं परन्तु किसी कष्ठ में पड़ गये हैं.

महा० : (रूमाल से आँसू पोंछते हुए) अच्छा मैं तुम्हारे भरोसे पर और भी दो-तीन दिन किसी तरह बिताऊँगा.

इन्द्रदेव ने महाराज को बहुत समझाया और हर तरह दिलजमई करके वहाँ से विदा हुए. जाते समय वे कुँवर गोपालसिंह को भी अपने साथ लेते गये.

[७]

जमानिया राजमहल में भी शंकरसिंह के गायब होने से बड़ा ही कोलाहल मच गया था. उन्हें लड़के-लड़कियाँ, औरत-मर्द सभी कोई मुहब्बत की निगाह से देखते थे और इसीलिए औरतों को भी उनके गायब होने का बड़ा ही दुःख था परन्तु उनकी स्त्री के चेहरे पर विशेष दुःख की कोई निशानी नहीं पाई जाती थी और इसका औरतों को बड़ा ही आश्चर्य था.

यह नहीं कहा जा सकता कि शंकरसिंह की स्त्री रोती या कलपती न थी. नहीं, उनका रोना-धोना और बावेला मचाना बहुत बढ़ा-चढ़ा था, मगर लोगों का ख्याल यही था कि यह सब बनावटी है क्योंकि जब कोई औरत कभी धोखे या एकान्त में उन्हें देख लेती तब उनके चेहरे पर कोई गम की निशानी नहीं पाती थी बल्कि कई दफे तो लोगों ने उन्हें एकान्त में मुस्कराते हुए देखा था, इसीलिए औरतें खयाल करती थीं कि शंकरसिंह के गायब होने का उनको कोई दुःख नहीं है, परन्तु ऐसा क्यों है इसके विषय में निश्चय रूप से कोई भी कुछ नहीं कह सकती थी.

हाँ ताक-झाँक में सभी कोई लगे रहते थे और सभी औरतों की निगाह में वे चढ़ गई थीं.

राजा गिरधरसिंह की एक विधवा साली थी, यद्यपि बहुत नेक थी और सनातन धर्म के ऊपर उसका विश्वास था तथा दिन-रात का बहुत बड़ा हिस्सा उसका पूजा पाठ में बीतता भी था परन्तु उसमें एक दोष बहुत बड़ा था अर्थात् वह लोगों का ऐब ढूँढ़ने में बड़ी ही निपुण थी और छोटी-सी बात को झूठ-सच के सहारे बड़ी खूबी के साथ बढ़ा कर बयान करती थी. नाम उसका द्रौपदी था.

एक दिन आधी रात के समय राजा गिरधरसिंह की स्त्री अकेली अपने कमरे में पलंग पर लेटी हुई तरह- तरह की बातें सोच रही थी, चिन्ता के कारण निद्रादेवी ने उनका साथ छोड़ दिया और इसीलिये वे करवटें बदल-बदल कर समय बिता रही थीं. कमरे के अन्दर एक बहुत बड़ा फर्राशी पंखा चल रहा था जिसकी डोरी कमरे के बाहर बैठी हुई एक लौंडी के हाथ में थी.

करवटें बदलते-बदलते एक दफे राजरानी की निगाह दरवाजे पर जा पड़ी, देखा कि बीबी द्रौपदी खड़ी एकटक उनकी तरफ देख रही हैं. हाथ के इशारे से उन्होंने बीबी द्रौपदी को कमरे में आने की इजाजत दी और जब वे उनके पास आई तब पूछा, "क्या है जो तुम इस समय यहाँ ताक-झाँक लगा रही हो ?"

द्रौपदी : कुछ नहीं यों ही, मैं इस तरफ चली आई तो कमरे का दरवाजा खुला देख कर ठहर गई.
रानी : फिर भी कोई-न-कोई बात जरूर है, आओ मेरे पास बैठ जाओ।
द्रौपदी : (रानी साहेबा के पास बैठ कर) अभी तक आपको नींद नहीं आई, क्या बात है ?

रानी : मुझे तो तरह-तरह की चिन्ताओं ने दबा रखा है, अस्तु नींद न आये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, परन्तु तुम अभी तक जाग और इधर-उधर घूम रही हो यह बेशक आश्चर्य की बात है.
द्रौपदी : क्या आपकी चिन्ता से मुझे चिन्ता नहीं है ? क्या मैं आपके सुख-दुख की साथी नहीं हूँ ?
रानी : क्यों नहीं, क्यों नहीं, जरूर हो.

द्रौपदी : तो बस फिर समझ लीजिये कि जिस चिन्ता के कारण आप अभी तक जाग रही हैं उसी चिन्ता ने मेरी नींद भी उड़ा दी है. हाँ भेद इतना है कि आप चुपचाप पड़ी सोचा करती हैं और मैं इधर-उधर घूम-फिर कर समय बिताती हूँ और इससे बहुत-सा काम भी चल जाता है, कई छिपे हुए भेद भी खुल जाते हैं.
रानी : (आश्चर्य से) क्या आज भी कोई भेद की बात तुम्हें मालूम हुई ?
द्रौपदी : हाँ, आज एक अनूठी बात जरूर मेरे देखने में आई.

रानी : वह क्या ?
द्रौपदी : नींद न आने के कारण मैं चारपाई पर न ठहर सकी और उठ कर इधर-उधर घूमने लगी, अकस्मात् छोटी भाभी (भैयाराजा की स्त्री) के कमरे की तरफ जा निकली. देखा तो दरवाजा बन्द था जिससे मुझको बड़ा आश्चर्य हुआ. कान लगा कर इस बात की आहट लेने लगी कि देखें वे सोती हैं या जागती मगर कमरे के अन्दर किसी मर्द की आवाज सुन कर चौंक पड़ी, मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि उनके एकान्त के कमरे में इस आधी रात के समय कौन मर्द आया और किस राह से आया !

रानी : (बात काट कर) मर्द की आवाज !
द्रौपदी : जी हाँ, मर्द की आवाज, पहिले तो मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ मगर जब अच्छी तरह ध्यान देकर सुना तो शक जाता रहा क्योंकि उसे छोटी भाभी से बातें करते हुए मैंने सुना.
रानी : और वे बातें क्या थीं ?

द्रौपदी : सो तो मैं साफ-साफ न समझ सकी, हाँ कई छोटे-छोटे शब्द सुनने में आए और वे ये थे—"देखो मेरा भेद किसी पर खुलने न पावे", "तुम किसी तरह की चिन्ता न करना, मैं तुम्हारे पास बराबर आया-जाया करूँगा—" इत्यादि कई बातें मेरी समझ में आईं. जब मैंने उस मर्द को यह कहते सुना कि 'कल मैं फिर इसी समय आऊँगा, तुम खिड़की खुली रखना' तब मुझे विश्वास हो या कि जरूर वह कमन्द लगा कर खिड़की की राह से आया है.

फिर मेरे जी में आया कि किसी तरह इस मर्द को देखना चाहिये. यह सोचते ही मैं वहाँ से चल पड़ी और घूमती हुई भण्डार के पीछे वाले उस कमरे के पास चली गई जिसमें ठाकुरजी के जन्माष्ठमी का सामान रहता है. वहाँ बारामदे में खड़े होकर देखें तो छोटी भाभी की खिड़की साफ-साफ दिखाई देती है.
रानी : हाँ, वहाँ से बखूबी दिखाई देती है, अच्छा तब क्या हुआ ?

द्रौपदी : थोड़ी देर बाद मैंने एक आदमी को उस खिड़की की राह कमन्द लगा कर नीचे उतरे देखा. नीचे की ओर दो आदमी उसके साथी खड़े थे उन्हें लेकर वह बाग में घुस गया, फिर न-मालूम कहाँ गया और क्या हुआ. उसके बाद मैं घूमती फिरती तुम्हारे पास चली आई.

बीबी द्रौपदी की अनहोनी बातें सुन रानी साहेबा उठ कर बैठ गईं और आश्चर्य के साथ द्रौपदी का मुँह देखने लगीं. कुछ देर के बाद वे फिर बोलीं—

रानी : यह तुम सच कह रही हो या किसी स्वप्न की बातें मुझे सुनाती हो ? भला भैयाराजा की स्त्री और किसी गैर आदमी से बातें करे, सो भी अकेले कमरे में और दरवाजा बन्द करके ! बेशक वह कोई गैर आदमी था तभी तो कमन्द लगा कर चोरी से आया और गया.

द्रौपदी : (रानी का पैर छू कर) मैं तुम्हारी शपथ खाकर कहती हूँ कि मैंने एक शब्द भी तुमसे झूठ नहीं कहा.
रानी : अच्छा तो मैं महाराज से इसका जिक्र करूँ ? मुझे झूठा तो नहीं बनना पड़ेगा ?

द्रौपदी : अगर वह मर्द जो कह गया है कि कल मैं इसी समय फिर आऊँगा अपने कोल का सच्चा निकला तो तुमको कदापि झूठा न बनना पड़ेगा.
रानी : इसका क्या मतलब ?

द्रौपदी : यही कि अगर कल वह न आया तो आज जो कुछ मैंने सुना है उसकी सच्चाई के लिए मैं किसकी गवाही दे सकूँगी !

रानी : (कुछ सोच कर) खैर देखा जायगा, तुम बाहर से किसी लौंडी को तो बुलाओ.

सुनते ही द्रौपदी बाहर चली गई और एक लौंडी को बुला लाई, रानी साहेबा ने उसे आज्ञा दी कि तू महाराज के पास जाकर मेरी तरफ से निवेदन कर कि मैं इसी समय महाराज का दर्शन किया चाहती हूँ. अगर वे निद्रा में हो तो किसी अच्छे ढंग से उन्हें जगा दीजियो'.

'जो आज्ञा' कह कर लौंडी वहाँ से चली गई और उसके बाद रानी साहेबा की आज्ञानुसार द्रौपदी भी अपने कमरे में चली गई।

थोड़ी देर बाद महाराज महल में आये और दो घण्टे तक रानी साहेबा के पास बैठे, इस बीच क्या बातें हुई सो कोई नहीं जानता हाँ दूसरे दिन इस बात की तैयारी जरूर हुई कि भैयाराजा की स्त्री के पास जो आदमी आने वाला है उसकी बातें सुननी चाहिए और उसे गिरफ्तार भी करना चाहिये.

[८]

आधी रात का समय है और चारों तरफ अँधकार छाया हुआ है शहर के गली-कूचों में अच्छी तरह सन्नाटा हो रहा है और सिवाय पहरा देने वालों के और किसी आने-जाने वाले की सूरत दिखाई नहीं पड़ती. निश्चय है कि मकानों के अन्दर रहने वाले भी गहरी नींद में पड़े हुए खुर्राटा भर रहे होंगे, मगर तिलिस्मी दारोगा की आँखों में नींद नहीं है. वह अपने खास कमरे में एक गावतकिये के सहारे बैठा हुआ तरह-तरह की चिन्ता कर रहा है, सामने एक मोमी शमादान जल रहा है और लिखे तथा शादे बहुत-से कागज फैल रहे हैं, कभी-कभी वह उठाकर किसी कागज को देख लेता है और जमीन पर रख तकिये के सहारे लुढ़क जाता है.

इसी समय दरबान ने आकर इत्तिला दी कि 'गदाधरसिंह आये हैं और आपसे मिला चाहते हैं'.
"उन्हें मेरे पास ले आओ" कह कर दारोगा चैतन्य हो के बैठ गया, फैले हुए कागजों में से कई कागज उठा कर उसने गद्दी के नीचे दबा दिये और भूतनाथ के आने का इन्तजार करने लगा.

थोड़ी देर में भूतनाथ भी आ पहुँचा जिसे देखते ही दारोगा साहब उठ खड़े हुए, साहब-सलामत के बाद बड़ी खातिर से भूतनाथ को अपने पास बिठाया और बातचीत करने लगे.
भूत० : आपने मुझे 'बसन्त बाग' में बुलाया था मगर बुखार आ जाने के कारण मैं समय पर न आ सका, क्षमा कीजियेगा. कहिये क्या काम था ?

दारोगा : (आश्चर्य से) मैंने तो आपको बसन्त बाग में नहीं बुलाया था !
भूत० : तो क्या जैपाल ने अपनी तरफ से यह बात कही थी ?
दारोगा : जैपाल ने ! मगर जैपाल आपके पास क्यों गया ?

भूत० : (मुस्कुराता हुआ) वही बेहोशी की दवा से भरी हुई अनूठी डिबिया सुंघाने के लिये ! मगर यह आपको भला क्या सूझी ? वह डिबिया किस मतलब से आपने भेजी थी ?
दारोगा : (आश्चर्य से) आप क्या कह रहे हैं सो कुछ भी मेरी समझ में नहीं आता ! न मैंने जैपाल को आपके पास भेजा था और न कोई डिबिया ही भेजी. यह कब की बात है ?

भूत० :यह अभी परसों ही का जिक्र मैं कर रहा हूँ जब यहाँ से जमना, सरस्वती और इन्दुमति को ले गया था.
दारोगा : नहीं कदापि नहीं !
भूत० : (घबराहट के साथ) तब मालूम होता है किसी ऐयार ने मुझे धोखे में डाला या खुद जैपाल ने मुझसे छेड़खानी आरम्भ की है.

दारोगा : पहिले आप अपना खुलासा हाल बयान कर जाइये तब मैं कुछ सोचूँ और राय दूँ.
दारोगा की बात सुन भूतनाथ ने वह कुल हाल बयान कर दिया जो कि हम ऊपर लिख आये हैं अर्थात् जमना, सरस्वती और इन्दुमति को मारते समय यकायक जैपाल का जा पहुँचना और भूतनाथ को खून करने से रोक दारोगा की तरफ से संदेशा और बेहोशी की डिबिया देना जिसे सूँघ कर भूतनाथ का बेहोश हो जाना और होश में आने के बाद जमना, सरस्वती और इन्दुमति को मार कर गड्हे में दबा देना और फिर यकायक कई सवार आते हुए दिखाई देने के कारण खुद भाग जाना और जैपाल को भी भगा देना इत्यादि जिसे सुनकर दारोगा घबड़ा गया और काँपती हुई आवाज में भूतनाथ से बोला, "यह बड़ा गजब हुआ.

किसी गहरे ऐयार ने तुम्हें धोखा दिया और ताज्जुब नहीं कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति का भेद भी उसने मालूम कर लिया हो ! (ऊँची सांस लेकर) हाय, मैं बड़ी मुसीबत में फँस गया हूँ ! भूतनाश, बेशक तुम्हारी बदौलत मैं मुसीबत का शिकार हुआ चाहता हूँ. यहाँ जो कुछ दुर्घटना हो गई है वह तुम्हारी घटना से भी बढ़ कर भयानक है ! मालूम होता है कि हम और तुम दोनों ही किसी मुसीबत में फँसा चाहते हैं और निःसन्देह वह सब तुम्हारी ही बदौलत है !

दारोगा यह कहना कि 'यह सब तुम्हारी ही बदौलत है' भूतनाथ को बहुत ही बुरा मालूम हुआ मगर अभी बिगड़ने का मौका न देख कर व तरह दे गया और बोला, 'भला कहिए तो सही, यहाँ क्या मामला हुआ ?"

दारोगा : जब तुम जमना, सरस्वती और इन्दुमति को ले गये तो मैंने भैयाराजा को मार डालना तय किया परन्तु जब मैंने उन्हें उस मकान में ढूँढ़ा तो एक ठिकाने मुर्दा पाया. उन्होंने अपने हाथ से कलेजे में छुरी मार कर जान दे दी थी. खैर मैं उन्हें उठा कर वहाँ से ले गया और एक ठिकाने जमीन के अन्दर गाड़ कर निश्चिन्त हो गया. उसके बाद रात को मैंने भूत की सूरत में देखा और उसी रात हमारे महाराज को भी वे दिखाई दिये.

भूत० : अरे यह तो आश्चर्य की बात आप कह रहे हैं !

दारोगा : हाँ मैं खुलासा कहता हूँ सुनो.
इतना कह कर दारोगा ने जो कुछ रात के समय खुद देखा था और महाराज ने उन्हें बुला कर जो कुछ कहा था वह सब पूरा-पूरा बयान किया जिसे बड़े आश्चर्य के साथ भूतनाथ ने सुना और अन्त में कहा.
भूत० : दारोगा साहब, कम-से-कम मुझे तो इस बात का विश्वास नहीं होता कि भैया राजा ने भूत होकर आप दोनों के साथ यह दिल्लगी की है.

दारोगा : तो क्या मैं झूठ कह रहा हूँ ?
भूत० : यह तो मैं नहीं कह सकता कि आप झूठ कह रहे हैं मगर...
दारोगा : मगर क्या ?
भूत० : अच्छा आप पहिले यह बताइये कि आपने भैयाराजा को कहाँ गाड़ा था ?

दारोगा : सो तो मैं नहीं बता सकता, क्योंकि यह बड़ा ही नाजुक मामला है.
भूत० : ऐसा, मगर इससे तो मालूम होता है कि आप मुझसे कपट रखते हैं.
दारोगा : नहीं-नहीं, सो बात नहीं है, सिर्फ इतना ही है कि ऐसे नाजुक मामले को मैं किसी दूसरे पर प्रकट नहीं किया चाहता.

भूत० : ठीक ही है, खैर जब मुझे गैर की पदवी मिली तो मुझे भी आपसे हर वक्त चौकन्ना ही रहना चाहिये. अच्छा तो अब आप जैपाल को बुलवाइये ताकि मैं अपने विषय में आपके सामने ही उससे बातचीत करूँ.
इसी समय आहट देता हुआ दरबान हाजिर हुआ और बोला, "जैपालसिंहजी आये हैं और हाजिर हुआ चाहते हैं."

दारोगा : लो जैपाल भी आ ही गया. अच्छा उसे जल्दी आने दो.
बात–की-बात में जैपाल आ पहुँचा और दारोगा तथा भूतनाथ को सलाम कर बैठ गया.

भूत० : (जैपाल से) कहो मिजाज तो अच्छा है ?
जैपाल : ईश्वर की कृपा से अच्छा है.

भूत० : उस दिन तो मुझे अच्छा धोखा दिया, डिबिया सुँघा कर सब चौपट ही कर चुके थे.
जैपाल : (आश्चर्य से) कैसी डिबिया !

भूत० : वही जो दारोगा साहब की तरफ से तुम मेरे पास ले गये थे, जिसे सूँघ कर हम दोनों बेहोश हो गये.
जैपाल : मेरी समझ में नहीं आता कि आप क्या कह रहे हैं ! मैं कोई डिबिया ले के आपके पास नहीं गया ! (दारोगा की तरफ देख कर) ये क्या कह रहे हैं आपने कुछ समझा ?
दारोगा : मैं सब-कुछ सुन चुका हूँ इनको किसी ऐयार ने उल्लू बनाया है और उसकी जलन ये हम लोगों पर निकालना चाहते हैं.

इतना कहकर दारोगा ने सब हाल बयान किया जो भूतनाथ ने जयपाल के विषय में उससे बयान किया था. जैपाल को सुन कर बड़ा ही दुःख हुआ और झुँझला कर कहा, "उस कम्बख्त ऐयार को मेरी ही सूरत बन कर गदाधरसिंह को धोखा देना था ! फिर जहाँ तक मैं समझता हूँ उसने इतना ही नहीं किया होगा कि गदाधरसिंह को सिर्फ बेहोश करके चला जाए, बल्कि उसने और भी कोई गहरी कार्रवाई जरूर की होगी."

भूत० : अब तो मुझे भी ऐसा ही खयाल होता है.
इसके बाद बहुत देर तक उन तीनों में बातचीत होती रही और अन्त में दारोगासाहिब ने चोबदार को हुक्म दिया कि अस्तबल में से तीन घोड़े तैयार करा कर बहुत जल्द मँगावे थोड़ी ही देर में घोड़े भी आ गए और दारोगा साहब, जैपाल तथा भूतनाथ उन घोड़ों पर सवार होकर उत्तर की तरफ रवाना हुए. उस समय रात अनुमान घण्टे भर के बाकी रह गई थी.

शहर से बाहर निकल जाने के बाद तीनों ने अपने-अपने घोड़ों की चाल बढ़ाई और तेजी के साथ जंगल की तरफ जाने लगे, यहाँ तक कि सवेरा होते-होते तीनों आदमी वहां जा पहुँचे जहाँ भूतनाथ ने जमना, सरस्वती और इन्दुमति का खून किया था या जहाँ पर नकली जैपाल भूतनाथ से जाकर मिला था.

तीनों आदमी घोड़े से नीचे उतर पड़े और अपने-अपने घोड़े लम्बी बागडोरों के सहारे पेड़ों के साथ बाँध कर चरने के लिये छोड़ दिये. इसके बाद भूतनाथ दारोगा और जैपाल को साथ लिए हुए उस जगह पहुँचा जहाँ उसने जमना, सरस्वती और इन्दुमति की लाश गड्हे के अन्दर डाल कर मिट्टी और कतवार से ढाँक दी थी.

तीनों ने मेहनत कर मिट्टी हटाई और उसके अन्दर से उन तीनों लाशों को निकाल कर बाहर किया. यद्यपि वे लाशें अभी तक सड़ी न थीं तथापि फूल गई थीं और उनमें बू पैदा हो गई थी. उन तीनों लाशों के सर भी जो उन्हीं के साथ गाड़ दिए गये थे और अब लाशों के साथ बाहर निकल गये थे अपनी असली हालत में न थे अर्थात् चेहरे पर रंग-रोगन जो ऐयारी के ढंग पर चढ़ाया हुआ था जगह-जगह से बिगड़ कर नीचे से असली रंग झलक मार रहा था जिसे देखते ही भूतनाथ चौंका और उसके मुँह से बेतहाशा ये शब्द निकल पड़े, "हाय, क्या गजब हो गया !!"

तीनों घोड़ों के तोशेदान में पानी की बोतल भरी हुई मौजूद थी जिसे भूतनाथ ने निकाला और उससे तीनों मुर्दों के चेहरे साफ करने के बाद एक लम्बी साँस के साथ दारोगा की तरफ देख कर कहा, "ये ही जमना, सरस्वती और इन्दुमति तुमने मेरे हवाले की थीं ?"

दारोगा : (घबराहट और आश्चर्य के साथ) मैं खुद ताज्जुब कर रहा हूं कि यह क्या मामला है ! मैंने जो कुछ किया उसमें तो बराबर तुम भी शरीक ही थे.
भूत० : हाय-हाय, मेरे इन होनहार नौजवान शागिर्दों को तुम्हें मेरे ही हाथ से मरवाना था !
दारोगा : इसमें मेरा क्या कसूर है ? मुझे तुम क्यों बदनाम करते हो ?

भूत० :तुम्हारा नहीं तो और किसका कसूर है ? तुम्हीं ने तो जमना, सरस्वती और इन्दुमति को मेरे हवाले किया !!
दारोगा : अगर इस बारे में मैंने धोखा खाया तो तुमने क्यों नहीं पहिचान लिया कि वे वास्तव में जमना, सरस्वती और इन्दुमति नहीं हैं बल्कि तुम्हारे ही शागिर्द हैं. इसके अतिरिक्त इस बात को सोचो कि तुम्हारे शागिर्दों को जमना, सरस्वती, और इन्दुमति बनने की क्या जरूरत थी ? और अगर उन्होंने ऐसा किया भी था तो तुम पर यह भेद क्यों नहीं खोल दिया ? या जिस समय तुम इनका सर काटने लगे थे उस समय ही तुमको क्यों नहीं कह दिया कि हम लोगों को मत मारो हम तुम्हारे शागिर्द हैं.

भूत० : मेरी समझ में नहीं आता कि उन लोगों ने ऐसा क्यों नहीं किया, मगर सम्भव है कि इसमें भी कुछ तुम्हारी ही कारीगरी हो !!
दारोगा : बड़े अफसोस की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार ऐयार होकर ऐसी बात जुबान से निकालते हो !

भूत० : (अपना माथा पीटकर) हाय मैं क्या कहूँ और क्या करूं ! मैं तो बर्बाद हो गया ! इन बेचारे नौजवान शागिर्दों का मुझे बड़ा ही भरोसा था. अच्छा खैर तुमने नहीं तो इस मामले में इस (उँगली से इशारा करके) जैपाल ने जरूर कोई कार्रवाई की है.
जैपाल० : ठीक है, तुम्हें अपनी बेवकूफी की झुँझलाहट निकालने के लिए मैं तो मौजूद ही हूँ !

भूतनाथ ने जैपाल की बात का कुछ भी जवाब न दिया और उन लाशों के पास बैठ सर पर हाथ रख के कुछ सोचने लगा. इस समय उसकी आँखों से आँसू की बूँदें टपाटप गिर रही थीं.
बहुत देर तक सोचने और गौर करने के बाद भूतनाथ ने सर उठाया और रूमाल से आँखें पोंछने के बाद दारोगा की तरफ देख कर कहा, "हाँ, कुछ-कुछ बात समझ में आती है."

दारोगा : (उत्कंठा के साथ) सो क्या ? जरा मैं भी सुनूं !

भूत० : सो अभी मैं कुछ भी न कहूँगा.
दारोगा : तब कब कहोगे ?
भूत० : जब मैं भैयाराजा की लाश की जाँच करके देख लूंगा कि उसमें भी तो धोखा नहीं है.
भूतनाथ की बात ने दारोगा के दिल और दिमाग में खलबली पैदा कर दी और वह सोचने लगा कि ईश्वर न करे अगर उस लाश में भी कहीं इसी तरह का धोखा निकला तो बड़ा ही अन्धेर हो जायेगा.

भूतनाथ ने दारोगा के चेहरे का रंग उड़ा हुआ और उसे कुछ सोचते हुए देख कर फिर कहा, "दारोगा साहब, आश्चर्य नहीं कि राजाभैया की लाश में भी इसी तरह कोई धोखा हो, और अगर वास्तव में ऐसा ही निकला तब मैं आपको बताऊँगा कि इस समय क्या सोचता था और क्या निश्चय किया. अब मैं अपने दिल पर पत्थर रख कर इन लाशों को गाड़ देता हूँ पर फिर देख लूँगा, जिसने मेरे साथ ऐसी चालाकी की है उसे मैं छठी का दूध न याद दिला दूँ तो मेरा नाम गदाधरसिंह नहीं !!"

इतना कहकर भूतनाथ ने दारोगा और जैपाल की मदद लेकर उन लाशों को पुनः उसी गडहे में दबा दिया और ऊपर से अच्छी तरह मिट्टी वगैरह डाल कर दारोगा से कहा, "अब चलिये मैं भी आपके साथ आपके घर चलता हूँ जहाँ मुझे आप भैयाराजा की लाश दिखाइये."

दारोगा : घर चलने में तो कोई हर्ज नहीं, आप उसे भी अपना ही घर समझ कर खुशी से चल सकते हैं. मगर मैं फिर कहता हूँ कि आपको उस जगह नहीं ले जा सकता जहाँ भैयाराजा को गाड़ा है.
भूत० : जैपाल को आप उस जगह ले जा सकते हैं ?
दारोगा : हाँ, क्योंकि जैपाल को मैं अपने गुप्त कार्यों में बराबर साथ रखता हूँ. मगर आप इसके लिए तरद्दुद न कीजिए, बेहतर होगा कि आप आज का दिन किसी दूसरे काम में बिताइये और कल मेरे पास आइये, इसी बीच मैं भैया राजा की लाश को अच्छी तरह देख और जाँच लूँगा.

दारोगा की बात से भूतनाथ बहुत ही चिढ़ गया मगर उसने अपने दिल का भाव प्रकट न किया, फिर भी उसमें और दारोगा में जो दोस्ती थी आज एक मामूली पेंच पड़ जाने के कारण जाती रही और दोनों ही के दिल में एक तरह की गाँठ पड़ गई.

भूतनाथ ने मान लिया कि इस धोखेबाजी के मामले में दारोगा जरूर शरीक है या यह बिलकुल दारोगा का काम है, और इसी तरह दारोगा समझने लगा कि भूतनाथ हमसे चालबाजी खेल कर अपना कोई काम निकाला चाहता है या ताज्जुब नहीं कि इसी कारण मेरे साथ दुश्मनी का बर्ताव करके मेरा भेद खोल दे. खैर वह सब जो कुछ भी हो इस समय तो भूतनाथ ने अपने दिली जोश को दबा कर दारोगा की बात मान ली और पैदल ही उत्तर की ओर रवाना हो गया. दारोगा और जैपाल भी घोड़े पर सवार होकर शहर की तरफ चले और खाली घोड़े की लगाम थामे हुए जैपाल उसे अपने घोड़े के साथ ले चला.

[९]

संध्या का समय है. सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं. हवा में किसी कदर खुनक है तो सही परन्तु वह भली मालूम होती है. ऐसे समय में हम नहीं कह सकते कि तिलिस्मी दारोगा साहब किस नीयत से अपने मकान के पीछे वाले नजरबाग में टहल रहे हैं, मगर इनकी ऐसी आदत न थी और इन्हें लोगों ने संध्या के समय दिल बहलाने के लिए किसी बाग में टहलते हुए बहुत कम ही देखा होगा.
पर आज गौरमामूली तौर पर उसका टहलना बेसबब नहीं है, उसका घड़ी-घड़ी ठण्डी साँसें खींचना और घबराहट के साथ इधर-उधर देखना कहे देता है कि इस समय वह किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो रहा है, साथ ही इसके बीच-बीच में उसके बदन में कम्प तथा रोमांच के हो आने से यह भी विश्वास होता है कि वह किसी कारण से भयभीत हो रहा है.

केवल इतना ही नहीं, एक दफे उसने बड़ी बेचैनी के साथ दाहिने हाथ से अपना माथा भी ठोंका जिससे जाना जाता है कि उसने जरूर कोई बुराई का काम किया है जिसके लिए अब पछताता और दिल में कहता है कि कहाँ की शामत आई थी जो मैंने यह काम किया !

इसी तरह के बहुत-से परेशानी और घबराहट के चिन्ह प्रकट करता हुआ दारोगा बड़ी देर तक बेचैनी से कदम उठाता अपने बाग में टहलता और थोड़ी-थोड़ी देर में सर उठा कर फाटक की तरफ देखता रहा. लगभग आधे घण्टे के बाद जैपालसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जो कदम बढ़ाये हुए उसी की तरफ आ रहा था. उसके नजदीक पहुँचते ही दारोगा ने उससे कहा, "ओफ, तुमने आने में बहुत विलम्ब कर दिया !"
जैपाल : (गौर से दारोगा के चेहरे की तरफ देख के) नहीं तो, मगर क्यों ? और इस समय आप बहुत ही उदास और दुखित भी जान पड़ते हैं.

दारोगा : मेरे दोस्त, इस समय मेरी अवस्था बहुत ही बुरी हो रही है और मैं अपने किये पर बहुत पछता रहा हूँ. सच तो यह है कि आज मैं अपनी जिन्दगी से निराश हो बैठा हूँ जिसके अंधकारमय कैदखाने में तुम ही एक टिमटिमाते हुए चिराग हो, टिमटिमाते हुए मैं इसलिए कह रहा हूँ कि मेरी जिन्दगी के साथ तुम्हारी जान का भी बहुत बड़ा सम्बन्ध है.
जैपाल : बेशक ऐसा तो है ही.
दारोगा : और मुझे इस समय केवल एक तुम्हारा ही भरोसा रह गया.

जैपाल : आखिर मामला क्या है सो तो कहिये ? क्या भैयाराजा की लाश में कुछ धोखा निकला ?
दारोगा : कुछ क्या बल्कुल ही धोखा निकला, जिसे मैंने भैयाराजा की लाश समझ जमीन के अन्दर गाड़ दिया था, वह वास्तव में मेरे ही एक ऐयार की लाश निकली और मैं कुछ नहीं कह सकता कि कब और किस ढंग से उनकी बदली हुई, क्योंकि मैं यह भी नहीं कह सकता कि वे भैयाराजा वास्तव में भैयाराजा थे या नहीं जिन्हें मैंने अपने मकान में पाकर फंसाया था !

जैपाल : और फिर यह भी कोई बात है कि आप ही का ऐयार भैयाराजा बन कर आवे और आपको ही डाँट बताये !
दारोगा : हाँ, यह भी कदापि नहीं हो सकता !
जैपाल : मगर यह बात वास्तव में बहुत ही बुरी हुई ! उधर जमना, सरस्वती, इन्दुमति के मामले में किसी ने धोखा दिया और इधर भैयाराजा के बारे में...

दारोगा : मेरी कुछ समझ ही में नहीं आ रहा है कि यह बात क्योंकर हुई ! क्या मेरा कोई दुश्मन मेरे घर में घुस आया और मेरे ही घर में से उन सभों को बदल कर ले गया ? मगर यह भी एक असम्भव-सी बात है, मेरे भूलभुलैये मकान की किसी दुश्मन को खबर ही क्या हो सकती है !

जैपाल : अब यह तो न कहिये, आपके मकान को एक ही रात में कुछ विश्वकर्मा ने तो बना ही नहीं दिया है, आखिर राज-मजदूरों ही ने तो बनाया है !
दारोगा : हाँ, यह तो ठीक कहते हो. खैर, परन्तु यह बताओ कि अब किस तरह जान बचे, किस तरह दुश्मन का पता लगे, और किस तरह इस मामले का सच्चा हाल मालूम हो !

जैपाल : यह कोई मामूली बात नहीं है, इसके लिए बहुत कुछ मेहनत करनी पड़ेगी तब कहीं दुश्मन का पता लगेगा. खैर इस काम को तो पीछे रखिये पहिले अपने को इलजाम से बचाने की फिक्र करिये, मेरा तो अब खयाल हो रहा है कि महाराज ने जो सूरत देखी थी वह भूत न था बल्कि वास्तव में भैयाराजा ही थे और आपको जहन्नुम में मिलाने के लिए कोई नाटक कर रहे हैं !

दारोगा : बेशक ऐसा ही है और मुझे भी तो भूत दिखाई दिया था वे जरूर असली राजाभैया ही रहे होंगे.
जैपाल : बेशक वह भी भैयाराजा ही होंगे, अपना नाटक दिखाकर किसी अनूठे ढंग से प्रकट हुआ चाहते हैं.
दारोगा : फिर अब क्या किया जाय ?

जैपाल : मैं क्या बताऊँ, आपसे ज्यादे इस विषय में और कौन सोच सकता है ? हाँ, यह कह सकता हूँ कि मुझे जो कुछ आज्ञा दीजिये उसे करने के लिए मैं तैयार हूँ.
दारोगा : (कुछ सोच कर) चाहे जो कुछ भी हो मगर भैयाराजा मुझे महाराज के सामने दोषी नहीं ठहरा सकते. यों उन्हें अख्तियार है चाहे स्वयं अपने हाथ से मेरा सर काट डालें मगर यह जबर्दस्ती के सिवाय इन्साफ का काम कदापि न कहला सकेगा, और हमारे महाराज जो इन्साफ के लिए जान देते हैं बेइन्साफी का काम कदापि न होने देंगे !

जैपाल : (आश्चर्य से) क्यों साहब, यह क्या बात आपने कही ? भैयाराजा अगर जीते हैं तो आपको दोषी क्यों न ठहरा सकेंगे ?
दारोगा : भैयाराजा को यह मालूम ही नहीं होगा कि मैंने उन्हें मुर्दा समझ कर बदनीयती के साथ जमीन के अन्दर गाड़ दिया है.

जैपाल : हाँ ठीक है, वह बात उन्हें भला कैसे मालूम हो सकती है ! मगर हां, इस बात का सवाल जरूर हो सकता है कि आखिर उस लाश को जो उन्हीं की सूरत की-सी थी आपने क्या किया ? अगर आपकी नीयत ठीक थी तो आपने हल्ला क्यों न मचाया, प्रकट क्यों नहीं किया, और महाराज से यह हाल क्यों नहीं कहा, उस बात को छिपाया क्यों ?

दारोगा : ओफ ! यह दूसरी बात है, इसके लिए समय पर काफी जवाब हो सकता है. और इसके लिए मैं इनकार कर सकता हूँ कि वहाँ अर्थात् मेरे घर में कोई भी लाश नहीं पाई गई, भैयाराजा स्वयं भाग के चले गये, दूसरे की तो बात ही दूर है खुद भैयाराजा ही मुझे किसी तरह कायल नहीं कर सकते और न वे यही बता सकते हैं कि मैंने उनके साथ किसी तरह की बेअदबी की. हाँ एक बात जरूर है वे इतना कह सकते हैं कि उन्हें उस भूलभुलैया जैसे मकान में फँसा कर हम चले गये और फिर लौट कर नहीं आये ! सो खैर इसके लिए भी मैं कोई जवाब सोच लूँगा.

जैपाल : अगर यही बात है तो फिर आप इतना डर क्यों रहे हैं ?

दारोगा : हाँ डरता जरूर हूँ, मेरी हिम्मत टूटी जाती है और भैयाराजा के नाममात्र से ही मेरा कलेजा उछलने लगता है.
जैपाल : जिसका सबब यही होगा कि आप किसी-न-किसी बात में जरूर लाजवाब हो जायेंगे, और नहीं तो सिर्फ इन्हीं बातों का जवाब देना आपके लिए कठिन हो जायगा कि भैयाराजा के असली मामले की महाराज को खबर क्यों नहीं की ? यह क्यों नहीं जाहिर किया कि वे आपके बाग में आये थे और जमना, सरस्वती तथा इन्दुमति को आपकी कैद से छुड़ाने की उन्होंने फिक्र की थी—इत्यादि.

दारोगा : हाँ यह बात जरूर खुटके की है ! (कुछ सोच कर) अगर तुम्हारी राय हो तो राजा साहब को मैं इस मामले की खबर कर दूँ और कुछ अपनी तरफ से भी समझा-बुझा दूँ, तुम जानते ही हो कि वे निरे भोलेनाथ हैं. (रुक कर और चौंक कर) हाँ एक बात तो मैंने तुमसे कही ही नहीं.
जैपाल : वह क्या ?

दारोगा : मुझे खबर मिली है कि आज जनाने महल के पीछे वाले नजरबाग में गुप्त रीति पर सख्त पहरे का इन्तजाम हो रहा है, पहरा देने वाले इस तरह छिप कर पेड़ों की आड़ में बैठेंगे कि बाग के अन्दर आने वाला कोई आदमी उन्हें देख न सकेगा पर वे बाग के अन्दर आने वाले को बखूबी देख और गिरफ्तार कर सकेंगे.
जैपाल :यह खबर आपको किसने दी ?
दारोगा : उन्हीं पहरे पर मुकर्रर किए गए आदमियों में से एक ने यह खबर सुनाई है.

जैपाल : हाँ वे सब तो आपके हितैषी ही हैं, मगर यह भी कुछ मालूम हुआ कि ऐसा इन्तजाम करने का सबब क्या है ?
दारोगा : सो तो ठीक मालूम नहीं हुआ मगर अन्दाज से हम समझते हैं कि जिस तरह भैयाराजा भूत बन कर मुझे और महाराज को दिखाई दिये हैं उसी तरह भूत बन कर शायद महल में भी गये होंगे और यकायक भूत की तरह गायब न हो सके होंगे, किसी ने भागते हुए देख लिया होगा और समझा होगा कि यह कोई आदमी है, या किसी तरह की कोई बात हुई होगी जिस पर महाराज ने यह समझकर कि आज पुनः आवेगा गिरफ्तार करने के लिए ऐसा इन्तजाम किया होगा.

जैपाल : हाँ, जरूर कोई ऐसी ही बात हुई होगी और ऐसी अवस्था में आपको ऐसा इन्तजाम करना चाहिए कि जब वह आदमी गिरफ्तार हो (ईश्वर करे व भैयाराजा ही हों) तो उसे महाराज के पास पहुँचाने के बदले गिरफ्तार करने वाले सीधे आप ही के पास पहुँचा दें. अगर वह वास्तव में भैयाराजा निकले तो फिर कहना ही क्या है, आपके पौ बारह हैं !!

दारोगा : हाँ, यह तुमने अच्छी सलाह बताई और इस काम को मैं बखूबी कर भी सकूँगा. इस तरह पर अगर राजाभैया हाथ में आ गए तब तो मेरे समान इस दुनिया में कोई नहीं, लेकिन अगर ऐसा न हुआ तो फिर अपने लिए बहुत कुछ चिन्ता करनी पड़ेगी. अच्छा अब मैं तुमसे थोड़ी-सी बातें और करूँगा मगर यहाँ नहीं.

इतना कहकर दारोगा ने जैपाल का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने साथ लिए हुए मकान की तरफ चला.

[१०]

जनाने महल के पीछे वाले नजरबाग में आज दिन ही से गुप्त पहरे का इन्तजाम हो रहा है, महारानी ने भैयाराजा की स्त्री के विषय में जो कुछ महाराज को इत्तिला दी थी उसके लिए महाराज को बड़ी चिन्ता हो गई थी और उन्हें इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उनके महल में कोई गैर आदमी आ घुसे और फिर अछूता चला जाय.

उन्होंने अपने दिल में इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि चाहे जिस तरह भी हो उस आदमी को जरूर गिरफ्तार करना चाहिए जो महल के अन्दर भैयाराजा की स्त्री के पास गया था, सम्भव है कि उसके गिरफ्तार हो जाने से भैयाराजा का भी कुछ पता चल जाय. अस्तु इस काम के लिए उन्होंने कई दिलावर और होशियार आदमी पहरे पर मुकर्रर कर दिये तथा उन्हें ताकीद कर दिया कि वे बहुत ही गुप्त ढंग पर तथा पेड़ों और झाड़ियों की आड़ में छिप कर पहरा दें तथा बाग या महल के अन्दर आते समय तो किसी को न रोकें परन्तु लौट कर जाते समय अवश्य गिरफ्तार कर लें.

इसके अतिरिक्त महाराज ने खुद भी उसी बाग में एक खास जगह पर रह कर रात बिताने का इरादा कर लिया था जिसकी खबर किसी को भी नहीं दी गई थी, यहाँ तक कि उस बाग में पहरा देनेवालों से भी यह भेद छिपाया गया था.

यह तो महाराज का इन्तजाम था, अब दारोगा साहब ने क्या किया सो भी सुनिये. दारोगा को पूरी-पूरी खबर लग गई कि बाग में पहरे पर कौन-कौन आदमी मुकर्रर किए गये हैं एवं उन्हें क्या समझाया गया है क्योंकि कर्मचारियों में से बहुत-से आदमी दारोगा से मिले हुए थे जिसका सबब यह था कि एक तो दारोगा रिश्वत के ढंग पर बहुत-सा रुपया उन लोगों में बाँटा करता था दूसरे जमानिया राज्य का बड़ा अफसर होने के कारण लोग उससे डरते भी थे. आज भी दारोगा ने अपना काम निकालने के लिए उन लोगों में बहुत-सा रुपया बाँटा और काम हो जाने के बाद और भी इनाम देने का वादा किया था.

काम इन लोगों के जिम्मे यह सुपुर्द किया कि जब कोई आदमी उस बाग में गिरफ्तार हो तो उसे महाराज के पास न ले जाकर सीधे दारोगा के पास पहुँचा दें और महाराज से कह दें कि चोर भाग गया या गिरफ्तार ही नहीं हुआ यानी जैसा मौका हो वैसा बहाना कर दें. केवल इतना ही नहीं बल्कि दारोगा ने अपने कई आदमी भी रात के समय उस बाग में काम करने के लिए तैनात कर दिए जिस बात की खबर महाराज को कुछ भी न थी.

दिन बीत गया और रात हुई. नजरबाग में पहरा देने वाले बड़ी मुस्तैदी के साथ नजर दौड़ाने, टोह लेने और इधर-उधर घूमने लगे. आधी रात जाते तक तो किसी को किसी तरह का खुटका न हुआ मगर इसके बाद पहरे वालों ने एक नकाबपोश को दीवार फाँद कर बाग के अन्दर आते हुए देखा.

सभी पहरे वाले उसे देखते ही चैतन्य हो गए और सभी ने इस तौर पर उसका मुहाना रोकने की तैयारी कर ली जिसमें वह लौट कर किसी तरह भी भागने न पाए. सभी के देखते-देखते वह नकाबपोश जनाने महल की पिछली दीवार के पास जाकर खड़ा हो गया और उस खिड़की की तरफ देखने लगा जो भैयाराजा के खास महल में पड़ती थी.

थोड़ी देर तक वह उसी जगह खड़ा देखता रहा और इसके बाद उसने ऊपर की तरफ कमन्द फेंकी. जब कमन्द अड़ गई तो उसके सहारे वह ऊपर की तरफ चढ़ गया और आधे घंटे तक लौट कर नहीं आया. पहरे वालों ने चाहा कि वह कमन्द जिसके सहारे वह ऊपर की तरफ चढ़ गया था खींचली जाय जिसमें वह इस रास्ते से उतर न सके और महल में ही गिरफ्तार कर लिया जाय परन्तु दारोगा साहब के आदमियों ने उन लोगों को ऐसा करने से रोका और कहा कि अगर यह कैदी इस राह से नहीं लौटेगा और महल में गिरफ्तार हो जाएगा तो जरूर महाराज के पास भेज दिया जाएगा या खुद महाराज महल पहुँच कर उसे अपने कब्जे में कर लेंगे, ऐसी अवस्था में हम लोगों के हाथ वह न आएगा और दारोगा साहब का काम भी न निकलेगा, अस्तु यही अच्छा होगा कि मुजरिम को इसी राह से उतरने दिया जाय.

महाराज के सिपाहियों ने इस बात को कबूल कर लिया और वह कमन्द ज्यों-का-त्यों छोड़ दिया गया. आधे घंटे के बाद वह आदमी उसी कमन्द के सहारे नीचे उतरा और तुरत ही सब सिपाहियों ने उसे घेर लिया मगर गिरफ्तार न कर सके क्योंकि वह बड़ा ही मजबूत, दिलावर और फुर्तीला साबित हुआ. इसके अतिरिक्त महाराज का यह भी हुक्म था कि उसके ऊपर कोई हर्बा न चलाया जाय. अगर हर्बा चलाया जाता तब तो बेशक इतने आदमियों की भीड़ में से निकल भागना उसके लिए कठिन हो जाता लेकिन बिना हर्बा चलाये उसको गिरफ्तार कर लेना भी कठिन हो गया. महाराज के सिपाहियों को किसी हर्बे से लड़ते हुए न देख कर उस बहादुर ने भी किसी सिपाही पर हर्बे का वार न किया और लड़ता-भिड़ता महल के नीचे से चल कर बाग के किनारे अर्थात् दीवार के पास पहुँच गया. वहाँ से उसके लिए दीवार फाँद कर निकल जाना कोई बड़ी बात न थी मगर उसने न जाने क्यों बाहर निकल जाने का उद्योग न किया और लोमड़ी की तरह चक्कर काटता हुआ उन सिपाहियों के कब्जे से निकल पेड़ों के झुरमुट में जा घुसा जहाँ पहुँचते ही वह सभों की नजरों से गायब हो गया.

महाराज के सिपाहियों ने उस मशाल की रोशनी के सहारे खोजना शुरू किया और आधे घंटे के बाद एक चमेली की झाड़ी में उसे बेहोश पड़े हुए पाया. उसी समय दारोगा साहब के आदमियों ने उस पर कब्जा कर लिया और उठा कर बाग के बाहर ले गए जहाँ से उसे दारोगा साहब के पास पहुँचा दिया गया.

[११]

पाठकों को याद होगा कि प्रभाकरसिंह तिलिस्म के अन्दर फँसे हुए हैं जहाँ उन्होंने एक अनूठे दीवानखाने की दरीची से एक हसीन औरत को देखा तथा इससे वे बहुत ही हैरान हुए और आश्चर्य करने लगे.
थोड़ी देर के बाद प्रभाकरसिंह का जी ठिकाने हुआ तब उन्होंने पुनः उस औरत से कहा, "क्या तुम्हारा नाम मालती है या मैं धोखा खाता हूँ ?"

औरत : नहीं आप धोखा नहीं खाते और बेशक मेरा नाम मालती है, किस्मत ने मुझे बेतरह यहाँ ला फँसाया है, यद्यपि मुझे यहाँ किसी तरह की तकलीफ नहीं है बल्कि मैं बहुत सुख के साथ अपने दिन बिता रहा हूँ परन्तु अपने बन्धु-बान्धवों को न देखने से चित्त में दुःख अवश्य बना रहता है, इसके अतिरिक्त इस तिलिस्म के अन्दर रहते-रहते अब जी ऊब गया है और यहाँ के अलौकिक पदार्थ चित्त को प्रसन्न नहीं करते. पहिले मैंने आपको अच्छी तरह पहिचाना नहीं था और इसीलिए अपना ठीक-ठीक परिचय भी न देकर बहकाने के लिए कह दिया था कि मैं एक राजा की लड़की हूँ इत्यादि परन्तु जब मैंने आपकी पीठ पर का निशान देख लिया तब साफ-साफ बयान कर दिया कि मैं मालती हूँ, इसके अतिरिक्त आपने स्वयं भी मुझे पहिचान लिया.

प्रभा० : यह तो तुमने और भी आश्चर्य की बात सुनाई ! खैर बताओ कि तुम यहाँ क्यों आईं और इस तिलिस्म के अन्दर फँसे रहने का कारण क्या है ? मैं मुद्दत से तुम्हारी खोज में हूँ मगर हजार कोशिश करने पर भी तुम्हारा पता न लग पाया.
मालती : अब आप यहाँ आ गए हैं तो कोई बात आपसे छिपी न रहेगी धीरे-धीरे सब कुछ मालूम हो ही जाएगा, ठहरिये मैं आपके पास आती हूँ.
इतना कह कर मालती खिड़की से उठ गई और थोड़ी ही देर में किसी दूसरी राह से दीवानखाने में प्रभाकरसिंह के पास पहुँच उनका हाथ पकड़ कर बोली, "चलिए अब महल में चलकर ही मुझसे और आपसे बात होगी.

मैं इस समय जिस तरह बेहयाई के साथ आपसे मिलती और बातचीत करती हूँ उसके लिए क्षमा कीजिएगा. इस जगह मेरा कोई बड़ा समबन्धी नहीं जिसका कि मुझे लेहाज हो, इसके अतिरिक्त आप चाहे जो कुछ समझते हों परन्तु मैं आपको उसी भाव से देखती हूँ जिस भाव से कोई धर्मपत्नी अपने देवतुल्य पति को देखती है."

प्रभाकरसिंह ने उसकी बातों का जवाब न दिया और चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल खड़े हुए. मालती उनको लिए हुए दीवानखाने के दाहिने बगल वाली बारहदरी में चली गई जहाँ प्रभाकरसिंह ने देखा कि सामने ही दीवार के साथ सटा हुआ चाँदी का सिंहासन रक्खा हुआ है जिस पर कम-से-कम आठ-दस आदमियों के बैठने की जगह है और उस सिंहासन के चारों तरफ हाथ-भर ऊँची खूबसूरत अड़ानी बनी हुई है और सिंहासन पर बैठे हुए आदमी को नीचे की तरफ लुढ़कने से बचाने के लिए काफी है. ऊपर की तरफ निगाह करके देखा तो इस बारहदरी की छत अन्दाज से बहुत ज्यादे ऊँची दिखाई दी और उस सिंहासन के ठीक ऊपर एक बहुत बड़ा सूराख भी नजर पड़ा.

प्रभाकरसिंह को साथ लिए हुए मालती उस सिंहासन पर चढ़ गई और उस पर प्रभाकरसिंह को बैठा कर आप भी उनके पास बैठ गई. बैठने के साथ ही वह सिंहासन ऊपर की तरफ उठने लगा यहाँ तक कि उसका पेंदा ऊपर वाली छत के बराबर जा लगा और ऐसा मालूम होने लगा कि वह सिंहासन ऊपर वाले कमरे के फर्श पर रक्खा हुआ है. समझ लेना चाहिए कि ऊपर वाले कमरे में जाने का यही रास्ता था.

ऊपर वाला कमरा बहुत खूबसूरती के साथ सजा हुआ तो न था परन्तु उसकी बनावट बहुत ही सुन्दर थी और उसमें हर तरह का जरूरी सामान मौजूद था. जमीन पर फर्श लगा हुआ था और उसके ऊपर दो पलंग बिछे हुए थे. एक पलंग पर का बिछावन उम्दा था और दूसरे पर केवल एक गलीचा बिछा था.
इस कमरे की चौड़ाई दस हाथ और लम्बाई बीस हाथ के लगभग होगी. दीवारों में बहुत-सी खूँटियाँ लगी हुई थीं और उन पर तरह-तरह के जनाने कपड़े लटक रहे थे और जमीन पर संगमर्मर की दो चौकियों के ऊपर कुछ खाने-पीने का सामान भी रक्खा हुआ था.

इस कमरे में बाग की तरफ झाँकने और देखने के लिए पाँच दरवाजे थे और दो दरवाजे भीतर की तरफ ऐसे थे जिनकी राह से महल के अन्दर अथवा दूसरे कमरों में जा सकते थे.
मालती ने प्रभाकरसिंह को ले जाकर पलंग के ऊपर बैठाया और आप भी उनके पास बैठकर इस तरह बातचीत करने लगी—
प्रभाकर : क्या तुम अकेली ही इस मकान में रहती हो ?

मालती : जी नहीं, कई लौंडियाँ और एक ब्राह्मणी भी यहाँ मेरे साथ रहती है. वे इस समय अपने काम में लगी हुई हैं, मगर सिवाय इन औरतों के कोई मर्द यहाँ नहीं रहता.
प्रभाकर : तुमको किसने इस तिलिस्म के अन्दर लाकर रक्खा ?
मालती : कुँअर गोपालसिंह ने.

प्रभा० : (आश्चर्य और कुछ क्रोध के साथ) कितने दिनों से ?
मालती : कई वर्षों से, जब से मैं अपने मकान से गायब हुई थी तभी से यहाँ पर हूँ, बीच में साल-भर दूसरी जगह थी.
प्रभा० : किस नीयत से उन्होंने तुम्हें यहाँ लाकर रक्खा है ?
मालती : अपनी स्त्री बनाने की नीयत से.

प्रभा० : फिर क्या हुआ ? आखिर तुम उनकी स्त्री बनी या नहीं ?
मालती : (लज्जा से सिर नीचा करके) जी हाँ, आखिर क्या करती !
प्रभा० : कोई औलाद भी उनसे तुम्हें हुई ?
मालती : जी हाँ, साल-भर का एक बच्चा है.
प्रभाकर : (चारपाई पर से उठ कर) फिर तुम मुझे इस तरह पर क्यों अपने पास बैठाती हो ? तुम्हें ऐसा करना कदापि उचित नहीं है.

मालती : (प्रभाकरसिंह का हाथ पकड़ के) ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि मेरी पहली शादी आप ही के साथ हुई थी.

प्रभाकर : मेरे साथ तुम्हारी शादी नहीं हुई थी, हाँ बारात लेकर तुम्हारे पिता के दरवाजे तक मैं गया था, पर जब यह सुना गया कि तुम मकान के अन्दर से गायब हो गईं तब लौट आया क्योंकि उस समय तुम्हारे पिता के मकान में बड़ा ही हाहाकार मच गया था. उसी के दूसरे दिन बन्दोबस्त हो जाने के कारण मेरी शादी इन्दुमति के साथ हो गई. (एक लम्बी साँस लेकर) तुम्हारी बातों से मुझे खयाल हुआ था कि तुम अभी तक कुँआरी ही हो अगर अब तुम्हारा ढंग देख कर तुम्हारे इस कथन पर मुझे बड़ा ही खेद होता है कि 'मैं आपको उसी भाव से देखती हूँ जिस भाव से कोई धर्मपत्नी अपने देवतुल्य पति को देखती हो'. जब तुम एक आदमी के साथ ब्याही जा चुकीं और उससे एक औलाद भी तुम्हें हो चुकी तब तुमको मेरे साथ अर्थात् किसी दूसरे पुरुष के साथ ऐसा बर्ताव न करना चाहिए, ऐसे धर्मविरुद्ध कार्य का नतीजा अच्छा नहीं होता.

मालती : (प्रभाकरसिंह का हाथ छोड़ कर) आपकी आज्ञा मेरे लिए शिरोधार्य है परन्तु मैं फिर भी यही कहती हूँ कि इस जबर्दस्ती की शादी को मैं धर्म-विवाह नहीं समझती, अब भी मैं यही चाहती हूँ कि आपके घर चल कर रहूँ और, बहिन इन्दुमति की सेवा करूँ, मैं उनसे मिल चुकी हूँ और उनकी बातों से मुझे विश्वास हो चुका है कि यह बात उन्हें मंजूर है और वह मुझ पर सदैव कृपा रक्खेंगी.

इन्दुमति का नाम सुनकर प्रभाकरसिंह की आँखें डबडबा आईं और उन्होंने एक लम्बीं साँस लेकर मालती से कहा, "इस मनमोदक में कोई भी स्वाद नहीं है, हाय, अब तो इन्दु भी इस दुनिया में नहीं रही, व्यर्थ ही उसने अपनी जान दे दी !"
मालती : (आश्चर्य से) हैं, यह आप क्या कह रहे हैं ? आज ही रात को तो मुझसे और उनसे तीन घण्टे तक बातें होती रही हैं.
प्रभा० : क्या खूब, उसे मरे हुए दो दिन हो चुके हैं !!

मालती : (चारपाई पर से उठकर मुस्कराती हुई) जी नहीं, क्षमा कीजिएगा, आप धोखे में पड़ गए हैं. जमना-सरस्वती और इन्दुमति तीनों बहिनें कल ही से मेरे यहाँ मेहमान हैं और मैं आपको उनसे मिला सकती हूँ. पर आप मेरा तिरस्कार न करें, मैं फिर भी यही कहती हूँ कि मैं आपको अपना पति समझ कर आपकी मदद कर रही हूँ और करूंगी, फिर भी मैं इतना जरूर कहूँगी कि आपने जो बर्ताव इन्दु बहिन के साथ किया वह आपको उचित न था.

मालती की बातें सुनकर प्रभाकरसिंह आश्चर्य से उसका मुँह देखने और सोचने लगे कि यह क्या कह रही है ? जबकि मैं स्वयं इन्दु की धधकी हुई चिता देख चुका हूँ तब क्योंकर इसकी बात मान सकता हूँ ? इसके अतिरिक्त जब वह हमारी और इन्दुमति की बातों को जानती थी तो मुझे पहिचानने में इसने धोखा क्यों खाया और पीठ पर का निशान देखने की जरूरत ही इसे क्यों पड़ी ? मालूम होता है कि मेरे यहाँ तक पहुँचने का कारण भी यही है.

इत्यादि तरह-तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह ने पुनः मालती से कहा, "तुम्हारी बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता."

मालती : मैं आपसे कह चुकी हूँ कि वे तीनों कल ही से मेरे यहाँ मेहमान हैं और मैं उनसे आपकी मुलाकात करवा सकती हूँ, फिर आप शक क्यों करते हैं ?

प्रभा० : हाँ अगर ऐसा हो तो जरूर मैं तुम्हें सच्चा समझ सकता हूँ

मालती : बेशक ऐसा ही होगा.

प्रभा० : तो अब विलम्ब क्या है ? तुम मुझे उनके पास ले चलो.

मालती : मैं आपको उनके पास इसी समय ले चलती मगर इस बात से डरती हूँ कि कहीं इन्दुमति खफा न हो जाए क्योंकि आपकी बेमुरौवती और बुरे बर्ताव से बहुत चिढ़ गई है, मुझसे आपका नाम लेकर कहती थीं कि मैं उनसे कदापि न मिलूँगी. ऐसी अवस्था में उचित यही जान पड़ता है कि पहिले उन्हें समझा कर आपसे मिलने के लिए राजी कर लूँ तब आपको उनके पास ले चलूँ.

प्रभाकर : (कुछ सोच कर) खैर, मुलाकात न सही दिखा देने में तो कोई हर्ज नहीं है !
मालती : अच्छा मैं उन्हें दूर से आपको दिखा दूँगी.
इतना कह मालती ने प्रभाकरसिंह को पलँग पर बैठने के लिए पुनः जोर दिया और प्रभाकरसिंह भी यह विचार कर मालती के पास पलँग पर बैठ गए कि 'यह मौका जिद करने का नहीं है, इसकी बात मान लेने से ही इस समय अपना काम निकलेगा.

मालती ने प्रभाकरसिंह की बड़ी खातिर की और प्रभाकरसिंह ने भी अपने दिल का भाव प्रकट न होने दिया. देर तक वे उनसे मीठी-मीठी बातें करते रहे, इसके बाद यह कह कर उठ खड़े हुए कि 'अब दिन बहुत ज्यादे चढ़ आया है, स्नान-सन्ध्या इत्यादि का बन्दोबस्त होना चाहिए'.

प्रभाकरसिंह की यह बात सुनकर मालती भी उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई एक दरवाजे से कमरे के बाहर हो गई कि 'जरा-सा ठहरिए, मैं अभी इन्तजाम करके आती हूँ तो आपको ले चलती हूँ'.
मालती कमरे के बाहर हो गई प्रभाकरसिंह पलँग पर बैठ कर देर तक उसके आने का इन्तजार करते रहे. आधे घण्टे के बाद लौट कर मालती पुनः प्रभाकरसिंह के पास गई और बोली, "चलिए सब सामान तैयार है."

अबकी दफे मालती प्रभाकरसिंह को दूसरी ही राह से अर्थात् ऊपर-ही-ऊपर एक दूसरे मकान में ले गई और वहाँ से घुमाती हुई एक ऐसे बाग में पहुँची जो प्रभाकरसिंह के लिए बिलकुल नया था अर्थात् अभी तक इस बाग को उन्होंने देखा न था, बनिस्बत पहले बाग के जिसमें प्रभाकरसिंह आए थे इस बाग में फूल-पत्तों की अपेक्षा फल और मेवों के दरख्त बहुत ज्यादे थे तथा अमरूद, सेब, अंगूर और बादाम वगैरह बहुतायत के साथ लगे हुए थे तथा बाग के बीच में एक सुन्दर-सी बावली भी थी जिसमें मीठा और बिल्लोर की तरह साफ जल भरा हुआ था. उसी बावली के ऊपर एक पत्थर की चौकी पर एक लोटा, गिलास, धोती, गमछा, आसन तथा सन्ध्या-पूजा का पूरा सामान मौजूद था और खिदमत के लिए दो लौंडियाँ भी हाजिर थीं.

इस बाग को अपने मतलब का देखकर प्रभाकरसिंह बहुत खुश हुए और कपड़े उतार कर एक पेड़ के नीचे रख देने के बाद अपने जरूरी कामों की फिक्र में लगे. एक हाथ में तलवार और दूसरे में जल का भरा हुआ लोटा लेकर वे बाग के पूरब तरफ बढ़े और एक घनी झाड़ी में घुस कर नजरों से ओझल हो गए.
प्रभाकरसिंह के चले जाने के बाद मालती और उसकी दोनों लौंडियों में इस तरह बातचीत होने लगी :—

मालती : (एक लौंडी से) भोजन की चीजें सब तैयार हो गईं या अभी कुछ बाकी हैं ?
लौंडी : करीब-करीब सभी चीजें तैयार हो गई हैं, केवल तरकारी और दो-तीन तरह की चटनी बाकी है.
मालती : बेहोशी की दवा किस चीज में मिलाई गई है ?
लौंडी : कचौरी और तरकारी में.

मालती : ठीक है, अगर चटनी में यह दवा मिला दी होती तो अच्छा था.
दूसरी लौंडी : आज्ञा हो तो अब मिला दिया जाए.
मालती : खैर, रहने दो, कोई चिन्ता नहीं, जो कुछ हुआ वही बहुत है.

लौंडी : मगर मुझे आश्चर्य इस बात का होता है कि अकेले प्रभाकरसिंह के लिए आप इतना बन्दोबस्त क्यों कर रही हैं ! क्या हम लोग इन्हें मिल-जुल कर बाँध नहीं सकतीं.
मालती : तुम्हें इनकी ताकत का हाल मालूम नहीं है, अगर मालूम होता तो ऐसा न कहतीं. इसके अतिरिक्त इन्हें तिलिस्म की बहुत-सी बातें भी मालूम हैं जिसके लिए इन्हें भुलावा देने की जरूरत है क्योंकि किसी तरह का शक हो जाने से ताज्जुब नहीं कि ये निकल भागें.

लौंडी : अगर यही बात है तो दारोगा साहब को चाहिए था कि दो-चार बहादुर सिपाही यहाँ भेज देते जिसमें गिरफ्तार करने के लिए ज्यादे बखेड़ा न करना पड़ता.

मालती: दारोगा साहब ने हम लोगों को यहाँ भेज दिया यही बहुत है नहीं तो तिलिस्म के अन्दर किसी को भेजना यह बिल्कुल नियम के विरुद्ध है, मुझे दारोगा साहब चाहते हैं और मुझ पर विश्वास रखते हैं इसीलिए मुझे यहाँ भेजा भी, और मैं तुम लोगों को यहाँ ले आई.
लौंडी : ठीक है, असल मतलब मेरी समझ में आ गया. मगर अब मैं यह सोचती हूँ कि अगर प्रभाकरसिंह ने तुम्हारे यहाँ की कोई चीज नहीं खाई और बेहोश न हुए तब तुम क्या करोगी ?

मालती : तुम्हारा सोचना बिलकुल ही लड़कपन है, भला यहाँ रह कर के कै दिन भूखे रहेंगे ? साथ ही इसके तुम यह भी जानती हो कि इस तिलिस्म से निकल भागना उनके लिए बिल्कुल ही असम्भव है, हाँ, इतना मैं जरूर कहूँगी कि वे सहज में ही हम लोगों का विश्वास कदापि न करेंगे परन्तु मैंने तो यहाँ तक निश्चय कर रखा है कि यदि मेरी इस कारीगरी से काम न निकला तो जिस समय ये घोर निद्रा में बेखबर पड़े होंगे उस समय अपनी भुजाली और भुजा को काम में लाकर किस्मत को आजमाऊँगी.

दूसरी लौंडी : बेशक ऐसा हो सकता है—मैं भी यही कहने वाली थी क्योंकि इस बाग में फलों और मेवों की बहुतायत होने से....

मालती : (कुछ सोच कर) हाँ बेशक यह मुझसे भूल हुई कि मैं उन्हें इस बाग में ले आई और यहाँ आने का रास्ता भी दिखा दिया. यहाँ के फलों और मेवों से वे कई दिनों तक गुजारा कर सकते हैं, अगर किसी दूसरे बाग में ले गई होती जहाँ फलों के दरख्त न होते तो जरूर भूख से व्याकुल होकर मेरी बात मानते और सहज ही में मेरे यहाँ का भोजन भी करते. खैर कोई चिन्ता नहीं जो कुछ होगा देखा जाएगा, मैंने कई तरह से जाल फैलाये हुए हैं, किसी-न-किसी जाल में यह शिकार अवश्य ही फँसेगा.
मालती और दोनों लौंडियों में देर तक इसी तरह की बातें होती रहीं और वे सब प्रभाकरसिंह के आने का इन्तजार करती रहीं.

एक घंटे से ज्यादा समय बीत गया और प्रभाकरसिंह लौट कर न आए. इस बात से मालती और उसकी लौंडियों को आश्चर्य होने लगा, मगर मालती को यह भी विश्वास था कि जिस तरफ प्रभाकरसिंह गए हैं उस तरफ कोई ऐसा रास्ता नहीं है जिसके जरिये वे इस बाग के बाहर हो जाएँ और बाग की दीवार भी ऐसे ढंग की बनी हुई है कि उसके ऊपर कोई चढ़ नहीं सकता. यही सबब था कि मालती को धीरज बँधा हुआ था और उसने फिर भी कुछ देर तक और इन्तजार करना मुनासिब समझा.

और भी आधा घण्टा बीत जाने के बाद प्रभाकरसिंह घोड़े पर सवार सामने से आते हुए दिखाई पड़े. हम ऊपर लिख आये हैं कि प्रभाकरसिंह कपड़े उतार कर मैदान के लिए गए थे परन्तु इस समय केवल घोड़े पर सवार ही नहीं बल्कि सुन्दर फौजी पोशाक पहिने हुए तथा कई तरह के हर्बे भी लगाये हुए वे दिखाई पड़े जो मालती और उसकी लौंडियों के लिए कम आश्चर्य की बात न थी और इसी कारण वे आश्चर्य के साथ सोचने लगीं कि क्या वास्तव में ये प्रभाकरसिंह ही हैं ?

निःसन्देह वे प्रभाकरसिंह ही थे मगर मालती को तब तक इसका विश्वास न हुआ जब तक कि वे मालती के पास न आये और छेड़खानी के तौर पर खुद ही बातचीत करना आरम्भ न किया.
प्रभाकर० : (मालती के पास आकर मुस्कुराते हुए) कहो बीबी मालती, अब तो मुझे यहाँ से चले जाने की इजाजत देती हो न ?

मालती : (कुछ घबड़ानी-सी होकर) सो क्यों ? अभी तो आप इन्दुमति से न मिलने वाले हैं ?
प्रभाकर० : नहीं, अब मुझे उससे मुलाकात करने की कोई जरूरत नहीं रही.
मालती : आखिर ऐसी घबड़ाहट आपको क्या हो गई ? और यह घोड़ा आपने कहाँ से पाया सो तो बताइए ?

प्रभा० : (हँस कर) जमानिया के दारोगा साहब यह घोड़ा तुम्हारे वास्ते लिए आ रहे थे सो मैंने छीन लिया और पोशाक भी उन्हीं के बदन से उतार ली ! अच्छा बीबी मनोरमा, अब मैं आपको आशीर्वाद देता और जाता हूँ.

इतना कहते हुए प्रभाकरसिंह तेजी के साथ उसी तरफ लौट गए जिधर से आये थे. मालती को विश्वास न हुआ कि वे वास्तव में प्रभाकरसिंह थे, और इसी से यह घोड़ा इस बाग में क्योंकर आया, यह पोशाक इन्होंने कहाँ से पाई, और घोड़े पर सवार ये क्योंकर यहाँ से बाहर निकल जायेंगे इत्यादि बातों की सोचती हुई वह भी अपनी लौंडियों को साथ लिए उन्हीं के पीछे चल पड़ीं.

[१२]

महाराज के बाग में चोर गिरफ़्तार तो हुआ मगर महाराज के पास न पहुँचाया जाकर सीधे दारोगा साहब के पास पहुँचा दिया गया. महाराज के सिपाहियों ने दारोगा साहब की यहाँ तक खातिर की कि उस चोर को पहिचानना तो दूर रहा, आँख से अच्छी तरह देखा भी नहीं और बड़े अफसोस के साथ महाराज से कह दिया कि चोर निकल भागा.

बहुत उद्योग करने पर भी गिरफ्तार न हो सका. महाराज को इस बात का बहुत ही दुःख हुआ फिर भी उन्होंने पहरे का इन्तजाम ज्यों-का-त्यों कायम रखा, इस खयाल से कि कदाचित् एक-दो दिन बाद धोखा देकर पुनः वह चोर आवे.

उधर दारोगा अपने सोने वाले कमरे में चारपाई पर बैठा हुआ बड़ी बेचैनी के साथ इस बात का इन्तजार कर रहा था कि महाराज के बाग में चोर गिरफ्तार हो और सीधे मेरे पास चला आवे क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि हो न हो वह चोर भैयाराजा अर्थात् शंकरसिंह ही हैं.

वह दरवाजे की तरफ आँख लगाये बैठा अपने दिल से भैयाराजा के बारे में बातें कर रहा था और साथ ही यह भी सोच रहा था कि 'आज निःसन्देह भैयाराजा गिरफ्तार होकर मेरे पास लाये जायेंगे और अगर ऐसा हुआ तो मैं उसको बिना मारे कभी न रहूँगा, किसी तरह की मुरौवत न करूँगा, आँखें चार होने पर लज्जा तथा भय को पास फटकने न दूँगा.

आज मैं पूरा बेमुरौवत, पूरा निर्लज्ज, पूरा बेदर्द और पूरा अत्याचारी बन जाऊँगा मगर उन्हें कदापि जीता न छोड़ूँगा चाहे जो हो, इत्यादि इसी ढंग की बातें विचारता और ख्याली पुलाव पकाता हुआ वह दरवाजे की तरफ देख रहा था कि यकायक दरवाजा खुला और तीन आदमी बेहोश भैयाराजा को उठाये कमरे के अन्दर दाखिल हुए. बड़ी फुर्ती के साथ दारोगा ने नकाब उठाकर चोर के चेहरे पर निगाह डाली और यह जान कर बहुत ही प्रसन्न हुआ कि वह चोर वास्तव में भैयाराजा ही है.

बेहोश भैयाराजा दारोगा साहब के सामने डाल दिये गये. पहिले तो दारोगा के दिल में आया कि भैयाराजा को होश में लाने के पहिले ही कत्ल कर डाले जिसमें चार आँखें न होने पावे मगर फिर कुछ सोच कर रुक गया क्योंकि आज उसने पूरी बेहयाई पर कमर बाँध ली थी, और इसके अलावा कई भेद की बातें भी उनसे दरियाफ्त करनी थीं.

बेईमान दारोगा ने पहिले तो उन तीनों आदमियों की बड़ी तारीफ की और शाबाशी दी और इसके बाद आज्ञा दी कि भैयाराजा को उठाकर दूसरे कमरे में पहुँचा दें जहाँ इसी तरह की निर्दयता के काम किये जाते थे और जो एक तरह पर कैदखाने का काम भी दिया करता था. यहाँ पहुँचाने के बाद भैयाराजा की मुस्कें बाँधी गईं और तीनों आदमियों को विदा कर दारोगा ने उन्हें लखलखा सुँघाया. होश में आने पर उस कैदी ने घबड़ा कर चारों तरफ देखा और जब हाथ में नंगी तलवार लिए दारोगा पर उसकी निगाह पड़ी तो उसे और भी आश्चर्य हुआ. उसने बड़ी बेचैनी के साथ दारोगा की तरफ देखा और तब उससे पूछा, "मैं कहाँ पर हूँ और यह मकान किसका है ?"

दारोगा : तुम मौत के पंजे में हो और यह मकान यमराज का है.
कैदी : (पुनः अच्छी तरह चारों तरफ देख कर) नहीं नहीं, मैं अच्छी तरह समझ गया कि यह घर आप ही का है, मगर आश्चर्य है कि आप मुझी से दिल्लगी करते हैं !
दारोगा : इसमें दिल्लगी की क्या बात है ? मान लो कि यह मेरा ही घर है मगर क्या तुम यह नहीं देखते कि मैं नंगी तलवार लिए तुम्हारा सर काटने को तैयार हूँ ?

कैदी : हाँ, देखता हूँ मगर यह मुझे कब विश्वास होने लगा कि आप मेरे ही साथ ऐसा बर्ताव करेंगे !
दारोगा : मैं जरूर ऐसा करूँगा क्योंकि तुम्हारी बदौलत मैं बेतरह संकट में पड़ गया था.

कैदी : ठीक है लेकिन तब इससे यह जाहिर होता है कि तुम्हारी ही बदौलत इस समय मैं अपने को रस्सियों में जकड़ा हुआ देख रहा हूँ.

दारोगा : बेशक ऐसा ही है. मैंने ही तुम्हें गिरफ्तार कराया है, मैंने ही तुम्हारी मुश्कें कसवाई हैं, और मैं ही अब अपने हाथ से तुम्हारा सर काट हमेशा के लिए बेफिक्र हो जाना चाहता हूँ.

कैदी : (क्रोध में आकर) तो क्या तू मुझे मारेगा ?
दारोगा : हाँ-हाँ, जरूर मारूँगा, कई दफे तो कह चुका अब कैसे कहूँ ?

कैदी : अफसोस ! मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस खुदगरज बेमुरौवत और दुष्ट भाई का साथ देने से मुझे यह दिन देखना नसीब होगा. अगर और ऐसी खबर होती तो तुम बेईमान को कई दफे गहरी आफतों से कदापि न बचाता और अपनी धन-दौलत तेरे हवाले करके तेरे घर का भिखमंगा न बन जाता. अफसोस, अफसोस, मैं यह नहीं जानता था कि भाई की सूरत में एक दुष्ट चाण्डाल आत्मा बसी हुई है, मगर खैर, कोई चिन्ता नहीं, मैं ऐसा कमजोर भी नहीं हूँ कि इन पतली डोरियों से बेबस रह कर तेरे नापाक हाथों से मारा जाऊँगा !!

इतना कहते-कहते उस कैदी को जोश चढ़ आया. उस बहादुर ने झटका देकर हाथ-पैर की रस्सियाँ तोड़ डालीं और ताल ठोंक कर दारोगा साहब के सामने खड़ा होकर बोला, "हाँ, देख तो सही तू कि तरह मुझे मारता है. तेरे हाथ में तलवार है और मैं खाली हाथ तेरे सामने खड़ा हूँ, देखना तो यह है कि तू मुझे मारता है या मैं तेरा खून चूस कर इस बेइज्जती का बदला चुका लेता हूँ !"

[१३]

दिन दो पहर से कुछ ज्यादे ढल चुका है, धूप में बहुत तेजी और गर्मी है. मुसाफिरों को इस समय राह चलना बहुत ही बुरा मालूम होगा मगर जंगल में रास्ता चलने वालों को इस धूप की गर्मी किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचा सकती. घने जंगलों का तो कहना ही क्या है जहाँ बड़े-बड़े साखू, शीशम और सलई के दरख्तों की छाया में बैठने में बड़ा ही आनन्द मिलता है, खास करके किसी नाले के किनारे पर जहाँ घने दरख्त हों तो वहाँ के आनन्द का कहना ही क्या है. गर्मी के दिनों में ऐसा स्थान बहुत ही प्यारा मालूम होता है, परन्तु शेर भी ऐसा स्थान पसन्द करता है और प्रायः शिकार के लिए भी ऐसा ही स्थान चुना जाता है.

इस समय हम ऐसे ही घने जंगल में एक नाले के किनारे पत्थर की चट्टान पर दो आदमियों को बैठे आनन्द से बातचीत करके हुए देख रहे हैं. इसमें एक तो इन्द्रदेव हैं और दूसरे उनके प्यारे दोस्त बलभद्रसिंह. इस समय ये दोनों आदमी शिकारी पोशाक तथा हर्बों से अपने को सजाये हुए हैं और इन दोनों के शेर-दिल घोड़े भी पास ही में पेड़ों के साथ लम्बी डोर में बँधे हुए नर्म घास चर रहे हैं. सुनना चाहिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं.

इन्द्रदेव : आपका कहना बहुत ही ठीक है. गदाधरसिंह की चालचलन आजकल बहुत ही खराब हो रही है. ऐसे ही लोग ऐयारी के नाम को कलंकित करके अपने साथ-ही-साथ भले लोगों को भी बदनाम करते हैं. मैं उस खोटे समय को रोता हूँ जिस समय उसे अपनी जुबान से मैंने दोस्त कहा था, फिर भी चाहे उसके शरीर से मुझे कितना ही कष्ट पहुँचे परन्तु मैं अपनी तरफ से उसे कुछ भी कष्ट न पहुँचाऊँगा. केवल इतना ही नहीं बल्कि जिन्दगी-भर इस बात का उद्योग करता रहूँगा कि उसकी चाल-चलन सुधरे और वह नेकनामी के साथ दुनिया में जिन्दगी बिताने का प्रयत्न करे. बदनाम आदमी का दुनिया में करोड़पति होकर भी जीते रहना वृथा है, जिन्दगी उस गरीब की ही सराहने योग्य है जिसमें लोगों का उपकार हो और जिसे लोग भली जुबान से नेकनामी के साथ याद करते हों.

मेरे प्यारे दोस्त, मैं सच कहता हूँ और तुमसे भी कुछ छिपा हुआ नहीं है कि बड़े-बड़े राजा-महाराजा और सौदागरों से भी मेरे पास बढ़ कर दौलत है जिसे मैं इस जिन्दगी में किसी तरह भी खर्च नहीं कर सकता मगर मैं उस दौलत पर कुछ भी भरोसा नहीं करता और नेकनामी के सामने उसे कंकड़-पत्थर से भी तुच्छ समझता हूँ, इसका एक सबब यह भी है कि यह दूसरे की थाली है जो ईमानदारी के साथ मेरे सुपुर्द की गई है और मैं उसे देवता के समान केवल पूजा ही करने के लायक समझता हूँ तथापि जो कुछ उसमें से मेरे लिए हिस्सा लगाया गया है वही इतना ज्यादा और काफी है जैसाकि मैं ऊपर कह चुका हूँ, यह बात गदाधरसिंह को भी कुछ-कुछ मालूम है और मैं उसे कई दफे कह भी चुका हूँ कि—दो-चार लाख रुपये जब चाहो मुझसे ले लो और अपनी तृष्णा को तिलांजलि दे दो, परन्तु उसके दिल में यह बात बिलकुल ही नहीं बैठती. न-मालूम लालच ने उसे किस तरह अपने काबू में कर रक्खा है जिसके सबब से वह बड़े-बड़े उग्र पाप करने के लिए भी तैयार हो जाता है.

बलभद्र : मेरे प्यारे दोस्त, मुसमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारे नेक मिजाज की तारीफ कर सकूँ. तुम ही ऐसे को कि गदाधरसिंह के कसूरों को बराबर माफ किये चले जा रहे हो, दूसरा मामूली दर्जे का कोई आदमी तो उसका मुँह भी न देखता.

फिर भी इतना मैं जरूर कहूँगा कि यद्यपि वह ऐयारी के फन में बहुत ही तेज है और उसे बहुत दूर की सूझा भी करती है परन्तु वह अपने कलंक को धोने की कोशिश करता है और भी कलंकित होता जा रहा है, ताज्जुब नहीं कि वह कलंकों के मारे कुछ ही दिनों में सिर से पैर तक इन्द्र का रूप हो जाय.

इन्द्र० : बेशक ऐसा हो सकता है, मैं जानता हूँ कि दयाराम के विषय में वह बिल्कुल निर्दोष है और इसीलिए मैं उसे कई दफे समझा भी चुका हूँ कि तुम उस भेद को छिपाने के लिए कुछ उद्योग मत करो, मैं तुम्हारी वह भूल दुनिया में किसी पर भी प्रगट न होने दूँगा, परन्तु यह बात उसके दिल में बैठती ही नहीं, सच तो यों है कि उसे मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता.

बलभद्र : यही बात है, वह सोचता है कि बिना जमना और सरस्वती को मारे वह बात छिप नहीं सकती इसीलिए जमाना और सरस्वती को मारकर ही मैं निश्चिन्त हो सकूँगा क्योंकि उसके बाद किसी को मुझ पर कलंक लगाने के लिए कोई सबूत न मिल सकेगा.

इन्द्रदेव : केवल जमना और सरस्वती को ही नहीं बल्कि वह प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को भी मारने की फिक्र में है क्योंकि उसे विश्वास हो रहा है कि ये दोनों भी उस भेद को जान गए और जमना तथा सरस्वती की मदद कर रहे हैं. और वास्तव में बात भी ऐसी ही है.

बलभद्र : मगर मैं समझता हूँ कि अब भूतनाथ इस काम में कृतकार्य नहीं हो सकेगा.

इन्द्रदेव : (मुस्करा कर) सो कैसे कहूँ ! वह बड़ा ही धूर्त है, कौवे, गिद्ध और कुत्ते से अगर उसकी उपमा दी जाय तो हो सकता है. मैं अपने घर के रास्ते तक को उससे छिपाये रहता हूँ और जब कभी वह मुझसे मिलने के लिए आता है तो मैं बाहरी दरजे में ही उससे मुलाकात करता हूँ (हँस कर) लेकिन यह मामला भी बड़ा ही विचित्र है, मैं यद्यपि उसके काम में बाधा डाल रहा हूँ मगर उससे दुश्मनी नहीं करता, और वह यद्यपि बराबर मेरे हाथों से छकाया जाता है फिर भी मुझ पर किसी तरह का शक नहीं करता. मगर मुझे इस बात का जरूर दुःख है कि मेरे गुरुभाई साहब (जमानिया तिलिस्म के दारोगा) ने भी आजकल उसी का रंग पकड़ा है और दोनों खुदगरजों की दोस्ती बेतरह बढ़ रही है...

बलभद्र : (बात काट कर) भला खुदगरजों की दोस्ती भी कहीं कायम रही है ?

इन्द्र० : कभी नहीं, खुदगरजों की दोस्ती और पानी पर तैरते बताशे की जिन्दगी की कोई तायदाद नहीं, तथापि मुझे दारोगा साहब की तरफ से बड़ी ही रंज है, मैंने उनसे मिलना-जुलना भी एक तौर पर छोड़ दिया है यद्यपि अपने दिल का भाव प्रकट नहीं किया, साथ इसके इस बात का भी उद्योग कर रहा हूँ कि उसमें और गदाधरसिंह में दुश्मनी पैदा हो जाय.

बल० : दुश्मनी पैदा होने में अब क्या कसर रह गई है ? गदाधरसिंह को इस बात का विश्वास हो गया है कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति के बारे में दारोगा ही ने उससे चालाकी खेली है.

इन्द्रदेव : बेशक यही बात है और अब ईश्वर ने चाहा तो दारोगा की और उसकी दुश्मनी दिनों-दिन बढ़ती ही जाएगी.
बलभद्र : आपकी कार्यवाई ही ऐसी हो रही है, मगर भैयाराजा के विषय में जो कुछ चाल चली जा रही है वह मुझे पसन्द नहीं है.
इन्द्र० : मुझे भी पसन्द नहीं है. मैंने उन्हें कहा था कि इस ढंग को छोड़ दें और एकदम से प्रकट होकर जो कुछ करना हो खुले-आम करें मगर उन्हें तो मसखरापन सूझ रहा है, देखो मैं आज तुम्हारे सामने ही उन्हें फिर समझाऊँगा.

बलभद्र : अगर वे न मानेंगे तो ताज्जुब नहीं कि एक दिन गदाधरसिंह या दारोगा साहब के हाथ में फँस जायें.
इन्द्रदेव : गदाधरसिंह को तो मैं साफ-साफ कह दूँगा कि भैयाराजा के साथ दुश्मनी का बर्ताव न करे और मेरी यह बात शायद वह मान भी जाएगा.

बलभद्र : मगर गदाधरसिंह को अगर यह मालूम होगा कि भैयाराजा को दारोगा के फन्दे से तुम्हीं ने निकाला है तो जरूर उसे इस बात का भी शक हो जाएगा कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति को भी दारोगा के जाल से तुम ही ने निकाल लिया होगा.
इन्द्रदेव : कोई परवाह नहीं, अगर उसे इस बात का शक हो भी जाएगा तो कोई चिन्ता नहीं, मेरे साथ गदाधरसिंह कदापि दुश्मनी का बर्ताव नहीं करेगा.

बलभद्र : इस बात को तो मैं भी मानता हूँ, दारोगा और गदाधरसिंह दोनों तुमसे डरते हैं और जानते हैं कि इन्द्रदेव का बिगड़ना किसी के लिए भी अच्छा न होगा, हाँ एक बात तो मैं आपसे कहना भूल ही गया !
इन्द्रदेव : वह क्या ?
बलभद्र :वे दोनों कारीगर जिन्होंने दारोगा का अद्भुत मकान बनाया था और जिन्हें आजकल आपने अपने पास रख छोड़ा है, खुले मैदान बाजार में घूमा करते हैं, कहीं ऐसा न हो कि उन पर निगाह पड़ते ही दारोगा का खयाल ठिकाने पहुँच जाय और वह समझ जाय कि इन्हीं दोनों की बदौलत हमारे मकान का भेद खुल गया है.

इन्द्र० : (लम्बी साँस लेकर) अफसोस, वे दोनों कल रात को दारोगा के फंदे में फँस गए, जैसाकि तुम सोचते हो वही बात हुई अर्थात् दारोगा ने उन्हें देख लिया कि किसी को पता न लगा. मुझे उनके बारे में बड़ा ही दुःख है, यद्यपि मैंने अपने दो शागिर्द उनको छुड़ाने के लिए छोड़ दिए हुए हैं मगर फिर भी उनकी खैरियत नजर नहीं आती.
बलभद्र : यह तो बहुत ही बुरा हुआ. और एक बात की खबर आपको हुई है या नहीं ?
इन्द्रदेव : वह क्या ?

बल० : मेरी लड़की लक्ष्मीदेवी की शादी जो कुँअर गोपालसिंह के साथ ठहरी हुई है वह दारोगा साहब को बिल्कुल ही नापसन्द है, अगर प्रकट नहीं होते तो छिपा कर निशाना लगा रहे हैं.
इन्द्र० : मुझे इस बात का पता लग चुका है. अफसोस इस बात का है कि राजा गिरधरसिंह निरे मिट्टी के पुतले हैं और दारोगा साहब का रंग उन पर बेतरह चढ़ा हुआ है, मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, गोपालसिंह को मैं इस विषय में खूब समझा चुका हूँ और वह कसम खाकर प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि मेरी आज्ञा के विरुद्ध इस विषय में कोई काम न करेंगे. होनहार गोपालसिंह बात के धनी हैं और मुझे उन पर बड़ा भरोसा है.

बलभद्र० : खैर आप जानिये, मुझे केवल खबर देने से मतलब था, और यह तो आप ठीक कहते हैं कि राजा साहब पर दारोगा का रंग चढ़ा हुआ है. अभी उसी दिन की बात है जिस दिन भैयाराजा ने भूत होकर राजा साहब को दर्शन दिया था. आप ही कहते थे कि 'सुबह को राजा साहब ने दारोगा को बुला कर रात का हाल कहा जिसके सुनते ही दारोगा के बदन में थरथरी पैदा हो गई, मगर राजा साहब को इसका कुछ खयाल न हुआ' इत्यादि.

इन्द्रदेव : हाँ मैंने सब हाल तुमसे कहा ही था. इसी से तो मैं कहता हूँ कि राजा साहब बिल्कुल बेकार हैं, मगर सीधे और धर्मात्मा हैं इसी से बचे जाते हैं. (चौंक कर) देखो वह सामने से घोड़े पर सवार कौन आ रहा है ! पहिचानते हो ?
बलभद्र०: : (गौर से देख कर) नहीं, शायद नजदीक आने से पहिचान सकूँ. नहीं-नहीं, मैंने इन्हें आज के पहिले शायद कभी भी नहीं देखा ?

देखते-ही-देखते वह सवार इन दोनों के पास आ पहुँचा. दोनों ही से साहब-सलामत करने के बाद वह घोड़े पर से नीचे उतर पड़ा और एक पेड़ के साथ लम्बी बागडोर के सहारे घोड़े को बाँध कर चरने के लिए ढीला छोड़ दिया.
इन्द्रदेव का इशारा पाकर वह सवार भी उनके पास बैठ गया और उन तीनों में इस तरह बातचीत होने लगी—

इन्द्र० : (सवार की तरफ देख कर) कोई भी ऐयार इस समय आपको नहीं पहिचान सकता, खूब ही सूरत बदली है ! (बलभद्रसिंह से) क्यों भाई कैसी सूरत हो रही है ? यह तुम्हारे रोज के मुलाकाती हैं और इशारा कर देने पर भी तुम इन्हें नहीं पहिचान सकते !
बलभद्र० : (आश्चर्य से आगन्तुक की तरफ देख कर) बेशक, बिना चेहरा धोये इन्हें कोई भी नहीं पहिचान सकता.

इन्द्रदेव : (मुस्करा कर) यही तो बात है कि चेहरा धोने पर भी इनकी सूरत में कोई फर्क नहीं पड़ेगा. इस चेहरे पर किसी तरह का रंग-रोगन नहीं चढ़ाया हुआ है बल्कि यह एक प्रकार की बनावटी झिल्ली है जो चेहरे पर चढ़ाई हुई है, इस पर पानी का कुछ असर नहीं होता और इस तरह चमड़े के साथ चपक कर बैठती है. कि जरा भी पता नहीं लगता.

आगन्तुक : (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके बलभद्रसिंह से) यह आपकी कारीगरी का नमूना है, वास्तव में यह बहुत ही अच्छी चीज है, सूरत बदलने में जरा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता.

इन्द्रदेव : इसी तरह की दो झिल्लियाँ मैंने जमना-और सरस्वती को दी हुई थीं, अफसोस कि वह इस समय गदाधरसिंह के पास होंगी जिनसे वह बड़ा ही उत्पात मचा सकता है. मुझे तो इस बात का डर ही लगा रहता है कि कहीं गदाधरसिंह उन झिल्लियों की बदौलत मुझी को धोखा न दे.

आगन्तुक : नहीं-नहीं गदाधरसिंह आपको कदापि धोखा न देगा, उसकी प्रतिज्ञा है कि इन्द्रदेव मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालें तो भी मुझे मंजूर है परन्तु उनका मुकाबिला कदापि न करूँगा.

इन्द्र० : ठीक है, मैंने भी ऐसा सुना है, और आप यह भी जानते ही हैं कि मैं गदाधरसिंह के साथ कैसा बर्ताव करता हूँ. हजार कसूर करने पर भी उसे सजा देने की नीयत नहीं करता और यही चाहता रहता हूँ कि वह अच्छी राह पर चले और परमात्मा उसका भला करे.
बलभद्र० : बेशक, आप अपनी दोस्ती का पूरा-पूरा हक निबाह रहे हैं. (आगन्तुक की तरफ इशारा करके) अच्छा यह तो बताइए कि यह कौन साहब हैं और आपको खोजते हुए यहाँ किस तरह आ गए ?

इन्द्रदेव : ये भैयाराजा हैं, छिप कर रहना पसन्द नहीं करते और बराबर इधर-उधर घूमने की इच्छा करते हैं, इसीलिए सूरत बदलने वाली यह झिल्ली मैंने इन्हें दे रक्खी है, मैं यहाँ आते समय अपने शागिर्द को समझा आया था कि इस सूरत में भैयाराजा अगर यहाँ आवें तो उन्हें फलानी जगह भेज देना, यही सबब है कि ये यहाँ तक आ पहुँचे.
आगन्तुक (अथवा भैयाराजा) : बेशक यही बात है, आपके शागिर्द लक्ष्मण ने मुझे यहाँ का पता दिया था, अच्छा तो बताइए कि अब मुझे क्या करना चाहिए.

इन्द्रदेव : मैं तो यही कहूँगा कि आप खुल्लमखुल्ला जाकर अपने भाई राजा साहब से मिलें और इस खेल-तमाशों को जाने दें, नहीं तो एक-न-एक दिन दारोगा के फंदे में फँस जाएँगे.

आगन्तुक : तो क्या तुम नहीं जानते कि हमारे भाई साहब दारोगा के कैसे गुलाम हो रहे हैं ! उस कम्बख्त के सामने भला मेरी बातों का उनके दिल पर कोई असर होगा ? मेरे इस कथन को क्या वे मान जायेंगे कि दारोगा ने मुझको मार डालने का इरादा किया था ? मैं समझता हूँ कि वे मुझी को झूठा बनावेंगे और दारोगा कोई-न-कोई बहाना करके निकल ही जाएगा.

इन्द्रदेव : अगर ऐसा हो तो कोई ताज्जुब नहीं है.
आगन्तुक : वह तुम्हारा गुरुभाई है, तुम उसे समझाते क्यों नहीं ! ऐसे आदमी को तो दुनिया से उठा ही देना चाहिए.

इन्द्रदेव : वह मेरा गुरुभाई है तो क्या हुआ, जैसा करेगा वैसा भोगेगा. मैं न तो उसका दोस्त बनता हूँ और न दुश्मन, अगर आप लोगों की मदद करने की जरूरत न आ पड़े तो मैं उसका मुँह देखना भी पसन्द नहीं करता, उसके घर में जाना तो दूसरी बात है.
बलभद्र० : अगर आप भैयाराजा को उसके पंजे से न छुड़ाते तो इनकी जान जा ही चुकी थी.

इन्द्रदेव : अब भी अगर ये खुल्लमखुल्ला अपने को प्रकट न कर देंगे तो इनके लिए मुझे चिन्ता बनी ही रहेगी. वह तो कहीं इतना अच्छा हुआ कि दारोगा और गदाधरसिंह में जो दोस्ती थी वह जाती रही, नहीं तो दोनों मिल कर बड़ा ही उपद्रव मचाते.
बलभद्र० : गदाधरसिंह को विश्वास हो गया कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति के विषय में दारोगा ने उनके साथ दगाबाजी की.

आगन्तुक : मगर वास्तव में बात दूसरी ही थी. अच्छा यह तो बताइए कि प्रभाकरसिंह का क्या हाल है और वे अब कहाँ हैं ?
इन्द्रदेव : ईश्वर की कृपा से प्रभाकरसिंह भी दारोगा के पंजे से निकल गए, उन्हें दारोगा ने तिलिस्म के अन्दर ही फँसा लिया था मगर कल मैं उन्हें छुड़ा कर अपने घर ले आया, उनके छुड़ाने में भी बड़ी विचित्र दिल्लगी हुई.
आगन्तुक : सो क्या ?

इन्द्र० : यह किस्सा उन्हीं की जुबान से आप सुनेंगे तो मजा आवेगा, मैं स्वयं कुछ भी न कहूँगा.
आगन्तुक : उनसे मुलाकात कब होगी ?
इन्द्रदेव : जब आप चाहेंगे.
आगन्तुक : अच्छा तो मैं तुम्हारे साथ ही तुम्हारे घर चलूँगा और प्रभाकरसिंह के साथ-साथ जमना, सरस्वती और इन्दुमति से भी मुलाकात करूंगा.
इन्द्रदेव : बहुत अच्छी बात है.

आगन्तुक : अच्छा यह तो कहो कि जमानिया तिलिस्म का भेद तुमको क्योंकर मालूम हुआ ? यह तो बहुत ही गुप्त है और सिवाय हम लोगों के दूसरा कोई भी उसको नहीं जान सकता क्योंकि नियमानुसार तिलिस्मी किताब हम ही लोगों के पास रहा करती है और आज भी भाई साहब के कब्जे में है.
इन्द्रदेव : (मुस्करा कर) इसके विषय में मैं कुछ भी न कहूँगा.

आगन्तुक : मैं समझता हूँ कि दारोगा के गुरुजी ने वहाँ का कुछ हाल कहा होगा, क्योंकि वह तुम्हारे भी गुरु थे और वहाँ का बहुत ज्यादे हाल जानते थे.
इन्द्रदेव : जो कुछ हो.
आगन्तुक : खैर इस मामले को जाने दो और अब यह राय दो कि मैं क्या करूँ ?

इन्द्रदेव : मुझे जो कुछ कहना था कह चुका.
आगन्तुक : अच्छा एक दिल्लगी मुझे और कर लेने दो फिर जो कुछ तुम कहोगे मैं वही करूँगा.
इन्द्रदेव : वह क्या ?

आगन्तुक : इस समय कहने से मजा न मिलेगा, कल-परसों में आपसे आप मालूम हो जाएगा. अच्छा यह बताओ कि इस समय तुम्हारे साथ चलने से क्या प्रभाकरसिंह तथा इन्दुमति से मुलाकात हो सकेगी ?
इन्द्रदेव : (कुछ सोच कर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि आप जब चाहें मुलाकात कर सकते हैं.

आग० : तो यहाँ से चलने में क्या विलम्ब है ?
इन्द्रदेव : कुछ भी नहीं, मैं चलने को तैयार हूँ.
आग० : बस तो जय गणेश करो.
इन्द्रदेव : चलिये, (बलभद्रसिंह की तरफ देख कर) यदि कुछ हर्ज न हो आप मेरे साथ चलिये.

वे तीनों आदमी वहाँ से उठ खड़े हुए और अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो तेजी के साथ चल पड़े.
बलभद्रसिंह और आगन्तुक को साथ लिए हुए इन्द्रदेव अपने मकान की तरफ रवाना हुआ मगर अफसोस, उन्हें इस बात की कुछ खबर नहीं है कि जिस आगन्तुक को वह भैयाराजा समझे हैं वह वास्तव में भैयाराजा नहीं बल्कि भूतनाथ है जो प्रभाकरसिंह, जमना, सरस्वती और इन्दुमति का पता लगाने के लिए, जमना और सरस्वती से पाई हुई झिल्ली अपने चेहरे पर लगा कर और इस प्रकार अपना भेष बदलकर इन्द्रदेव के घर गया था. वहाँ इन्द्रदेव के शागिर्द ने उसे भैयाराजा समझा और इन्द्रदेव का संदेशा दिया कि वे फलाने जंगल में गये हैं और आपको भी उसी जगह बुलाया है. इसी संदेश को पाकर भूतनाथ वहाँ पहुँचा था जहाँ इन्द्रदेव और बलभद्रसिंह से मुलाकात हुई थी !

अस्तु धोखे में पड़े हुए इन्द्रदेव नकली भैयाराजा और बलभद्रसिंह को लिए हुए अपने घर की तरफ रवाना हुए. इस जगह यह समझ रखना चाहिए और पहिले भी किसी जगह पर हम लिख आये हैं कि इन्द्रदेव का असली मकान तिलिस्मी इलाके के अन्दर है जहाँ किसी अनजान आदमी का जाना बिल्कुल ही असम्भव है परन्तु उनका एक दूसरा मकान भी था जिसका नाम 'कैलाश' था और जिसका कुछ हाल हम इसके पहिले भी लिख आये हैं. इस समय अपने दोनों साथियों को लिए हुए इन्द्रदेव इसी मकान (कैलाश) की तरफ रवाना हुए क्योंकि जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को उन्होंने इसी मकान में छिपा कर रक्खा हुआ था.

दो घण्टे तक तेजी के साथ सफर करके तीनों आदमी कैलाश भवन पहुँचे. इन्द्रदेव की बातचीत से भूतनाथ को यह मालूम हो गया था कि भैयाराजा भी इन्द्रदेव के मकान में आनेवाले हैं, इसीलिए इन्द्रदेव ने अपने शागिर्द से कह दिया था कि वे आवें तो उन्हें फलाने जंगल में हमारे पास भेज देना, और इसी कारण इन्द्रदेव के शागिर्द ने भूतनाथ को भैयाराजा समझ कर उसी जंगल में इन्द्रदेव के पास भेजा भी था. धोखा होने का सबब यही था कि भैयाराजा को भी इन्द्रदेव ने वैसी ही झिल्ली चेहरे पर चढ़ाने के लिए दी थी जैसी जमना और सरस्वती को दी थी अथवा जो इस समय भूतनाथ अपने चेहरे पर चढ़ाये हुए था, अस्तु अब भूतनाथ को यह फिक्र हुई कि कहीं वादे के मुताबिक भैयाराजा भी इस समय वहाँ न आ जाएँ, क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो उसका भण्डा फूट जाएगा और बना-बनाया काम चौपट हो जाएगा.

इन सब बातों को सोच कर भूतनाथ ने इरादा कर लिया कि जहां तक जल्द हो सके प्रभाकरसिंह, जमना और सरस्वती को देख कर इन्द्रदेव के मकान से बाहर ही नहीं हो जाना चाहिए, बल्कि जिस तरह सम्भव हो भैयाराजा को गिरफ्तार भी कर लेना चाहिये, जिसमें उनकी सूरत बन कर अपना काम निकाला जा सके.

भूतनाथ और बलभद्रसिंह को साथ लिए हुए इन्द्रदेव मकान के अन्दर गये और कई कमरों में घूमते-फिरते वहाँ पहुँचे जहाँ प्रभाकरसिंह बैठे हुए जमना, सरस्वती और इन्दुमति से मीठी-मीठी बातें कर रहे थे. आज बहुत दिनों के बाद हम इन बिछुड़े हुओं के मिल कर बैठे और बातें करते देख रहे हैं, निःसन्देह इन सभों में शिकवे और शिकायत-भरी बातें हो रही होंगी, बदकिस्मती से तो तकलीफें इन लोगों ने उठाई हैं उनके लिए एक-दूसरे की भूल साबित करके स्वयं बुद्धिमान बनने की कोशिश करता होगा तथा बीच-बीच में कोई इन्द्रदेव की तारीफ करता होगा तथा कोई बेइमान दारोगा को गालियाँ देता और भूतनाथ की शिकायत करता हुआ यह भी कहता होगा कि अभी तक भूतनाथ का डर हम लोगों के दिल में बना हुआ है, ईश्वर उस कम्बख्त से किसी तरह पीछा छुड़ाये या हमारी ऐसी मदद करे कि जिससे हम लोग भूतनाथ को नीचा दिखावें.

खैर हमें इस जगह फुरसत नहीं है कि इन लोगों की बातचीत या हँसी-दिल्लगी का हाल खुलासे तौर पर लिख सकें क्योंकि भूतनाथ इन लोगों के सामने पहुँच कर भी जल्दी-से-जल्दी भाग निकलने की तैयारी कर रहा है और दिल में तरह-तरह की ऐयारियों का बाँधनू बाँधता हुआ भी डर रहा है कि कहीं असली राजाभैया यहाँ न आ पहुँचे और इसीलिए हम भी इस दृश्य को संक्षेप में ही लिखना पसन्द करते हैं.
जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह ने इन्द्रदेव के साथ आते हुए बलभद्रसिंह को तो पहिचाना परन्तु भैयाराजा को न पहिचान सके, लेकिन इन्द्रदेव ने यहाँ पहुँचते ही उन सभों की तरफ देखकर कहा, "आप लोग इनको (नकली भैयाराजा की तरफ इशारा करके) न पहिचान सके होंगे क्योंकि तिलिस्मी ढंग पर इनकी सूरत बदली हुई है इसीलिए मैं इनका परिचय देता हुआ आप लोगों से कहता हूँ कि ये वे भैयाराजा हैं जो मेरी मदद करते हुए आप लोगों को छुड़ाने के लिए दिलोजान से उद्योग कर रहे थे."

जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह इतना सुनते ही उठ कर खड़े हो गए और उन तीनों से साहब-सलामत करने के बाद सच्चे दिल से सभों का शुक्रिया अदा करने लगे. इसके बाद सब कोई उसी जगह फर्श पर बैठ गये और बातचीत करने लगे. मगर भूतनाथ के दिल की इस समय विचित्र हालत हो रही थी, वह मजबूरी के साथ बातें तो कर रहा था मगर बार-बार यह सोचता जा रहा था कि भैयाराजा के आने में देर क्यों हुई ? ईश्वर करे उन पर कोई ऐसी आफत आ जाए कि अभी कुछ देर तक वे यहाँ न पहुँचने पावें.

भूतनाथ ने जाहिरदारी के साथ उन सभों से बातें करना शुरू किया.
भूत० : (प्रभाकरसिंह से) ईश्वर ही ने आपकी रक्षा की नहीं तो आप बड़े ही झंझट में पड़ गये थे.

प्रभाकर० : निःसन्देह ऐसा ही है, ईश्वर ही ने (इन्द्रदेव की तरफ इशारा करके) इन्हें मेरी सहायता के लिए खड़ा किया ! मैं इनकी कृपा का कदापि बदला नहीं चुका सकता और न बदला चुकाने की इच्छा ही रखता हूँ क्योंकि मेरे और इनके बीच में बराबर के लेन-देन अथवा रोजगार का-सा व्यवहार नहीं है, बदला चुकाने का ख्याल तो एक प्रकार का रोजगार ठहरा, और मैं इनको पिता के समान मानता हूँ अस्तु बड़ों का अहसान बच्चों पर हुआ ही करता है जिसका बदला चुकाने का विचार करना भी मूर्खता है. इसी तरह मैं अपने एक मित्र के अहसान से भी दबा जाता हूँ परन्तु मित्रता की सीमा का उलंलघन करके व्यवहार या रोजगार न समझा जाय इसलिए मैं उनके लिए भी बदला चुकाने का विचार नहीं कर सकता, फिर भी यह बात जरूर है कि आपको मेरे लिए कड़ी तकलीफ उठानी पड़ी और इसके लिए मैं....

भूत० : (बात काट कर) आप व्याख्यान ही देने लग गये, मैं व्याख्यान सुनने के लिए नहीं आया हूँ और न यह जानने के लिये आया हूँ कि आप किस-किस का शुक्रिया अदा कर रहे हैं. मैं तो केवल आप लोगों को खुश देख कर खुश होने के लिए आया हूँ और यह पूछना चाहता हूँ कि यदि मेरे किए आप लोगों का उपकार हो सके तो आज्ञा करें, मैं आपलोगों के लिए दिलोजान से उद्योग करने को तैयार हूँ.
प्रभाकर० : आपकी कृपा से अब मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं रह गई और न किसी बात की लालसा ही है.

भूत० : बड़ी खुशी की बात है कि अब आपको किसी तरह की लालसा नहीं रह गई. (जमना इत्यादि की तरफ देख कर) और मैं समझता हूँ कि ईश्वर की कृपा से अब आप लोगों के चित्त में भी शान्ति...
जमना० :(बात काट कर) नहीं-नहीं, कदापि नहीं, मेरे चित्त में तब तक शान्ति नहीं हो सकती जबतक कि कम्बख्त भूतनाथ इस दुनिया में जीता-जागता मौजूद है.

भूत० : (अपने दिली जोश और गुस्से को दबाता हुआ) ठीक है मेरा भी यही ख्याल है, मगर जबकि इन्द्रदेव ऐसे लासानी ऐयार और सामर्थी लोग तुम्हारे मददगार हो रहे हैं तब भूतनाथ की जिन्दगी कब तक कायम रह सकती है और वह तुम्हारा कर ही क्या सकता है ?

जमना इस बात का कुछ जवाब देना ही चाहती थी कि इन्द्रदेव ने इशारे में ही उसे कुछ कहा जिससे उसने अपने जोश को रोक लिया और कुछ सोच कर धीरे-धीरे जवाब दिया, "सो तो मैं कुछ नहीं कह सकती क्योंकि भूतनाथ चाचाजी[१] (इन्द्रदेव) का दोस्त है."

जमना की आखिरी बात सुन कर भैयाराजा अर्थात् भूतनाथ ने इन्द्रदेव की तरफ देखा और कहा, "मगर मैं नहीं समझ सकता कि इतना कसूर करने पर भी आप भूतनाथ को क्योंकर माफ कर सकेंगे ?"
इन्द्रदेव : (बड़ी गम्भीरता के साथ) अगर अब भी भूतनाथ अपनी शैतानी से बाज आयेगा और अपने किये पर पछतावेगा तो मेरे ऐसे आदमी की तो हकीकत ही क्या ईश्वर भी उसे माफ कर देगा.

भूतनाथ ने इसका कुछ जवाब न दिया और बात का रुख दूसरी तरफ फेरने की कोशिश करता हुआ बोला—

---

१. जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह इन्द्रदेव को चाचा कहकर सम्बोधन करने लगे थे.

भूत० :सो तो ठीक ही है, जो जैसा करेगा वैसा पायेगा, खैर जाने दीजिए भविष्य में जो होगा देखा जाएगा, इस समय तो हम लोग प्रसन्न हैं और ईश्वर को धन्यावाद देते हैं कि उसने बड़े संकट से तुम लोगों की रक्षा की, अब तुम लोग भूतनाथ को छकाने की कोशिश करो और मैं कम्बख्त दारोगा से बदला लेने की फिक्र करता हूँ. (इन्द्रदेव से) मैं तुम्हारे पास से जाने के लिए जल्दी न करता यदि बेफिक्र होता और दारोगा से बदला लेने का खयाल मेरे दिल में भरा हुआ न होता, तथापि मैं कल अवश्य मिलूँगा और तब बहुत-सी और बातें भी कहूंगा.

इन्द्रदेव : आपकी जल्दी पर मुझे आश्चर्य होता है ! (मुस्करा कर) कहिये तो मैं आपको आपके डेरे तक पहुँचा दूँ. क्योंकि अभी तक आपसे अच्छी तरह बातचीत नहीं हुई है.
भूत० : (घबराना-सा होकर मगर अपने भाव को छिपा कर) नहीं-नहीं, इतनी तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं. इस समय मेरा कोई ठिकाना नहीं मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँगा क्योंकि अपने दिल में एक विचित्र ख्याल लिए जा रहा हूँ, हाँ, कल मैं जरूर मिलूँगा और तभी अन्य बातें करूँगा.

इन्द्र० : जैसी मर्जी.
भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और जल्दी के साथ कदम बढ़ाता हुआ कैलाश भवन के बाहर निकला. इन्द्रदेव दरवाजे तक उसके साथ आये और जब वह घोड़े पर सवार होकर चला गया तब धीरे-से यह कहते हुए घर के अन्दर लौटे—"ईश्वर ही कुशल करे."

[१४]

भूतनाथ को इस बात की फिक्र लगी हुई थी कि भैयाराजा इन्द्रदेव के घर आते ही होंगे और जिस तरह हो सके उन्हें फँसाना चाहिए मगर बेचारे भैयाराजा को इस बात की कुछ भी खबर न थी.

भूतनाथ के चले जाने के थोड़ी ही देर बाद भैयाराजा घोड़े पर सवार कैलाश-भवन के दरवाजे पर पहुँचे. खबर पाते ही इन्द्रदेव घर के बाहर निकले जिन्हें देखते ही भैयाराजा घोड़े से उतर कर बड़े तपाक से इन्द्रदेव के गले मिलने के बाद बोले, "कहो भाई, सब खैरियत तो है ? मेरे यहाँ आने में बहुत देर हो गई, क्षमा करना."

इन्द्रदेव ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "ईश्वर की कृपा से सब कुशल है, चलिये घर के अन्दर चलिये जहाँ बैठे बहुत-से आदमी आपका आश्चर्य के साथ इन्तजार कर रहे हैं."
भैया० : (इन्द्रदेव का हाथ पकड़े घर के अन्दर ले जाते हुए) आश्चर्य के साथ क्यों इन्तजार कर रहे हैं ?

इन्द्र० : सो भी अभी ही आपको मालूम हो जाएगा.
बात-की-बात में ये दोनों वहाँ जा पहुँचे जहाँ जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह बैठे हुए आपस में बातें कर रहे थे. इन्द्रदेव के साथ भैयाराजा को (जो कि इस समय अपनी असली सूरत में थे क्योंकि घर के अन्दर घुसते ही उन्होंने चेहरे पर से तिलिस्मी झिल्ली उतार कर हाथ में ले ली थी) आते हुए देख कर सब उठ खड़े हुए. जमना, सरस्वती और इन्दुमति ने सिर झुकाया, बलभद्रसिंह ने हाथ जोड़ा और प्रभाकरसिंह ने सलाम करके कहा, "आपके पुनः लौट कर आने से आश्चर्य होता है !"

भैया० : पुनः लौट कर आना कैसा ?
प्रभा० : अभी आपको यहाँ से गये आधे घण्टे से कुछ ही ज्यादे हुआ होगा !
भैया० : (आश्चर्य से इन्द्रदेव की तरफ देख कर) मालूम होता है कि कोई ऐयार मेरी सूरत में यहाँ आकर आपको धोखा दे गया !
इन्द्र० : बेशक ऐसी ही बात है, आप बैठ जाएँ तो खुलासा हाल बयान करूँ.
भैया० : (स्वयं बैठ जाने और सभों को बैठाने के बाद) कहो तो सही मामला क्या है ? तुमको धोखा देने की हिम्मत करना किसी मामूली ऐयार का काम नहीं है.

इन्द्र० : बात यह है कि मैं आज किसी कार्यवश 'देवबन्द' के जंगल में गया था. यद्यपि आप कह गये थे कि मैं तीसरे पहर यहाँ आऊँगा और इसलिए मुझे यहाँ मौजूद रहना वाजिब था तथापि मैं अपने शागिर्द को इस बात की ताकीद करके कि आप आयें तो आपको मेरे पास देवबन्द के जंगल में फलाने ठिकाने भेज दे, मैं वहाँ चला गया. कुछ देर के बाद बलभद्रसिंहजी मुझसे मिलने के लिए आये, मेरे शागिर्द ने उन्हें जंगल में भेज दिया. इसके कुछ देर बाद आप ही की तरह एक आदमी घोड़े पर सवार और ठीक वैसी ही झिल्ली चेहरे पर लगाए हुए आया जैसी झिल्ली मैंने आपको अपने चेहरे पर लगाने के लिए दी थी, मेरे शागिर्द ने समझा कि ये भैयाराजा ही हैं इसलिए उसे भी 'देवबन्द' के जंगल में मेरा पता बता कर मेरे पास भेज दिया.

हम दोनों ही धोखे में पड़ गए और उसे भैयाराजा समझ खुले दिल से बातचीत करने लगे क्योंकि चेहरे पर की झिल्ली ने मुझे उस पर शक करने का मौका न दिया, मैं समझे हुए था कि सिवाय आपके और किसी के पास यह झिल्ली नहीं है क्योंकि मैंने सिर्फ आप ही को यह झिल्ली दी थी. एक बात और भी है, इस झिल्ली को लगा कर चाहे आप जमाने-भर को धोखा दे दें और कोई भी यह न समझे कि आपके चेहरे पर किसी प्रकार की झिल्ली लगी हुई है परन्तु मैं देखने के साथ ही समझ जाऊँगा कि चेहरे पर तिलिस्मी झिल्ली लगी हुई है अस्तु दूर ही से मैंने उस झिल्ली को समझ कर मान लिया कि भैयाराजा आ गए, बलभद्रसिंह को भी यही कर कह उसका परिचय दिया, और बातचीत करने लगा.

कुछ देर बाद उस ऐयार ने जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह से मिलने की इच्छा प्रकट की और मैं उसे अपने साथ यहाँ घर ले आया, परन्तु जब वह प्रभाकरसिंह तथा जमना, सरस्वती इत्यादि से बातचीत करने लगा तब उसकी बातों में कई शब्द बेमौके के आ पड़ने के कारण मुझे शक पड़ गया और मैं सेचने लगा कि हो-न-हो यह कोई ऐयार है, मगर तब इसके पास यह झिल्ली कहाँ से आई !

कुछ ही देर बाद मुझे याद आ गया कि इसी ढंग की दो झिल्लियाँ मैंने जमना और सरस्वती को दी हुई थीं जो कि आजकल भूतनाथ के कब्जे में होंगी. यह याद आने के साथ ही मैं चौंक पड़ा और उसे भूतनाथ की निगाह से देखने लगा।

यद्यपि इसके पहिले बहुत-सी बातें जो भूतनाथ के सामने मुँह से निकलने योग्य न थीं निकाली जा चुकी थीं परन्तु भूतनाथ का ख्याल आ जाने के साथ ही मैंने इशारे से सभों को उस ढंग की बातें करने से रोक दिया. उस नकली भैयाराजा को हम लोगों की बातों से यह निश्चय हो ही चुका था कि इस समय भैयाराजा यहाँ आने वाले थे और इसी सबब से सभों ने उसे भैयाराजा समझ लिया था अस्तु वह यह सोच वहाँ से शीघ्र निकल जाने के लिए जल्दी करने लगा कि अगर कहीं भैयाराजा यहाँ आ गए तो भण्डा फूट जाएगा. वह अपनी खुशकिस्मती समझता होगा कि आपके यहाँ आने में देर हो गई. खैर मुख्तसर यह कि बहुत जल्दी मचाता हुआ वह यहाँ से चला गया और उसके थोड़ी देर बाद आप आ पहुँचे.

भैया० : (कुछ देर तक सोच कर) भूतनाथ को यह कैसे मालूम हुआ कि मैं तिलिस्मी झिल्ली लगा कर यहाँ आऊँगा ?
इन्द्रदेव : सम्भव है कि उसे इस बात की खबर न हो तथा भैयाराजा बनने के लिए यहाँ आया भी न हो, सिर्फ मामूली ढंग पर मुझसे मिलने के लिए ही आया हो.

भैया० : हाँ, यह हो सकता है, और जब लोगों ने बिना परिश्रम ही उसे भैयाराजा मान लिया तो वह भी क्यों न भैयाराजा बन कर अपना काम निकालता !

इन्द्र० : यही तो बात है.
भैया० : मगर यह बात बहुत बुरी हुई ! अगर वह वास्तव में भूतनाथ था तो समझ रखिये कि बहुत बुरी तरह से हम लोगों का भण्डा फूट गया और अब दारोगा को भी बहुत सहज ही में असली भेद मालूम हो जाएगा !

इन्द्र० : जरूर ऐसा होगा और अब मुझे जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह की विशेष हिफाजत करनी पड़ेगी.
भैया० : बेशक, और अगर तुम ऐसा न करोगे तो बेढब धोखा खाओगे और पछताओगे. भूतानाथ मामूली आदमी नहीं है. हाँ, यह तो बताओ कि जब उसे भूतनाथ समझ ही लिया तो गिरफ्तार क्यों नहीं किया ?

इन्द्र० : (मुस्करा कर) इसका जवाब मैं क्या दूँ ? आप मेरी प्रतिज्ञा तो जानते ही हैं कि मैं अपने हाथ उसे किसी तरह की तकलीफ न पहुँचाऊँगा क्योंकि अपनी जुबान से उसे 'मित्र' कह चुका हूँ.

भैया० : मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा को जानता हूँ मगर तुम प्रभाकरसिंह इत्यादि किसी दूसरे के हाथ से उसका भण्डा फोड़ कर सकते थे.

इन्द्र० : ठीक है, मगर मैं अपने मकान के अन्दर किस तरह ऐसा कर सकता था ! यों तो प्रभाकरसिंह तथा जमना और सरस्वती वगैरह सभी कोई उससे बदला लेने की कोशिश कर रहे हैं और मैं उन सभी की मदद भी कर रहा हूँ मगर फिर भी....

भैया० : तुम समर्थ हो और जो चाहो कर सकते हो मगर अब मेरी यह तिलिस्मी झिल्ली भी बेकार हो गई जिसके सबब से पुनः धोखा ही नहीं होगा बल्कि भूतनाथ[१] भी देखते ही मुझे पहिचान लेगा.

इन्द्र० : नहीं, ऐसा न होगा, मैं इसके लिए दूसरा प्रबन्ध करूँगा और आपको दूसरे प्रकार की झिल्ली दूँगा. खैर यह तो बताइये कि जमानिया महल के अन्दर आप अपनी स्त्री से मिलने के लिए गये थे या नहीं और अगर गए तो वहाँ क्या कैफियत हुई तथा मेरा शागिर्द आपकी कुछ मदद कर सका या नहीं ?

भैया० : तुम्हारे शागिर्द परमानन्द ने मेरी बड़ी मदद की और अभी तक भी मेरे ही काम में लगा हुआ है. पहिले दिन जब मैं अपनी स्त्री के पास गया तब जानबूझकर ऐसी कार्यवाई की कि महल की औरतों को इस बात का शक पड़ गया कि यहाँ कोई गैर आदमी आया अथवा आता है.

---

१. पाठकों के सुभीते के लिए हम गदाधरसिंह को सब जगह भूतनाथ के नाम से लिख रहे हैं मगर समझ रखना चाहिए कि अभी तक लोग उसे गदाधरसिंह के नाम से सम्बोधन कर रहे हैं और उसने भी अपना नाम भूतनाथ नहीं रक्खा है.

धीरे-धीरे यह बात भाई साहब के कान तक पहुँची और चोर की अर्थात् मेरी गिरफ्तारी का प्रबन्ध किया गया तथा चारों तरफ पहरा बैठाया गया. दारोगा को विश्वास हो गया कि महल के अन्दर भैयाराजा ही छिप कर गया था और फिर भी जायेगा अस्तु उसने भी ऐसा प्रबन्ध किया कि अगर मैं गिरफ्तार होऊँ तो सीधे दारोगा के पास पहुँच जाऊँ.
इन्द्र० : (मुस्कराते हुए) यह कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि वहाँ का सभी आदमी अदने से लेकर आला तक दारोगा का ताबेदार बना हुआ है.

भैया० : ठीक है. अस्तु मैंने परमानन्द से सलाह करके एक विचित्र कार्रवाई की और अपनी स्त्री को भी इस कार्रवाई से होशियार कर दिया जिससे समय पर वह किसी बात की चिन्ता न करे.
इन्द्र० : वह क्या कार्रवाई हुई ?

भैया० : दारोगा के एक आदमी को जिसका नाम हरी था परमानन्द ने धोखा देकर गिरफ्तार किया और बेहोशी की हालत में उसे मेरी सूरत का बनाया, इसके बाद स्वयं वह (परमानन्द) मेरी सूरत बन कर हरी की गठरी पीठ पर लादे रात के समय मेरे साथ महल वाले नजरबाग के अन्दर पहुँचा. यह काम बड़ी आसानी से हो गया क्योंकि वहाँ के पहरे पर जो लोग मुकर्रर किये गये थे उनमें मेरे पक्षपाती भी कई आदमी थे जिनसे परमानन्द ने पहले ही बातचीत करके केवल सब बातें ही नहीं तै कर रक्खी थीं बल्कि मेरी तरफ से उन लोगों को बहुत कुछ इनाम दे दिया था. खैर, बेहोश हरी को पेड़ों की एक झुरमुट में डाल दिया गया और मैं कमन्द लगा कर महल के ऊपर चढ़ गया.

दारोगा के पक्षपातियों को कब यह मंजूर हो सकता था कि मैं ऊपर महल ही में गिरफ्तार होकर राजा साहब के पास पहुँचा दिया जाऊँ, वे लोग तो यही चाहते थे कि मैं बाग में गिरफ्तार होऊँ और सीधे दारोगा के पास पहुँचा दिया जाऊँ. अस्तु वे सब चुप रहे और मेरे लौट आने का इन्तजार करने लगे. थोड़ी देर के बाद जब मैं पलट कर नीचे आया तब उन लोगों ने हल्ला मचाया और मुझे गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगे. ऐसे समय में क्या करना होगा सो पहिले से परमानन्द ने मुझे समझा रक्खा था और मैंने उसी के कहे मुताबिक काम भी किया.

मुख्तसर यह कि मैं उन सभों से लड़ता हुआ एक आड़ की जगह में चला गया जहाँ परमानन्द छिपा हुआ था और वहाँ से परमानन्द बड़ी चालाकी से निकल कर मेरे बदले में उन लोगों से लड़ने लगा. दुश्मनों को इस बात का कुछ भी पता न लगा, मैं बड़ी आसानी के साथ बाग के बाहर निकल कर आड़ में हो गया और परमानन्द के आने का इन्तजार करने लगा, इधर परमानन्द ने यह किया कि लड़ते-लड़ते भाग कर उस झाड़ी के अन्दर घुसा और तब कहीं और निकल गया जिसमें बेहोश हरी को छोड़ आया था.
दुश्मन लोग जब वहाँ पहुँचे तो हरी को देख कर खुश हो गए और उसी को भैया राजा मान कर उठा ले गये, इसके बाद परमानन्द भी बाग के बाहर निकला और मेरे पास आ पहुँचा, इसके बाद क्या हुआ सो मैं नहीं कह सकता कि दारोगा ने मेरे धोखे में हरी को मार डाला या और कुछ किया.

भैयाराजा की कथा सुन कर सब कोई हँसने लगे और तब देर तक दारोगा के बेवकूफ बनने की बातें करते रहे जिसके बाद पुनः भूतनाथ के विषय में बातें आरम्भ हुईं.
भैया० : अब तो भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह तथा जमना इत्यादि को आपके यहाँ देख ही लिया है जिससे वह यह भी समझ ही गया होगा कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति को उसके कब्जे से छुड़ाकर उसी के शागिर्दों को फँसाने वाले इन्द्रदेव ही थे...

इन्द्र० : (बात काट कर) नहीं-नहीं, इस बात का निश्चय उसे नहीं होगा, हाँ भ्रम बना रहे तो नहीं कह सकता, और अगर वह ऐसा मान भी ले तो मैं कुछ परवाह नहीं कर सकता क्योंकि उसके और दारोगा के बीच में अब सुलह नहीं हो सकती.
भैया० : सो ठीक है मगर...

इन्द्र० : इसके अतिरिक्त जमना, सरस्वती और इन्दुमति के लिए मैं दूसरा प्रबंध करूँगा, हाँ प्रभाकरसिंह जरूर अब स्वतन्त्र होना चाहते हैं और इनका इरादा ये है कि ये स्वयं भी भूतनाथ का मुकाबला करें.
प्रभाकर० : बेशक मेरा यही इरादा है.

भैया० : (इन्द्रदेव से) कोई चिन्ता नहीं, इन्हें किसी तरह की मदद देकर छोड़ दो. तुमने इन्हें कुछ ऐयारी भी तो सिखाई है, देखना चाहिए उस मेहनत का क्या फल लाते हैं.

इन्द्र० : मेरी यही राय है, परन्तु यह तो बताइये कि आप अब क्या कीजियेगा ? भूतनाथ पर आपका भेद खुल गया है, अब वह निःसन्देह आपका पीछा करेगा और चाहेगा कि आपकी सूरत बन कर अपना काम निकाले, इसलिए मैं तो यही राय दूँगा कि आप प्रकट हो जाइये, कहीं ऐसा न हो कि धोखे में आपको नुकसान पहुँच जाये.

भैया० : नहीं, मैं अभी प्रकट नहीं होऊँगा और न मुझे भूतनाथ का कोई खौफ ही है, फिर भी मैं तुमसे कहूँगा कि मैंने अपने लिये क्या सोच रक्खा है और इस बारे में राय भी लूँगा.

इसके बाद बहुत देर तक उन सभों में बातें होती रहीं जिसे इस जगह बयान करने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती. संध्या होने में कुछ ही देर बाकी थी जब भैयाराजा घोड़े पर सवार हो इन्द्रदेव के कैलाश भवन से निकले और बाहर की तरफ रवाना हुए.

इस समय उनका चेहरा किसी और ही ढंग का बना हुआ था. देखना चाहिए कि अब इनसे और भूतनाथ से कैसी छनती है जो बड़ी देर से घात में बैठा हुआ इनके लौटने का इन्तजार कर रहा था.

भैयाराजा जब इन्द्रदेव के कैलाश-भवन से निकल कर रवाना हुए तो उन्हें इस बात का गुमान भी न था कि भूतनाथ मेरी ताक में लगा हुआ है और आज ही हमला करेगा, अस्तु बेफिक्री के साथ धीरे-धीरे अपने नियत स्थान की तरफ जाने लगे. कैलाश-भवन से बाहर निकलने में भूतनाथ का और इनका कई घण्टे का फासला पड़ चुका था जिससे इस बीच में भूतनाथ को कई तरह की कार्रवाइयाँ करने का मौका मिल गया और उसने बड़े विचित्र ढंग का जाल इनको फँसाने के लिए फैला डाला.

सूर्य भगवान अस्त हो रहे थे और उनकी चलाचली के कारण आसमान के पश्चिम तरफ यद्यपि गहरी लालिमा छा रही थी तथापि बादल के छोटे-बड़े टुकड़े पूरब की तरफ से उमड़ कर हवा की मदद पा आकाश में दौड़ लगाते हुए पश्चिम की तरफ धावा कर रहे हैं मानों उस गहरी लालिमा को बात-की-बात में अपनी स्याह चादर के अन्दर छिपा लेंगे और फिर इस बात का पता भी न लगने देंगे कि भगवान अस्ताचल को प्राप्त कर चुके या नहीं अथवा उनको इस अनित्य संसार से मुंह फेरे कितनी देर हो गई जिसे लोग नित्य कह कर भी मानते हैं और जिसमें स्वयं भगवान ही के अस्तित्व में बाधा डालने वाले तरह-तरह का रूप धारण किए हुए बहुत-से दल अपने कच्चे सूत का बनाया हुआ जाल पक्का समझ कर फैलाने की कोशिश कर रहे हैं तथा भविष्य में भी जाल बनाने के लिए धूल की रस्सियाँ बट रहे हैं और यह नहीं समझते कि उनकी यह निर्वीर्य रस्सियाँ उस सगुण के अटूट गुण (डोरी) के आगे कुछ भी हकीकत नहीं रखतीं जिसमें गुथे सैंकड़ों-हजारों बल्कि लाखों ब्रह्माण्ड इस तरह ठीक रास्ते पर घूम रहे हैं कि सूत बराबर भी इधर-उधर हटने की हिम्मत नहीं कर सकते.

थोड़ी ही देर बाद हवा तेजी के साथ चलने लगी और धीरे-धीरे उसका जोर बढ़ता ही गया. क्या पत्थरों के बड़े कुदरती ढेर अर्थात् पहाड़ अपनी छाती पर टक्कर लेकर उसका जोर तोड़ नहीं सकते हैं ? नहीं, बल्कि उनके इस काम से हवा को और मदद मिलती है और वह पहाड़ों से टक्कर खाकर और भी नाचने लगती है कितने पथिकों के पथ में बेतरह बाधा पड़ जाती है और धूल से आँखें बन्द हो जाने के कारण उन्हें एक कदम चलना कठिन हो जाता है.

मौसम के यकायक इस तरह पलट जाने से भैयाराजा को बड़ा ही कष्ट हुआ और वे सोचने लगे—"अगर इस तरह शीघ्र ही मौसम के बिगड़ जाने की मुझे खबर होती तो कदापि कैलाश-भवन के बाहर पैर न निकालता." मगर अब पलट कर पुनः इन्द्रदेव के घर जाना भी उन्हें उचित नहीं जान पड़ता था क्योंकि अपने खयाल से वे आधा रास्ता तय कर चुके थे.
अब गहरे बादलों के छा जाने से बिल्कुल अन्धकार हो गया, यहाँ तक कि उस चन्द्रमा की रोशनी का भी लेशमात्र पता नहीं लगता था जिसके भरोसे पर बिना रोशनी का कोई इन्तजाम किये ही भैयाराजा चल खड़े हुए थे और समझ चुके थे कि रास्ते में किसी तरह की बाधा न पड़ेगी, मगर अब वे कर ही क्या सकते थे.

लाचार तरह-तरह की बातें सोचते हुए वे धीरे-धीरे जाने लगे परन्तु इस विचार में भी थे कि कहीं ठिकाना मिले तो थोड़ी देर के लिए ठहर जायँ.
किसी कवि ने सच कहा है कि 'अन्धेरी रात चोरों, ऐयारों, बदमाशों और लुच्चों की सहायक होती है'. भूतनाथ को भी यह मुफ्त की सहायता मिल गई जिससे उसने सहज ही में अपने दिल का अपमान निकाल लिया.

धीरे-धीरे पानी बरसने लग गया और हवा की सहायता पाकर क्रमशः उसका जोर बढ़ने लगा जिससे भैयाराजा को चलने में और भी कठिनता हो गई. अन्धकारमय रात, हवा का सन्नाटा, पानी का बरसना और पहाड़ी रास्ता जहाँ दिन को आदमी धोखा खाकर रास्ता भूल सकता है. ऐसे दुःखदायी समय का तो कहना ही क्या है ! भैयाराजा दुःखित होकर एक पेड़ के नीचे खड़े हो गए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए. अगर कहीं फूस की कुटिया भी मिल जाती तो उसे हम आनन्द-भवन समझ लेते और इस समय प्राण बचा कर किसी तरह ग्रहदशा के कई घण्टे बिता अपने घर का रास्ता लेते, परन्तु उस बीहड़ स्थान में आराम लेने के लिए कुटिया या झोंपड़ी कहाँ, और अगर कहीं हो भी तो दिखाई देना उसका कठिन था, अस्तु लाचार उसी पेड़ के नीचे पानी की बौछार और हवा के थपेड़े खाते हुए राजाभैया कुछ देर तक खड़े रहकर तरह-तरह की बातें सोचते रहे इसी बीच में उन्हें किसी सवार के आने की आहट मालूम हुई.

कुछ दिखाई न देने पर भी उन्होंने देखा और कान लगा कर उस आहट का अन्दाज लेने लगे. मालूम होता था कि हवा और पानी से दुःखी होकर वह सवार भी अपनी इच्छानुसार घोड़े को नहीं चला पाता मगर फिर भी बनिस्बत भैयाराजा के तेजी के साथ ही चला आ रहा है, हाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर ठहर जाता है और जब बिजली चमकती है तो उसकी रोशनी में चारों तरफ देख कर फिर आगे बढ़ रहा है.
कुछ ही देर में वह सवार भी उसी पेड़ के पास आकर खड़ा हो गया जिसके नीचे भैयाराजा ठहरे हुए थे. जब बिजली चमकी तो उसकी रोशनी में उसने भैयाराजा को देखा और शीघ्रता से उनके पास आकर बोला, "मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि आपको आज के सफर में बेहिसाब तकलीफ उठानी पड़ी. अगर मुझे इसका कुछ भी अन्दाजा मिला होता तो आज मैं आपको अपने घर से कदापि बिदा न करता !"

भैया० : कौन है, इन्द्रदेव ?
सवार० : जी हाँ, मैं इसीलिए दौड़ा चला आ रहा हूँ कि आपको वापस ले जाऊँ या फिर इसी रास्ते में कोई ऐसी जगह बता दूँ जहाँ आप आराम से कई घण्टे रह कर इस बुरे मौसम को टाल सकें, क्योंकि यह रास्ता मेरा अच्छी तरह देखा हुआ है और पास की पहाड़ियों की कई गुफा और कन्दराओं को भी मैं अच्छी तरह जानता हूँ तथा एक ऐसे मकान का भी मुझे पता है जो यहाँ थोड़ी दूर पर उजाड़ पड़ा हुआ है और कई जगह से टूट-फूट जाने पर भी इस समय हम लोगों की बखूबी रक्षा कर सकता है.

भैया० : (प्रसन्न होकर) अगर ऐसी बात है तो शीघ्र उसी मकान की तरफ चलो. इस आँधी और पानी से मैं बेतरह दुःखी हो रहा हूँ और सर्दी से काँप रहा हूँ.
सवार० :(अपने चारजामे के पास से एक दुशाला उठा कर और भैयाराजा को देकर) लीजिए इसे ओढ़ लीजिए, यह आपकी पूरी तरह से रक्षा करेगा, आप ही के लिए मैं इसे घर से लिए आ रहा हूँ.

खुशी-खुशी भैयाराजा ने वह दुशाला ले लिया और ओढ़ कर उस सवार के साथ चलने के लिए तैयार हो गये. सवार उनको लिए हुए उत्तर की तरफ रवाना हुआ और बहुत जल्दी एक चहारदीवारी के फाटक पर जा पहुँचा. इस समय इस स्थान का नक्शा खींचना बहुत ही कठिन होगा क्योंकि अन्धकार के कारण कुछ भी मालूम नहीं होता कि यह चहारदीवारी कैसी है, हर तरह से दुरुस्त है या टूटी-फूटी है, अथवा इसके अन्दर बिल्कुल ही उजाड़ खण्डहर है या कुछ कोठरियाँ या दालान इत्यादि भी मौजूद हैं. फाटक पर घोड़ा रोक कर सवार ने भैयाराजा से कहा, "अब आप यहाँ पर उतर पड़िये, इस फाटक के अन्दर चलने पर आपको बहुत आराम मिलेगा !"

भैया० : (धीमे स्वर में) अच्छा मैं उतरने की कोशिश करता हूँ, तुम्हारे इस दुशाले ने यद्यपि मुझे सर्दी से बचाया है मगर मेरे दिमाग को खराब कर दिया. इसमें से एक विचित्र प्रकार की सुगन्ध आ रही है जिससे बेहोशी की दवा का असर हो रहा है.

मालूम होता है कि मैं बहुत जल्द बेहोश हुआ चाहता हूँ, घोड़े से उतरने की ताकत मुझमें नहीं है, लेकिन क्या तुम वास्तव में इन्द्रदेव हो ? (और धीरे से) नहीं-नहीं, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम इन्द्रदेव हो. अफसोस....
सवार० : आपका खयाल बहुत दुरुस्त है, मैं वास्तव में इन्द्रदेव नहीं हूँ, ऐसी अवस्था में मैं आपसे अपना नाम छिपाना पसन्द नहीं कर सकता अस्तु ठीक-ठीक बता देता हूँ कि मैं गदाधरसिंह हूँ और आप अब मेरे कब्जे में आ चुके हैं.

भैया० : अफसोस, अफसोस, दिल की दिल....में.....रह
इतने कहते-कहते भैयाराजा घोड़े पर ने नीचे झुक पड़े. भूतनाथ ने, जो पहिले ही घोड़े से उतर चुका था, हाथ के सहारे से उन्हें सम्हाला और अपने कब्जे में कर लिया. इसके बाद उसने जफील बजाई जिसकी आवाज सुनकर कुछ आदमी वहाँ आ पहुँचे और सब कोई मिल-जुलकर भैयाराजा को खण्डहर के अन्दर ले गए.

[१५]

भैयाराजा को अब जिस स्थान में भूतनाथ ले गया वह यद्यपि खंडहर कहा जाता था परन्तु दालान और तीन-चार कोठरियाँ ऐसी थीं कि जिनकी मजबूती में अभी तक किसी तरह का खलल नहीं आया था, तथा इस इमारत की चारदीवारी भी अभी तक अपनी आधी हैसियत के साथ मौजूद थी जिसमें लगा हुआ बिना दरवाजे का फाटक दिखाई दे रहा था.

भूतनाथ ने भैयाराजा को एक कोठरी के अन्दर ले जाकर लिटा दिया और शागिर्दों सहित स्वयम् बाहर वाले दालान में बैठ कर अपने अनूठे मामलों पर विचार करने लगा. कदाचित् उसने निश्चय कर लिया था कि जब आप-से-आप भैयाराजा की बेहोशी दूर होगी तभी उनसे बातचीत करेगा क्योंकि इस समय उनकी बेहोशी दूर करने के लिए उसने कोई कार्रवाई नहीं की.

हम ऊपर लिख आये हैं कि भैयाराजा की सूरत ऐयारी ढंग पर बदली हुई थी फिर भी भूतनाथ ने उन्हें अच्छी तरह पहिचान लिया था. यद्यपि बेहोश करके भूतनाथ ने उन पर कब्जा कर लिया है परन्तु उनके हाथ-पैर खुले ही छोड़ दिए हैं.

तमाम रात बीत जाने के बाद जब भैयाराजा की बेहोशी दूर हुई तो उन्होंने अपने को एक मामूली कोठरी में पड़े हुए पाया. चूँकि बेहोश होने के पहिले ही उन्हें मालूम हो चुका था कि भूतनाथ ने ही धोखा देकर उन्हें अपने कब्जे में किया है इसलिए इस समय बेहोशी दूर होने के साथ ही उन्हें वह बात याद आ गई और वह आश्चर्य के साथ इधर-उधर आँखें दौड़ा कर भूतनाथ को खोजने लगे. भूतनाथ यह देखते ही फौरन उनके सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "शायद आप मुझे खोज रहा हैं ?" हम यह यह लिखना भूल गये कि भूतनाथ ने उनके चेहरे पर से वह नवीन झिल्ली भी उतार ली थी.

भैया० : हाँ, बेशक ऐसा ही है, और सबसे पहिले मैं तुमसे यही पूछा चाहता हूँ कि तुमने मुझे कैद करके भी खुला क्यों छोड़ रक्खा है तथा मेरे साथ दुश्मनी पर क्यों कमर बाँधी है ?

भूत० : खुला इसलिए छोड़ा है कि मुझे आपसे किसी तरह की दुश्मनी नहीं है और सिर्फ अपना एक छोटा-सा काम निकालने के लिए ही मैं आपको यहाँ ले आया हूँ.

भैया० : वह कौन-सा काम है जो मुझे सता कर तुम निकाल सकते हो ?
भूत० : नहीं-नहीं, मैं आपको जरा भी सताना नहीं चाहता बल्कि सिर्फ इतना ही चाहता हूँ कि आप किसी एक ठिकाने बैठे रहें और मैं आपकी सूरत बन कर अपना काम निकाल लूँ.

भैया० : (कुछ सोच कर) खैर कम-से-कम यह तो मालूम होना चाहिए कि वह काम कौन-सा है ?
भूत० : जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को इस दुनिया से उठा देना, यही एक काम है जिसके लिए मैं तरह-तरह की तकलीफें उठा रहा हूँ और मुझे दारोगा ऐसे कमीने आदमी की खुशामद करनी पड़ती है.

भैया० : दारोगा तुम्हारा दोस्त है, वह अपनी जान पर खेल कर तुम्हारी मदद करता है, उसी ने जमना, सरस्वती और इन्दुमति को तिलिस्म से निकाल कर तुम्हारे हवाले किया, उसी ने तुम्हारी इच्छानुसार सब कार्रवाइयाँ की, तुम्हारे ही सबब से मुझे मारने के लिए तैयार हो गया. फिर भी तुम उसे कमीना क्यों कहते हो ?

भूत० : आपका कहना ठीक है मगर मेरे काम के लिए उसने आपको मारना नहीं चाहा था बल्कि अपनी भलाई के लिए ऐसा किया था, और जो आदमी अपने मालिक को मारने में संकोच न करे उसे कमीना नहीं तो और क्या कहा जाय ?

भैया० : (मुस्करा कर) इस इल्जाम से तो तुम भी नहीं बच सकते, दयाराम के साथ जो कुछ सलूक तुमने किया सो तो जाहिर ही है और अब उनकी औरतों के साथ जो कुछ किया चाहते हो वह भी मालूम हो गया. बात यह है कि तुम और दारोगा दोनों एक ही मिट्टी के बने हुए हो, तुमसे बढ़ कर वह और उससे बढ़ कर तुम हो !

भैयाराजा की बातें सुन कर भूतनाथ लाजवाब तो हो गया मगर क्रोध से उसकी आँखें सुर्ख हो आईं. कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला—
भूत० : आप इस वक्त हर तरह से मेरे कब्जे में होकर भी ऐसी कड़वी बातें कहते हैं कि मुझे ताज्जुब होता है.
भैया० : बात जो कुछ थी वह मैंने सच-सच कह दी, अब चाहे तुम्हें कड़वी मालूम पड़े या मीठी. खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, तुम और दारोगा जैसे हो उसे मैं खूब पहिचानता हूँ, अब जो कुछ तुम्हारे जी में आवे करो और मेरी सूरत बन कर जो कुछ काम निकाला चाहते हो निकालो, देखूँ तुम अपने काम में क्योंकर कृतकार्य होते हो !

भूत० : खैर जैसा होगा देखा जायगा, अगर आप सीधी तरह से तीन-चार दिन तक मेरे कब्जे में रहना पसन्द करेंगे तो आपको बड़ी स्वतन्त्रता के साथ रखूँगा, नहीं तो आपको हथकड़ी और बेड़ी उठानी पड़ेगी.
भैया० : जैसे तुम कहोगे मैं वैसा ही करूँगा, मगर यह तो बता दो कि मुझे कहाँ कैद करोगे, इसी मकान में या किसी और जगह ?

भूत० : आज दिन-भर तो आपको इसी मकान में रहना पड़ेगा मगर रात होने पर मैं आपको एक दूसरे मकान में ले चलूँगा.
भैया० : बहुत अच्छा, तो अब मेरे नहाने-धोने का बन्दोबस्त होना चाहिए, मैं समझता हूँ कि मैदान जाने के लिए आप मुझे इस चहारदीवारी से बाहर तो जाने ही न देंगे ?
भूत० : नहीं.

भैया० : अच्छा तो इस खण्डहर की कोठरियों में घूमने की तो इजाजत मिलेगी ?
भूत० : इस खण्डहर के अन्दर आप जो चाहे कर सकते हैं, कुँआ और पानी खींचने का सामान भी यहाँ मौजूद है.

इतना कह कर भूतनाथ चुप हो गया. भैयाराजा अपनी जगह से उठ खड़े हुए और उस खण्डहर में जो कुछ कोठरियाँ थीं उन्हें अच्छी तरह से घूम-घूम कर देखने लगे. भूतनाथ और उसके दो-तीन साथी भी भैयाराजा के पीछे फिरते रहे. इसी तरह घूमते हुए भैयाराजा एक ऐसी कोठरी में पहुँचे जिसमें अभी तक लोहे का दरवाजा मौजूद था. यहाँ पर उन्होंने भूतनाथ से कहा, "अगर आप आधे घण्टे के लिए मुझे इस कोठरी में अकेले छोड़ दें तो बड़ी मेहरबानी होगी." भूतनाथ ने भैयाराजा की यह बात मंजूर कर ली और कहा, "आप जितनी देर तक चाहें इसमें बैठ सकते हैं, मगर मैं खूब जानता हूँ कि अन्दर से किवाड़ बन्द करके आप बहुत देर तक इसमें आराम न कर सकेंगे."

इतना कह कर भूतनाथ अपने दो साथियों को दरवाजे के बाहर बैठने का इशारा करके वहाँ से चला गया और भैयाराजा ने उस कोठरी के अन्दर जाकर मामूली तौर पर उसका दरवाजा भिड़का दिया.
दो घण्टे के बाद भूतनाथ अपने जरूरी कामों से छुट्टी पाकर उस कोठरी के दरवाजे पर आया और भैयाराजा को होशियार करने की नीयत से नाखून से दरवाजे को खटखटाया. जब कुछ जवाब न मिला तो दरवाजे को धक्का दिया. भूतनाथ का खयाल था कि दरवाजा अन्दर से बन्द होगा मगर ऐसा न था, धक्का देने के साथ ही दरवाजा खुल गया मगर भैयाराजा पर निगाह न पड़ी जिसके कारण भूतनाथ कोठरी के अन्दर चला गया और बड़े गौर से चारों तरफ देखने लगा.

यह कोठरी बहुत बड़ी न थी. इसकी दीवार और जमीन एक किस्म के सुर्ख पत्थर से बनी हुई थी, दीवारों में आले या आल्मारी का कोई निशान तक न था, भूतनाथ को बहुत आश्चर्य हुआ कि ऐसी कोठरी में से भैयाराजा यकायक क्योंकर गायब हो गये ! बहुत कुछ सोचने-विचारने के बाद भूतनाथ ने कमर से खञ्जर निकाला और उसके कब्जे से हर तरफ की दीवार ठोंक-ठोंक कर टोह लेने लगा कि कहीं से दीवार पोली तो नहीं है.

भूतनाथ का यह काम पूरा नहीं होने पाया था कि यकायक कोठरी का दरवाजा बन्द हो गया और अन्दर बिल्कुल अन्धकार हो जाने के कारण भूतनाथ घबड़ा उठा. टटोलता हुआ दरवाजे की जंजीर पकड़ कर खींचता था और बाहर से उसके शागिर्द धक्का देकर दरवाजा खोलना चाहते थे मगर किसी की भी मेहनत ठिकाने न लगी और अन्त में भूतनाथ दुःखी होकर जमीन पर बैठ कर तरह-तरह की बातें सोचने लगा. "क्या यह कोठरी किसी तिलिस्म से सम्बन्ध रखती है, या यह टूटा-फूटा मकान ही तिलिस्म है ? अगर ऐसा है तो जरूर भैयाराजा को उसके भेद मालूम हैं. अफसोस, मुझसे बड़ी भूल हुई जो भैयाराजा को इस खंडहर में ले आया. तो क्या अब मैं इस कोठरी में अकाल-मृत्यु का शिकार बनूँगा ? नहीं नहीं, मेरे पास खंजर है जिससे इस कोठरी की दीवार में सूराख कर सकता हूँ, यद्यपि इस लोहे के दरवाजे को खोलना असम्भव है."

इतना सोचकर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और खंजर से दीवार में सेंध लगाने की कोशिश करने लगा. मगर लगातार दो घण्टे मेहनत के बाद उसे निश्चय हो गया कि यह काम किसी तरह भी पूरा न हो सकेगा क्योंकि पत्थर और ईंट के टुकड़े निकालने के बाद मालूम हुआ कि दीवार में लोहे की फौलादी चादर लगी हुई है जिस पर खंजर का कुछ भी असर नहीं हो सकता था. पुनः हताश होकर भूतनाथ जमीन पर बैठ गया और अपनी बेवकूफी पर अफसोस करने लगा.

बाहर भी उसके शागिर्दों ने अपने उस्ताद को इस कैद से छुड़ाने के लिए कोशिश करने में कोई बात उठा न रक्खी, दीवार तोड़ने की कोशिश की और छत तोड़ने के लिए भी बेहिसाब पसीना बहाया मगर सफल-मनोरथ न हुए और अन्त में लाचार होकर दरवाजे के साथ मुँह लगा कर भूतनाथ से बातचीत करने लगे.

दुनिया में लालची, लोभी, पापी, और ऐयाश आदमियों को अपनी जान बहुत प्यारी होती है. जिन्हें लालच नहीं है और जो दुनियादारी में अपने को नहीं फँसाये रहते उनको अपनी जान की कुछ परवाह नहीं रहती. मौत से डर उन्हीं को लगता है. 'जिनके काम खोटे रहते हैं और जिनको मालूम होता है कि हमने अपनी जिन्दगी में कोई काम अच्छा नहीं किया, न तो किसी के साथ उपकार किया और न किसी के आड़े वक्त में काम आये.

इसी तरह भूतनाथ की जिन्दगी की बही में पापों की रोकड़ जैसे-जैसे बढ़ती जाती है तैसे-तैसे उसे अपनी जान प्यारी होती जाती है, इसके विपरीत दूसरे की जान को वह मच्छर और खटमल की जान के समान समझता है. एक पाप को छिपाने के लिए उसे दूसरे पाप की जरूरत पड़ी और दूसरे के लिए तीसरे की. अस्तु समझ लेना चाहिए कि इस कोठरी में बन्द हर तरह से लाचार भूतनाथ कैसी बातें सोच रहा होगा.

दिन बीत गया और आधी रात भी गुजरने पर आ गई. उस समय भूतनाथ अपनी जिन्दगी से एकदम हताश होकर उच्च स्वर में ईश्वर से प्रार्थना करने और कहने लगा—"हे जगन्नियन्ता, जगदाधार जगदीश्वर, मेरे अपराधों को क्षमा कर क्योंकि तू दीनानाथ, दीनबन्धु और दयालु है. मैं निश्चित रूप से प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में किसी की आत्मा दुखी न करूँगा और न कोई ऐसा काम करूँगा कि जिससे लोग मुझे प्रायश्चित्ती कहें या मैं समाज में मुँह दिखाने के लायक न रहूँ. जो कुछ अपराध मैं कर चुका हूँ अब न तो उसको छिपाने की कोशिश करूँगा और न निरपराधिनी अबला जमना, सरस्वती और इन्दुमति के खून का ग्राहक ही बनूँगा तथा..."

भूतनाथ और कुछ कहना चाहता था कि उस कोठरी के एक कोने में से आवाज आयी, "ओ दुष्ट, चुप रह ! क्या तू ईश्वर को भी धोखे में डालना चाहता है !"

इस आवाज ने भूतनाथ को चौंका दिया और वह आँखें फाड़-फाड़ कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आयी थी, मगर अन्धकार इतना ज्यादा था कि उसकी तेज आँखें भी कुछ काम न कर सकीं.

अफसोस कि इस वक्त ऐयारी का बटुआ भी उसके पास न था, नहीं तो वह जरूर सामान निकाल कर रोशनी करता और देखता कि उसकी बातों का जवाब देने वाला कौन है ? भूतनाथ ने उठ कर टटोलना और उस तरफ जाना भी मुनासिब न समझा जिधर से आवाज आई थी अस्तु उसने गुप्त मनुष्य की बात का इस तरह उत्तर दिया—

भूत० : नहीं, मैंने जो कुछ कहा है उसकी सच्चाई में किसी तरह भी फर्क नहीं पड़ सकता. मैं यहाँ तक तैयार हो चुका हूँ कि अपने ऐयारी के फन को भी तिलांजलि दे दूँगा और दुनिया से एकदम किनारे हो जाऊँगा.

गुप्त० : नेकी और नेकनीयती के साथ रहने वाले को दुनिया छोड़ने की कोई जरूरत नहीं. अच्छा तेरी इस समय की प्रार्थना स्वीकार की जायगी अगर तू आज के माने में सच्चा ठहरेगा, देख मेरी तरफ !!

इसी समय कोठरी में चाँदना हो गया और साक्षात् शिव की तरह त्रिशूल और डमरू लिए एक अपूर्व मूर्ति के भूतनाथ को दर्शन हुए. भूतनाथ ने मुश्किल से देखा कि इस त्रिशूल में से बेहिसाब रोशनी निकल रही है और वह रोशनी इतनी कड़ी और तेज है कि उसकी तरफ आँख नहीं ठहरती. शिवरूपी महात्मा ने आगे बढ़ कर भूतनाथ के बदन से वह लगा दिया जिससे भूतनाथ काँप उठा और एकदम बेहोश होकर जमीन पर लेट गया.

[१६]

भूतनाथ की बेहोशी जब दूर हुई तो उसने अपने को एक हरे-भरे सुन्दर बाग में नर्म-नर्म घास के ऊपर पड़े पाया. फूलों की मीठी-मीठी खुशबू उसके दिमाग को मुअत्तर कर रही थी और पश्चिम तरफ आसमान पर अस्त होते हुए सूर्य भगवान की लालिमा कह रही थी कि भूतनाथ अब उठ बैठो, अब यह गफलत की नींद सोने का समय नहीं है. भूतनाथ घबड़ा कर उठ बैठा और आश्चर्य की निगाह से चारों तरफ देखने लगा.

इस छोटे-से बाग के तीन तरफ ऊँची दीवारें थीं और चौथी तरफ दोमंजिला बहुत खूबसूरत एक मकान बना हुआ था. बाग के बीचोंबीच में एक छोटा-सा संगमरमर का चबूतरा था जिस पर चार-पाँच औरतें बैठी हुई दिखाई दे रही थीं.

भूतनाथ की निगाह सब तरफ से घूमती हुई उस चबूतरे पर जा पड़ी जिस पर कई औरतें बैठी हुई थीं. भूतनाथ ने बारीक निगाह से उनकी तरफ देखा और बोल उठा, "इनको तो मैं पहिचान गया हूँ !" यह कहते ही उस चबूतरे के पास जा पहुँचा और देखा कि जमना, सरस्वती, इन्दुमती तथा हाथों में नंगी तलवार लिए और भी दो औरतें वहाँ बैठी हुई आपस में कुछ बातें कर रही हैं. यद्यपि थोड़ी ही देर पहिले ईश्वर की प्रार्थना करता हुआ भूतनाथ कसम खा चुका था कि किसी को दुःख न देगा, मगर इस समय एकान्त में जमना, सरस्वती और इन्दुमति को देख उसके मुँह में पानी भर आया और वह अपनी प्रतिज्ञा को एकदम भूल गया.

जमना, सरस्वती और इन्दुमति ने भी भूतनाथ को देखा. चमक कर उठ खड़ी हुईं और आश्चर्य करती हुई भूतनाथ से पूछने लगीं—

जमना० : क्योंजी गदाधरसिंह, तुम यकायक यहाँ कैसे आ पहुँचे ?
भूत० : इस बात को तो मैं खुद ही नहीं जानता.

जमना० : मगर मैंने तो सुना था कि तुम्हें भैयाराजा ने कैद कर लिया और तुमने ईश्वर को साक्षी देकर कसम खाई है कि अब किसी के साथ भी बुराई न करोगे.

भूत० : (दबी जुबान से) हाँ, सो तो ठीक है, मगर तुमने सुना नहीं कि बुद्धिमानों का कथन है कि हजार कसम खाकर भी अगर दुश्मन को मार सके तो जरूर मारे...
सरस्वती : ठीक है, कम-हिम्मत, बुजदिल और नामर्द बुद्धिमानों का जरूर यह कौल है.

भूत० : खैर, मैं तुम्हारी बातों का जवाब देना मुनासिब नहीं समझता क्योंकि तुम मेरे मित्र और मालिक की स्त्री हो और मैं तुमको भी मालिक ही के समान मानता हूँ....
जमना० : (मुस्करा कर) ठीक है, तब ही तो तुमने मुझ पर सफाई का हाथ फेरा था और एकदम जहन्नुम में मिला देने के लिये तैयार हो गये थे !

भूत० : इस विषय में तुम कोई भी सबूत नहीं दे सकती हो बल्कि मैं इस बात का सबूत दे सकता हूँ कि तुमने मुझे सताने के लिए कैसे-कैसे ढंग रचे थे जिनसे कि ईश्वर ही ने मुझे बचाया.
जमना० :हाँ, इस बात से तो मैं किसी तरह भी इनकार नहीं कर सकती क्योंकि तू मेरे पति का घातक है.

भूत० : (क्रोध के साथ) बस यही बात तो मेरे कलेजे में खटकती है. अगर तुम अपनी जुबान से ऐसा न कहा करतीं और तुम्हें इस बात का शक न होता तो मुझे तुम्हारे साथ दुश्मनी करने की कोई जरूरत ही न थी. तुम ही मुझे दुनिया में मुफ्त बदनाम और बर्बाद किया चाहती हो और सिवाय तुम्हारे और कोई भी मेरे माथे में कलंक का टीका नहीं लगा सकता क्योंकि वास्तव में मैं तुम्हारे पति का घातक नहीं हूँ. तुम मुझे मुफ्त में बदनाम करती हो और इसी बदनामी को दूर करने के लिए मुझे मजबूर होकर तुम्हारे साथ दुश्मनी करनी पड़ती है.

जमना० :अगर तुम इस बात का सबूत दे दो कि तुम वास्तव में मेरे पति के घातक नहीं हो तो मैं आज ही से तुम्हारे साथ दुश्मनी करने का ख्याल एकदम छोड़ दूँ. मगर साथ ही इसके तुमको भी मेरे साथ का अपना बर्ताव बदल देना अर्थात् दुश्मनी का ध्यान छोड़ देना पड़ेगा.

भूत० : मैं यह काम करने के लिए तैयार हूँ.
सरस्वती : बस तो सबूत देने में देर क्या है ?
भूत० : इतना ही कि मेरा ऐयारी का बटुआ मुझे मिल जाय.

जमना० :तुम्हारे ऐयारी के बटुए में कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम अपनी सफाई के सबूत में पेश कर सको.
भूत० : (आश्चर्य से) यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

जमना० : तुम्हारा बटुआ मेरे कब्जे में है, मैं उसे अच्छी तरह देख चुकी हूँ.
भूत० : यह तो तुमने अच्छा नहीं किया !

जमना० : (मुस्करा कर) तुम दूसरे का सर्वस्व नाश कर दो तो कोई हर्ज नहीं मगर कोई दूसरा तुम्हारा ऐयारी का बटुआ किसी तरह ले ले तो कहो 'बहुत बुरा किया' ! जिन भैयाराजा को तुमने धोखा देकर फँसाया था उन्होंने ही तुम्हारे बटुए पर कब्जा कर लिया था और अब वह मेरे पास मौजूद है.

जमना की बातें सुनते-सुनते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने बिना इस बात का विचार किये ही कि मैं कहा हूँ, किसके कब्जे में हूँ और क्या कर रहा हूँ उन तीनों पर हमला किया अर्थात् खंजर निकाल कर वार करने के लिए उन पर झपटा.

[१७]

सुबह होने में अभी दो घण्टे की देर है. कृष्णपक्ष की दशमी है इसलिए अंधेरी रात का दौर बीत गया है और इस समय मन्द रोशनी फैलाते हुए चन्द्रमा आसमान पर दिखाई दे रहे हैं. काशी से तीन कोस की दूरी पर सारनाथ नाम का एक स्थान है और वह दो-ढाई सौ घरों की एक खासी बस्ती है. बस्ती के दाहिने किनारे एक साफ-सुथरी सड़क है जो कि पटने से होती हुई बराबर काशी तक चली गई है. इसी सड़क पर से एक रथ, जिसमें सुन्दर बैलों की जोड़ी लगी हुई है, धीरे-धीरे काशी की तरफ चला जा रहा है.

मालूम होता है कि रथ बहुत दूर से आ रहा है क्योंकि इसका हाँकने वाला और इसके सवार सभी मीठी-मीठी नींद में मस्त हो रहे हैं, यद्यपि आदत और नियम के अनुसार बैल बेचारे सीधी राह चले जा रहे हैं मगर हाँकने वाले को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि सवारी अब कहाँ आ पहुँची है और जिस मुकाम पर हम जाने वाले हैं वह कितनी दूर रह गया है.

रथ हाँकने वाले की उम्र कम-से-कम चालीस वर्ष की होगी. वह कद्दावर और हृष्ठ-पुष्ठ आदमी था, घनी दाढ़ी ऊपर की तरफ चढ़ी हुई थी और स्याह मूँछों ने उसका चेहरा रोआबदार बना रक्खा था. मोटा गज्जी का दोहरा अंगरखा और चुस्त पायजामा पहिने हुए था जिसके ऊपर सुर्ख कपड़े का कमरबन्द कसा हुआ था और उसमें एक वजनी तथा चौड़े पाड़ का तेगा लटक रहा था.

जब यह रथ सारनाथ की बस्ती के पास पहुँचा तो एक चौकीदार ने हाँकने वाले को आवाज देकर रोका और कहा, "ठहरो-ठहरो, बताओ यह रथ कहाँ से आता है और कहाँ जायेगा ?"
हाँकने वाले की पिनिक टूटी और उसने बैलों की रस्सी खींच कर कहा, "भाई यह रथ काशी जायगा. तुम कौन हो (चारो तरफ देख कर) और इस बस्ती का क्या नाम है ?"

चौकीदार : इस बस्ती का नाम सारनाथ है और हम यहाँ के चौकीदार हैं.
हाँकने वाला :(चौंक कर) वाह-वाह, तो हम सारनाथ पहुँच गए ! तो अब काशी यहाँ से थोड़ी ही दूर होगी ?
चौकीदार : बस तीन ही कोस तो.

हाँकने वाला : (चन्द्रमा की तरफ देख कर) रात भी थोड़ी ही रह गई है, अच्छा अब हम तेज हाँकते हैं जिसमें सवेरा होने के पहिले ही ठिकाने पहुँच जाएँ.
इतना कह कर उसने रथ हाँकने की चेष्टा की मगर चौकीदार ने रोका और कहा—

चौकीदार : ठहरो, पहिले यह बता दो कि इसमें सवार कौन कहाँ के रहने वाले और किस घराने के आदमी हैं ?
हाँकने वाला : इससे तुम्हें क्या मतलब ?
चौकीदार : मतलब नहीं तो पूछते क्यों हैं !
हाँकने वाला : हम यह नहीं बता सकते कि इसमें कौन है.

चौकीदार : (जोर से जफील बजा कर और कुछ ठहर कर) बिना बताए तुम यहाँ से कदापि आगे जाने न पाओगे.
हाँकने वाला : आखिर रोकने का कुछ सबब भी बताओगे या यों ही जबर्दस्ती करोगे.

चौकीदार : सबब तो हम नहीं कह सकते मगर इतना जरूर बता देंगे कि इस गाँव के मालिक की यही आज्ञा है कि रात के समय बिना जाँच किये कोई सवारी यहाँ से आगे न जाने पावे.
हाँकने वाला : इसमें जनानी सवारी है, इसलिए हम इसकी जाँच नहीं करने देंगे.

इतना कह हाँकने वाले ने बैलों को चाबुक मारा और वहाँ से निकाल ले जाने की इच्छा की, मगर इस बीच चौकीदार की बजाई जफील की आवाज सुन कई आदमियों ने आकर उस रथ को घेर लिया था. इनमें आगे के लोग तो यद्यपि बैलों के खौफ से हट गये परन्तु सभों ने मिल कर बैल और हाँकने वाले पर हमला किया और जोर-जोर से चिल्ला-चिल्ला कर लट्ठ चलाने लगे. हाँकने वाले ने मजबूर होकर रथ को रोक लिया और हाथ में तेगा लेकर रथ के नीचे कूद दुश्मनों का मुकाबला बड़ी दिलावरी और बहादुरी के साथ करने लगा.

थोड़ी ही देर में उन लोगों को मालूम हो गया कि रथ हाँकने वाला मामूली आदमी नहीं है क्योंकि बात-की-बात में उसने कइयों के हाथ का लट्ठ बेकार कर दिया, कइयों की कलाई काट डाली और कइयों को ऐसा जख्मी किया कि उनमें उठने की शक्ति न रही, परन्तु वह पहलवान भी बेतरह चुटीला हो गया, उसकी बाईं कलाई लट्ठ की चोट से बेकार हो गई, उसके मोढ़े जख्मी हो गये, और उसके सिर पर एक लट्ठ ऐसा बैठा कि सिर फट जाने के कारण खून का तरारा बह चला.

वह पैंतरा बदलता हुआ एक किनारे हो गया और तब लोगों को ऊँची आवाज में पुकार कर लड़ाई बन्द करने के लिए कहा, परन्तु वहाँ पर कुछ ऐसा हुल्लड़ मच गया था कि उसकी आवाज बड़ी मुश्किल से लोगों ने सुनी और तब लड़ाई बन्द हुई, इस बीच वह इधर-उधर चक्कर काटता हुआ अपने को बचाता रहा.

लड़ाई बन्द हो जाने पर एक आदमी ने कुछ आगे बढ़ कर रथ हाँकने वाले से कहा, "तुमने हमारे कई आदमियों को व्यर्थ जख्मी कर दिया है, तिस पर भी हम तुम्हारा कसूर माफ कर देंगे यदि अब भी तुम अपना और अपनी सवारी का ठीक-ठीक परिचय दे दो !"

हाँकने वाला : इस रथ पर औरतें सवार हैं इसलिए हम इनका नाम बताने से हिचकते हैं.
आदमी : आखिर इन औरतों का कोई मर्द तो होगा ! तुम उन्हीं का नाम बताओ और मकान का पता दो तथा यह कहो कि रात के समय सफर करने का क्या कारण है ?

हाँकने वाला : पटने के रईस सेठ ताराचन्द की स्त्री और लड़की इस रथ पर सवार हैं, कई कारणों से उन्होंने इन औरतों को अपने भाई के पास काशी भेजा है.
आदमी : इतने बड़े रईस की औरतों को इस तरह अकेले सफर करते देख कर हम लोगों को आश्चर्य मालूम होता है तथापि थोड़ी देर के लिए हम तुम्हारी बात सच मानते हैं. परन्तु जब तक सूर्य उदय न हो ले तब तक के लिए तुम्हें यहाँ रुके रहना पड़ेगा.
हाँकने वाला : ऐसा क्यों ?

आदमी : यहाँ का यही नियम है.
हाँकने वाला : यहाँ रुकने से तो हमारा बड़ा हर्ज होगा और ऊपर से हमारे दुश्मन सर पर आ जायेंगे जो हमारा पीछा कर रहे हैं और जिनके खौफ से हम रातोंरात भाग जा रहे हैं .

चौकीदार : (आगे बढ़ कर) इनकी यह बात मानने लायक नहीं है, क्योंकि अगर इनको पीछा करने वाले दुश्मनों का खौफ होता तो ये बड़ी होशियारी और तेजी के साथ रथ को भगा कर लिए जाते मगर मैंने अच्छी तरह देखा है कि रथ बहुत धीरे-धीरे जा रहा था और ये (हाँकने वाले) मीठी नींद सो रहे थे, या यों कह सकते हैं पिनिक ले रहे थे.

आदमी : (चौकीदार को बोलने से रोक कर) खैर जाने दो, हम इस समय इन्हीं की बात मान लेते हैं और जवाब में यह कहते हैं कि अगर तुम्हारे दुश्मन पीछा करते हुए यहाँ आ जायेंगे तो हम लोग तुम्हारी मदद करेंगे और उनसे लड़ेंगे, परन्तु सवेरा होने के पहिले तुम्हें यहाँ से आगे न जाने देंगे.

हाँकने वाला : खैर, जब तुम ऐसा कहते हो तो हम रुक जाते हैं, मगर यह तो बताओ कि हमें रोक लेने से तुम्हें फायदा क्या होगा ?
आदमी : सो तुम्हें पीछे मालूम हो जायगा, इस समय हम इस बात का जवाब नहीं दे सकते.

हाँकने वाला :यह तो खासी जबर्दस्ती है !
आदमी : जो समझो.

मजबूर होकर रथ रोक लेना पड़ा मगर बहुत कहने पर भी हाँकने वाले ने रथ को नीचे नहीं उतारा, सड़क ही पर एक किनारे खड़ा कर दिया और बैलों को भी रथ से अलग नहीं किया. उधर गाँव वालों ने (जो लड़े थे) धीरे-धीरे अपने आदमियों को सम्हालना शुरू किया अर्थात् चुटीले और जख्मी आदमियों को जिस तरह बन पड़ा उठा-उठा कर ले जाने लगे. इसी बीच में रथ हाँकने वाले ने रथ के परदे के अन्दर सिर ले जाकर उसमें बैठी हुई सवारी से कुछ बातें कीं.

वास्तव में रथ के अन्दर तीन औरतें बैठी हुई थीं जिनमें से दो के हाथों इस समय एक-एक दोनाली तमन्चा भरा हुआ मौजूद था तथा वे इसलिए तैयार बैठी थीं कि अगर कोई जबर्दस्ती रथ का पर्दा हटावेगा तो उसे गोली मार देंगे.

बातचीत करने के बाद हाँकने वाला पुनः रथ के ऊपर अपने स्थान पर जा बैठा. यह बात उसके विपक्षियों को बहुत बुरी मालूम हुई अतएव उन्होंने उसे रोका और कहा, "जबकि तुमने इस बात का निश्चय कर लिया कि सवेरा होने तक रथ इसी जगह रुका रहेगा तब हाँकने वाली गद्दी पर जाकर बैठने की तुम्हें क्या जरूरत थी ? मुनासिब तो यही था कि बैल खोल दिए जाते और तुम जमीन पर ही कम्बल बिछाकर बैठते पर तुमने ऐसा नहीं किया खैर हमने भी जोर नहीं दिया, मगर तुम्हारा अपनी जगह पर जाकर बैठना हमें शक दिलाता है कि तुम वादे के खिलाफ बेईमानी पर कमर बाँधे हो और भागने के लिए तैयार होकर मौके का इन्तजार कर रहे हो."

हाँकने वाला : नहीं-नहीं. मेरा ऐसा इरादा नहीं है, यहाँ पर बैठने से मुझे आराम मिलेगा और अफीम घोल कर पीने में सुभीता होगा, यही सोच कर मैं यहाँ आ बैठा हूँ.

इस समय विपक्षियों के कई आदमी अपने जख्मी साथियों को सम्हालने के फेर में पड़ गये थे और रथ का सामना खाली हो गया था, सिर्फ रुकावट के लिए दो-चार आदमी रथ के पास खड़े थे, यकायक रथ का पर्दा उठा और तमंचा छूटने की आवाज आई, एक आदमी जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़ा और बाकी में खलबली पड़ गई तथा डर के मारे सभी इधर-उधर हट गये, उसी समय मौका देख कर पहलवान ने बैलों को चाबुक मारा और रथ को तेजी के साथ भगा ले चला.

इसी समय तमंचे की पुनः आवाज आई और विपक्षियों का दूसरा आदमी जमीन पर लुढ़क गया. ऐसी अवस्था में उन लोगों के लिए रथ का पीछा करना मुश्किल हो गया और रथ तेजी के साथ कुछ दूर निकल गया, मगर इस बात की खबर रथ हाँकने वाले को तथा उसकी सवारी को कुछ भी नहीं है कि एक चालाक आदमी रथ के पीछे रस्सा थाम कर लटक गया है और बड़ी आसानी से रथ के साथ-साथ चला जा रहा है. हाँकने वाले ने कई दफे पीछे फिर कर देखा मगर किसी को पीछा करते न पा निश्चिन्त हो रहा. सवेरा होने के पहिले ही रथ काशी जा पहुंचा और तब हाँकने वाले ने रथ की तेजी कम कर दी. धीरे-धीरे चलकर रथ त्रिलोचन महादेव के पास पहुँचा और एक बड़े फाटक के अन्दर चला गया जो इस समय खुला हुआ था. पीछे की तरफ जो आदमी लटका हुआ था वह भी उसके साथ ही फाटक के अन्दर चला गया.

फाटक के अन्दर छोटा-सा अस्तबल था जहाँ कई रथों के अतिरिक्त घोड़े और बैल भी बँधे हुए थे. जिस समय रथ फाटक के अन्दर पहुँचा उस वक्त अस्तबल में कई आदमी इधर-उधर टहल रहे थे, उस समय सुबह की सफेदी आसमान पर फैल चुकी थी और आदमियों की सूरत साफ-साफ पहिचानी जाती थी.

अस्तबल के अन्दर वाले आदमियों ने रथ के पीछे लटकते आदमी को देखकर हल्ला मचाया और उसके विषय में पहलवान से पूछना और पकड़ना चाहा जिससे वह आदमी चैतन्य हो गया और रथ का रस्सा छोड़ अस्तबल के बाहर भागा. दो आदमियों ने उसका पीछा किया मगर उसे पकड़ न सके और वह दोनों को धोखा देता हुआ बड़ी तेजी के साथ बाहर निकल कर नजरों से ओझल हो गया.

उस आदमी के भाग जाने से जो कुछ खलबली पड़ गई थी उस पर ख्याल न करके रथ हाँकने वाले ने परदा उठाया और सवारी को उतरने के लिए कहा. एक-एक करके तीन औरतें रथ के नीचे उतरीं जिनमें से दो सरदार और एक मजदूरनी थी, रथ के नीचे उतरने के बाद मजदूरनी ने एक छोटी-सी गठरी और एक पीतल का डिब्बा जिसमें ताला लगा हुआ था रथ पर से उतारा और तब तीनों औरतें अस्तबल के पूरब और उत्तर कोने की तरफ रवाना हुईं. उस कोने में एक छोटा-सा मगर मजबूत दरवाजा था जिसके अन्दर वे तीनों गईं और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया.

उस दरवाजे के अन्दर जाकर वे तीनों औरतें एक छोटी-सी गली में पहुँचीं जिसकी चौड़ाई दो हाथ और लम्बाई दस-बारह हाथ से ज्यादा न होगी, सामने ही एक रंगीन मकान का दरवाजा था जो इस समय भीतर से बंद था. बाहर लोहे की एक कड़ी लगी हुई थी जिसके खटकाने से दरवाजा खुल गया और वे तीनों औरतें उस मकान के अन्दर चली गईं, दरवाजा पुनः बन्द हो गया.

यह मकान यद्यपि छोटा-सा मगर मजबूत और अन्दर से खूबसूरत बना हुआ था. इसके अन्दर कई दालान, कोठरियाँ और सजे कमरे थे तथा कुर्सी, पलंग इत्यादि के अतिरिक्त हर तरह के आराम की चीजें वहाँ मौजूद थीं.

जब वे तीनों औरतें मकान के अन्दर चली गईं और दरवाजा बन्द हो गया तब सामने पन्द्रह या सोलह वर्ष का एक लड़का दिखाई दिया जिसने झुक कर एक औरत को सलाम किया और पूछा, "मौसीजी, तुम्हारे आने में इतना अरसा क्यों लगा ?" इसके जवाब में उस औरत ने कहा, "आराम से बैठूँगी तो सब हाल कहूँगी, बड़ी मुसीबत में फँस गई थी."

इतना कह कर वह औरत दोनों को साथ लिए हुए सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर की मंजिल में चली गई और एक दालान में पहुँच कर, जिसमें साफ फर्श बिछा हुआ था और कई आराम कुर्सियाँ रक्खी हुई थीं, एक कुर्सी पर बैठ गई. दूसरी कुर्सी पर दूसरी औरत बैठ गई और मजदूरनी ने हाथ का असबाब उन दोनों के सामने रख कर दूसरी तरफ का रास्ता लिया. वह लड़का भी इशारा पाकर एक कुर्सी पर बैठ गया और बातें होने लगीं.

उन दोनों सरदार औरतों में से एक की उम्र बीस वर्ष की होगी जिसे उस लड़के ने मौसी कहकर संबोधन किया था और दूसरी की उम्र तीस वर्ष से ज्यादा की होगी. देखने में दोनों ही औरतें खूबसूरत और भले घर की मालूम होती थीं. यद्यपि इस समय उन दोनों का बदन जेवरों से खाली था मगर देखने वाला कदापि यह न कहेगा कि इनके पास जेवर नहीं है या जेवर पहिनने की आदत नहीं है क्योंकि बदन पर मौके-मौके से जेवरों के निशान मालूम पड़ते थे, कम उम्र औरत ने आराम कुर्सी पर बैठ कर एक लम्बी साँस ली और तब लड़के की तरफ देख कर कहा, "कैसी मुसीबतों को सह कर मैंने अपना काम निकाला, मगर सारनाथ पर आकर हम लोग बेतरह फँस गये !"
लड़का : सो क्या ?

औरत : रथ धीरे-धीरे आ रहा था, हम लोग नींद में मस्त हो रहे थे, हाँकने वाला तेगासिंह भी बैठे-बैठे सो रहा था और बैल धीरे-धीरे सीधी सड़क पर चल रहे थे कि यकायक सारनाथ आ पहुँचे. अगर हम लोग नींद में गाफिल न होते और इस बात का ज्ञान होता कि अब सारनाथ पहुँचा चाहते हैं तो तेजी से साथ हाँक कर वहाँ से निकल जाते और किसी के हाथ न लगते मगर मेरी नींद के झपेटों ने ऐसा न करने दिया. अस्तु वह जब वहाँ पहुँचे. तो चौकीदार ने रोका और सीटी बजा कर बहुत-से आदमियों को इकट्ठा कर लिया.

मैंने आवाज से पहिचान लिया कि तुम्हारा 'मोहना' भी उन्हीं लोगों में शरीक है जिसका सबसे ज्यादा अन्देशा मुझे था.
लड़का : (घबड़ाना-सा होकर) फिर क्या हुआ ?
औरत : (जो कुछ सारनाथ पर हुआ था उसे बयान करके) जब हम लोग वहाँ से निकल भागे और अस्तबल में आ पहुँचे तब मालूम हुआ कि दुश्मनों का एक आदमी रथ के पीछे लकड़ी का रस्सा थाम कर लटक गया था जो कि यहाँ अस्तबल के अन्दर तक चला आया और लोगों ने देखा तो भाग निकला, कोई उसे पकड़ न सका.

लड़का : यह तो बहुत बुरा हुआ ! जब वह दुष्ट सारनाथ में जाकर यह बयान करेगा कि रथ फलानी जगह गया है, तब वे लोग पता लगाने के लिए जरूर निकलेंगे और तब उन्हें इस बात का भी गुमान हो जायेगा कि रथ में तुम ही सवार थीं.

औरत : बेशक ऐसा होगा, और मुझे भी इसी बात का खुटका लगा हुआ है इसी से तो सफर की सब मुसीबतों से बढ़ कर मैंने इसे समझा और सबसे पहिले यही हाल तुमसे बयान किया. तुम बुद्धिमान, होशियार और होनहार हो, अतएव सोच कर बताओ कि अब हम लोगों को क्या करना चाहिए.

लड़का : आपकी बुद्धि के मुकाबिले में मैं अपने को कुछ भी नहीं समझता तथापि सोच कर कुछ देर बाद मैं कहूँगा कि कब क्या करना ठीक होगा, अच्छा मुझे दिखाइये तो सही कि आप वहाँ से क्या-क्या चीजें लाई हैं ?

औरत : हाँ-हाँ, तुम्हें अभी दिखाती हूँ, देखो.
यह कहकर उस औरत ने झुक के पीतल वाला डिब्बा उठाया और कमरे में से ताली निकाल कर उसे खोला. लड़के ने झाँक कर अन्दर देखा और झिझक कर पीछे हट गया.

औरत : (मुस्कुरा कर) वाह-वाह, तुम इतना डर गये ? अगर तुमको अपने हाथ से करना पड़ता तो मालूम होता है कि मौका मिलने पर भी तुम न कर सकते.

लड़का : सो बात तो नहीं है. मुझे अगर यह काम करना पड़ता तो मैं कदापि संकोच न करता और न किसी तरह डरता ही. हाँ इस तरह बिगड़ी हुई खोपड़ी को डिब्बे के अन्दर बन्द करके ले आना मेरे लिए बहुत कठिन था. इस काम से घृणा होती है और इसकी बिगड़ी हुई सूरत देखकर डर भी लगता है, बस इसे निकालो और फेंको.

औरत : (हँस कर) सिर्फ तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए यह खोपड़ी ले आई हूँ, तुममें अभी लड़कपन का अंश मौजूद है इसलिए तुम डरते हो, मगर ध्यान रक्खो कि इसी किस्म का एक काम बहुत जल्द तुम्हें करना भी पड़ेगा.

लड़का : (जोश दिखाता हुआ) एक नहीं दस दफे मैं ऐसा काम करने के लिए तैयार हूँ !
औरत : (पीठ ठोंक कर) शाबाश, इसकी आजमाइश दो ही चार दिन के अन्दर कर ली जायेगी. खैर देखो इस डिब्बे में और क्या चीजें हैं.

इतना कह कर उस औरत ने डिब्बे के अन्दर से एक कटा हुआ सर निकाल कर बाहर रक्खा जो कई तह किये हुए कपड़े के ऊपर रखा हुआ था जो खून से तरबतर हो रहा था. इसके बाद उसने कपड़े पर लिखी और तह की हुई एक तस्वीर निकाली और खोल कर लड़के को दिखाने तथा उसके भेदों को समझाने लगी.

औरत : देखो, इस तस्वीर को देखकर किसी के भी दिल में शक न रह जायगा कि दयाराम के विषय में दलीपशाह और भूतनाथ दोनों ही ने धोखा खाया और वास्तव में वह आदमी दयाराम था ही नहीं जो भूतनाथ के हाथ से मारा गया. जिसने दयाराम को गिरफ्तार किया था उसे जरूर भूतनाथ ने मार डाला मगर उसके बदले उसका लड़का वह काम कर गुजरा जो उसका बाप किया चाहता था. भूतनाथ ने जो खून किया उसमें भी उसको धोखा हुआ, एक नहीं बल्कि दो दफे धोखा हुआ और उसके साथ-साथ इन्द्रदेव के आदमियों को भी धोखा हुआ जो किसी दूसरे ही को दयाराम समझ कर उठा ले गये. पहिले पहिले भूतनाथ ने यह भी नहीं समझा था कि वह दयाराम है मगर जब वह वार कर चुका तब दलीपशाह के मुँह की बातें सुन कर उसको विश्वास करना पड़ा कि उसने वास्तव में दयाराम को ही मारा.

मगर अफसोस, दयाराम बेचारा अभी तक कैद में है और न तो भूतनाथ तथा इन्द्रदेव और न उसकी दोनों औरतों को ही इस बात की कुछ खबर है. (तस्वीर पर उंगली रख कर) यह देखो इस कोठरी में दयाराम कैद है और दलीपशाह का धावा इस कोठरी पर हुआ जिसमें रामसिंह का भतीजा मुद्दत से बीमार पड़ा हुआ था, और देखो यह दरवाजे पर रामसिंह सो रहा है, इसी जगह से इन दोनों को इन्द्रदेव के ऐयारों ने कैद कर लिया था, और यह देखो राजसिंह का लड़का अपने कमरे में बैठा ना-मालूम क्या लिख रहा है.....

लड़का : (बात काट कर) मौसी, यह तो बताओ कि तस्वीर किसकी बनाई हुई है और तुमने कहाँ पाई ?
औरत : (तस्वीर के नीचे की तरफ उंगली का इशारा करके) यह देखो इस तस्वीर के नीचे राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह का हस्ताक्षर है और यह तस्वीर उसकी बनाई हुई है, उसी के घर से मुझे यह मिली भी है.

लड़का : ध्यानसिंह को इस तस्वीर के बनाने की क्या जरूरत पड़ी ?
औरत : सो अभी ठीक-ठीक समझ में नहीं आया मगर देखो तो तस्वीर के नीचे की तरफ (उंगली से बता कर) इन तीन सतरों को पढ़ने से क्या मालूम होता है ?

लड़का : (पढ़ कर) इसमें लिखा है- "बेशक मेरे बाप ने दयाराम को पकड़ा था मगर वह अपनी सजा को पहुँच गया. भूतनाथ और दलीपशाह ने धोखा खाया. असल में दयाराम को जमानिया के दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया. दयाराम अभी तक जीते हैं और जीते रहेंगे. दयाराम को अपने कब्जे में रख कर दारोगा अपना मतलब भूतनाथ से निकालने की इच्छा रखता है. भूतनाथ, सम्हलो और इस भेद को जानो. इस खबर के बदले मैं तुमसे मित्रता की भिक्षा माँगता हूँ."

औरत : समझ गये ! इससे राजसिंह का मतलब कुछ गूढ़ मालूम होता है. यह तस्वीर इसी आदमी के हाथ वह भूतनाथ के पास भेज चुका था जिसका सर मैं काट लाई हूँ. अगर यह भूतनाथ के पास पहुँच जाती तो फिर मेरा काम कुछ भी न बनता पर अब देखो मैं कैसा रंग लाती हूँ.

लड़का : तो यह तस्वीर तुम जमना, सरस्वती को दोगी या इन्द्रदेव को ?
औरत : दोनों में से किसी को भी नहीं, जो कुछ करना होगा मैं स्वयं करूँगी और अपने हाथ से दयाराम का उद्धार करूंगी. जमना और सरस्वती को इस दुनिया से उठा दूँगी, भूतनाथ को कब्जे में करूँगी और स्वयं जमना बनूँगी.
लड़का: समस्या कठिन है, कार्रवाई मुश्किल है, मगर आपकी हिम्मत बहुत बड़ी है.
औरत: सारनाथ वाले मेरे काम में बाधक और दुश्मन हो रहे हैं, उसके हाथ से अगर बच गई तो मैं सब कुछ कर सकूँगी.

लड़का : उनका बन्दोबस्त मेरे जिम्मे, उन लोगों को मैं ठीक करूँगा, मगर आपका इस मकान में रहना ठीक नहीं है.
औरत : मेरा भी यही खयाल है, आज ही मैं इस मकान को छोड़ दूँगी, और तुम क्या करोगे ?
लड़का : मैं अभी इस मकान में रहूँगा और सारनाथ वाले आपको खोजते हुए जब यहाँ पहुँचेंगे तो उन्हें गिरफ्तार करूँगा, अच्छा यह बताइये कि इस डिब्बे में और क्या चीजें हैं ?

औरत : (डिब्बे में से कागज का एक मुट्ठा निकाल कर लड़के के हाथ में देकर) भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई चीठियाँ हैं जो कि नागर से मँगनी माँग लाई हूँ, इन्हें बहुत जल्द वापस करना होगा, और यह सब कुछ करते हुए भी दारोगा से भले बने रहना पड़ेगा.
लड़का : यह बहुत कठिन होगा.
औरत : कुछ भी कठिन नहीं है.

इसके बाद लड़का भूतनाथ के हाथ की लिखी हुई चीठियाँ देखने और पढ़ने लगा. जब वह सब चिट्ठियों को पढ़ चुका तब बोला, "बेशक अब तो मैं कह सकता हूँ कि आप भूतनाथ पर कब्जा कर लेंगी और इसके अतिरिक्त जो कुछ आपने सोचा है वह भी आपका हो जायेगा. अच्छा यह बताइये कि इस कटे हुए सर के लिये अब क्या करना चाहिये ?"
औरत : थोड़े दिन तो इस सर को मैं इसी तरह कायम रखना चाहती हूँ क्योंकि मौका पड़ने पर शायद इसे दारोगा साहब को दिखाना पड़े, इसलिये इसे मसाले में लपेट कर तुम तहखाने में हिफाजत से रख दो.

लड़का : बहुत अच्छा.
औरत : अब तुम जाकर पहिले इस काम से छुट्टी पाओ तब निश्चिंत होकर बातचीत करूँगी. (दूसरी औरत की तरफ देख कर) बहिन, अब तुम भी नहा धोकर कुछ खाने-पीने का बन्दोबस्त करो और मैं भी जरूरी कामों से निपटने के लिए जाती हूँ.
इतना कह कर वह औरत उठ कर खड़ी हो गई. लड़के ने वह कटा हुआ सर उठाया और एक तरफ का रास्ता लिया तथा वह दूसरी औरत खाने-पीने का बन्दोबस्त करने कहीं चली गई.
पाठक, हम अभी नहीं कह सकते कि यह औरत कौन है और इसका नाम क्या है, अथवा उस दूसरी औरत और उस लड़के से क्या संबंध है, हाँ इस समय तक इसके असली नाम का पता न लगे तब तक के लिये हम इसका नाम "निरंजनी" रक्खे देते हैं.

दूसरी औरत और लड़के के चले जाने बाद निरंजनी वह डिब्बा लिए हुए पास वाले कमरे में चली गई और भीतर से उसका दरवाजा बन्द कर लिया. इस कमरे के अन्दर दाहिनी तरफ एक दरवाजा और था जिसमें एक बहुत बड़ा मजबूत ताला लगा हुआ था, देखने वाला यही समझेगा कि यह कोई कोठरी है मगर नहीं, वास्तव में यह एक कैदखाने का रास्ता है.

निरंजनी ने कमर में से ताली निकाल कर ताला खोला तब तक उस दरवाजे के अन्दर जाकर एक दूसरे कमरे में पहुँची जो पहिले कमरे से बड़ा था और कई रोशनदान की बदौलत इसमें रोशनी भी ज्यादे थी. इस कमरे के बीचोंबीच में लोहे के मजबूत और मोटे छड़ों से एक कोठरी बनी हुई थी जिसमें तीन-तीन अंगुल के फासले पर छड़ लगे हुए थे और बीच में दो बन्द चौड़े लोहे के लगे थे जिससे कि वे छड़ किसी तरह झुकाने से झुक नहीं सकते थे.छड़ों का एक सिरा ऊपर छत में घुसा हुआ था और दूसरा नीचे जमीन के अन्दर यह कोठरी इतनी बड़ी थी कि इसके अन्दर दस-बारह आदमियों का बिस्तर (बिछौना) लग सकता था मगर इस समय हम इसके अन्दर सिर्फ एक कमसिन औरत को देख रहे हैं जिसकी उम्र ज्यादे-से-ज्यादे पन्द्रह वर्ष की होगी.

यह औरत यद्यपि खूबसूरत कहने योग्य नहीं है परन्तु बदसूरत भी नहीं कही जा सकती. इसका रंग पक्का, चेहरा बादामी और भोला है, आँखें बड़ी-बड़ी मगर नाक मोटी है. इसके अंग हाथ-पैर वगैरह सुडौल तो हैं मगर रूखे हो रहे हैं, इसी तरह चेहरा भी इसका उदास और मैला दिखाई देता है, मालूम होता है कि इसको महीनों से नहाने-धोने का मौका नहीं मिला है, इसकी धोती बहुत गन्दी हो रही है और सर के बाल मैले तथा खुले हुए हैं.

इस लोहे की सलाखों वाली कोठरी जिसमें औरत कैद है एक तरफ पीतल के घड़े में पानी रक्खा हुआ है, पास में एक लोटा और गिलास है, तथा बाँस की टोकरी में कुछ फल और खाने की दूसरी चीजें रक्खी हुई हैं. इन सब चीजों के अतिरिक्त दो कम्बल भी जमीन पर पड़े हुए दिखाई देते हैं. इस कोठरी में छोटा-सा दरवाजा भी बना हुआ है जिसमें बहुत बड़ा ताला लगा है और उस दरवाजे के आगे एक सुन्दर कुर्सी रक्खी हुई है. निरंजनी उसी कुर्सी के ऊपर जाकर बैठ गई और उस कैदी औरत की तरफ देख कर बोली, "मेरी प्यारी बहिन, कहो अच्छी तो हो ?"

कैदी औरत : जी मैं बहुत अच्छी तरह हूँ और आपकी मेहरबानियों का शुक्रिया अदा करती हूँ.
निरंजनी : मुझे तुम्हारे कैद होने का बड़ा ही अफसोस है.
कैदी औरत : (मुस्कुराती हुई) मेरा भी यह खयाल है.

निरंजनी : (कुछ शरमा कर) क्या तुम इस कैदखाने से बाहर निकलना नहीं चाहतीं ?
कैदी औरत : जी नहीं, मुझे इसमें बड़ा आराम है और मैं तुम्हें दरवाजा खोलने की तकलीफ नहीं दिया चाहती.

निरंजनी : मैं तो इस समय भी दरवाजा खोलने के लिए तैयार हूँ, (एक ताली दिखा कर) देखो यह ताली भी मौजूद है, मगर क्या करूँ वह तुम्हें स्वतंत्र करने की आज्ञा नहीं देती और तुम जानती हो कि मैं उसके वश में हूँ.
कैदी औरत : बेशक ऐसा ही है, मगर तुम उसकी खुशामद क्यों करती हो, ताला खोल देने पर भी मैं इस कोठरी के बाहर नहीं निकलूँगी.

निरंजनी : सो क्यों ?
कैदी औरत : इसलिए कि मैं आजकल पागल हो रही हूँ और विश्वास करती हूँ कि तुम लोगों की मदद के बिना स्वतंत्र हो जाऊँगी और तब ऐ मेरी प्यारी बहिन, सब से पहिले मैं तुम्हीं से बदला लूँगी और जमना बनने का तुम्हारा शौक पूरा कर दूँगी.
निरंजनी : (चौंक कर) तुम्हें किसने कह दिया है कि मुझे जमना बनने का शौक है ?
कैदी औरत : मेरे एक दोस्त ने यह भेद की बात मुझसे कही है जो अक्सर इस कैदखाने में मेरे पास पहुँचा करता है.
निरंजनी : तुम तो पागलपने की बात करती हो.
कैदी औरत : यह तो मैं खुद ही कह चुकी हूँ कि मैं आजकल पागल हो गई हूँ, तुमने यह कौन-सी नयी बात कही ?

निरंजनी : (कुछ गुस्से के ढंग पर) तुम हद्द दर्जे की ढीठ हो गई हो.
कैदी औरत : सिर्फ इस ख्याल से तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं, मेरा दोस्त मेरी मदद करेगा और बहुत जल्द मुझे इस कैद से छुड़ावेगा.
निरंजनी : अरे बेवकूफ, यहाँ पर तो एक चींटी भी नहीं आ सकती.
कैदी औरत : यह तुम्हारी भूल है, देखो मैं तुम्हें दिखाती हूँ.

इतना कह कर उस कैदी औरत ने वह कम्बल उठाया जो जमीन पर पड़ा हुआ था. उसके नीचे एक आदमी का चेहरा दिखाई दिया और वह धीरे-धीरे जमीन के अन्दर से ऊपर निकलने लगा. मोढ़ा निकला, छाती निकली, पेट बाहर हुआ, कमर दिखाई देने लगी, रान घुटना और अन्त में पैर भी बाहर निकल आये, और कुछ ही देर बाद एक पूरा नौजवान आदमी कैदी औरत के पास खड़ा दिखाई देने लगा. निरंजनी के तो होश उड़ गये और वह घबड़ा कर उन दोनों की तरफ देखने लगी.

।। चौथा भाग समाप्त ।।

पाँचवा भाग

[१]

भूतनाथ ने क्रोध में आकर जमना, सरस्वती और इन्दुमति पर हमला तो किया मगर कुछ कर न सका क्योंकि वह बाग, मकान चबूतरा तिलिस्म से संबंध रखता था और इन्द्रदेव के कब्जे में था, अतएव कोई अनजान आदमी लापरवाही के साथ उस बाग और इमारत की सैर पूरी तरह से नहीं कर सकता था और न उस चबूतरे पर ही जा सकता था जिस पर जमना, सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई थीं, अस्तु नतीजा यह निकला कि भूतनाथ उस चबूतरे पर चढ़ने के साथ ही पछाड़ खाकर पीछे की तरफ जमीन पर गिर पड़ा और कुछ देर के लिए बेहोश हो गया. जब होश में आया तो उसने आश्चर्य के साथ उस चबूतरे की तरफ देखा परन्तु वे औरतें दिखाई न पड़ीं क्योंकि भूतनाथ की बेहोशी दूर होने के पहिले ही वे सब वहाँ से कहीं चली गई थीं.

भूतनाथ पुन: उस चबूतरे पर जाने की हिम्मत न कर सका और कुछ सोचता-विचारता बाग के उस हिस्से की तरफ रवाना हुआ जिधर इमारत थी और दो चार-आदमी भी टहलते दिखाई दे रहे थे. भूतनाथ घड़ी-घड़ी आश्चर्य के साथ यह सोचता था कि जमना ने यह क्योंकर कहा कि भैयाराजा ने तुम्हारे ऐयारी के बटुए पर कब्जा कर लिया था और अब वह मेरे पास मौजूद है. यह क्योंकर संभव हो सकता है कि वह बटुआ मेरे शार्गिद के हाथ से भैयाराजा के कब्जे में चला गया हो ! बेशक जमना ने मुझे धोखा देने के लिए ऐसा कहा होगा.

धीर-धीरे भूतनाथ इस इमारत के पास जा पहुँचा और वहाँ उसने देखा कि इमारत के आगे एक बहुत बड़ा सहन है जिस पर भैयाराजा धीरे-धीरे टहल रहे हैं और हाथ में नंगी तलवारें लिए सात-आठ आदमी उसके पीछे-पीछे हैं. भूतनाथ पर निगाह पड़ते ही भैयाराजा ने मुस्करा कर कहा, "भूतनाथ, अब तुम्हारा क्या इरादा है ?

मुझे इस बात का बहुत ही दु:ख है कि तुम्हारी कसम सच्ची नहीं निकली."
भूत० :सो क्या ? आपको कैसे मालूम हुआ कि मेरी कसम कोई सच्ची नहीं निकली ?"

भैयाराजा : यही आजमाने के लिए तो जमना, सरस्वती और इन्दुमति तुम्हारे सामने बैठाई गई थीं. आखिर तुम ने उन पर हमला किया ही तो ? यह न सोचा कि मैं कहाँ और किसके कब्जे में हूँ. जब मेरे बाग में रह कर तुमने ऐसा किया तो यदि किसी दूसरी जगह वे दोनों तुम्हें मिल जातीं तो उन्हें कब जीता छोड़ते !

भूतनाथ ने भैयाराजा की इस बात का कुछ भी जवाब न दिया और शर्म से सर नीचा करके कुछ सोचने लगा. भैयाराजा ने पुन: कहा, "गदाधरसिंह, शायद तुमको यह मालूम नहीं कि इस बाग में पहुँचने के पहिले जिसने तुम्हारे कसम खाने पर तुम्हें ताड़ना की थी वह मैं ही हूँ, और जिसने अपनी ताड़ना पर तुम्हारे मुँह से ये शब्द निकालते हुए सुने थे कि- "नहीं, मैंने जो कुछ कहा है उसकी सच्चाई में किसी तरह भी फर्क नहीं पड़ सकता, मैं यहाँ तक तैयार हो चुका हूँ कि अपने ऐयारी के फन को भी तिलाँजलि दे दूँगा और दुनिया से एकदम किनारे हो जाऊँगा'- वह भी मैं ही हूँ."

भूत० :(आश्चर्य से भैयाराजा का मुँह देख कर) और वह त्रिशूल तथा डमरूधारी शिवरूपी महात्मा भी आप ही थे जिन्होंने मेरे बदन पर से त्रिशूल छुआ कर मुझे बेहोश कर दिया था ?
भैयाराजा : नहीं.

भूत० :वह कौन था ?
भैयाराजा : यह मैं नहीं कह सकता.

भूत० :और यह बाग किसका है ?
भैयाराजा : इसका भी जवाब तुम नहीं पा सकते.

भूत० :आप अब मुझे जहर हलाहल भी देंगे तो खुशी से पी लूँगा क्योंकि मैं इसी के योग्य हूँ और दुनिया में मुँह दिखलाने की इच्छा नहीं रखता.
भैयाराजा : ईश्वर तुम्हें नेकी दे. मैं तुम्हारे साथ कदापि बुराई नहीं कर सकता परन्तु हाँ इस समय जो दवा मैं तुम्हें पिलाऊँगा उससे तुम बेहोश जरूर हो जाओगे.
इतना कहकर भैयाराजा ने अपने एक आदमी की तरफ देख कुछ इशारा किया.

भूत० :मुझे इसकी कोई भी परवाह नहीं है कि मैं आपकी दी हुई दवा पीकर बेहोश हो जाऊँगा और न मैं इसके विषय में आपसे कुछ पूछने की ही इच्छा रखता हूँ.
भैयाराजा का इशारा पाकर वह आदमी किसी प्रकार की दवा से भरी हुई एक बोतल और चाँदी का छोटा-सा कटोरा ले आया और भैयारजा के हाथ में दिया. भैयाराजा ने उस बोतल की दवा से कटोरा भरा और भूतनाथ के हाथ में दिया, भूतनाथ ने खुशी-खुशी मुँह से कटोरा लगाया और दवा पीकर पुन: वह कटोरा इस विचार से भैयाराजा की तरफ़ बढ़ाया कि और दवा दीजिए मैं पीने के लिए तैयार हूँ, मगर भैयारजा ने यह कह कर कि 'बस अब और पीने की कोई जरूरत नहीं' कटोरा वापस लेने के लिए भूतनाथ की तरफ हाथ बढ़ाया.

भूतनाथ ने उनके हाथ में झूठा कटोरा देना उचित न जान कर उनके आदमी के हाथ में दिया और पुन: हाथ जोड़ कर कहा, "मुझे क्षमा कीजिए और गुप्त हो जाने की आज्ञा दीजिए."
भैयाराजा : मैं यह नहीं चाहता कि तुम गायब हो जाओ, यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है. मैं सच्चे दिल से तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम लोगों में मिले-जुले रह कर सभों का उपकार करो जिसमें ईश्वर तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर दे.

भूत० :जो आज्ञा.
इतना कहते-कहते भूतनाथ की आँखें बन्द हो गईं और वह बेहोश हो जमीन पर लेट गया. जब उसकी आँखें खुलीं तो उसने अपने को उसी कोठरी में पाया जिसमें त्रिशूल के छू जाने से बेहोश होकर इस बाग में आया था.

कोठरी से बाहर निकलने पर उसने अपने ऐयारी के बटुए के सहित कई शागिर्दों को पाया जो उसके लिए चिन्तित और उदास उससे मिलने का इन्तजार कर रहे थे.

[२]

दिन दो दोपहर से ज्यादे ढल चुका है. धूप की गर्मी हवा की तेजी को यद्यपि कम कर रही है तथापि नाजुक-मिजाजों के बर्दाश्त के बाहर है. भूतनाथ अपनी असली सूरत में मामूली ढंग पर शाहराह और सड़क छोड़ कर जंगल-ही-जंगल जमानिया की तरफ जा रहा है, मगर उसके चेहरे पर उदासी, नाउम्मीदी और बेचैनी छाई हुई है, उसको अपने इधर-उधर या आगे-पीछे की कुछ भी परवाह नहीं है, सर झुकाये हुए बराबर चला जा रहा है, हाँ, कभी-कभी सर उठाकर इस खयाल से देख लेता है कि रास्ता भटकने न पावे.

दो घण्टे तक बराबर चले जाने के बाद उसे कुछ आदमियों की बातचीत की आहट मालूम हुई जिससे वह खड़ा हो गया और ध्यान देकर सुनने लगा कि किधर से आवाज आ रही है. कुछ ही सायत में उसे मालूम हो गया कि बात करने वाले उससे ज्यादे दूरी पर नहीं हैं, भूतनाथ को उस आवाज पर कुछ शक मालूम हुआ और उन आदमियों को देखने तथा उनकी बातें सुनने की अपनी प्रबल इच्छा को रोक न सका अतएव वह जमीन पर बैठ गया और बहुत धीरे-धीरे पत्तियों की खड़खड़ाहट को बचाता हुआ उस तरफ बढ़ा जिधर से आवाज आ रही थी, यहाँ तक कि वह उन लोगों के इतना पास पहुँच गया कि वहाँ से उनकी बातचीत बखूबी सुन-समझ सकता था.

उन आदमियों को इसकी कुछ भी आहट नहीं लगी कि कोई आदमी उनकी बातें सुनने के लिए पास ही में आकर छिपा हुआ है अतएव भूतनाथ बड़ी बेफिक्री के साथ उनकी बातें सुनने लगा, साथ ही इसके उसने झाड़ियों में रास्ता करके यह भी देख लिया कि बातें करने वालों में दो मर्द और एक औरत है जिसकी उम्र बीस या पचीस वर्ष से ज्यादा न होगी.

यद्यपि वह मर्दों की तरह चपकन पायजामा पहिरे हुए हैं और सर पर मुँडासा भी उसने बाँध रखा है परन्तु उसकी आवाज और भूतनाथ की चालाक निगाहों के सामने उसका मर्दानापन कायम न रहा. उसी जगह पर पेड़ों के सहारे तीन घोड़े बागडोर के साथ बँधे हुए थे. अब सुनिये कि उन लोगों में कैसी भेद-भरी बातें हो रही हैं.

एक : जमना और सरस्वती को यदि यह भेद मालूम हो जाय तो वे दोनों उद्योग करके उन्हें बहुत जल्द छुड़ा लें. हम लोगों की मेहनत उनका मुकाबला नहीं कर सकती क्योंकि इन्द्रदेव और प्रभाकरसिंह उन दोनों के पक्षपाती हैं.
दूसरा : अजी नहीं, इन्द्रदेव को जमना और सरस्वती से क्या मतलब ? वह दारोगा साहब के गुरुभाई हैं, दारोगा साहब भूतनाथ की मदद करते हैं और भूतनाथ इन दोनों औरतों का जानी दुश्मन है, इसी से समझ रखना चाहिये कि इन्द्रदेव क्योंकर दारोगा साहब के खिलाफ कार्रवाई कर सकते हैं.

पहिला : तुम्हें कुछ बसंत की भी खबर है या यों ही बकवाद कर रहे हो ! बेईमान दारोगा के सबब से क्या धर्मात्मा इन्द्रदेव रणधीरसिंह का मुलाहिज़ा तोड़ देंगे या दयाराम को जान-बूझ कर अपने हाथ से भाड़ में झोंक देंगे ?
औरत : (दूसरे की तरफ देख कर) नहीं-नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता, तुमको इस बात की खबर ही नहीं है कि इन्द्रदेव ही की बदौलत आज तक जमना और सरस्वती की जान बची हुई है नहीं तो दारोगा साहब और भूतनाथ अब तक उन दोनों का खात्मा कर चुके होते. इन्द्रदेव हर तरह से उन दोनों की मदद कर रहे हैं और करेंगे.

दूसरा : (आश्चर्य से) ऐसी क्या बात है ?
पहिला : बेशक ऐसी ही बात है. इन्द्रदेव साधू और महात्मा आदमी हैं जो अभी तक दारोगा से गुरुभाई का रिश्ता और भूतनाथ से दोस्ती का नाता भी निभाए जाते हैं नहीं तो इन लोगों को जहन्नुम में पहुँचाना उनके लिए एक अदनी बात थी.
दूसरा : अगर यह बात है तो बेशक पता लग जाने पर इन्द्रदेव की सहायता से जमना और सरस्वती अच्छा काम कर सकती हैं.

औरत : नि:सन्देह ! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जमना और सरस्वती ने भी इन्द्रदेव से ऐयारी सीखी है ? मगर यह बात बहुत गुप्त है.
दूसरा : भला मुझे इस बात का पता क्योंकर लग सकता है, मगर आश्चर्य है कि तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई ?
औरत : अकस्मात् ही मुझे यह बात मालूम हो गई.

दूसरा : क्योंकर ?
औरत : उन दोनों को मैंने परसों भेष बदल कर घोड़े पर सवार काशी की तरफ जाते देखा था.
पहिला : जब भेष बदले हुए थीं तब तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि ये दोनों वे ही हैं ?

औरत : मैं उस समय घोड़े पर सवार मामूली तौर पर केवल मर्दाना कपड़ा पहिरे हुए रणधीरसिंह के यहाँ जा रही थी, यकायक रास्ते में मेरा और उन दोनों का मुकाबला हो गया. सरस्वती ने मुझे पहिचान लिया और नाम लेकर पुकारा. मैं उन दोनों को पहिचान न सकी परन्तु पुकारने और अपना नाम सुन कर रुक गई. उन दोनों ने बड़ी मुहब्बत से मुझे अपने पास बुलाया. मैं डरती हुई उनके पास गई, मगर तब तक जमना ने मुझे कहा, "छन्नो, तू कहाँ जाती है ? मैं तुझे पहिचान गई, तू हम दोनों को बिना बताएँ नहीं पहचान सकती. मेरा नाम जमना और इसका सरस्वती है, ओफ ओह, बहुत दिनों के बाद तुझे देखा. तुझे देखकर मेरे दिल में इस समय वही लड़कपन की मुहब्बत पैदा हो गई है. मेरी प्यारी छन्नो, क्या आजकल तू मेरे ससुराल में नहीं रहती ?"

पहिले तो मुझे उन दोनों के जमना और सरस्वती होने का विश्वास नहीं हुआ मगर जब उन्होंने लड़कपन की दो-एक बातें याद दिलाईं तब मुझे विश्वास हो गया और मुहब्बत से मेरा जी भी उमड़ आया क्योंकि मैं बहुत दिनों तक उन दोनों के साथ रह चुकी हूँ. हम तीनों में बड़ी ही मुहब्बत रही. जब वे दोनों अपने ससुराल से गायब हो गईं और उनके मरने की खबर मशहूर हुई तब मैंने भी रणधीरसिंह का घर छोड़ दिया था.
पहिला: यह तो बड़ी अजीब बात तुम सुना रही हो ! अच्छा तब क्या हुआ ?

औरत : मैं तुरंत घोड़े पर से उतर पड़ी और जमना के पैर के साथ लिपट गई. वे दोनों भी घोड़े पर से उतर पड़ीं और मुझे गले से लगा लिया. वहाँ बिल्कुल ही सन्नाटा था, सड़क के दोनों तरफ जंगल था और बड़े-बड़े साखू, आसन तथा सलई के पेड़ लगे हुए थे. हम तीनों सड़क के किनारे होकर पेड़ों की आड़ में चली गईं और देर तक बातें करती रहीं. बस उसी समय मुझे मालूम हुआ कि उन दोनों ने भी इन्द्रदेव से ऐयारी सीखी है.

पहिला : यह तो तुमने बड़ी बेढ़ब बात सुनाई. मुझे नहीं मालूम था कि उन दोनों से तुम्हारी मुहब्बत है.
औरत : सो भला कैसे मालूम होता, इस बात का कभी जिक्र तो आया नहीं था.
दूसरा : अच्छा तो तुमने क्या दयाराम वाला सब भेद उनसे कह दिया ?

औरत : अभी नहीं, मैं ऐसा पसन्द नहीं करती कि काम अधूरा रहने पर किसी से ऐसा कठिन मामला कहूँ.
पहिला :मगर क्या तुम उन दोनों से यह भेद कहोगी ?
औरत : सो मैं अभी नहीं कह सकती.

दूसरा : मगर नहीं. उन दोनों को इसका भेद नहीं कहना चाहिए, नहीं तो हम लोगों का मेहनत करना ही व्यर्थ हो जायगा तुम्हारे कहने ही से हम लोग इस मामले में उद्योग करने के लिए तैयार हुए हैं. यद्यपि इसके साथ-ही-साथ लालच का पल्ला भी हम लोगों ने पकड़ा हुआ है तथापि ईमानदारी का ख्याल भी हम लोगों के दिल से दूर नहीं हो सकता. इसलिए कदाचित् तुम्हारा यह विचार हो कि यह भेद अथवा खुशखबरी जमना, सरस्वती या इन्द्रदेव से कहो तो मदद लेने की जरूरत पड़े. और यदि ऐसा न कर सको तो आज ही हम लोगों को साफ-साफ जवाब दे दो, जो कुछ मेहनत कर चुके हैं उसी पर सन्तोष करेंगे.

औरत : (मुस्कराती हुई) नहीं-नहीं, हताश मत होवो, यदि मुझे ऐसा ही करना होता तो तुम लोगों को अपना साथी क्यों बनाती ? तुम इस बात का विश्वास रक्खो. क्योंकि इस मामले में मुझे रुपये-पैसे की कुछ भी लालच नहीं है.

मैं तो जो कुछ कर रही हूँ और जो तकलीफ उठा रही हूँ वह सब जमना, सरस्वती और दयाराम की मुहब्बत के कारण है. तुम लोगों को भी यही उचित है कि जिसमें काम जल्दी हो वही उपाय करो और इस बात का खयाल करो कि किसी भी दूसरे को यह भेद न मालूम हो अथवा किसी भी दूसरे का हाथ इस मामले में न लगे, क्योंकि केवल तुम्हीं दोनों के भरोसे पर रह जाना यह नीति के विरुद्ध है, सम्भव है कि तुम दोनों की मेहनत का कोई अच्छा नतीजा न निकले और देर हो जाने के कारण दयाराम की जान पर आ बने..... .

दूसरा : (कुछ बिगड़ कर और बात काट कर) इतने दिन बीत गये दयाराम की जान पर नौबत न आई और अब महीने-पन्द्रह दिन को देर होने से उनकी जान चली जायगी ! यह भी कैसा खयाल है ? हाँ यह कहो कि तुम्हारा दिल ही डगमगा रहा है और हम लोगों पर तुमको भरोसा नहीं होता. मगर इस बात को खूब समझ रखना कि ऐयार होने के अतिरिक्त जिस शहर में दयाराम है हम दोनों भी उस शहर के रहने वाले हैं. घर-घर का भेद जो हम लोगों को मालूम हो सकता है वह किसी दूसरे को मालूम नहीं हो सकता.

औरत : इसी से तो मैं तुम्हें मेहनत करने के लिए कह रही हूँ और समझती हूँ कि इस काम को तुम जल्द कर सकोगे.

दूसरा : नहीं, अगर ऐसा समझती तो किसी आदमी का पुछल्ला हमारे साथ न लगातीं और यह भेद किसी दूसरे को कहने का ही इरादा न करतीं. क्या इस बात का ध्यान तुम्हें नहीं है कि ज्यादे आदमियों को इस बात की खबर हो जाने से धीरे-धीरे यह बात दुश्मन के कान तक भी पहुँच सकती है और दुश्मन चौकन्ना हो सकता है.

औरत : (मुस्कुरा कर) अगर इस बात का खयाल न होता तो मैं इस काम में जल्दी क्यों करती ?

पहिला : असल तो यह है कि तुम दिल का भाव छिपाकर बातें करती हो, तुम्हें उचित यही है कि अपना इरादा साफ जाहिर कर दो.

औरत : मैं अपने दिल का भाव तुमसे नहीं छिपाती, इसका शक तो तुम अपने दिल से दूर कर दो और इरादे की जो कहते हो सो इरादा तो मेरा वही होता है कि यह भेद जमना, सरस्वती और इन्द्रदेव से कह दूँ वे जिसमें वे उस काम की धुन में लगें और तुम उनकी मदद करो.

दूसरा : मगर हम दोनों को यह बात पसन्द नहीं है.

औरत : (कुछ सोच कर) खैर पसन्द नहीं है तो जाने दो, तुम ही दोनों इस काम को कर डालो और दयाराम को खोज निकालो, मैं किसी और से इसका जिक्र नहीं करूँगी.

पहिला : अच्छा तो दयाराम के विषय में जो-जो बातें तुम्हें मालूम हो चुकी हैं वह सब हमें सुनाओ.

औरत : यह मामला कल पर रहने दो. इतना मैं कह चुकी हूँ कि फलाने शहर में दयाराम पड़े हुए हैं, बाकी और जो कुछ भेद की बातें मुझे मालूम होने वाली हैं उनका आज निश्चय करके तब कल तुमसे कहूँगी, तुम दोनों कल पुन: इसी समय इसी जगह आकर मिलना.

दोनों : बहुत अच्छा, कल जरूर आवेंगे.

इतनी बातें होने के बाद तीनों वहाँ से उठ खड़े हुए और अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चले जाने की फिक्र करने लगे. भूतनाथ बड़ी फुर्ती और चालाकी से खिसकता हुआ एक घनी झाड़ी के अन्दर जा छिपा और जब वे लोग वहाँ से चले गए तो उसने उस औरत को छोड़कर दोनों मर्दों का पीछा किया जो बड़ी खुशी-खुशी आपुस में बातें करते हुए धीरे-धीरे पश्चिम की तरफ जा रहे थे.

[३]

भूतनाथ ने जो कुछ बातें छिप कर सुनीं वह उसके लिए बड़े ही ताज्जुब की थीं. हम इस जगह पर यह नहीं कह सकते कि इन बातों को सुनकर भूतनाथ के दिल की क्या अवस्था हुई अथवा इससे उसके दिल पर क्या असर पड़ा, हाँ इतना जरूर मालूम होता है कि इस समय भूतनाथ का दिल उसके काबू में नहीं है और वह बहुत ही बेचैन हो रहा है.

भूतनाथ इस फिक्र में था कि किसी तरह दोनों को गिरफ्तार करना चाहिए परन्तु इस समय वह किसी तरह की ऐयारी नहीं कर सकता था, क्योंकि जिनको वह गिरफ्तार किया चाहता था वे घोड़े पर सवार जा रहे थे और भूतनाथ अपनी असली सूरत में था। इसलिए कोई अच्छी कार्रवाई करना बहुत कठिन था परन्तु इस मौके को वह छोड़ भी नहीं सकता था.

कई सायत तक वह खड़ा सोचता और उन दोनों सवारों की तरफ देखता रहा. इस बीच में उसे कोई बात याद आ गई. वह झट से एक पेड़ के नीचे बैठ गया और जो कुछ उसे करना था बड़ी तेजी और फुर्ती के साथ किया अर्थात् बटुए में से नकाब निकाल कर अपने चेहरे पर लगाई, इसके बाद एक शीशी निकाली जिसमें बहुत-सी गोलियाँ भरी हुई थीं, उनमें से एक गोली निकाल कर अपने मुँह में रक्खी और दो चीठियाँ जो लिफाफे में बन्द थीं और दो चाँदी की डिबियाएँ निकाल कर जेब में रखने के बाद बटुआ बन्द कर उन दोनों सवारों का पीछा किया जो आपुस में बातें करते हुए धीरे-धीरे चले जा रहे थे.

थोड़ी ही देर में भूतनाथ उन दोनों सवारों के पास पहुँचा और सामना रोक कर दोनों को सलाम किया, साथ ही जेब में से डिबिया और चीठी निकाल कर एक-एक डिबिया और एक-एक चीठी दोनों के हाथ में देते हुए कहा, "एक औरत ने जो अभी-अभी (हाथ का इशारा करके) उस तरफ जा रही है ये चीजें आपको देने के लिए मुझे भेजा है और कहा है कि बातचीत करने की धुन में यह डिबिया और चीठी आप लोगों को देना मैं बिलकुल ही भूल गई थी."

दोनों सवारों ने ताज्जुब के साथ भूतनाथ के हाथ से डिबिया और चीठी ले ली और कुछ पूछा, "तुम कौन हो और उन्हें कहाँ मिले ? वे तो वहाँ हम लोगों के पास अकेली ही आई थीं !"
भूत० :इसका जवाब देना मैं उचित नहीं समझता. जो कुछ काम मेरे सुपुर्द किया गया उसे पूरा कर चुका और जाता हूँ.

एक सवार० :ठहरो ठहरो, इस डिबिया और चीठी को देख तो लेने दो, शायद कुछ जवाब देने की जरूरत पड़े.
भूत० :बहुत अच्छा मैं ठहरता हूँ, आप देख लीजिए.

इतना कह कर भूतनाथ एक किनारे खड़ा हो गया और उन दोनों का तमाशा देखने लगा. उन्होंने पहिले तो डिबिया खोली और देखा कि उसमें नर्म मोम की तरह कोई खुशबूदार चीज भरी हुई है. डिबिया खुलने के साथ ही उसके अन्दर की खुशबू ने उन लोगों का दिमाग मुअत्तर कर दिया, यहाँ तक कि उन डिबियों को अच्छी तरह सूघें बिना उनसे रहा न गया. इसके बाद डिबियाँ बन्द करके जेब में रक्खीं और चीठी खोल कर पढ़ने लगे.

उन चीठियों में कुछ अजीब कुढंगे हर्फ लिखे हुए थे जो बिल्कुल ही समझ में नहीं आते थे. समझ लेना चाहिए कि वे चीठियाँ खाली बारीक लकीरों ही से भरी हुई थीं और केवल लोगों को धोखा देने के लिए भूतनाथ के बटुए में पड़ी रहा करती थीं. चीठी पढ़ते-पढ़ते उन्हें देर हो गई मगर फिर भी वे दोनों कुछ समझ न सके, आखिर एक ने भूतनाथ की तरफ देख के कहा, "यह आखिर क्या है ?"

भूत० :सो मैं क्या जानूँ !
एक : उसने क्या कह कर तुम्हें हमारे पास भेजा है ?

भूत० :कुछ भी नहीं, जो कुछ होगा उसी चीठी में लिखा होगा.
दूसरा : यह चीठी तो पढ़ी ही नहीं जाती !

भूत० :तो मैं क्या करूँ ?

पहिला : मालूम होता है कि तू हमसे चालाकी खेलता है !

भूत० :शायद ऐसा ही हो.
इतना कह कर भूतनाथ कई कदम पीछे हट गया और गौर से उन दोनों की तरफ देखने लगा.

भूतनाथ के ढंग और उसकी बातों ने उन दोनों को क्रोधित कर दिया और उन्हें इस बात का शक हो गया कि हो-न-हो यह कोई ऐयार है क्योंकि डिबिया के अन्दर की खुशबूदार चीज के सूँघने से उनके ऊपर धीरे-धीरे बेहोशी का असर होता जा रहा था. बातचीत करते-करते यद्यपि दोनों बेकार हो चुके थे तथापि क्रोध में भर अपने को रोक न सके और घोड़ा बढ़ा कर भूतनाथ पर हमला किया.

पैंतरा बदल कर भूतनाथ ने उनका वार बचा लिया और इधर-उधर घूम-फिर कर उन दोनों को चक्कर लगाने और शरीर हिलाने का मौका दिया. कुछ ही देर बाद वे अपने को सम्भाल न सके और दोनों बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े.

सबके पहिले भूतनाथ ने दोनों घोड़ों पर कब्जा किया और उन्हें किनारे ले जाकर बागडोर के सहारे एक पेड़ के साथ बाँध दिया, इसके बाद बारी-बारी से उन दोनों आदमियों को उठा कर घोड़ों के पास ले गया.

धीरे-धीरे बड़ी होशियारी और मुस्तैदी के साथ भूतनाथ ने उन दोनों को घोड़ों पर रख कर बागडोर से बाँधा और दोनों घोड़ों की लगाम थामे हुए अपने घर का रास्ता लिया.

इस समय वह अपनी कार्रवाई पर दिल-ही-दिल में खुश होता हुआ सोच रहा था कि 'कल इन दोनों के बदले मैं अपने किसी शागिर्द को लेकर उस औरत से मिलूँगा और देखूँगा कि किस्मत क्या रंग दिखाती है."

[४]

दूसरे रोज दोपहर दिन चढ़ने के बाद वह औरत पुन: उसी जंगल में उसी ठिकाने पहुँची और उन दोनों आदमियों को अपने पहुँचने के पहिले ही से वहाँ एक चट्टान पर बैठे पाया. उसे देखने के साथ ही एक ने कहा, "हम लोग बहुत देर से आपका इन्तज़ार कर रहे हैं."

औरत : मेरे आने में कुछ देर तो हुई नहीं.
एक : ज्यादे नहीं मगर कुछ देर जरूर हुई.
औरत : (एक पत्थर पर बैठती हुई) शायद ऐसा ही हो.

दूसरा : खैर, सुनाइये क्या हाल है ?
औरत : बस वही, जो कुछ कल मैं तुम लोगों को कह चुकी हूँ उससे ज्यादे कोई काम की बात मालूम न हुई, सिर्फ उतने ही से काम चलाना होगा.

पहिला : क्या आप निश्चित रूप से कह सकती हैं कि दयाराम फलानी जगह और फलाने की कैद में है ?
औरत : जो कुछ मैंने कहा है उस पर किसी तरह का शक मत करो और विश्वास रक्खो कि दयाराम दारोगा साहब के कब्जे में है. चाहे दारोगा साहब ने उन्हें अपने घर में कैद रख छोड़ा हो या अपने किसी दोस्त के घर में, मगर वे हैं निश्चित रूप से दारोगा ही के कब्जे में.

एक : खैर, कोई चिन्ता नहीं, समझ लिया जाएगा, अच्छा इस विषय में कुछ कह सकती हो कि राजसिंह के यहाँ से निकल कर दारोगा के कब्जे में दयाराम क्योंकर जा फँसे ?

औरत : इसका हाल मुझे कुछ भी नहीं मालूम है. राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह ने जो चीठी भूतनाथ को लिखी थी उसमें कैदखाने की तस्वीर दिखाने के अतिरिक्त केवल इतना ही लिखा है कि- 'बेशक मेरे बाप ने दयाराम को पकड़ा था मगर वह अपनी सजा को पहुँच गया. भूतनाथ और दलीपशाह ने धोखा खाया. असल में दयाराम को जमानिया के दारोगा ने गिफ्तार कर लिया. दयाराम अभी तक जीते हैं और जीते रहेंगे. दयाराम को अपने कब्जे में रखकर दारोगा अपना मतलब भूतनाथ से निकालने की इच्छा रखता है. भूतनाथ, सम्हलो और इस भेद को जानो. इस खबर के बदले में मैं तुमसे मित्रता की भिक्षा माँगता हूँ'. बस इतना ही मजमून लिखा था.

पहिला : (मुस्कुराता हुआ) मानो अक्षर-अक्षर तुमने याद कर रक्खा है !
औरत : बेशक ऐसा ही है, मैंने कोई शब्द कम या ज्यादे नहीं कहा है.
दूसरा : (मुस्कुराता हुआ) ध्यानसिंह अब गदाधरसिंह से दोस्ती करना चाहता है.
औरत : भूतनाथ का आजकल पता नहीं लगता, अगर ठिकाना मालूम होता तो वह चीठी भूतनाथ के पास पहुँच गई होती और भूतनाथ ध्यानसिंह से मिल कर न-मालूम क्या कर चुका होता.
पहिला : अब इस समय वह चीठी किसके पास है ?

औरत : सो तो मैं नहीं कह सकती क्योंकि मैं अपनी जान बचा कर सब काम किया चाहती हूँ. अच्छा अब तो रही-सही बात भी मैंने तुमसे कह दी अस्तु जिस तरह बन पड़े तुम दयाराम का पता लगाओ और टोह लेते हुए बीच-बीच में बराबर मुझसे मिलते भी रहो.
पहिला : तुम्हारा ठिकाना कहाँ रहेगा और हम लोग कहाँ पर तुमसे मिला करें.
इस बात का जवाब उस औरत ने कुछ भी न दिया बल्कि किसी गौर में पड़ कर आश्चर्य से उस आदमी का मुँह देखने लगी. सबब इसका यह था कि कल जिन दो आदमियों से इस औरत ने बातचीत की थी वे इसका पता अच्छी तरह जानते थे मगर इस समय इससे बातें करने वाले असल में वे दोनों नहीं बल्कि आज वह भूतनाथ और उसे शागिर्द से बातचीत कर रही है.

भूतनाथ को उसका ठिकाना मालूम न था इसलिए वह भूलकर ऐसा सवाल कर बैठा जिससे वह औरत तुरत समझ गई कि यह कोई दूसरा ऐयार है. वह इस भेद को खोला और कुछ कहा की चाहती थी कि उसे एक खयाल ने ऐसा करने से रोक दिया.

उसके दिल में यह बात पैदा हो गई कि अगर वह वास्तव में कोई दूसरा ऐयार है तो मेरे चौंकने और जाहिर कर देने से मेरा दुश्मन बन जाएगा और शायद मुझे गिरफ्तार भी कर ले, मैं औरत की जात इस समय बिल्कुल बेबस और अकेली हूँ और ये दो आदमी हैं. यह सोच कर वह चुप हो रही और अपना चेहरा इस ढंग का बना लिया मानों कुछ गौर कर रही है. कुछ देर बाद उसने उस आदमी से कहा, "अभी तक मेरा ठिकाना कोई निश्चित नहीं हुआ मगर हाँ कल तक यह बात भी तै हो जाएगी. तुम एक दफे और तकलीफ करो और परसों पुन: मुझसे इसी जगह मिलो, मैं अपने ठिकाने का हाल तुमसे कह दूँगी तथा और भी कुछ भेद जो इस बीच में मालूम होगा वह भी बयान करूँगी." इतना कह वह औरत जाने के लिए तैयार हो गई और उसे मुस्तैद देख कर वे दोनों आदमी उठ खड़े हुए तथा अपने-अपने घोड़ों की तरफ बढ़े.

हमारे पाठक जरूर ही समझ गये होंगे कि उस औरत से बातें करने वाले दोनों आदमियों में से एक भूतनाथ और दूसरा उसका शागिर्द से इस तरह दो-चार बातें हुईं :-
भूत० :मेरे लिए इतना ही मालूम हो जाना काफी है कि दयाराम जीते जागते और दारोगा के कब्जे में हैं तथा ध्यानसिंह मुझे खोजता और मुझसे दोस्ती किया चाहता है.

शागिर्द : बेशक इतना काफी है, बातें तो कुछ और भी जरूर मालूम होतीं मगर आखिर में एक सवाल जरा भूँडा पड़ जाने से वह समझ गई कि हम दोनों कोई दूसरे ही हैं।
भूत० :बेशक उस सवाल में मुझसे भूल हो गई और उसे शक पड़ गया. मैंने सिर्फ इस खयाल से वह सवाल किया था कि उसका पता मालूम हो जाय तो मैं और भी कोई काम निकाल सकूँ मगर खैर जितना मालूम हुआ उतना ही बहुत है. पहले तो मेरे जी में आया कि उसे पकड़ लूँ परन्तु कई बातों को सोच कर रह गया.

शागिर्द : नहीं, उसका गिरफ्तार कर लेना ठीक न होता.
इसके बाद चलते-चलते उन दोनों में जो कुछ बातें हुई वे ऐसी न थीं कि लिखी जायें.

वह औरत जब वहाँ से रवाना हुई तो उसका चेहरा बहुत उदास और सुस्त था. उसे इस बात का बड़ा ही दुःख था कि उसका भेद किसी दूसरे ऐयार को मालूम हो गया. उसे भूतनाथ का डर बहुत ही ज्यादे लगा रहता था. क्योंकि उसको विश्वास था कि अगर यह भेद भूतनाथ को मालूम हो जायेगा तो दयाराम की जान किसी तरह न बचेगी अस्तु वह तरह-तरह की बातें विचारती हुई जमना और सरस्वती से मिलने की नीयत करके इन्द्रदेव के मकान की तरफ तेजी के साथ रवाना हुई. उसे यह बात मालूम थी कि इन्द्रदेव आजकल 'कैलाश-भवन' में रहते हैं और जमना और सरस्वती से उसी मकान में मुलाकात होगी.

रात दो घण्टे से ज्यादे बीत गई होगी जब वह औरत कैलाश-भवन के दरवाजे पर पहुँची. पहरेदार की जबानी इत्तिला कराने पर वह अन्दर बुला ली गई और मामूली जाँच के बाद उस जगह पहुँचाई गई जहाँ जमना, सरस्वती और इन्दुमति रहती थीं. देखने के साथ ही जमना, सरस्वती ने उसे बड़े प्यार से अपने पास बैठाया और पूछा, "कुछ पढ़ती है ?" जिसके जवाब में उसने कहा, "हाँ, महाभारत पढ़ने लगी हूँ !"

यह एक गुप्त इशारा था जो इसके पहिले वाली मुलाकात में जमना और सरस्वती ने इसे सिखाया था और कहा था कि 'मुलाकात होने पर मेरे सवालों के जवाब में जब तू ऐसा कहेगी तब मैं समझूँगी कि यह वास्तव में 'छन्नो' है. ऊपर के बयान में यह अपने दोनों साथियों से कह चुकी है कि जमना और सरस्वती से उसकी मुलाकात हो चुकी है.
छन्नो : (जमना और सरस्वती से) कहो मिजाज तो अच्छा है ?
सरस्वती : मेरा मिजाज अच्छा है या बुरा सो क्या तुझसे छिपा है !
छन्नो : छिपा तो नहीं है और मैं सब कुछ जानती भी हूँ परन्तु फिर और कुछ नहीं तो शारीरिक अवस्था का कुशल को पूछना ही पड़ता है.

सरस्वती : मनुष्य की शारीरिक अवस्था भी आन्तरिक अवस्था के ही अधीन है. जिसकी अन्तरात्मा प्रसन्न है उसका शरीर भी सबल और पुष्ट रहता है और जिसकी अन्तरात्मा दु:खी है उसका शरीर बिना रोग के भी सदैव रोगी रहता है. मेरी अन्तरात्मा का हाल तुझसे छिपा नहीं है और जो कुछ छिपा था सो भी उस दिन मुलाकात होने पर मैंने तुझसे दिल खोलकर कह दिया. अब तो मेरी प्रसन्नता का कोई कारण भी मेरे पास नहीं रह गया जिससे इस बात की आशा हो कि मुझे भी किसी दिन प्रसन्न होने और दिल खोल कर हँसने का मौका मिलेगा सिवाय इसके कि दुश्मन पर फतह पाऊँ और उसे अत्यन्त दु:खी देख कुछ काल के लिये अपने को सुखी मानूँ.

छन्नो : नहीं-नहीं, ऐसा नहीं सोचना चाहिए. उस महामाया की माया का अन्त नहीं है, और न कोई बात उसके लिए कठिन है. अगर इतने दिन तक तुम दोनों को विधवा रख के वह आज सधवा बना दे तो यह भी उसके लिए कुछ दूर नहीं।

जमना० :क्यों छन्नो, क्या तू हम लोगों से दिल्लगी करती है, या हम लोगों के पाप की कोई बात तूने सुनी है !

छन्नो : (दाँत तले जबान को दबा कर) राम राम राम ! भला ऐसी भी कोई बात है कि मैं तुम दोनों को व्याभिचारिणी समझूँ या इस तरह की गन्दी दिल्लगी करूँ. ऐसा कभी खयाल भी न करना. बात यह है कि मैं तुम दोनों को तुम्हारे पति के अभी तक जीते रहने की मुबारकबाद देती हुई खुशखबरी सुनाने के लिए तैयार हूँ और इसीलिए इस ढंग की बातें कर रही हूँ.

दोनों : यह दूसरी दिल्लगी है !
छन्नो : मैं तुम्हारी ही कसम खाकर कहती हूँ कि तुमसे झूठ नहीं बोलती और यही सच्ची खबर सुनाने के लिए मैं तुम्हारे पास इस समय आई हूँ.

जमना० : क्या तू ईश्वर और धर्म की कसम खाकर ऐसा कह सकती है ?

छन्नो : हाँ-हाँ, ईश्वर और धर्म की ही कसम खाकर कहती हूँ कि इसका पूरा-पूरा सबूत पाकर ही मैं तुम्हें खबर देने के लिए आई हूँ, परन्तु वह खबर सुना देने के बाद मैं नहीं कह सकती कि दुश्मनों के हाथ से जीती बचूँगी या नहीं क्योंकि जब मेरे दुश्मनों और उनके साथियों को यह बात मालूम हो जायेगी कि मैंने उनसे अलग होकर यह भेद तुमसे कह दिया है तब वे मुझे जान से मार डालने के लिये कोई बात उठा न रक्खेंगे. खैर मुझे अपने मरने की भी चिन्ता नहीं, अगर चिन्ता है तो केवल इतनी ही कि मैं अपनी जिन्दगी में तुम दोनों को प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पति के पास बैठी हुई देख लूँ.

छन्नो की बातों ने जमना और सरस्वती के दिल में प्रसन्नता के साथ-ही-साथ एक अजीब तरह की खलबली पैदा कर दी. मारे खुशी के रोमांच होकर उनका कंठ रुद्ध हो गया और बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाल कर उन्होंने छन्नो की बात का जवाब दिया-

जमना० :अगर वे जीते हैं तो कहाँ और किस अवस्था में हैं ?
छन्नो : जमानिया के दारोगा ने उन्हें कैद कर रखा है मगर किस अवस्था में हैं सो नहीं कह सकती.
जमना० :यह तुझे कैसे मालूम हुआ ?

छन्नो खुद मेरी मौसेरी बहिन निरंजनी ने इस बात का पता लगाया है इस काम में मैं भी उसके साथ थी और साथ देना चाहती थी मगर जब मैंने देखा कि निरंजनी का दिल बेईमान हो गया और वह दयारामजी को खोज निकालने के साथ-ही-साथ स्वयं जमना या सरस्वती बन कर उनके साथ सुख किया चाहती है तब मैंने उसका साथ छोड़ दिया और तुम्हें यह बताने के लिए आई हूँ कि तुम अपनी रक्षा करने के साथ-ही-साथ स्वयं उन्हें निरंजनी के पहिले ही कैद से छुड़ा लो और इस तरह निरंजनी को अपने ऊपर अहसान जताने का भी मौका मत दो इन्द्रदेवजी की मदद पाकर तुम दोनों जो कुछ कर सकती हो वह निरंजनी को कदापि नसीब नहीं हो सकता, तुम इन्द्रदेवजी को यहां बुलाओ या अपने साथ मुझे उनके पास ले चलो. मैं सब हाल उनके सामने ही बयान कर दूँगी जिसमें दोहराने की नौबत ही न आवे और काम में देर न हो.

इतना सुनते ही जमना और सरस्वती उठ खड़ी हुईं और छन्नो का हाथ थामे हुए इन्द्रदेव के पास रवाना हुईं जो इस समय सान्धोपासन से निवृत्त होकर अपने एकान्त के कमरे में बैठे हुए कुछ लिख रहे थे.
इन्द्रदेव इन तीनों को देख कर प्रसन्न हुए और बैठने का इशारा करके बोले, "मैं इस समय तीनों को बुलाने वाला ही था, (छन्नो की तरफ देख के) यह क्या दयाराम के अभी तक जीते रहने की खबर लेकर आई है."

जमना (बड़े ही आश्चर्य के साथ) जी हाँ, ऐसा ही है, आपको यह बात कैसे मालूम हुई
इन्द्र : अभी तुरत ही मुझे इस बात की खबर लगी है और मालूम हुआ कि वे अभी तक दारोगा की कैद में पड़े हैं, परन्तु मैं यह नहीं कह सकता कि यह खबर कहाँ तक सच है

छन्नो : बेशक यह खबर सच है और मैं इसका पूरा-पूरा सबूत आपको दूँगी.
इन्द्र : अगर यह खबर सच है तो इससे बढ़कर कोई खुशी मेरे लिए नहीं हो सकती, बैठो खुलासा हाल बयान करो.
जमना० :क्या आपको आपके किसी शागिर्द ने यह खबर दी है ?

इन्द्रदेव : हाँ, कल छन्नो एक जंगल में बैठी हुई दो ऐयारों से इसी विषय में बातचीत कर रही थी और मेरा एक शागिर्द उसी जगह छिपा सब बातें सुन रहा था.....
छन्नो : (बात काट कर) क्या भूतनाथ ने वे सब बातें सुन लीं और उसे भी दयाराम जी के जीते रहने की खबर लग गई ?

इन्द्रदेव : हाँ, उसे सब बातें मालूम हो गईं मगर कोई चिन्ता नहीं, अब तुम्हारे कहने से मुझे विश्वास हो गया और मैं होशियार हो गया हूँ. मेरे सामने उसकी कोई कार्रवाई चल न सकेगी चाहे वह नेकनीयती के साथ करे या बदनीयती के साथ. भैयाराजा का कथन तो यही है कि भूतनाथ किसी प्रकार की बुराई न करेगा, उसकी नीयत साफ हो गई, परन्तु मुझे उस पर अभी तक विश्वास नहीं होता (छन्नो से) तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य मालूम होगा कि उस एकान्त जंगल में तुम लोगों की बात सुनने के लिए मेरा शागिर्द क्योंकर जा पहुँचा !

तो मैं यह कह कर तुम्हारा आश्चर्य दूर करे देता हूँ कि मेरा शागिर्द आज महीने-भर से तुम्हारे और निरंजनी के पीछे लगा हुआ है. इसका सबब यह है कि जमना और सरस्वती ने राजसिंह के कुल का अपने हाथ से सत्यानाश करने का प्रण किया है जो दयाराम को गिरफ्तार कर ले गया था. यद्यपि यह बात मुझे पसन्द नहीं है तथापि इन दोनों की खातिर मुझे सब कुछ करना ही पड़ता है और इसीलिए आजकल मेरे दो शागिर्द राजसिंह के इलाके में और उसके घर के इर्द-गिर्द कई बातों की टोह लगाने के लिए घूमा करते हैं, किसी कारणवश राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह को इस बात की खबर लग गई कि आजकल कई ऐयार उसके इलाके में घूम रहे हैं जिससे वह चैतन्य हो गया और डर के मारे उसने घर से निकलना तक भी बन्द कर दिया.

साथ ही इसके वह गदाधरसिंह को दोस्त बनाने की फिक्र करने लगा यह सोच कर कि वह जमना और सरस्वती का दुश्मन है. इसी बीच में तुम्हारी बहिन निरंजनी ने अपने ऐयारों के साथ वहाँ पहुँच कर उसकी लड़की को हर लिया और उसे कैद करके अपने घर ले गई.
मेरे शागिर्द ने मुझे इस बात की इत्तिला दी और मैं स्वयं इस बात की जांच में लग गया मगर जमना और सरस्वती को मैंने इस बात की खबर नहीं दी और उसके आगे का भेद मालूम करने लगा। काशी के जिस मकान में आजकल तुम और निरंजनी रहते हो वह मकान मेरा ही है. मेरे शागिर्द ने निरंजनी के एक ऐयार को गिरफ्तार कर लिया और खुद उसकी सूरत बन निरंजनी के साथ रहने लगा.

उसी ने बातें बना कर और बहुत कुछ ऊँच-नीच समझा कर मेरा मकान जिसमें मेरे नौकर-चाकर रहा करते थे और निरंजनी को इस बात की कुछ भी खबर न थी, खाली करा थोड़े ही किराये में निरंजनी को दिलवा दिया और तुम लोगों ने उसी मकान में आकर डेरा डाला, तथा ध्यानसिंह की लड़की को भी निरंजनी ने उसी मकान में ले जाकर कैद किया, इसके बाद निरंजनी ने अपने ऐयारों की मदद से जिनमें मेरा शागिर्द भी शामिल था ध्यानसिंह के उस आदमी को मार डाला जो ध्यानसिंह की चीठी लेकर भूतनाथ की खोज में जा रहा था. उस चीठी के साथ दयाराम की कैद के विषय में एक नक्शा भी था.

मेरे शागिर्द ने उस नक्शे और चीठी को अच्छी तरह देखा और पढ़ा था-जब मेरे शागिर्द ने इन बातों की मुझे खबर दी तो तब मैंने गुप्त राह से वहाँ पहुँच कर उस लड़की को कैद से छुड़ाया. आज ही वह लड़की यहाँ लाई गई है.

इस समय मैं जमना और सरस्वती से उसकी मुलाकात कराने वाला था, पर खैर इससे तुम समझ गई होगी कि मेरा वह शागिर्द अभी तक तुम लोगों के पीछे लगा हुआ है और इसी सबब से उसने उस जंगल में पहुँच कर तुम्हारी बातें सुन ली थीं.

इन्द्रदेव की बातें सुन कर छन्नो हैरान हो गई और उसने हाथ जोड़ कर इन्द्रदेव से कहा, "आप धन्य हैं ! आपकी बुद्धिमानी का कोई हद्द-हिसाब नहीं. मैं तो यही समझे हुई थी कि मैं यह खुशखबरी आपको सुनाऊँगी मगर अब मालूम हुआ कि आप इस विषय में मुझसे कहीं ज्यादा जानकार हैं जिससे मुझे अब अपनी कार्रवाई पर शर्म आती है."

इन्द्रदेव : नहीं-नहीं, इसमें शर्म की कोई बात नहीं, मैं इस बात से बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने नेकनीयती के साथ यहाँ आकर इन सब बातों की जमना और सरस्वती को इत्तिला दी और इसे सुनकर अपने शागिर्द की बातों पर और भी विश्वास हो गया. अच्छा अब कहो कि तुमने यहाँ आकर जमना और सरस्वती को क्या बातें सुनाईं ?

इन्द्रदेव की बातें सुन कर जमना और सरस्वती बहुत ही प्रसन्न हुईं तथा छन्नो ने भी जो कुछ मालूम था सब हाल इन्द्रदेव से बयान किया और अब भविष्य में क्या करना चाहिए इस विषय में राय पूछी. हमारे प्रेमी पाठक भी इस बात को समझ गये होंगे न समझे हों तो अब समझ जायें कि निरंजनी ने जिस लड़की को वह लोहे वाले जंगले में कैद कर रक्खा था वह ध्यानसिंह की ही लड़की थी और जो उस कैदखाने में उसका मददगार बनकर पहुँचा था (अथवा जमीन के अन्दर से निकला था) वह इन्द्रदेव थे. इसके बाद उन सभों में फिर इस तरह बातचीत होने लगी-

सरस्वती : (इन्द्रदेव से) तो क्या वास्तव में अभी तक वे जीते हैं.

इन्द्रदेव : मालूम तो ऐसा ही होता है, ईश्वर करे यह बात सच निकले और मैं उन्हें छुड़ा कर तुम लोगों के पास ला सकूं. (छन्नो से) इस भेद को अब तुम बहुत गुप्त रखना जिससे दारोगा के कान तक यह बात पहुँचने न पावे.[1]
छन्नो : जी नहीं, अब मैं, इस विषय में किसी से भी बातचीत न करूँगी.

इन्द्रदेव : और तुम अब कुछ दिनों तक हमारे इस मकान से बाहर भी न जाना.
छन्नो : जो आज्ञा.

इन्द्रदेव : अभी तक मैंने ध्यानसिंह की लड़की से कुछ विशेष बातचीत नहीं की है अस्तु उसे बुलवाता हूँ. तुम उससे बातचीत करो और मैं भी उससे पूछकर देखता हूँ कि इस विषय में और क्या-क्या बातें बताती है.
छन्नो : जरूर बुलवाना चाहिए. अच्छा यह तो बताइये कि निरंजनी का वह ऐयार जिसे आपके शागिर्द ने पकड़ लिया था अब कहाँ है ?

इन्द्रदेव : वह मेरे कब्जे में है, उसे अभी तक इस बात का ज्ञान नहीं हुआ कि उसे किसने गिरफ्तार किया या वह किसके मकान में है और भविष्य में भी उसे इस बात की खबर न होगी क्योंकि वह बेहोश करके किसी जंगल-मैदान में छोड़ दिया जायेगा जहाँ से वह तुम्हारी बहिन निरंजनी के पास पहुँच जायगा. आज ही उसे भी रिहाई देने की मेरी इच्छा है.

इतना कह कर इन्द्रदेव उठे और बाहर जाकर उन्होंने अपने किसी आदमी को हुक्म किया कि ध्यानसिंह की लड़की को यहाँ ले आये. थोड़ी ही देर में वह लड़की वहाँ आ पहुँची जहाँ जमना, सरस्वती, छन्नो और इन्द्रदेव बैठे बातें कर रहे थे.

---

१. यह बात हमेशा के लिए गुप्त रखी गई और इसलिए चन्द्रकान्ता सन्तति में भूतनाथ का हाल कहते हुए दलीपशाह ने इस किस्से को नहीं बखान किया क्योंकि उसे यह हाल मालूम न था.

इस लड़की की सूरत-शक्ल के विषय में कुछ थोड़ा-सा निरंजनी के बयान में लिख आये हैं, यहाँ पुन: लिखने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती. यहाँ केवल इतना ही लिख देना काफी होगा कि अभी तक उसके चेहरे पर से उदासी और घबराहट दूर नहीं हुई. इसका विशेष कारण तो यह जान पड़ता है कि बेचारी वहाँ भी इन्द्रदेव की आज्ञा पाकर वह लड़की जिसका नाम ज्वाला था बैठ गई. तब इन्द्रदेव ने उससे कहा, "बेटी, मैं तुझे कई दफे कह चुका हूँ कि तू अपने दिल से डर और उदासी को दूर कर दे, मेरे यहाँ तुझे किसी भी तरह की तकलीफ न होगी, मगर फिर भी न-मालूम क्यों तुझे मेरी बातों का विश्वास नहीं होता."

ज्वाला : मुझे आपकी बातों पर पूरा विश्वास है. मुझे आपका बहुत भरोसा है, आप मेरे बहुत आड़े वक्त में काम आये हैं और आपने मेरी रक्षा की है. मैंने निरंजनी के घर में जो-जो तकलीफें उठाई हैं वह मेरा ही जी जानता है. अगर आप मेरी सहायता न करते तो न-मालूम और भी क्या-क्या तकलीफें झेलती पड़तीं या मैं जीती भी रहती या नहीं, परन्तु अब मुझे सिवा अपने घर पहुँचने के और किसी बात की फिक्र नहीं है.

इन्द्रदेव : मैं तुझसे इस बात का भी वादा कर चुका हूँ कि तुझे बड़ी इज्जत के साथ तेरे घर पहुँचा दूँगा.
ज्वाला : नि:सन्देह आपने वादा किया है, आपकी बात कदापि झूठ नहीं हो सकती, (छन्नो की तरफ देख के) पर इनको देख के मैं इस समय पुन: डर गई हूँ क्योंकि इन्हें निरंजनी के साथ देख चुकी हूँ. यद्यपि इनके हाथ से मुझे किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई बल्कि मार-पीट के समय इन्होंने मेरी सिफारिश ही की थी और मुझे बचाया भी था परन्तु फिर भी.....

इन्द्रदेव : तेरा विचार ठीक है और डरना उचित ही है मगर मैं तुझे जोर देकर कहता हूँ कि इससे डरने की तुझे कोई जरूरत नहीं, इसके और निरंजनी के मिजाज में उल्टे-सीधे का फर्क है. निरंजनी की बुरी नीयत देख कर इसने निरंजनी का साथ छोड़ दिया और अब मेरे घर में (जमना और सरस्वती की तरफ इशारा करके) इन दोनों के पास चली आई है क्योंकि यह लड़कपन ही से इन दोनों के साथ प्रेम और सचाई के साथ रहती आई है.

तू इन दोनों को नहीं पहिचानती और अभी मैं बताऊँगा भी नहीं कि ये दोनों कौन हैं पर इस बात के लिये तुझे दुःख न मनाना चाहिए. इतना मैं जोर देकर कहूँगा कि इन दोनों से तुझे भी डरना न चाहिए और इससे तो जिसका नाम छन्नो है, कदाचित् तुझे मालूम हो, सिवाय भलाई के बुराई की उम्मीद ही मत कर. इसे मैं आज से नहीं बल्कि बहुत दिनों से जानता हूँ, अगर ऐसा न होता तो इस पर विश्वास करके आज मैं इसे अपने घर में कदापि न आने देता.

ज्वाला : आपके कहने से मैं बिल्कुल बेफिक्र हो गई परन्तु यह जानने की इच्छा जरूर है कि (जमना और सरस्वती की तरफ इशारा करके) ये दोनों कौन हैं और ये छन्नो यहाँ क्यों आई हैं ?

इन्द्र : मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि इन दोनों का भेद अभी मैं तुझसे न कहूँगा, हाँ यदि तू कुछ दिन यहाँ रह गई तो तुझसे कुछ छिपा भी न रहेगा. छन्नो यहाँ दयाराम का समाचार लेकर आई है जिसका भेद जानने के लिए ही निरंजनी ने तुझे गिरफ्तार किया था. तुझे यह बात अभी मालूम न हुई होगी कि निरंजनी ने तेरे बाप के एक सिपाही को मार कर एक चीठी, जिसके साथ और भी कई चीजें थीं, ले लीं जो कि तेरे बाप ने भूतनाथ के पास उससे दोस्ती करने के इरादे से भेजी थीं और उसी से दयाराम का पूरा हाल निरंजनी को मालूम हो गया है.

ज्वाला : यह हाल मुझे मालूम नहीं है, हाँ दयारामजी के विषय में मैं बहुत-कुछ निरंजनी को बता चुकी हूँ. मेरे पिताजी को बहुत दिनों तक इस बात की कुछ खबर न लगी कि उनके घर में से दयाराम को कौन चुरा ले गया. अभी हाल ही में इस बात का पता लगा है कि यह काम जमानिया के दारोगा ने किया है और अभी तक दयारामजी उसी के घर में है. (हाथ जोड़ कर) मेरे दादा की तरह निःसन्देह मेरा पिता भी इस मामले में दोषी हैं परन्तु मैं बिल्कुल ही बेकसूर हूँ. यदि मैं किसी योग्य होती तो पिता के घेरे में कदापि न रहती और न उसके साथ ही अपनी भी बेइज्जती कराती.

इन्द्रदेव : बेशक यही बात है और अब भी मैं तुझे यही राय दूँगा कि पिता के घर का नाम छोड़ दे क्योंकि तेरा पिता ताज्जुब नहीं कि किसी दिन अपने कर्मों का फल इसी जीवन में पा जाय, ऐसी अवस्था में तुझे वहाँ बड़ी तकलीफ होगी.

ज्वाला : तकलीफ क्या मैं बिल्कुल ही बेइज्जत हो जाऊँगी और किसी काम के लायक न रहूँगी. अब तो मैंने आप ही को अपना पिता और ईश्वर दोनों ही मान लिया है. आप जो आज्ञा देंगे वही करूँगी. मैं अपने घर का यदि कुछ ख्याल करती हूँ तो केवल अपनी माँ की मुहब्बत से.

इन्द्रदेव : ठीक है और अगर ईश्वर चाहेगा तो तू अपनी माता से भी किसी अच्छे मौके पर मिला दी जायेगी. यदि तेरी माता को यह बात मालूम होगी कि तू इतने दिनों तक इन्द्रदेव के यहाँ रही है तो वह कदापि तुझसे असंतुष्ठ न होंगी और न तेरी इज्जत या चालचलन में किसी तरह का फर्क मानेगी.
ज्वाला : नि:सन्देह ऐसा ही है, आपके यहाँ रहने में मेरा किसी प्रकार का नुकसान नहीं.

इन्द्रदेव : (जमना, सरस्वती और छन्नो से) अब तुम लोग इस लड़की को अपने साथ ले जाओ और इसे अपनी लड़की समझ कर खातिर के साथ अपने साथ रक्खो. (ज्वाला से) इन तीनों के साथ तू बेफिक्री के साथ रह कर ईश्वर से शुभ दिन की प्राप्ति की प्रार्थना कर, साथ ही दयाराम के विषय में जो कुछ ये तीनों पूछें उसके बयान में किसी प्रकार का संकोच मत कीजियो.

ज्वाला : जो आज्ञा.
इसके बाद जब वहाँ से उठने की तैयारी हुई तब छन्नो ने इन्द्रदेव की तरफ देख कर कहा, "एक बात मैं आपसे कहना भूल गई."
इन्द्र : वह क्या ?

छन्नो : आपको मालूम ही होगा कि भूतनाथ से और नागर से दोस्ती है.

इन्द्रदेव: हाँ, मैं इस बात को बखूबी जानता हूँ.

छन्नो : इसलिए भूतनाथ अपने हाल-चाल की चीठी जिसमें बहुत-सी भेद की बातें रहती हैं बराबर नागर को लिखा करता है निरंजनी भूतनाथ के साथ की लिखी हुई बहुत-सी चीठियाँ नागर से मँगनी माँग लाई है और उनसे भूतनाथ के भेद जान कर उस पर अपना रोआब जमाना चाहती है. अभी तक वे चीठियाँ निरंजनी के पास ही मौजूद हैं.
इन्द्र : अच्छा किया जो तूने यह हाल मुझे बता दिया, अगर हो सका तो इस विषय में भी कार्रवाई करूँगा. अच्छा अब तुम लोग जा कर आराम करो.

[५]

दयाराम की खोज निकालने की धुन में तीन आदमी अपने-अपने स्थान से बाहर निकले. निरंजनी को दारोगा साहब से नागर की बदौलत कुछ घनिष्ठ संबंध था और नागर निरंजनी को बहुत प्यार करती थी अस्तु निरंजनी पहिले नागर ही के घर की तरफ रवाना हुई. भूतनाथ यद्यपि दारोगा से कुछ लड़ गया था परन्तु उसे इतना जरूर विश्वास था कि यदि मैं दारोगा के घर उसका दोस्त बनकर जाऊँगा तो वह मेरी खुशामद करने के लिए तैयार मिलेगा और चाहेगा कि मुझे किसी तरह अपना दोस्त बनावे, इसलिए दारोगा नि:सन्देह डरता था और यह बात इन्द्रदेव को मालूम थी परन्तु इन्द्रदेव का विश्वास था कि यदि मैं दयाराम के विषय में दारोगा से कुछ कहूँगा तो वह जरूर अनजान बनकर इनकार कर जायगा और कहेगा कि उनके बारे में मैं कुछ नहीं जानता, इस खयाल से इन्द्रदेव ने दारोगा को अपने घर ही बुला कर कुछ कार्रवाई करना मुनासिब समझा और अपने एक सवार को चीठी देकर दारोगा के पास रवाना किया जिसमें मजमून लिखा हुआ था :-

"मेरे परम प्रिय गुरुभाई,
पत्र देखते ही हजार काम छोड़ कर मेरे पास चले आइये, मैं खुद आपसे मिलने के लिए आता परन्तु अपने स्वास्थ्य के बिगड़ जाने से बिलकुल लाचार हो रहा हूँ, नहीं तो आपको कष्ट न देता.

यदि कार्यवश महाराज भी आपको रोकें तो उनसे मेरी तरफ से क्षमा-प्रार्थना करना परन्तु आने में विलम्ब न करना.
आपका- इन्द्रदेव."
इस पत्र को लेकर सवार तेजी से के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुआ और इन्द्रदेव दारोगा के आने का इन्तजार करने लगे.

तीसरे दिन संन्ध्या के समय दारोगा साहब इन्द्रदेव के घर पहुँचे और उन्होंने बड़ी खातिर से दारोगा को अपने कैलाश-भवन के एक सुन्दर कमरे में उतारा जो उस मकान या खण्ड से बिलकुल ही निराले में पड़ता था जिसमें इन्द्रदेव की गृहस्थी और जमना, सरस्वती तथा इन्दुमति वगैरह रहती थीं.
खातिरदारी से छुट्टी पाने के बाद जब दोनों आदमी निश्चिन्ती से एकान्त में बैठे तो इन्द्रदेव और दारोगा से इस तरह बातचीत होने लगी :-

दारोगा : कहो क्या मामला है जो तुमने इस तरह यकायक जल्दी के साथ मुझे बुला भेजा ? तुम्हारी चीठी पाकर तो मैं बहुत ही घबड़ा गया था फिर भी ईश्वर को धन्यवाद है कि यहाँ आकर तुम्हें तन्दुरुस्त पाता हूँ.
इन्द्र : नहीं, मैं तंदुरुस्त नहीं हूँ. यद्यपि उस दिन बनिस्बत जिस दिन मैंने आपको चीठी लिखी थी आज कुछ अच्छा दिखाई देता हूँ और मुझमें चलने-फिरने तथा घोड़े पर चढ़ने की भी हिम्मत हो गई है परन्तु फिर भी मैं अपने को तन्दुरुस्त नहीं मानता और वैद्य की बात पर विश्वास करता हूँ जिसने मुझे संकोच छोड़ कर यह कह दिया है कि इन्द्रदेव, अगर तुम पन्द्रह दिन तक जीते बच गए तो फिर तुम्हें इस बीमारी से किसी तरह का डर न रहेगा.'

दारोगा : (आश्चर्य और दुख के साथ) हैं ऐसी बात है ! आखिर तुम्हें बीमारी क्या है सो भी तो कुछ मालूम हो !
इन्द्र : मुझे एक अजीब तरह की बीमारी हो गई है ! मेरे पैरों में सख्त दर्द रहता है. कभी-कभी वह दर्द आठ-आठ दस-दस घण्टे तक बन्द रहता है और जब यकायक उभरता है तो अधमुआ करके छोड़ देता है. इसी तरह दिन में दो-तीन मरतबे कलेजे में दर्द होता है और उस समय तो मैं अपने जीवन से बिलकुल ही निराश हो जाता हूँ.

खाना-पीना बिल्कुल ही नष्टप्राय हो रहा है, केवल मूँग की दाल खाने की आज्ञा वैद्यजी दे गए हैं !
दारोगा : बड़े दुःख की बात सुना रहे हो !

इन्द्र : आप जानते हैं कि मेरा कोई लड़का नहीं हैं और मैं एक भारी तिलिस्म का दारोगा हूँ.
दारोगा : हाँ यह तो मैं बखूबी जानता हूँ.

इन्द्र : यद्यपि मेरे घर लड़का होने की उम्मीद है सही नहीं कह सकता कि लड़का होगा या लड़की अथवा दोनों की उम्मीद जाती रहेगी.
दारोगा : परमात्मा न करे ऐसा हो !

इन्द्र : भविष्य के गर्भ में क्या है सो कोई नहीं जानता.
दारोगा : बेशक ऐसा ही है.

इन्द्र : अतएव चाहता हूँ कि आपको तिलिस्म में ले चल कर वहाँ के कुछ भेद समझाने के साथ-ही-साथ एक वसीयतनामा और तिलिस्म की तालियों का गुच्छा आपके हवाले कर दूँ. ईश्वर की कृपा से यदि अच्छा रहा तो पन्द्रह-बीस दिन बाद तालियों का गुच्छा आपसे वापस लूँगा नहीं तो उस वसीयतनामे के पढ़ने से आपको तिलिस्म का सब हाल मालूम हो जायगा, तथा और भी जो कुछ मैंने उस वसीयतनामे में लिख रक्खा है उसे आप बखूबी पूरा करेंगे, ऐसी आशा केवल आप ही से रख सकता हूँ.

इन्द्रदेव की बीमारी का हाल सुन कर दारोगा साहब को दुःख हुआ सही परन्तु इन्द्रदेव जिस तिलिस्म का दारोगा है वहाँ का भेद मालूम हो जायगा और वहाँ की तालियाँ भी मिल जायेंगी इस आशा से वह दिल में बहुत ही खुश भी हुआ मगर इस खुशी को अपने चेहरे से जाहिर न होने दिया.

सराहना तो इन्द्रदेव की करनी चाहिये कि इतनी दुष्टता देख कर भी उससे जाहिरदारी तोड़ने का विचार नहीं करता. यद्यपि वह दारोगा को चार दिन के लिये कैद करके अपना काम निकालना चाहता है मगर दारोगा साहब को दु:ख देना अथवा उससे जबर्दस्ती करना नहीं चाहता और न यही चाहता है कि दारोगा को उसके ऊपर किसी तरह का शक हो.
दारोगा ने दिल की प्रसन्नता के भाव को छिपाया और जाहिर में अपने चेहरे को रंजीदा बना कर इन्द्रदेव से कहा-

दारोगा : इन्द्रदेव, तुम्हारी इन बातों को सुन कर मेरा दिल डूबा जाता है. जो कुछ कहोगे उसे मैं करूँगा परन्तु इस दु:खमय बातों को सुन कर मेरे कलेजे में चोट लगती है. इस दुनिया में मेरा मददगार सिवाय तुम्हारे और कोई भी नहीं है इसलिए तुम्हारी बात अगर सच निकली तो तुम्हारे बाद मेरी क्या दशा होगी यह तो जरा सोचो.

इन्द्र : ईश्वर सब अच्छा ही करेगा. दुनिया में किसी के बिना किसी का काम अटका नहीं रहता है. अब भोजन करके आराम कीजिए, कल प्रात: काल आपको साथ लेकर मैं तिलिस्म की तरफ रवाना हो जाऊँगा.
दारोगा : तुम्हारी बातों ने मेरी भूख-प्यास बिल्कुल नष्ट कर दी है, अब मैं कुछ भोजन न करूँगा.

इन्द्र : नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता.
इन्द्रदेव ने दारोगा के लिए भोजन इत्यादि का सामान ठीक कराया, दारोगा के साथ-ही-साथ इन्द्रदेव ने भी कुछ भोजन किया और तब दोनों आराम करने के लिए अलग-अलग कमरे में चले गये.

दूसरे दिन सुबह कोई दो घड़ी रात रहते इन्द्रदेव उठे और उन्होंने दारोगा साहब को नींद से होशियार किया. घण्टे भर के अन्दर ही दोनों आदमी जरूरी कामों से निपट सफर करने के लिए तैयार हो गये. हुक्म के मुताबिक दो घोड़े तैयार करके हाजिर किए गये जिन पर सवार होकर दारोगा तथा इन्द्रदेव घर से बाहर निकले तथा उत्तर की तरफ रवाना हुए.
दोपहर दिन चढ़े तक ये दोनों आदमी मामूली चाल पर बराबर चले गए. इसके बाद इनको पहाड़ों की तराई मिली और सुन्दर तथा साफ जल से भरा हुआ एक कुदरती तालाब भी नजर आया.

इन्द्रदेव ने दारोगा से कहा कि अब यहाँ पर उतर कर स्नान और कुछ भोजन कर लेना चाहिए, रात को मैंने अपने एक शागिर्द को आज्ञा दे दी थी कि वह यहाँ पर कुछ भोजन की सामग्री तैयार रक्खे, सम्भव है कि वह यहाँ आ चुका हो अथवा आते ही हो.

यद्यपि दारोगा वहाँ ठहरा नहीं चाहता था और तिलिस्म के अन्दर शीघ्र पहुँचने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा था तथापि इन्द्रदेव की इच्छानुसार उसे रुकना ही पड़ा. दोनों आदमी उस तालाब के पास चले गये और एक सायेदार पेड़ की नीचे पहुँच घोड़े पर से उतर पड़े. दोनों ने अपने-अपने घोड़े (कुछ टहलाने और शान्त करने के बाद) पेड़ से बाँध दिए और जरूरी कामों से निपटने की फिक्र करने लगे.

थोड़ी देर में सब कामों से निश्चिन्त होकर दोनों आदमी पुन: वहाँ पहुँचे जहाँ उनके घोड़े पेड़ से बँधे हुए थे और जीनपोश बिछा कर बैठ गए. उसी समय एक आदमी सर पर एक छोटी-सी दौरी रक्खे उनकी तरफ आता हुआ दिखाई दिया. इन्द्रदेव ने दारोगा से कहा, "लीजिये जलपान का सामान भी आ पहुँचा."

उस आदमी के पास पहुँच कर जल पान की दौरी उनके सामने रख दी और पानी का बंदोबस्त करके पेड़ की आड़ में चला गया तथा ये दोनों भोजन करने लगे. इन्द्रदेव ने बीमारी का पाखण्ड रच ही रक्खा था इसलिए केवल एक-दो फल खाकर रह गए, मगर दारोगा ने तरह-तरह की चीजों पर खूब ही हाथ फेरा.
जलपान से छुट्टी पाकर जब दोनों आदमी निश्चिन्त हुए तब उनमें इस तरह बातचीत होने लगी :-

इन्द्र : बीमारी ने मेदा ऐसा कमजोर कर दिया है कि एक-दो फल खाना भी भारी हो रहा है, छाती में बोझ-सा हो गया और सर घूमने लगा.
दारोगा : अफसोस तुम्हारी तन्दरुस्ती बहुत खराब हो गई है.
इन्द्र : (लेट कर) बैठना मुश्किल हो गया, सर पर चक्कर बढ़ता जाता है.

दारोगा : सर तो मेरा भी घूम रहा है. (कुछ ठहर कर) ऐसा मालूम होता है कि खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिली हुई थी.

इन्द्रदेव : मुझे भी ऐसा ही शक होता है. किसी ऐयार ने मेरे आदमी को धोखा तो नहीं दिया ? उस आदमी की जाँच करनी चाहिए जो खाने का सामान लाया है.

इतना कहकर इन्द्रदेव उठ कर बैठे और 'रामा-रामा' कह उस आदमी को पुकारने लगे. वह पास ही पेड़ की आड़ में था, पुकारने से सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, "आपका रामा मेरी बदौलत जहन्नुम की सैर कर रहा है. मैं तुम्हारे दुश्मन का ऐयार हूँ और अब तुम दोनों को गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले जाऊँगा."

इतना कह कर वह कुछ दूर पीछे हट गया. उसकी बात सुन दारोगा के तो होश उड़ गए, उधर इन्द्रदेव ने जान-बूझ कर जमीन पर लेट के आँखें बन्द कर लीं. दारोगा ने समझा कि वह बेहोश हो गए, क्रोध में आकर उठ खड़ा हुआ और तलवार खैंच कर उस ऐयार की तरफ बढ़ा मगर कुछ कर न सका, थोड़ी ही दूर जाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया. दारोगा को बेहोश देखकर वह आदमी इन्द्रदेव के पास आया और धीरे से बोला, "उठिये, दारोगा साहब बेहोश हो गए."

इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और अपने शागिर्द से बोले, "अब इन्हें हमारे मकान में ले जाकर कैद करो. जहाँ मैं तुम्हें बता चुका हूँ उस जगह पर इन्हें रखना और खाने-पीने का ख्याल रखना. इनको यह न मालूम होने पावे कि ये कहाँ पर और किसके यहाँ कैद हैं. इन्हें मैं घोड़े पर लाद देता हूँ, तुम भी उसी पर सवार हो जाओ, जंगल की राह से धीरे-धीरे जाओ जिसमें रात्रि के समय घर पहुँचो. मैं किसी काम के लिए तिलिस्म में जाता हूँ."

शागिर्द के साथ मिल कर इन्द्रदेव ने दारोगा को घोड़े पर लादा और शागिर्द को भी उसी पर चढ़ा कर घर की तरफ रवाना करने के बाद स्वयं उसी तरफ को चल पड़े जिधर जा रहे थे.

[६]

हम अपने पाठकों का ध्यान भूतनाथ उपन्यास के तीसरे भाग के पहिले और दूसरे बयान की तरफ ले जाते हैं जिसमें भूतनाथ से चन्द्रशेखर का मिलना, नागर के यहाँ बाबू साहब (रामलाल) की मौजूदगी में भूतनाथ का आना, बाबू साहब से तथा भूतनाथ से बातें होना, और उसी जगह पर पुन: किसी आदमी का पहुँच कर भूतनाथ के आगे लिफाफा फेंक कर भाग जाना इत्यादि लिख गया है.

उस बयान के पढ़ने से यह मालूम ही हो चुका होगा कि उस समय नानक की माँ रामदेई से भूतनाथ का संबंध हो चुका था और बाबू साहब (रामलाल) को भूतनाथ का साला कहा जाता था. मगर भूतनाथ का और बाबू साहब का उन दिनों मुद्दत से सामना नहीं हुआ था और इसी से भूतनाथ के मामलों से बाबू साहब को बहुत कम वाकफियत थी. तथापि बाबू साहब लुक-छिप कर अपनी बहिन रामदेई से मिलने के लिए अक्सर जाया करते थे और वह भी रुपये-पैसे से इनकी मदद खुले दिल के साथ किया करती थी..

बाबू साहब यद्यपि डरपोक आदमी थे मगर ऐयाश जरूर थे और दो-चार बदमाश-लुटेरों को भी अपने पास रक्खा करते थे. इन्हीं दिनों इन्हें एक और भी गैबी मदद मिल गई थी जिसके कारण इनका दिमाग कुछ बढ़ने लग गया था जो आखिर यहाँ तक बढ़ा कि उस घटना के (जिसका जिक्र ऊपर कर आये हैं) थोड़े ही दिन बाद ये बहादुर बन गये, ऐयारी का दम भरने लगे और भूतनाथ के दुश्मन बन गए. अब सुनिए कि वह गैबी मदद क्या थी और उसके सबब से रामलाल की कैसी अवस्था बदली तथा चन्द्रशेखर के कारण भूतनाथ को कैसी परेशानी उठानी पड़ी.
भूतनाथ के दूसरे भाग के नौवें बयान में हम लिख आये हैं कि भूतनाथ ने अपने बारह शागिर्दों के साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया और उन्हें कैद करके एक गुफा में डाल दिया मगर जब बाहर से लौट कर पुन: उन सभों को देखने के लिए गया तो किसी को भी वहाँ न पाया.

असल में उन शागिर्दों को भी इन्द्रदेव ही ने घाटी के अन्दर-ही-अन्दर किसी गुप्त रास्ते से पहुँच कर छुड़ा दिया था मगर ऐसे ढंग से कि उन शागिर्दों को इस बात का कुछ भी गुमान न हुआ कि उनको छुड़ाने वाला कौन है, हाँ छुड़ाने वाले ने इतना जरूर कह दिया कि "मैं प्रभाकरसिंह की आज्ञा से तुम लोगों को छुड़ाता हूँ, अब मुनासिब है कि तुम लोग भूतनाथ से अपना बदला लो और उस तलवार को भी छीन लो जिसके सबब से उसने तुम लोगों पर फतह पाई है. वह तलवार असल में प्रभाकरसिंह की है, उसका जख्म जरा-सा भी जिसको लग जाता है वह बेहोश हो जाता है, मगर उस पर उसका असर कुछ भी नहीं होता जिसके पास उसके जोड़ की अँगूठी होती है.

वह अँगूठी भी जो लोहे की-सी है भूतनाथ की उंगली में तुम देखोगे. यह सब कुछ करना पर भूतनाथ को जान से मत मारना नहीं तो हम तुम लोगों को भी जीता न छोड़ेंगे. हमने तुम लोगों को उसके फन्दे से छुड़ा कर जो कुछ तुम सभों पर अहसान किया है उसका बदला यही चाहते हैं कि भूतनाथ को जान से मत मारना, तकलीफ जितनी तुम्हारे जी में आवे और जो तुमसे हो सके देना." इस बात को उन लोगों ने बड़ी खुशी से मंजूर कर लिया था और अपने छुड़ाने वाले को दिल से धन्यवाद दिया था.

केवल इतना ही नहीं, चलती समय महात्मा रूपी इन्द्रदेव ने उन ऐयारों को मदद की तौर पर कुछ अशर्फियाँ और जवाहिरात भी दिया और उनके सामने से देखते-ही-देखते कहीं गायब हो गये.
इस तरह पर भूतनाथ के पंजे से रिहाई पाकर वे ऐयार लोग उद्दंड हो गए और भूतनाथ को सताने की फिक्र करने लगे.

हम कई जगह लिख आए हैं कि "भूतनाथ ने अपने रहने के लिए कई स्थान बना रक्खे थे और सभी जगह वह थोड़ी दौलत भी रखता था." उन सब स्थानों और खजानों का हाल उन शागिर्दों को मालूम था अस्तु सबके पहिले उन लोगों ने भूतनाथ के खजानों पर धावा किया और जहाँ तक बन पड़ा उन्हें अपने कब्जे में कर लिया, इसके बाद अपने रहने के लिए एक सुयोग्य स्थान नियत करके और आपस में मिलने-जुलने का इशारा बाँध कर जुदा हुए और कोई नई कार्रवाई करने की फिक्र में लगे.

उन लोगों ने बहुत जल्द भूतनाथ का पता लगा लिया, तब सूरत बदले हुए मौके से उसका पीछा करने लगे तथा इस बात की भी फिक्र में लगे कि भूतनाथ के बाकी शागिर्दों को भी अपना हाल सुना कर भड़कावे और अपना साथी बनावें. आखिर दो ही चार रोज के हेर-फेर में उन लोगों ने भूतनाथ के कुछ शागिर्दों को जो उन लोगों में से कई के रिश्तेदार भी थे तोड़ कर अपना साथी बना लिया जिसकी खबर भूतनाथ को कई दिनों तक न लगीं. इनमें से दो शागिर्दों के नाम विजय और बहादुर थे. बहादुर भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था अस्तु बहादुर के इस मण्डली में मिलने के बाद सभी की राय के मुताबिक वह पुन: भूतनाथ के पास गया और समय का इन्तजार करने लगा.

अपने विश्वासपात्र ऐयारों का साथ छूट जाने और बेइन्तहा दौलत कब्जे से निकल जाने के बाद जब भूतनाथ ने वह घाटी छोड़ी तो बहुत दु:खी और उदास होकर पुन: अपने मालिक रणधीरसिंह के पास जाने और स्थिर भाव से वहीं रहने का विचार किया. उसने बहुत कुछ बातें बनाने और माफी माँगने के बाद उन्हें प्रसन्न करके वह उनके पास रहने लगा जिससे उसके बागी शागिर्दों को यकायक उसे सताने और उससे बदला लेने का मौका न मिला. मगर वे लोग उसकी धुन में निरन्तर लगे ही रहे.

एक दिन भूतनाथ मिर्जापुर से निकल कर अपनी स्त्री रामदेई से मिलने के लिए काशी की तरफ रवाना हुआ. उसे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि उसके बागी शागिर्द भी उसकी धुन में लगे हुए हैं और सफ़र में वह जहाँ-जहाँ टिका या ठहरा करता था प्राय: उन सभी जगहों पर रूप बदल कर उन लोगों ने दखल दिया हुआ है.

भूतनाथ जब काशी जाया करता था तो एक बाग में जो करीब-करीब सफर के मध्य में पड़ता था दो-चार घण्टे के लिए जरूर ही ठहरा करता था बल्कि अक्सर वहाँ रसोई भी बनाया करता था, क्योंकि उस बाग के पास ही में एक छोटा-सा बाजार भी था जहाँ सब सामान मिल सकता था.
उस बाग के माली लोग लालचवश भूतनाथ की खिदमत किया करते थे और सीधा तथा बरतन-पानी इत्यादि सुभीते से जुटा दिये करते थे. वह बाग 'रामबाग' नाम से मशहूर था.

वह बाग किसी रईस या जमींदार का न था बल्कि कई खटिक और मालियों का था जो उसका फल-फूल तथा मेवा और दरख्त वगैरह बेच कर फायदा उठाते थे और प्राय: उसमें रहा भी करते थे. भूतनाथ के दो शागिर्दों ने भी उसी में जाकर नौकरी की और रहने लगे. दोपहर का समय था जब सफर से थके हुए भूतनाथ ने आकर उस बाग में आराम किया और नहा-धो कर रसोई बनाने की फिक्र में लगा. मालियों ने बस सामान मोहैया कर दिया और भूतनाथ रसोई बना कर भोजन करने के बाद वहाँ से रवाना हुआ. वहाँ के मालियों में से एक आदमी किसी काम का बहाना करके उसके साथ ही बातें करता हुआ उसी तरफ रवाना हुआ जिधर भूतनाथ जाता था.

थोड़ी दूर जाने के बाद भूतनाथ को नशा-सा चढ़ आया, जमीन घूमती हुई मालूम होने लगी और पैरों में लड़खड़ाहट पैदा हो गई. भूतनाथ ने घूमकर अपने साथ आते हुए माली की तरफ देखा और कहा, "क्या आज तुम लोगों ने मेरे खाने के समान में नशीली चीज मिला दी है ?"

माली : (साथ से कुछ अलग हट कर) जी हाँ, आज कुछ ऐसा ही मामला हुआ है. इस बाग के माली तो सब तो आपके खैरखाह और ताबेदार हैं, उन बेचारों पर किसी तरह का शक आपको न करना चाहिए, मगर मैं जरूर आपका दुश्मन हूँ आप ही से बदला लेने की नीयत से मैंने क्षत्रिय होकर भी उन शूद्र मालियों की नौकरी की थी. आज मेरा मनोरथ सिद्ध हुआ और अपने भोजन की सामग्री में दवा मिलाने का मुझे मौका मिला. (हँस कर) आप बहुत दिनों से दूसरे के लिए जहरीले पेड़ लगा रहे थे जिसमें अब फल लगने शुरू हो गए हैं और वे फल अब आप ही को चखने पड़ेंगे.

भूत० :(क्रोध से उस माली की तरफ देख कर) तू कौन है, मैं तेरा राम सुना चाहता हूँ.
माली : हाँ, तुम बार-बार मेरे हाथों से सताये जाओगे इसलिए तुम्हें मेरा नाम जरूर याद कर लेना चाहिए जिसे मैं खुशी से बताने के लिए तैयार हूँ, मेरा नाम है 'चन्द्रशेखर'.
भूत० :तुम किसके नौकर हो ?
चन्द्रशेखर : अपने दिल के.

भूत० :मेरे साथ दुश्मनी करने का कारण ?
चन्द्रशेखर : तुम्हारी बदनीयती और बेईमानी.

भूत० :तुम्हारा मैंने क्या बिगाड़ा है ?
चन्द्रशेखर : इज्जत और हुर्मत.

भूत० :(चिढ़ कर) साफ-साफ और सीधी तरह से क्यों नहीं बातें करता.
चन्द्रशेखर : इसीलिए कि तुम सीधी तरह से सीधे होने वाले नहीं हो.

मारे गुस्से के भूतनाथ पेचोताब खाने लगा और उसने जोश में आकर खंजर के कब्जे पर हाथ रक्खा पर कुछ कर न सका. उसका क्रोध बेफायदे था और उसका गुस्सा व्यर्थ, क्योंकि अब उस पर बेहोशी का पूरा असर हो चुका था, नतीजा यह हुआ कि खंजर खेंचते ही वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा.

आने-जाने वाले मुसाफिरों की निगाह से बचने का खयाल करके चन्द्रशेखर उसी समय भूतनाथ को उठाकर सड़क से बहुत दूर एक नाले में ले गया जहाँ बिल्कुल सन्नाटा था और किसी के आने की भी आशा न थी.
चन्द्रशेखर ने पहिले तो उस अँगूठी और तलवार पर कब्जा किया जो भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह से ली थी, इसके बाद उसका ऐयारी का बटुआ ले लिया, अन्त में उसके कपड़े भी उतार लिए तथा और जो कुछ उसके पास था लेकर केवल लंगोट छोड़ दिया और दूसरी तरफ का रास्ता लिया.

संध्या होने के बाद जब भूतनाथ होश में आया तो उसने तो अपने को बड़ी दुर्दशा में पाया, कपड़ों के चले जाने का दु:ख तो साधारण था परन्तु बेइज्जती होने और बटुए तथा तलवार के चले जाने का उसे बड़ा ही रंज हुआ. थोड़ी देर तक कुछ चिन्ता के करने बाद वह उठ खड़ा हुआ और क्रोध से होंठ चबाता हुआ अपने अड्डे की तरफ रवाना हुआ.

चन्द्रशेखर भूतनाथ के दुश्मन शागिर्दों का दोस्त तथा बहुत ही तेज और होशियार ऐयार था. इसका असली नाम कुछ दूसरा ही था परन्तु भूतनाथ के लिए इसने अपना बनावटी नाम चन्द्रशेखर रख लिया था. जब वह भूतनाथ को लूट कर अपने दोस्तों के पास गया तो बहुत ही खुश था क्योंकि भूतनाथ का ऐयारी का बटुआ उसके कब्जे में था और उसमें उसके मतलब की बहुत-सी चीजें हाथ लगी थीं.

नागर की लिखी हुई चीठियाँ भी उसमें मिली थीं जिसमें से कई भूतनाथ की चीठी के जवाब में लिखी हुई थीं और जिनके पढ़ने से इस बात का पता लगता था कि उन दोनों में से किस तरह पर किस मामले की बातें हो रही हैं, तथा भूतनाथ कैसे-कैसे दुर्घट मामलों के फेर में पड़ा हुआ है.

यों तो वे लोग भूतनाथ के शागिर्द ही थे और उसके बहुत-से मामलों में जानकार थे परन्तु इन चीठियों के पढ़ने से उन्हें और भी बहुत-सी बातें ऐसी मालूम हो गईं जिनका उन्हें कुछ भी गुमान न था और जिनका प्रकट होना भूतनाथ के लिए बहुत ही बुरा था.

भूतनाथ को अपनी अवस्था पर बहुत ही दुःख हुआ और वह मारे क्रोध के बेतरह पेचताब खाने लगा. उसे उस अँगूठी तलवार तथा अपने ऐयारी के बटुए के चले जाने का बड़ा ही सदमा हुआ क्योंकि उसमें तरह-तरह की अनूठी चीजें भरी हुई थीं. खास करके नागर की चीठियों का जाना उसने अपने हक में बहुत ही बुरा सगुन समझा और इस बात का निश्चय कर लिया कि यदि मेरा यह दुश्मन किसी तरह मेरे हाथ लगेगा तो उसे बिना जान से मारे कदापि न छोड़ूँगा.
यद्यपि उसे इस बात का निश्चय न था कि उसको सताने वाला चन्द्रशेखर कौन है तथापि देर तक सोचने के बाद उसने यही निश्चय किया कि उसके इन बिगड़ैल शागिर्दों ही में कोई है जिन्हें उसने बहुत ही बेइज्जत किया था.

गुस्से में और होठों से अपने को चबाता हुआ भूतनाथ वहाँ से उठा और जंगल-ही-जंगल लोगों की नजरों से अपने को बचाता हुआ अपने अड्डे की तरफ रवाना हुआ और वहाँ पहुँच कर फिर से उसने अपना सामान दुरुस्त किया.

उन शागिर्दों के निकल जाने पर भी भूतनाथ के पास अभी कई शागिर्द हैं जो दिलोजान से भूतनाथ का काम करते हैं और हर तरह से उसका साथ देने के लिए तैयार रहते हैं परन्तु उसके विषय में भी भूतनाथ को खुटका बना ही रहता है और इस बात का बराबर डर रहता है कि कहीं उसके बागी शागिर्द लोग इन नेक शागिर्दों को भी भड़काकर बेदिल न कर दें। इस ख्याल से वह अपने खैरख्वाह शागिर्दों के साथ बहुत ही अच्छा और मेहरबानी का बर्ताव करता है और अपने को उन पर ऐसा नेक साबित करता है कि जिससे उनको इस बात का विश्वास न हो कि भूतनाथ ने अपने अमुक साथियों के साथ वास्तव में बुरा बर्ताव किया होगा.

भूतनाथ के बागी शागिर्दों ने उसे बड़ा ही तंग किया और कई मरतबा उसकी बेतरह बेइज्जती की जिससे वह एकदम घबरा गया और अपने बचाव की फिक्र करने लगा मगर उन शागिर्दों से वह अपने को किसी तरह छिपा नहीं सकता था और वे लोग बार-बार उसके पास धमकी की चीठियाँ भेजा करते थे और अपने नाम की जगह 'सर्वगुण-सम्पन्न चाँचला सेठ' इत्यादि लिखा करते थे.
तीसरे भाग के दूसरे बयान में जैसा कि हम लिख आये हैं कि नागर के मकान से भूतनाथ के सामने बाबू साहब ने चन्द्रशेखर का हाल बयान करके कहा था कि मैंने उसे बरना के किनारे देखा था, उसके साथ बिमला और प्रभाकरसिंह भी थे. असल में बाबू साहब ने वह बात झूठ नहीं कही थी. प्रभाकरसिंह तथा कला और बिमला का रूप उन्हीं शागिर्दों ने धरा था और उन बाबू साहब तथा नागर से मुलाकात करके भूतनाथ को कोई नया धोखा देना चाहते थे.

कुछ ही दिन बाद भूतनाथ के बागी शागिर्दों ने भूतनाथ के साले बाबू साहब को भी अपनी मण्डली में मिला लिया, इस खयाल से कि वह अपनी बहिन रामदेई से मिला-जुला करता है अतएव उनके जरिए से बहुत कुछ हालचाल मिला करेगा. इसके अतिरिक्त खुद बाबू साहब भी भूतनाथ से रंज रहा करते थे क्योंकि उनका नाता भूतनाथ से धर्मविरुद्ध होने के कारण लज्जा का था. संक्षेप में वह थोड़ा-सा हाल हमने केवल सिलसिला मिला देने के लिए लिख दिया, आगे चलकर मौके-मौके से हमारे पाठकों को इस बात का पता लगता रहेगा कि अपने बागी शागिर्दों के बदौलत भूतनाथ को कैसी-कैसी तकलीफें उठानी पड़ीं.

[७]

जमानिया में दारोगा साहब का मकान कैसा है उसका कुछ हाल हमारे पाठकों को मालूम हो चुका है, जमना, सरस्वती और इन्दुमति उस मकान की हवा खा चुकी हैं. भैयाराजा को भी दारोगा उस मकान का मजा चखा चुका है. इस समय हम पुनः हम अपने पाठकों को उसी मकान में ले चल कर दिखाते हैं कि अब यहाँ क्या हो रहा है.

हाथ में छोटी-सी लालटेन और तालियों का एक बड़ा-सा गुच्छा लिए हुए आधी रात के समय हम एक आदमी को इस मकान में घूमते हुए देखते हैं. इस आदमी का तमाम बदन स्याह कपड़े में छिपा हुआ है और इसके चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई है. तालियों के गुच्छे में से वह तालियाँ लगा-लगा कर कोठरियाँ खोलता ओर देखता है कि उसके अन्दर क्या है और फिर बन्द कर देता है. इसी तरह पर घूम-फिर कर कोठरियाँ खोलता और देखता हुआ वह आदमी एक ऐसी कोठरी के दरवाजे पर पहुँचा जिसके आगे मिट्टी का एक टूटा हुआ घड़ा और कुछ सूखी रोटियाँ पड़ी हुई थीं तथा मामूली ताले के अलावा एक और भी मोटी जंजीर लगी हुई और उसमें बहुत बड़ा ताला बन्द था.

उस आदमी ने उस ताले, मिट्टी के घड़े सूखी रोटियों को बड़े गौर से देखा और कुछ सोचता हुआ पहिले की तरह उसी ताली के गुच्छे में से एक ताली चुन कर उस कोठरी का भी ताला खोला मगर उस बड़े ताले की ताली उस गुच्छे में न दिखाई दी जो जंजीर में लगा हुआ था और न दूसरे तालों की तरह उस ताले पर कोई नम्बर या निशान लगा हुआ पाया.

कुछ क्षण चिन्ता करने के बाद उस आदमी ने धीरे-से यह कह कर कि 'जरूर इसी में होगा' लालटेन जमीन पर रख दी और ऐयारी का बटुआ खोल कर उसमें से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का अर्क भरा हुआ था. इस अर्क से नकाबपोश ने ताले वाली जंजीर का मध्य भाग अच्छी तरह तर किया और खड़े रह कर इस बात का इन्तजार करने लगा कि जंजीर के दो टुकड़े हों जायें तो कोठरी के अन्दर कदम रक्खे.

आधी घड़ी के अन्दर ही जंजीर का लोहा उस जगह से, जहाँ अर्क लगाया गया था, गल कर बह गया और एक हल्की आवाज देती हुई वह जंजीर बीच में से दो टुकड़े होकर जुदा हो गई. नकाबपोश ने लालटेल उठा ली और धीरे-से दरवाजा खोलकर कोठरी के अन्दर कदम रक्खा.

भीतर से यह कमरा बहुत बड़ा और कई बाद:क्श[1] बने रहने के कारण हवादार था, फिर भी अंधकार तो मानो उसके हिस्से ही पड़ा था.

यद्यपि इस समय वह नकाबपोश लालटेन लिए हुए उस कमरे के अन्दर चला गया है परन्तु उस लालटेन की रोशनी उस बड़े कमरे के अंधकार को किसी तरह भी दूर नहीं कर सकती थी, तथापि नकाबपोश ने इतना जरूर देखा कि एक आदमी जमीन पर बैठा हुआ उसी नकाबपोश अथवा दरवाजे की तरफ देख रहा है क्योंकि नकाबपोश के अन्दर जाने के पहिले ही इस बदनसीब कैदी को दरवाजा खुलने की आहट मिल चुकी थी और उसी समय से वह चैतन्य हो चुका था.

कैदी: (नकाबपोश से) क्या अभी कोई और बदखबर सुनानी बाकी है ? मैं समझता हूँ कि अब तुम्हें ज्यादा दिनों तक मुझे सताने की जरूरत न पड़ेगी क्योंकि इस कैद की बदौलत अब मेरा शरीर चलता नजर नहीं आता. लेकिन आज तुम नकाब पहिरे चोरों की तरह आये हो, इसमें कोई भेद जरूर है.

नकाबपोश : मैं कोई बदखबर सुनाने के लिए नहीं आया बल्कि खुशखबरी सुनाने के लिए आया हूँ, अब यह कैदखाना तुम्हारी जान का ग्राहक नहीं बन सकता, मैं वह नहीं जिसने तुम्हें इस मकान में कैद कर रक्खा है.

---

१. जिस नल की राह धुआँ निकल जाता है अथवा हवा कमरे के अन्दर आती और पुन: बाहर निकल जाती है उसे बाद:क्श कहते हैं.

कैदी : अर्थात् जमानिया राज्य के कर्ता-धर्ता दारोगा साहब !
नकाबपोश : जी हाँ, मैं वह दारोगा नहीं हूँ.
कैदी : तब आप कौन हैं, क्या अपना नाम बता सकते हैं ?
नकाबपोश : जी हाँ, अगर आपका नाम दयाराम है तो मैं अपना नाम जरूर बता सकता हूँ.

कैदी : नि:सन्देह मेरा नाम दयाराम है.
नकाबपोश : मुझे क्योंकर विश्वास हो कि आपका यही नाम है ?
कैदी : आपका नाम मुझे मालूम हो तो मैं कोई परिचय का शब्द ऐसा कह सकता हूँ जिसको सिर्फ मेरे दोस्त ही समझ सकते हैं.

नकाबपोश : ठीक है, अच्छा अगर मेरा नाम इन्द्रदेव हो तो आप कौन शब्द परिचय का दे सकते हैं ?
कैदी : अगर आप वास्तव में इन्द्रदेव होंगे तो परिचय लेकर मैं 'भुवनमोहिनी' की बातें आपको सुना दूँगा.
नकाबपोश : तब तो 'कामेश्वर' का कहना बहुत सच होगा.

यद्यपि वह कैदी बहुत ही कमजोर और दुबला हो रहा था परन्तु नकाबपोश अर्थात् इन्द्रदेव की आखिरी बात सुन कर बैठा न रह सका, उठ खड़ा हुआ और दौड़ कर इन्द्रदेव से लिपट गया तथा इन्द्रदेव ने भी उसे गले लगा लिया और देर तक न छोड़ा, जब दोनों अलग हुए तो यों बातचीत होने लगी-
दयाराम : चाचा[1], तुम तो मुझे एक दम भूल गए, ताज्जुब की बात है कि इतने दिनों तक तुमने मुझे याद क्यों नहीं किया ?

---

१. इन्द्रदेव को दयाराम चाचा के समान मानते थे और चाचा ही कह कर पुकारते थे.

इन्द्रदेव : मेरे प्यारे भतीजे, मेरे दिल से तुम्हारी याद कभी भी भूल नहीं सकती, और इसकी गवाही खुद तुम्हारा दिल दे सकता है, मगर अफसोस, हम लोगों को इसका गुमान नहीं था कि तुम अभी जीते-जागते हो. दुनिया को यही मालूम था कि दयाराम मारे गये और हम लोग दस-पाँच आदमियों को तो यह निश्चय था कि खुद भूतनाथ के हाथ तुम्हारी जान गई है क्योंकि मामला मेरे दोस्त दलीपशाह के सामने ही हुआ था अर्थात् मेरे शागिर्द ने राजसिंह के घर तुम्हारा पता लगाया था और मैंने अपने शागिर्द शम्भी के साथ दलीपशाह को

राजसिंह के घर भेजा था, दलीपशाह वहाँ पहुँचे और राजसिंह को गिरफ्तार करके तथा तुमको उनकी कैद से छुड़ा कर अपने यहाँ ले आए. यह तो अब मालूम हुआ है कि दलीपशाह तुमको नहीं बल्कि राजसिंह के भतीजे को जो बहुत दिनों से बीमार था दयाराम समझ कर उठा लाए थे. यकायक भूतनाथ पता लगाता हुआ वहाँ पहुँच गया जहाँ दलीपशाह राजसिंह को और उसके भतीजे को दयाराम समझ कर ले गए थे. राजसिंह को वहाँ देखकर भूतनाथ को विश्वास हो गया कि दलीपशाह राजसिंह के साथ मिला हुआ है अस्तु भूतनाथ और दलीपशाह में लड़ाई हो गई, भूतनाथ ने राजसिंह को मार डाला और तब उसके भतीजे को भी मार डाला.

तब दलीपशाह ने भूतनाथ से कहा कि 'हम इन्द्रदेव के कहने से दयाराम की खोज में निकले थे और पता लगा कर दयाराम को तथा उसके दुश्मन राजसिंह को यहाँ ले आए थे, तुमने राजसिंह को मार डाला सो अच्छा ही किया मगर अफसोस की बात है कि दयाराम को भी अपने हाथ से स्वर्ग पहुँचा दिया'. दलीपशाह को तो विश्वास ही था कि यह दयाराम है परन्तु भूतनाथ को भी दलीपशाह के कहने से तथा यहाँ की कई अन्य बातों से विश्वास हो गया है कि यही दयाराम हैं और वास्तव में उसने उन्हें ही धोखे में मार डाला है. उसी दिन से हम लोग यही विश्वास करते चले आये कि वास्तव में दयाराम भूतनाथ के हाथ से मारे गये. यद्यपि यह घटना भूतनाथ के लिए दुखदाई हुई परन्तु लोगों में प्रसिद्ध होने न पाई, क्योंकि शम्भू, दलीपशाह और मैं सिर्फ तीन आदमी इस बात को जानते थे सो भूतनाथ ने माफी माँगने तथा आज जी करने पर और यह समझ कर कि वास्तव में भूतनाथ बेकसूर है चुप हो रहे और इस भेद को प्रकट होने न दिया, सिर्फ मन-ही-मन रोते और अफसोस करते रहे.

बातें बहुत लम्बी-चौड़ी हैं मगर यह मकान तथा कैदखाना इस योग्य नहीं है कि हम लोग यहाँ बेफिक्री के साथ बातें करें. असल बात यही है कि हम लोगों को स्वप्न में भी इस बात का गुमान नहीं था कि तुम्हें इस कैदखाने में एक दिन भालू की-सी सूरत में देखेंगे, कैद की सख्ती उठाने और बालों के बढ़ आने से वास्तव में तुम्हारी ऐसी ही सूरत हो रही है.

दया० : आपका कहना बहुत ठीक है, यह कैदखाना निश्चिन्ती से बातें करने लायक नहीं है और मुझे भी उन घटनाओं के सुनाने की जल्दी नहीं है जो मेरे पीछे हुई हैं और न अपनी राम कहानी सुनाने की ही जल्दी है, हाँ इतना जरूर पूछूँगा कि मेरे चाचा रणधीरसिंह तथा मेरी दोनों स्त्रियों का क्या हाल है ?

इन्द्रदेव : वो दोनों कुशल से हैं. तुम्हारी दोनों स्त्रियाँ अभी तक मेरे मकान में मौजूद हैं परन्तु दुनिया में यही मशहूर हैं कि वे दोनों मर गईं, और इस बात के मशहूर करने का कारण भी मैं ही हूँ, क्योंकि तुम्हारी स्त्रियों को भूतनाथ से बदला लेने का शौक पैदा हुआ और उनकी जिद्द मुझे माननी पड़ी. मैंने खयाल किया कि यदि भूतनाथ को यह बात मालूम हो जायगी कि वे दोनों उससे बदला लिया चाहती हैं तो वह जरूर दोनों को मार डालेगा अस्तु पहले ही से उन दोनों को मरा हुआ मशहूर कर देना उचित है.

यह सब कुछ हुआ परन्तु मेरी इच्छानुसार वे दोनों बहुत दिनों तक अपने को छिपा न सकीं, भूतनाथ को उनका जीते रहना मालूम हो गया और वह अभी तक उन दोनों को मारने की फिक्र में लगा हुआ है. इस विषय में भी बड़ी-बड़ी अनूठी घटनाएँ हो गई हैं जिन्हें सुन कर तुम आश्चर्य करोगे परन्तु मौका ठीक नहीं है अब मैं इस कमरे को अच्छी तरह देखने के बाद तुम्हें साथ लेकर बाहर निकलना चाहता हूँ.

दया० : हां, देखिये कैसा भयानक कैदखाना है ! यहाँ रहने वाला चाहे कितना ही चिल्लाये मगर उसकी आवाज किसी के कान में भी नहीं पहुँच सकती. यह देखिये यही दोनों कम्बल मेरी किस्मत में सौंपे गए हैं. यह मिट्टी का घड़ा जो है चौथे या पाँचवे दिन भरा जाता है मगर इधर आठ दिन से इसमें पानी नहीं डाला गया.

शायद अब इसमें एक या दो गिलास से ज्यादा पानी न हो. देखिये ये मेरे भोजन की टोकरी है, जब इस घड़े में पानी डाला जाता है तभी इस टोकरी में पूरियाँ और तरकारी तथा नमक-मिर्च रखने का दिन होता है. महीने में एक दफे नहाने के लिए जल मिलता है, यह कोने में मिट्टी का ढेर लगा दिया गया है बस इसी को बदन में मल कर मैं मानो भस्म-स्नान करता हूँ और यों ही संध्या भी कर लिया करता हूँ. यह इधर पायखाना बना हुआ है, पायखाना काहे को खासा कूँआ है, यह भी इतना गहरा है कि मिट्टी फेंकने से आवाज़ नहीं आती, यह टूटी हुई चारपाई पड़ी है, पहिले मैं इसी पर सोता था मगर जब से यह टूट गयी तब से जमीन को ही मखमली फर्श समझता हूँ.

इन्द्र० : इस मकान की हालत तो को मैं खूब जानता हूँ, सिर्फ तुम्हारा सामान देखना था (आँखों से आँसू पोंछ कर) हा दैव, हम लोगों ने कौन ऐसा पाप किया था जिसका इस तरह फल भोग रहे हैं ? मनुष्य को उसके ही कर्मों का फल देना तेरा काम है या अपनी तरफ से भी दया करके कुछ देना जानता है ! खैर, मैं तुझसे कुछ भी नहीं चाहता परन्तु तेरा भरोसा जरूर रखता हूँ.

दयाराम : चाचा, इसके लिए हम ईश्वर को किसी तरह का दोष नहीं दे सकते, उसका तो यह काम ही है कि लोगों को उनके कर्मों का फल भुगताया करे, उसमें ज्यादे या कम करने से वह बेइन्साफ कहा जायगा. अगर वह कर्म के अतिरिक्त एक के साथ भी कुछ उपकार करेगा तो औरों को भी उपकार करने का हक हो जायगा, क्योंकि उसकी निगाह में भी उसके सभी बच्चे एक समान हैं, इसलिए हम लोगों को एक तौर पर यहीं समझ लेना चाहिए कि हमारा कर्म ही हमारा ईश्वर है और इसीलिए कर्म और उद्योग में लगे रहना ही धर्म है, फल चाहे जो कुछ भी हो.

इतने में ही बाहर की तरफ से कुछ खटके की आवाज आई और दोनों ध्यान लगाकर दरवाजे की तरफ देखने लगे.
दयाराम : शायद दारोगा आ पहुँचा.
इन्द्र० : नहीं, वह तो हमारी कैद में है मगर उसे यह नहीं मालूम कि मुझे इन्द्रदेव ने कैद कर रक्खा है. हाँ, भूतनाथ हो तो ताज्जुब नहीं, क्योंकि उसे भी तुम्हारे जीते रहने और यहाँ कैद भोगने की खबर लग चुकी है.

साथ ही इसके जिस तरह मैं इस शैतान मकान के रग-रग से वाकिफ हूँ उसी तरह या अगर उतना नहीं तो उसी के करीब-करीब भूतनाथ भी जानकार है, मगर इतना जरूर है कि मैं दारोगा के सन्दूक में से तालियों का गुच्छा लेता आया हूँ जिससे सभी दरवाजे खोल सकता हूँ मगर भूतनाथ के पास तालियाँ न होंगी.
दयाराम : ऐसी अवस्था में यहाँ से शीघ्र निकल चलना चाहिए. कहीं ऐसा न हो कि वह बाहर से इस कोठरी का दरवाजा बन्द कर दे.

इन्द्रदेव : ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि दरवाजे में जड़े हुए ताले की ताली मेरे पास है और जंजीर को अभी मैं काटता आया हूँ, तथापि अब चलने में विलंब न करना चाहिए. मैं तुम्हारे ओढ़ने के लिए एक अबा और चेहरे पर लगाने के लिए नकाब लेता आया हूँ.

इतना कहकर इन्द्रदेव ने जेब से एक नकाब निकाल कर दयाराम को दी और अपने ऊपर से स्याह अबा उतारकर उन्हें उढ़ा दिया, क्योंकि वह दो अबा ओढ़े हुए थे. इसके बाद वे दोनों उस कैदखाने के बाहर चले. उसी समय बाहर से पुन: खटके की आवाज आयी मानो किसी ने जोर से धक्का देकर किवाड़ का पल्ला खोला है.

दयाराम को साथ लिए हुए इन्द्रदेव उस कैदखाने के बाहर हुए और जिस राह से दरवाजा खोलते हुए आये थे उसी राह से कोठरियों को पार करते और ताला बन्द करते रवाना हुए क्योंकि जो ताले उन्होंने खोले थे वे अभी तक खुले ही रह गये थे.

इन्द्रदेव और दयाराम ने सिर्फ चार या पाँच कोठरियाँ पार की होंगी कि सामने से एक आदमी स्याह अबा ओढ़े, स्याह नकाब लगाए तथा खंजर और रोशनी हाथ में लिए आता दिखाई दिया. वास्तव में वह भूतनाथ ही था. इन्द्रदेव पर निगाह पड़ते ही भूतनाथ ने कहा, "मैं समझता हूँ कि आप दारोगा साहब ही होंगे क्योंकि सिवाय आपके किसी दूसरे का इस मकान में आना और इन तालों को खोलना बड़ा ही दुर्घट है."

इन्द्रदेव : (कई दफे खाँस कर भारी आवाज से) आओ जी भूतनाथ, कहो अच्छे तो हो ? वास्तव में मैं तुम्हारा दोस्त और खैरखाह दारोगा ही हूँ मगर सर्दी और खाँसी से मेरी तबीयत बहुत परेशान हो रही है. यह बड़े ही ताज्जुब की बात मैं देख रहा हूँ कि तुम मामूल के खिलाफ चोरों की तरह छिपे मेरे गुप्त स्थान में आधी रात के समय घूम रहे हो.

भूत० : बेशक आपके लिए यह ताज्जुब की और मेरी आदत के खयाल से नई बात है परन्तु मेरे पास इसका काफी जवाब है जिसके सुनने से सन्तोष हो जाने के साथ-साथ आपका आश्चर्य भी जाता रहेगा. मगर मैं यह निश्चय कर लेने के बाद जवाब दूँगा कि आप वास्तव में दारोगा साहब ही तो हैं, क्या आप अपने चेहरे पर से नकाब नहीं हटा सकते ?
इन्द्र० : (अपने चेहरे से नकाब हटा कर) हाँ हाँ, परदा किस बात का है, लो मैं चेहरा दिखा देता हूँ.

दारोगा को कैद करने के बाद दारोगा ही की सूरत बन कर इन्द्रदेव इस मकान में आए और दो दिन तक रहे थे. नौकरों को इस बात का गुमान भी नहीं हुआ था और इसलिए उन लोगों ने वैसी ही खिदमत इन्द्रदेव की भी की थी जैसी दारोगा की करते थे इसीलिए इस समय भी वे उचित समझ कर दारोगा ही की सूरत में थे सिर्फ नकाब चेहरे पर डाले हुए थे, अस्तु भूतनाथ का चेहरा देखते ही विश्वास हो गया कि यह वास्तव में दारोगा है मगर दयाराम को कुछ आश्चर्य जरूर हुआ परन्तु परिचय का शब्द इन्द्रदेव के मुँह से सुन चुके थे इसलिए उनका दिल मजबूत बना रहा.

भूत० : (चेहरा देखने के बाद) हाँ, अब मुझे विश्वास हो गया कि आप दारोगा साहब हैं अस्तु अब मैं अपने इस तरह यहाँ आने का सबब बताता हूँ, मगर एक बात और पूछने की है.

इन्द्र० : वह क्या ?
भूत० : (दयाराम की तरफ इशारा करके) यह आप के साथ कौन हैं ?

इन्द्र० : हमारा ही विश्वासी आदमी है, इसे जरूरत समझ कर साथ लेता आया था.

भूत० : अच्छा तो अपने आने का कारण आप से कहता हूँ, सुनिये. मैं आप ही के पास आया था मगर आप से मुलाकात न होने के कारण इस तरह छिप कर अपना काम करने की नियत से आया हूँ, मुझे इस बात का ठीक पता लग चुका है कि मेरे दोस्त दयाराम जी आपके यहाँ कैद हैं.
इन्द्र० : (हँस कर) तुम्हारे मुँह से यह बात सुन कर मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि तुमने खुद अपने हाथ से दयाराम की जान ली है !

भूत० : यह आपको किसने कह दिया ?
इन्द्र० : जमाने की जानकारी ने. भला तुम ही बताओ कि जमना और सरस्वती ने क्यों तुम्हारा पीछा किया हुआ है और तुमने ही उन्हें मारने के लिए कौन-सी कार्रवाई उठा नहीं रक्खी है.

भूत० : चिढ़ कर आपको इन सब बातों के कहने का कोई हक नहीं है. और न मुझे जवाब देने की कोई जरूरत है, जब इस बात का निश्चय हो ही चुका है कि दयाराम आपके कब्जे में है तब मेरे ऊपर उनके मारने का इल्जाम नहीं लग सकता.
इन्द्र० : खैर, तो भी मैं भी सीधी बातों में जवाब देता हूँ कि दयाराम मेरे यहाँ नहीं हैं और न मुझे कुछ खबर है.

भूत० : आपका यह कहना बिलकुल ही झूठ है, मुझे जो कुछ खबर लग चुकी है उसमें किसी तरह भूल नहीं हो सकती.

इन्द्र० : मानने-न मानने का तुम्हें अख्तियार है पर असल बात जो थी वह मैंने कह दी. हाँ अगर तुम्हारा कहना ठीक है और वास्तव में दयाराम जीते हैं तो इस खबर से मैं बहुत ही खुश हूँ, ईश्वर करे कि उनका पता लग जाय और कुशलतापूर्वक वे अपने दोस्तों में हँसते-खेलते दिखाई दें, मगर फिर भी मुझे इस बात का डर बना ही रहेगा कि कहीं वे पुनः तुम्हारे कब्जे में न फँस जायें और इतने दिन की तकलीफ उठा कर अन्त में तुम्हारे ही हाथ से मारे जायें.

भूत० : (चिढ़ कर) आप आवाज कसने से बाज नहीं आते और खामखाह मुझे बेइमान बता कर क्रोधित करते हैं.

इन्द्र० : तुम्हारे बेईमान होने में शक ही क्या है दूसरे की बात तो दूर रहे तुमने खास अपने उन शागिर्दों के साथ जो हर वक्त तुम्हारे लिए अपनी जान हथेली पर लिए रहते थे ऐसा बुरा बर्ताव किया है कि नालायक-से-नालायक और बेईमान आदमी भी नहीं करेगा. वे लोग भी तुम्हें ऐसा मजा चखावेंगे कि जन्म-भर याद करोगे. मेरे पास वे लोग मदद माँगने के लिए आए थे मगर तुम्हारे मुलाहिजे से अभी तक उन्हें टालता रहा हूँ।

यद्यपि नकली दारोगा यानी इन्द्रदेव की बातों से भूतनाथ को बेहिसाब क्रोध चढ़ आया था परन्तु अपने शागिर्दों की खबर सुन कर और बिगड़ने का मौका न जान कर वह अपने गुस्से को पी गया और नर्मी के साथ बोला-

भूत० : नहीं-नहीं मेरे दोस्त, आपने जो कुछ सुना है या मेरे शागिर्दों ने जो कुछ खबर आपको दी वह बिल्कुल गलत है. वास्तव में वे सब बड़े ही बेईमान और कमीने हैं. आपने बहुत ही अच्छा किया कि उनकी मदद नहीं की और मुफ्त में मुझसे दुश्मनी नहीं खरीदी. मुझ पर आपका बड़ा ही अहसान होगा यदि आप मुझे उन नालायकों का पता देंगे.

इन्द्र० : तुम्हारे कहने के पहिले ही मैं यह सोच रहा था कि मामले की तुम्हें खबर कर दूँ और इसलिए उनसे टालमटोल करता चला जा रहा हूँ मगर इधर बहुत दिनों से तुमसे मुलाकात ही नहीं हुई और न तुम्हारा कोई पता ही चला.
भूत० : खैर इस समय तो मैं मौजूद हूँ.

इन्द्र० : ठीक है पर इस समय मैं अपने काम में लगा हुआ हूँ और विशेष बातचीत नहीं कर सकता. हां अगर कल तुम मुझसे मिलो तो बेशक मैं उनका सब हाल तुमसे कहूंगा मगर मुझे इस बात का बहुत ही दुःख है कि तुम मेरे मकान में इस तरह घुस कर मानो मेरी बेइज्जती करते हो.

भूत० : इसके लिए मैं आपसे माफी माँगता हूँ, मैं तो केवल आपसे मिलने की नीयत करके यहाँ आया था.
इन्द्र० : खैर जो कुछ हुआ सो हुआ, अब बाहर चलो, मैं कल तुमसे बातें करूँगा.

भूतनाथ ने बहुत कुछ पेचोताब खाया मगर अपने बिगड़ैल शागिर्दों का ख्याल करके चुप ही रहा, क्योंकि उसे अपने शागिर्दों का बड़ा ही डर लगा हुआ था और वह समझता था कि यदि वे लोग पकड़े नहीं जायेंगे तो मेरी जान किसी तरह बचने न पायेगी, इससे उचित यही है कि दारोगा साहब से पहिले उन शागिर्दों का पता लगा लिया जाय और तब दयाराम के बारे में बातचीत की जाय. इन्हीं सब बातों को सोच वह इस समय तरह दे गया और अपने कसूर की माफी माँग कर इन्द्रदेव के साथ-ही-साथ इस मकान से बाहर निकला.

भूतनाथ ने इन्द्रदेव से विदा माँग कर जंगल और मैदान का रास्ता लिया मगर दयाराम को साथ लिये इन्द्रदेव पहिले उस कमरे में गए जहाँ दारोगा साहब रात के समय रहा करते थे. वहाँ उन्होंने लोहे की एक आलमारी खोली और उसमें वह तालियों का झब्जा जिससे ऊपर वाले ताले खोले थे रख कर दयाराम को साथ लिए हुए मकान के बाहर चले गए. पहरे वालों ने मामूली ढंग पर उन्हें दारोगा समझ कर रोक-टोक न की और चुपचाप अपने काम पर जहाँ-के-तहाँ मुस्तैद खड़े रहे.

कदम बढ़ाते हुए तेजी के साथ दोनों आदमी शहर के बाहर निकल गए और तब एक तालाब के पास पहुँचे जहाँ इन्द्रदेव की आज्ञानुसार उनके आदमी दो घोड़े और एक रथ लिए तैयार थे. इन्द्रदेव ने दयाराम से पूछा, "कहिए आप इस घोड़े पर सवार हो सकते हैं या नहीं ?"

दया० : आपकी आज्ञा हो तो मैं सवार हो जाऊँ परन्तु कमजोर बहुत हो रहा हूँ शायद....
इन्द्र० : तो तकलीफ करने की कोई जरूरत नहीं, रथ तैयार है ही, इस पर हम लोग बाखूबी सफर कर सकेंगे, हाँ यदि आप कुछ भोजन करना चाहें तो इसी रथ पर सामग्री तैयार है और तालाब का जल भी स्वच्छ है.
दया० : अब तो मैं आपकी कृपा से स्वतंत्र हो गया हूँ, ऐसी अवस्था में बिना स्नान और सन्ध्योपासन से निवृत्त हुए तथा ईश्वर को धन्यवाद दिये मैं भोजन नहीं कर सकता, यदि आपकी आज्ञा हो तो यहाँ इन कामों से निवृत्त हो सकता हूँ परन्तु कपड़ों का अभाव.....

इन्द्र० : (बात काट कर) नहीं नहीं, कपड़ों का अभाव क्यों होगा, इस समय का मुझे ध्यान था अस्तु मेरी आज्ञानुसार कपड़े भी रथ में जरूर आये होंगे.

इतना कहकर इन्द्रदेव ने कपड़ों की बाबत अपने आदमी से दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि भोजन की सामग्री के साथ-ही-साथ कपड़े भी मामूली तौर पर आये हैं. रात नाममात्र को बाकी थी और पूरब तरफ आसमान पर सफेदी झलक मारने लग गयी थी अस्तु इन्द्रदेव और दयाराम दोनों ही नहाने-धोने की फिक्र में लगे और घण्टेभर के अंदर ही सब कामों से छुट्टी पा रथ पर सवार हो पश्चिम की तरफ रवाना हो गए.

[८]

दिन को दोपहर के समय हम इन्द्रदेव को एक घने जंगल में बहते हुए नाले के किनारे गुंजान पेड़ के नीचे बैठे देखते हैं. पास में उनका एक शागिर्द खड़ा है और सामने जमीन पर बेहोश दारोगा लिटाया हुआ है. नाले के जल से कपड़ा गीला करके इन्द्रदेव दारोगा के सर पर बार-बार रखते और बीच-बीच में लखलखा भी सुँघाते जाते हैं, कुछ ही देर में दारोगा ने आँखें खोलीं और घबरा कर अपने चारों तरफ देखने के बाद इन्द्रदेव पर ताज्जुब के साथ निगाह डाली. जब उसे हवास अच्छी तरह दुरुस्त हो गये तब उठ बैठा और इन्द्रदेव से बोला, "यह क्या मामला है, हम और तुम यहाँ पुन: क्योंकर इकट्ठे हुए ?"

इन्द्रदेव : (अपने शागिर्द की तरफ इशारा करके) मेरे इस शागिर्द ने आज हम दोनों ही को दुश्मन के पंजे से छुड़ाया. कम्बख्त दुश्मन ने हम दोनों को कैद तो कर ही लिया था परन्तु एक साथ रक्खा भी नहीं, अगर हम लोग एक साथ रहते तो कुछ तो दिल बहलता. मेरे इस शागिर्द ने हकीकत में बड़ी होशियारी और चालाकी का काम किया कि इतनी जल्द हम लोगों का पता लगा लिया और छुड़ा भी लिया.

दारोगा : ईश्वर ही ने हम लोगों की जान बचाई, नहीं तो मैं एकदम ना उम्मीद हो गया था, जान बचने की भी कुछ आशा न थी. खैर वह था कौन जिसने हम लोगों के साथ ऐसा बुरा बर्ताव किया ?
इन्द्र०: इस बात का तो निश्चय अभी तक नहीं हुआ है मगर दो-चार दिन में छिपा न रहेगा.

दारोगा : उसका नाम जरूर मालूम होना चाहिए जिसमें आइन्दा उससे होशियार रहा जाय. मैं उस कम्बख्त से जरूर बदला लूँगा. तुम्हारे साथ रहने के कारण मैं इस तरह धोखे में आ गया नहीं तो एकाएक धोखा खाने वाला नहीं हूँ.

इन्द्र० : उसका पता लगाने के लिए पूरा उद्योग किया जायगा. आप खूब जानते हैं कि मैं कभी भी किसी के साथ बुराई नहीं करता तिस पर भी न-मालूम क्यों मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया. हाँ, अपने लिए बहुत दुश्मन जरूर बना रक्खे हैं और जहाँ तक समझता हूँ आप ही के संबंध में मुझे भी यह दुःख भोगना पड़ा बीमारी की हालत में ईश्वर ही ने मेरी रक्षा की नहीं तो कैद की अवस्था में मेरी बीमारी का बढ़ जाना कोई आश्चर्य की बात न थी सो इसके बदले मैं बराबर तन्दुरुस्त ही होता गया, शायद इसका कारण यह हो कि मैंने तीन दिन तक सिवाय जल पीने के कुछ भी भोजन नहीं किया क्योंकि जो कुछ भोजन की सामग्री मिली वह मुझ बीमार के खाने योग्य न थी.

मैं आपको फिर भी यही कहता हूँ कि आप अपनी चालचलन को बदल लीजिए. इस छोटी सी जिन्दगी में पापों का ढेर लगाते जाना और दिनोंदिन दुश्मनों की गिनती बढ़ाते रहना आप ऐसे गृहस्थी-शून्य पुरुष को अच्छा नहीं लगता. कौन आपके आगे बाल-बच्चों का बाजार लगा हुआ है कि जिनके लिए आप इतना अर्थप्रिय हो रहे हैं- ताज्जुब नहीं कि इसके लिए आपको एक दिन हद्द दर्जे की तकलीफ उठानी पड़े.

दारोगा : तुम हमेशा ही मुझको इस तरह की नसीहतें किया करते हो मगर मैं तो अपने खयाल से कोई भी बुरा काम नहीं करता हूँ, हाँ मेरे साथ जो कोई दुश्मनी का बर्ताव करता है उसको मैं जवाब देने के लिए जरूर तैयार रहता हूँ.
इन्द्र० : खैर मैं आपसे बहस करना पसन्द नहीं करता, जो कुछ आप करते हैं वह मुझसे छिपा नहीं है.

दारोगा : अच्छा जो होगा देखा जायगा, यह समय इस तरह की बातचीत का नहीं है, आप बताइये कि हम लोगों का पता आपके शागिर्द को क्योंकर लगा और उसने किस मकान से हम लोगों को छुड़ाया ?

इन्द्र० : पता क्योंकर लगा इसकी कथा तो बहुत लम्बी-चौड़ी है, ऐयार लोग जिस तरह पता लगाते हैं वह ढंग आपसे छिपा हुआ भी नहीं, हाँ इतना कहना जरूरी है कि जमानिया में जो 'हरि मन्दिर' के समीप पुरानी टूटी-फूटी इमारत है उसी के एक तहखाने के पास-ही-पास हम लोग कैद किए गये.

पुरानी इमारत का नाम सुनकर दारोगा थोड़ी देर के लिए गौर में पड़ गया और बहुत कुछ विचारने के बाद इन्द्रदेव से बोला-

दारोगा : हाँ, मैं कुछ-कुछ समझ गया, आशा है कि अब बहुत जल्द अपने दुश्मन का पता लूँगा, अब कुछ सवारी का बन्दोबस्त करना चाहिए जिसमें हम पहुँच सकें.

इन्द्र० : आपके और मेरे लिए यहाँ पास ही में कसे-कसाए दो घोड़े तैयार हैं.

इतना कह कर इन्द्रदेव ने अपने शागिर्द की तरफ देखा और कुछ इशारा किया. शागिर्द चला गया और कुछ ही देर में दो घोड़े जिनके साथ साइस भी थे ले आया और मामूली बातचीत करने के बाद एक घोड़े पर दारोगा सवार हुआ और साईस को साथ लिए हुए हुए जमानिया की तरफ रवाना हुआ, उसके बाद इन्द्रदेव भी दूसरे घोड़े पर सवार हुए और अपने शागिर्द से बातचीत करते धीरे-धीरे कैलाश-भवन की तरफ चल पड़े.

[९]

रात पहर-भर से ज्यादे जा चुकी है. दारोगा के मकान में हर तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, सिवाय पहरे वाले सिपाहियों और दो-तीन खिदमतगारों के और कोई जागता हुआ दिखाई नहीं देता. दारोगा अपने एकान्त कमरे में बैठा हुआ कुछ लिख रहा है. है.

लिखते-ही-लिखते वह यकायक किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो जाता है और देर तक उसकी यही हालत बनी रहती है. कभी-कभी वह घबड़ा कर उठ बैठता और कमरे में इधर-उधर टहलने लगता है. कभी अपने कलमदान में से बाहर की आई हुई चिट्ठियाँ निकाल कर देखता और फिर उसी तरह रख कर पुन: लिखने लग जाता है. उसका चेहरा बड़ा ही उदास और चिन्तित जान पड़ता है. उसके सामने संगमरमर की एक चौकी पर मोमी शमादान जल रहा है और छत से लटकती हुई चार-पाँच बिल्लौरी हण्डियों में भी मोमबत्ती की रोशनी हो रही है.

इसी तरह कभी लिखते, कभी पढ़ते और टहलते हुए उसने दो घंटे का समय बिता दिया और अन्त में पुन: अपनी गद्दी पर आकर गाव तकिये के सहारे लेट गया, उसी समय एक खिदमतगार ने हाजिर होकर अर्ज किया है कि गदाधरसिंह आये हैं.

दारोगा सम्हल कर उठ बैठा और बोला, 'भेज दो.' कुछ क्षण में भूतनाथ आ मौजूद हुआ. दारोगा ने बड़ी खातिरदारी से उसे अपने पास बैठाया और कुशल मंगल पूछा. दो-चार मामूली प्रश्न और उत्तर के बाद इस तरह बातचीत होने लगी-

दारोगा : कहिये इधर कोई नई घटना भी देखने-सुनने में आई है या नहीं ?
भूत० :हमारे और आपके लिए नई घटनाओं की कमी नहीं है. जब से मैंने सुना है कि दयाराम जी आपकी कैद में तब से मुझे क्षण-क्षण में नई घटना का अनुमान होता है. मैं नहीं कह सकता कि मेरे और आपके प्रारब्ध में क्या लिखा हुआ है.

दारोगा : (आश्चर्य का ढंग दिखाता हुआ) दयाराम का मेरे कैद में होना कैसा ?
भूत० :हाँ, इस बात से रात को भी आपने इनकार किया था मगर साथ ही इसके आपने यह भी वादा किया था कि अगर तुम कल मिलोगे तो तुम्हारे बिगड़ैल शागिर्दों का तुम्हें पता बता देंगे.

दारोगा : (सच्चे आश्चर्य से) यह मैंने तुमसे वादा किया था !
भूत० : मैं आज ही की बीती हुई रात का जिक्र कर रहा हूँ, क्या आप नशे में तो नहीं थे या इस समय तो नशे में नहीं हैं.

दारोगा : मैं तो नशे में नहीं हूँ मगर तुम्हारे बारे में ऐसा जरूर शक कर सकता हूँ. कई दिन के बाद आज शाम को तो मैं घर आया हूँ, यहाँ के सभी आदमी, इस बात को जानते हैं बल्कि हमारे अड़ोस-पड़ोस वालों से भी यह बात छिपी हुई नहीं होगी और तुम कहते हो कि कल रात को तुमसे मुलाकात हुई थी ?

भूत० : (कुछ गौर और चिन्ता के बाद) यह अजीब है, आपका कहना मैं झूठ नहीं मान सकता मगर यह भी आप सच समझिए कि कल मैं आपके यहाँ आया था आपसे मुलाकात भी हुई थी, अगर वास्तव में वह आप नहीं थे तो जरूर आपकी सूरत में कोई आपका दुश्मन होगा.

दारोगा : मुझे भी शक होता है कि मेरे बाद कोई मेरा दुश्मन इस मकान में जरूर आया था क्योंकि मैं अपने कई तरह के सामानों में रद्दोबदल देखता हूँ. तुम्हारी जुबानी खुलासा हाल सुनूँगा तो शायद कुछ पता लगेगा.

भूत० : सच्ची बात तो यह है कि कल मैं आपसे लड़ने का उलाहना देने के लिए यहाँ आया था क्योंकि मुझे इस बात की पक्की खबर लगी है कि दयाराम आपके यहाँ कैद है, परन्तु आपसे मुलाकात न होने के कारण मैं वापस चला गया और रात को तलाशी लेने की नीयत से चोरों की तरह आपके मकान में पहुँचकर दयाराम की तलाश करने लगा, मैं विशेष ढूंढने भी न पाया था कि दो नकाबपोशों से आपके मकान के ऊपरी हिस्से में मुलाकात हुई.

कई तरह की बातचीत होने के बाद एक ने जब अपने चेहरे पर से नकाब हटाई तब आपकी सूरत दिखाई दी. केवल इतना ही नहीं उसने कई ढंग से अपने को दारोगा साबित करके मुझसे तरह-तरह की बातचीत की और आज मुझे बुलाया.

इतना कह भूतनाथ ने पूरा-पूरा हाल अपने रात में यहाँ आने का बयान किया जिसे सुन कर दारोगा बड़ी चिन्ता में पड़ गया और भय, चिन्ता तथा घबराहट के साथ भूतनाथ का मुँह देखने लगा. भूतनाथ ने पुन: दारोगा से पूछा, "क्या ये सब बातें आपसे कुछ भी संबंध नहीं रखतीं !"

दारोगा : कुछ नहीं. मैं तो यहाँ था ही नहीं, बातें क्या खाक होतीं मगर यह घटना बहुत ही बेढब हुई ! मुझे यहाँ आये अभी ज्यादे देर नहीं हुई तथापि जब मैं यहाँ आया तो सोचता था कि कई दिनों के बाद मुझे देख कर मेरे नौकर-चाकर बहुत प्रसन्न होंगे और मुझसे मेरे गायब होने का सबब पूछेंगे मगर सो कुछ भी नहीं, इन लोगों ने इतना भी न पूछा कि कहाँ गये थे या आपका मिजाज कैसा है. मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ और मैं उनसे तरह-तरह की बातें पूछने लगा जिससे मालूम हो गया कि मेरी कई दिन के गैरहाजिरी में यहाँ क्या-क्या हुआ तथा कौन-कौन आदमी मुझे ढूँढ़ने के लिए आये थे, परन्तु मेरी बातों का जो कुछ जवाब मेरे आदमियों ने दिया उससे यही जाहिर होता था कि मानों एक दिन के लिए भी घर से बाहर नहीं गया था.

इन सब बातों से साबित होता है कि मुझे कैद कर लेने के बाद मेरा दुश्मन मेरी सूरत बना कर यहाँ आया था और कई दिन तक रहा भी था. मैंने अपने मुँह से अभी तक अपने आदमियों को यह नहीं कहा है कि वास्तव में मैं यहाँ नहीं था, मुझे किसी ने कैद किया था, या मेरा दुश्मन मेरी सूरत बन कर यहाँ आया था, हाँ जब से यहाँ आया हूँ अपने घर की अवस्था पर जरूर ध्यान दे रहा हूँ, दयाराम तो मेरे यहाँ है नहीं, यह खबर तुमने बिल्कुल ही झूठी सुनी है, हाँ एक आदमी मेरे यहाँ कैद जरूर था जिसे वह छुड़ा कर ले गया जो मेरी सूरत बन कर आया था. इसके सिवाय और किसी तरह का मेरा नुकसान नहीं हुआ है.

भूत० :(आश्चर्य से) आपको किसी ने कैद कर लिया था !
दारोगा : हाँ गदाधरसिंह, भला मैं तुमसे क्यों छिपाऊँ, तुम तो मेरे मेहरबान ठहरे और तुम्हारा मुझे बहुत कुछ भरोसा भी रहता है. किसी दुष्ट ने मुझे और इन्द्रदेव दोनों को कैद कर लिया था. तीन दिन के बाद इन्द्रदेव के शागिर्द ने हम लोगों को छुड़ाया. अब ख्याल होता है कि शायद इसीलिए उसने हमें कैद कर लिया था कि मेरे यहाँ से उस कैदी को ले जाय.
भूत० :(आश्चर्य से) क्या आपको और इन्द्रदेव को दोनों को ही कैद कर ले गया था ? यह तो बड़े आश्चर्य की बात है ! इन्द्रदेव को अजातशत्रु कहलाते हैं ! उनका कोई दुश्मन ही नहीं कहा जाता, फिर उनके साथ यह कैसा बर्ताव ? इसके अतिरिक्त एक बात और है, आपके यहाँ से तो उसे उस कैदी को छुड़ा ले जाना था मगर इन्द्रदेव से क्या मतलब था ?

दारोगा : शायद उनसे भी कुछ मतलब हो, जब उससे दरियाफ्त किया जाय तो मालूम हो. या शायद इसका सबब हो कि हम और वे उस समय एक साथ ही सफर कर रहे थे जब गिरफ्तार हुए, ऐसी अवस्था में वे उन्हें छोड़ मेरे अकेले साथ क्योंकर दगा कर सकता था ?
भूत० : हाँ ऐसा हो सकता है, मगर....
दारोगा : मगर क्या ?

भूत० : (अपने दिल का असली विचार छिपा कर) कुछ नहीं, ख्याल यही है कि दयाराम जरूर आपके यहाँ कैद हैं या वह दयाराम ही थे जिन्हें आपका दुश्मन यहाँ से छुड़ा कर ले गया है.

दारोगा : नहीं-नहीं भूतनाथ, ऐसा खयाल मत करो, अगर तुम मेरे उस दुश्मन का पता लगाओगे जिसने हमें कैद किया था तो असल हाल तुमको खुद मालूम हो जाएगा.

भूत० : हाँ है तो ऐसी ही बात. आपके दुश्मन का जिसने आपको कैद किया था पता लगाये बिना ठीक-ठीक हाल मालूम न होगा पर यद्यपि मैं बहुत जल्द उसका पता लगा सकता हूँ मगर मुझे क्या गरज पड़ी है कि व्यर्थ इस मामले में हाथ डाल कर परेशान होऊँ. काम आपका निकलेगा, मेहनत मुझे करनी पड़ेगी.

दारोगा : क्या तुम मेरे दोस्त नहीं हो ? क्या मैं तुम्हारा भरोसा नहीं कर सकता, या समय पड़ने पर मैं मदद करने से भाग सकता हूँ ? न-मालूम तुम्हारा दिल ईश्वर ने कैसे बनाया है !

भूत० : (मुस्कुराता हुआ) आप जो कुछ कहें और समझें ठीक है, मगर असल बात तो यही है कि आप मुझसे सफाई का व्यवहार नहीं रखते. मैं कई दफे कई मामलों में देख चुका हूँ कि आप बिना कुछ गिरह रक्खे मुझसे भेद की बात नहीं करते !

दारोगा : यह तुम्हारा भ्रम है. तुम्हारी आदत है कि बिना कुछ समझे-बूझे या बिना असल मामले की जाँच किये शक कर बैठते हो और खफा हो जाते हो, मैं तुम्हें भाई की तरह मानता हूँ और वक्त पर मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता हूँ मगर फिर भी.....
भूत० : आपके इस कहने का मैं शुक्रिया अदा करता हूँ मगर लाचार हूँ कि बिना कुछ मामला पड़े.....

दारोगा : (बात काट कर) मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि तुम्हारा मिज़ाज शक्की है, जो कुछ इल्जाम तुम मेरे ऊपर लगाते हो क्या उसका कोई सबूत भी तुम्हारे पास है ?

भूत० :हाँ है.
दारोगा : कहिये जरा मैं भी सुनूँ !

भूत० : पिछली बातों को जाने दीजिये, एक बात तो इसी समय सामने मौजूद है कि आप उस कैदी का ठीक-ठीक हाल नहीं बताते जो आपके यहाँ से निकाल लिया गया है और दयाराम के भेद को छिपाते हैं यद्यपि मैं इस उलझन को अच्छी तरह सुलझा चुका हूँ और रत्ती-रत्ती भेद मय सबूत के पा चुका हूँ.
दारोगा : तो क्या किसी ने तुम्हें यह निश्चय दिया है कि दयाराम को मैंने कैद कर रक्खा है ?

भूत० : बेशक ऐसा ही है, इस बात का इल्जाम मैं आपको नहीं, देता कि दयाराम को रणधीरसिंहजी के यहाँ से आप गिरफ्तार कर लाये थे. नहीं वहाँ से तो उन्हें राजसिंह ले गया था, हाँ राजसिंह के यहाँ से आप चुरा लाये हैं और अब मेरा विश्वास यह है कि कल जो कैदी यहाँ से निकल गया है वह दयाराम ही थे. यह बात स्वयम् राजसिंह के लड़के ध्यानसिंह ने मुझे लिखी है और उसके लिखने पर मैंने जब तहकीकात की तब अच्छी तरह से निश्चय हो गया कि ध्यानसिंह का लिखना ठीक है. अभी परसों ही की बात है कि मैं स्वयं ध्यानसिंह से मिलने गया था. उसका कथन है कि तुम खुद राजसिंह से दयाराम को माँग कर ले आये थे और इसके बदले में उसने तुमसे मनमानी रकम ली थी.

दारोगा : ये सभी बातें बनावटी और झूठी हैं, अगर सचमुच ऐसा ही था तो ध्यानसिंह ने तभी तुमसे क्यों नहीं कहा ?
भूत० : इसके लिए तो उसने आपसे रकम ही वसूल की थी अस्तु इस भेद को छिपाना उसके लिए जरूरी था, साथ ही इसके वह मुझे दुश्मनी की निगाह से देखता था मगर अब जबकि उसे मुझसे खास जरूरत आ पड़ी है तब सब कुछ कहने और सब भेद खोलने के लिए तैयार हुआ है.

दारोगा : कुछ नहीं, यह सब उसकी बदमाशी है, इन सब बातों का तुम कुछ खयाल मत करो, तुम जरा खयाल करो और सोचो तो सही कि जमना और सरस्वती के बारे में मैंने तुम्हारी कैसी मदद की थी. अगर मुझे तुमसे दुश्मनी ही करनी होती तो ऐसे गूढ़ मूल मामले में मदद करने की मुझे क्या जरूरत थी ? हाँ तुमने बेशक अपने वादे का कुछ भी खयाल नहीं किया और भैयाराजा के विषय में मदद करने की प्रतिज्ञा करके भी कुछ न किया. खैर अब तुम्हें उचित है कि मेरे दुश्मन का पता लगाओ और निश्चय करो कि मेरे कैदी को यहाँ से कौन निकाल कर ले गया है तब तुम्हें आप ही मालूम हो जायगा कि मैं सच्चा हूँ या झूठा.

भूत० : बेशक मैं आपकी खातिर आपके दुश्मन का पता लगाऊँगा और अगर आप सच्चे निकलेंगे तो हमेशा आपका मददगार बना रहूँगा. भैयाराजा के विषय में मैं आपके लिए अभी तक कोशिश कर रहा हूँ. यद्यपि इस काम में मुझे हद्द-दर्जे की तकलीफ उठानी पड़ी जोकि मैं अभी इसी समय आपसे बयान करने वाला हूँ परन्तु क्या करूँ मेरी आर्थिक अवस्था बहुत ही खराब हो रही है, रुपये की मुझे सख्त जरूरत आ पड़ी है, मेरे कई शागिर्द मुझसे रंज होकर भाग गये हैं और मेरी तमाम दौलत चुरा कर ले गये हैं, मैं इस समय पूरा कंगाल हो रहा हूँ और रुपये के बिना मेरे सभी कामों में बड़ा हर्ज हो रहा है.

दारोगा : मेरे लिये तुम अभी तक भैयाराजा के विषय में कोशिश कर रहे हो यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई. मैं इधर बहुत दिनों से तुम्हारा हाल जानने के लिए बेताब हो रहा हूँ, क्योंकि बहुत दिनों से मुलाकात न होने के कारण तरह-तरह की चिन्ता लगी रहती है. मैं जरूर सुनूँगा कि इस बीच में तुम पर क्या बीती और क्या-क्या हाल हुआ.

इसके बाद दारोगा और भूतनाथ में देर तक बातें होती रहीं जिनके लिखने की यहाँ कोई जरूरत नहीं जान पड़ती. इसके अतिरिक्त दारोगा ने रुपये-पैसे से भी भूतनाथ की पूरी मदद की.

[१०]

दयाराम को कैद से छुड़ाने के बाद जब इन्द्रदेव अपने कैलाश-भवन में पहुँचे तब उस आधी रात होने के कारण उनके मकान में सन्नाटा छाया हुआ था मगर एक कमरे में जिसमें जमना और सरस्वती रहती थीं सन्नाटा नहीं था, उसमें जमना सरस्वती, इन्दुमति, प्रभाकरसिंह और भैयाराजा बैठे जमानिया की अवस्था और अपने भाग्य पर तरह-तरह की बातें कर रहे थे तथा दयाराम के मामले में चिन्ता के साथ सोचते हुए इन्द्रदेव का इन्तजार कर रहे थे. सबके पहिले इन्द्रदेव अपने कमरे में गये और वहाँ अपने लोहे के सन्दूक में कुछ कागज वगैरह रखने के बाद वहाँ गये जहाँ उनकी स्त्री सूर्य रहा करती थी. उस समय वह घोर निद्रा में थी परन्तु उतर कर उसने अपने पति को प्रणाम करके चारपाई पर बैठ जाने का इशारा किया.

इन्द्रदेव चारपाई पर बैठ गए और उन्होंने अपने सफर तथा दयाराम के छुड़ाने का हाल बयान करके कहा कि अब उनका इरादा क्या है तथा सूर्य को भी अब क्या करना चाहिए. इसके बाद आधे घण्टे तक उन दोनों में भेद की बातें होती रहीं, अन्त में सूर्य के साथ लिए हुए वे उस कमरे में गये जिसमें जमना, सरस्वती, इन्दुमति, प्रभाकरसिंह और भैयाराजा बैठे हुए इन्द्रदेव का इन्तजार कर रहे थे.

इन्द्रदेव को देख कर सब उठ खड़े हुए और यथोचित दण्ड-प्रणाम तथा साहब सलामत के बाद कुशल-मंगल पूछ कर सब कोई बैठ गए और बातचीत करने लगे.

इन्द्रदेव को अकेले देख कर जमना और सरस्वती वगैरह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्हें इसका पूरा-पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव जरूर दयाराम को साथ लेकर घर में आवेंगे परन्तु उन्होंने दयाराम के बदले में सूर्य को उनके साथ देखा.

निराश हो जाने के कारण जमना और सरस्वती के चेहरे पर उदासी छा गई जिसे देखते ही इन्द्रदेव उसका कारण समझ गए और उन्होंने जमना और सरस्वती की तरफ देख कर कहा, "मैं तुम दोनों को इस बात की मुबारक बाद देता हूँ कि मेरा यह सफर ईश्वर की कृपा से व्यर्थ नहीं गया और जिस काम के लिए मैं गया था पूरा कर आया."

इन्द्रदेव के मुँह से यह बात सुनकर दोनों प्रसन्न तो हुईं मगर उनकी चिन्ता दूर न हुई. जमना ने कुछ धीमी आवाज में इन्द्रदेव को जवाब दिया, "परन्तु मैं तो आपको यहाँ अकेला ही देखती हूँ !"
इन्द्रदेव : हाँ अकेला देखती हो मगर कुछ चिन्ता की बात नहीं.

प्रभाकर : आपके कथन से तो यही जान पड़ता है कि आपने दयाराम जी को कैद से छुड़ा लिया, परन्तु यहाँ आपको अकेले आए हुए देख कर हम लोगों की चिन्ता अथवा उत्कंठा यदि बढ़ जाय तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है.

इन्द्रदेव : बेशक ऐसा हो सकता है परन्तु मैं साफ-साफ कहे देता हूँ कि मैं दयाराम को एक दुष्ट की कैद से छुड़ा लाया. यहाँ अपने साथ न लाने का भी एक कारण है. मैं यह उचित समझता हूँ कि तुम लोग खुद चल कर उनसे मुलाकात कर लो, ऐसा करने से हम लोगों को सच्चा आनन्द आवेगा.
जमना० :तो आप उन्हें छोड़ कहाँ आये हैं ?

इन्द्र० : अपने असली और पुराने मकान में जो मेरा और मेरे बुजुर्गों का वास्तविक स्थान है.
भैयाराजा : अगर आप उन्हें यहाँ ले आते तो क्या हर्ज था ?
इन्द्र० : दुश्मनों के ख्याल से मैंने ऐसा नहीं किया, कम्बख्त दारोगा कोई मामूली आदमी नहीं है और भूतनाथ को भी इस मामले की खबर लग चुकी है तथा वह भी अपना जाल पूरी तरह फैला चुका है. नहीं कह सकते कि दयाराम के विषय में उसकी नीयत क्या है, केवल इतना ही नहीं, मेरे इस मकान में दारोगा या भूतनाथ का आ पहुँचना कोई आश्चर्य की बात नहीं है.

परन्तु दयाराम की जिद्द यही है कि मैं अभी लोगों में अपने को प्रकट नहीं करूँगा बल्कि अभी किसी को इस बात का पता भी न लगने दूँगा कि वास्तव में दयाराम जीते हैं अथवा दारोगा की कैद से उन्हें रिहाई मिल गई.
प्रभाकर : ऐसा क्यों ?

इन्द्रदेव : इसका सबब उनसे मुलाकात होने पर आप लोगों को मालूम हो जायगा. पहिले आप लोग उनसे मुलाकात तो कीजिए और देखिए तो सही कि इस कैद की बदौलत उसकी सूरत क्या हो रही है. वह तिलिस्मी स्थान बहुत सुरक्षित है, वहाँ कोई हम लोगों का दुश्मन पहुँच नहीं सकता और न उन्हें वहाँ किसी तरह की तकलीफ ही हो सकती है. इसके अतिरिक्त तुम लोगों ने भी अभी तक हमारा वह स्थान देखा नहीं है, केवल सुनते ही आते हो कि इन्द्रदेव किसी तिलिस्म का दारोगा है अब सब कोई चलो और देखो कि कैसा सुन्दर और सुहावना स्थान है, और वहाँ चलने के लिए आज से बढ़ कर अच्छा मौका भी कब मिलेगा.

सरस्वती : आप वहाँ कब चलेंगे ?
इन्द्रदेव : अभी इसी समय मैं चलने के लिए तैयार हूँ बल्कि रथ और घोड़ों को तैयार करने का हुक्म भी दे चुका हूँ. अब हम लोगों को जो कुछ बातें करना है वहाँ पहुँच कर ही करेंगे.
प्रभाकर : बहुत अच्छी बात है.

इन्द्रदेव के तिलिस्मी स्थान को देखने की इन सभों को पहिले ही से इच्छा थी परन्तु लिहाज से कभी कुछ कह नहीं सके थे. आज वह जगह देखने में आवेगी और दयाराम से भी मुलाकात होगी यह जान कर सभी कोई प्रसन्न हुए और वहाँ जाने की तैयारी करने लगे. उसी समय एक लौंडी ने आकर इत्तिला की कि सवारी हाजिर है.

पहर-भर रात बाकी होगी जब जमना, सरस्वती, इन्दुमति और सूर्य रथ पर और इन्द्रदेव, प्रभाकरसिंह तथा भैयाराजा घोड़ों पर सवार तिलिस्म की तरफ रवाना हुए.

इन्द्रदेव का तिलिस्मी मकान कैसा था और वहाँ पहुँचने का रास्ता किस ढंग का था इसका हाल चन्द्रकांता सन्तति में बहुत खुलासे तौर पर लिखा गया है, आशा है कि हमारे प्रेमी पाठक उसे भूले न होंगे.

इन लोगों का सफर यद्यपि बहुत तेजी के साथ हुआ तथापि जब ये लोग उस पहाड़ी के नीचे पहुँचे जिसके ऊपर कुछ और रास्ता तय करने के बाद उस तिलिस्मी घाटी का मुहाना मिलता था तो दिन दो पहर से कुछ ज्यादे ढल चुका था. ये लोग सवारी से नीचे उतरे और पहाड़ पर चढ़ने लगे. अभी तक इन लोगों में से किसी ने स्नान या भोजन नहीं किया था और दयाराम से मिलने की चाह में किसी को इस बात की फिक्र भी न थी कि मगर इन्द्रदेव ने ऐसा करना उचित न जाना क्योंकि उन्हें विश्वास था कि जब ये लोग दयाराम के सामने पहुँच जायेंगे तो मारे खुशी के और बातचीत की धुन में इन लोगों को खाने-पीने की कुछ भी सुध न रहेगी और न इसका मौका ही मिलेगा.

अस्तु इन बातों का विचार कर पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ने के बाद चश्में के किनारे पहुँच कर इन्द्रदेव ने डेरा डाल दिया और सभों को निपटने और स्नान इत्यादि से छुट्टी पाकर कुछ जलपान करने के लिए कहा. इन्द्रदेव ने जलपान का इन्तजाम घर से ही कर लिया था अर्थात् कुछ मेवा-मुरब्बा वगैरह अपने साथ रथ पर लेते आये थे. लाचार होकर सभी को इन्द्रदेव की आज्ञा माननी पड़ी.

घण्टे-सवा घण्टे की देर में सब कोई जरूरी कामों से निपटने के बाद कुछ भोजन इत्यादि करके भी निश्चिन्त हो गए. अब उन लोगों को पैदल ही सफर करना पड़ा परन्तु थकावट का चिह्न किसी के भी चेहरे पर दिखाई नहीं देता था और वे लोग दयाराम से मिलने की धुन में बराबर कदम बढ़ाये चले जा रहे थे. केवल इतना ही नहीं, सूर्य और इन्द्रदेव को छोड़ कर बाकी सभी को इस बात का शौक उमड़ रहा था कि देखें इन्द्रदेव का तिलिस्मी स्थान कैसा है.
घण्टे-भर और सफर करने के बाद यह मंडली उस गुफा या सुरंग के मुहाने पर जा पहुँची जो इन्द्रदेव की घाटी में जाने का रास्ता या दरवाज़ा था. इस गुफा के दोनों तरफ दो चौड़े पत्थर रक्खे हुए थे जिन पर थोड़ी देर बैठ कर आराम करने के लिए इन्द्रदेव ने सभों को कहा.

कुछ देर तक वहाँ आराम करने के बाद सभों ने इन्द्रदेव से कहा, "बस हम लोग आराम कर चुके, विशेष देर करना गड़ाता है."

इन्द्रदेव तैयार हो गए. सभों को साथ लिए गुफा के अन्दर घुसे. यह गुफा अन्दर से बहुत खुलासा और प्रशस्त तो थी परन्तु इसके अन्दर बिलकुल अन्धकार था. इन्द्रदेव के पीछे-पीछे एक-दूसरे का सहारा लिए क्रमश: सब कोई चलने लगे.

लगभग सौ कदम जाने के बाद रास्ता घूमा और इन्द्रदेव के पीछे सब कोई बाईं तरफ को रवाना हुए. थोड़ी दूर और जाने के बाद इन्द्रदेव रुके क्योंकि यहाँ पर उन्हें कोई दरवाजा खोलना था और इसकी तरकीब बहुत ही गुप्त थी, लोगों को सिवाय एक खटके की आवाज सुनाई देने के और कुछ भी मालूम न हुआ. उस समय इन्द्रदेव वहाँ खड़े हो गए और धीरे-धीरे सभों को उस दरवाजे के अन्दर करके स्वयं सब के पीछे रह गये और तब पुन: सभों को दरवाजा बन्द होने की आहट मालूम हुई. अब इन्द्रदेव ने मोमबत्ती जलाकर रोशनी की.

सब कोई बहुत देर तक अंधेरी गुफा में रहने और चलने के कारण घबड़ा गए थे, अब जो वहाँ रोशनी दिखाई दी तो सभों के जी-में-जी आया और आश्चर्य के साथ सब कोई इधर-उधर देखने लगे. यहाँ पर नीचे उतरने के लिए कुछ सीढ़ियाँ बनी हुई थीं. उसे खतम करके कुछ दूर और चलने के बाद सुरंग समाप्त हुई और सभों की निगाह एक ऐसे सुन्दर, सुहावने और रमणीक स्थान पर पड़ी कि जिसे देखते ही सबका दिल बाग-बाग हो गया, सभों ही के मुँह से वाह-वाह की आवाज आने लगी.

यह सुन्दर, सुहावना और दिलचस्प सुन्दर-सुन्दर गुलबूटों से भरा मैदान चारों तरफ की हरी-भरी डालवीं पहाड़ियों से घिरा हुआ था. हरे-हरे तथा खुशबूदार फूलों से लदे हुए पेड़ तथा लताओं की खुशबू बहुतायत से निकल कर हवा में मन्द-मन्द मिल कर जिस तरह दिमाग को मुअत्तर कर रही थी उसी तरह रंग—बिरंग की खुशनुमा चिड़ियों की आवाज तथा गूँजते और फूलों पर न्योछावर होते हुए भौंरों की पत्तियाँ कानों और आँखों को बहुत ही भली प्यारी मालूम होती थीं.

यही जी चाहता था कि यहाँ से क्षण-भर भी हट कर कहीं न जायँ और न इस स्वर्ग-तुल्य स्थान को देखने से मुँह मोड़ें, एक तरफ पहाड़ी की आधी ऊँचाई से सुन्दर झरना नीचे की तरफ गिर रहा था जिसके साफ-सुथरे बिल्लौर के-से जल की बदौलत उस मैदान के गुलबूटों और पौधों की सिंचाई बखूबी होती थी तथा और भी बहुत-से छोटे झरने पहाड़ी पर से बह रहे थे जिससे यहाँ की तरावट में किसी तरह की कमी नहीं आने पाती थी और यहाँ के पेड़ भी हर वक्त सरसब्ज और शादाब बने रहते थे. दूसरी तरफ पहाड़ी के ऊपर एक सुन्दर बँगला भी दिखाई दे रहा था और वह अपने चारों तरफ के गुलबूटों और पौधों से ऐसा मालूम पड़ता था मानों वसन्त ऋतु में कामदेव के भवन को बाग-बगीचों ने चारों तरफ से घेर रक्खा हो.

उन पहाड़ियों पर चढ़ने और उतरने के लिए हर तरफ छोटी-बड़ी तथा मन भावन सीढ़ियाँ बनी हुई थीं और जगह-जगह पर बैठ कर आनन्द लेने के लिए रंग-बिरंगे पत्थरों के बड़े-बड़े चट्टान मौजूद थे जिनके इर्द-गिर्द मौके-मौके से खुशनुमा और कीमती गमले सजाये हुए थे.
वहाँ की ऐसी अवस्था देख कर सभों का चित्त प्रसन्न हो गया मगर जमना और सरस्वती की आँखें यहाँ के गुलबूटों का आनन्द उतना नहीं ले रही थीं जितना दयाराम को खोजने के लिए उतावली होकर खंजन की-सी चंचलता करती हुई चारों तरफ देख रही थीं.

सभों को साथ लिए हुए इन्द्रदेव अपने बंगले की तरफ रवाना हुए. सब कोई सीढ़ियाँ उतर कर उस सुन्दर मैदान में पहुँचे और फिर बगल की तरफ वाली पहाड़ी पर चढ़ने लगे. कुछ ऊपर चढ़ने के बाद जमना और सरस्वती की निगाह यकायक किसी लताकुँज के नीचे एक चट्टान पर बैठे हुए दयाराम के ऊपर जा पड़ी जो इस समय सर झुकाये हुए कुछ सोच रहे थे.यद्यपि इस समय हंसमुख दयाराम का वह गोरा, सुन्दर और साफ चेहरा न था, न वह गोलमटोल तथा गठीला बदन ही था, दिल की उदासी और कैद की सख्ती ने उनके चेहरे और तमाम बदन पर झुर्रियाँ डाल दी थीं और अंधेरे में रहते-रहते उनका रंग पीला पड़ गया था, मुद्दत से हजामत न बनने के कारण उनकी दाढ़ी-मूँछ और सिर के बाल बेहिसाब बढ़ रहे थे जिससे उनका चेहरा भालू का-सा और सूरत वहशियों या जंगलियों की-सी हो रही थी.

तथापि नजर पड़ने के साथ जमना और सरस्वती का कलेजा धड़कने लगा. उनके दिल ने कहा कि बेशक उनके प्यारे पति यही हैं. बहुत दिनों तक कैद में पड़े रहने के कारण यदि उनकी ऐसी सूरत हो गई हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है, अस्तु उनकी ओर इशारा करके जमना और सरस्वती ने इन्द्रदेव की तरफ देखा.

इन्द्रदेव ने मुस्कराते हुए कहा, "हाँ, दयारामजी यही हैं, शायद हम लोगों के इन्तजार में ये बँगले से बाहर निकल कर यहाँ आ बैठे हैं, यह जरूर संभव था कि मैं उनके चेहरे और बदन की सफाई करा देता परन्तु तुम लोगों को इनकी अवस्था दिखाने की नीयत से ऐसा नहीं किया. इनके विषय में तुम लोग किसी तरह का शक न करो, यद्यपि आजकल का जमाना बहुत बुरा हो रहा है- हर तरफ ऐयारियों और चालबाजियों का डंका बज रहा है परन्तु मेरे काम में और इनके दयाराम होने में किसी तरह का धोखा नहीं. कैदखाने के अन्दर ही मुझसे और इनसे गूढ़ तथा गुप्त बातें हो चुकी हैं और इसके बाद तो पहरों ही.....देखो अब वे स्वयं उठ कर हम लोगों की तरफ आने लगे."

इन्द्रदेव की बातों ने सभों ही का ध्यान दयाराम की तरफ कर दिया और सभी कोई आश्चर्य और दुःख के साथ उनकी तरफ देखने लगे. जब ये देखा कि वे स्वयं उठ कर उन लोगों की तरफ आने लगे तब स्वयं की चाल में तेजी आ गई और प्रसन्नता के साथ सब कोई कदम बढ़ाते हुए उनकी तरफ लपके.

हम नहीं कह सकते कि इस समय जमना और सरस्वती के दिल की क्या हालत थी. जब दयाराम नजदीक आ पहुँचे तब जमना और सरस्वती झपट कर उनके पैर पर जा गिरीं और गर्म आँसुओं की धार से उनके चरण को धोने लगीं.

इन्द्रदेव को दयाराम पिता के बराबर मानते और इज्जत करते थे इसलिए उन्होंने इस समय अपने हृदय के वेग को रोका और जमना और सरस्वती के साथ वह बर्ताव नहीं कर सके जो एकान्त में अथवा केवल सखियों और दासियों के सामने करते. केवल इतना ही नहीं, उन दोनों को पैरों पर से उठाने के लिए जब झुके तो कोई ऐसा शब्द धीरे-से बोल पड़े जिसे कोई दूसरा सुन न सका और जमना तथा सरस्वती को भी ज्ञान हो जाने के कारण उनके सादे बर्ताव पर दुःख न हुआ.

वे दोनों उनके पैरों पर से उठ कर हाथ जोड़े सामने खड़ी हो गईं और इसके बाद सभी कोई हँसते और मुबारकबादी देते हुए उनसे मिले, मिलते समय जिसका जिस तरह का बर्ताव मुनासिब था उसने वैसा ही किया. दयाराम ने भैयाराजा, इन्द्रदेव और सूर्य को प्रणाम किया तथा प्रभाकरसिंह उनके गले मिले. इस समय किसी के मुँह से यह न निकला कि चलो बँगले में चल कर आराम से बैठें और तब निश्चिन्ती से बातचीत करें. खुशी के मारे सब उसी जगह जमीन पर बैठ गए और समयानुकूल तरह-तरह की बातें करने लगे.

प्रभा० : (दयाराम से) हरे-हरे, यह बात क्या कोई स्वप्न में भी विचार सकता था कि आप दुनिया में जीते-जागते मौजूद हैं और एक दिन इस तरह पर हम लोग आपका दर्शन करेंगे.
भैया० : कदापि नहीं, तमाम जमाने को इनके मरने का विश्वास हो चुका था. जो कुछ गम जिसके दिल में था वह धीरे-धीरे जाता रहा था, यहाँ तक कि एक जमाना बीत जाने के कारण सर्वसाधारण के दिल से इनकी याद भी एक तरह से जाती रही, हाँ, जो इनके बड़े ही प्रेमी थे केवल उन्हीं के दिल में कभी-कभी इनका ध्यान आ जाता हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं.
इन्द्र० : मुझे तो मिलना एक आश्चर्य-सा जान पड़ता है. परमात्मा की भी क्या विचित्र माया है, जिस बात का कुछ ज्ञान न गुमान वह यकायक पैदा हो गई. ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त मैं नहीं कह सकता कि और किसको इसके लिए धन्यवाद दूँ ?

कुछ देर तक इसी प्रकार की बातें होती रहीं परन्तु जमना और सरस्वती के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला, हाँ आँखों से आँसुओं की धारा बराबर बहती रही. इसके बाद इन्द्रदेव सबको बँगले में ले गये. वहाँ सभों के लिए अलग-अलग कमरों और कोठरियों तथा कपड़ों का उचित प्रबन्ध करने के बाद अपने हाथ से दयाराम की हजामत बनाई और स्नान वगैरह करा के कपड़े बदलवाये. इन सब कामों से छुट्टी पाते-पाते तक संध्या हो गई और तब सब कोई निश्चिन्त होकर एक कमरे में बैठे और बातचीत तथा हँसी-दिल्लगी करने लगे. आज यहाँ सभी का चित्त प्रसन्न था और सभी को दयाराम की कहानी सुनने का शौक हो रहा था.

सबके पहिले जमना और सरस्वती ने अपनी तथा अपने साथ-ही-साथ इन्दुमति की दर्दनाक कहानी दयाराम से कह सुनायी और तब प्रभाकरसिंह ने अपना तथा भूतनाथ का बचा हुआ हाल बयान करके सभी कसर पूरी की. तत्पश्चात् भैयाराजा का हाल इन्द्रदेव ने बयान किया. इसी के बीच भूतनाथ का हाल थोड़ा-थोड़ा सबकी जुबान से दयाराम ने सुना और अन्त में सबने दयाराम का हाल पूछा.
दयाराम ने कहा, "मेरा किस्सा न तो अनूठा है और न उसमें किसी अनूठी घटना का बयान हो सकता है सिवाय इसके कि वर्षों मैं कैसे पड़े सड़ा किये और दुःख भोगते रहे. कैद में इतना मुझे जरूर मालूम हो गया था कि जमानिया का दारोगा राजसिंह का मददगार है और उसी की सहायता से राजसिंह ने मुझे गिरफ्तार भी किया था.

अन्त में भूतनाथ पर कब्जा करने की नीयत से दारोगा मुझे अपने यहाँ ले आया और तब से मैं दारोगा का कैदखाना आबाद किए हुए था. मुझे अपने छूटने या छुड़ाने का कभी भी कोई मौका नहीं मिला और न कोई मददगार ही दिखाई दिया. यदि आपको यकायक मेरा पता न लगता तो शायद मेरी जिन्दगी उस कैदखाने में पूरी होती और अन्त में मेरी लाश बिना संस्कार ही के जमीन में गाड़ दी जाती.

आप लोगों की जबानी जो कुछ मैंने सुना उससे यही जान पड़ता है कि दारोगा के दिल में सदा ही से हम लोगों की दुश्मनी की जड़ें जमी हुई हैं और वह हम सभों ही के साथ खोटा बर्ताव करता चला आया है, परन्तु आप सदा ही उसका अपराध क्षमा करते चले आए और अपनी तरफ से किसी प्रकार का रंज भी उस पर प्रकट नहीं होने दे रहे हैं, ऐसा दिल और ऐसी बर्दाश्त शायद ही दुनिया में किसी को हो.

केवल दारोगा ही के साथ नहीं बल्कि गदाधरसिंह के साथ भी आपने वैसा ही बर्ताव किया, जिस तरह भीष्म पितामह जी ने अपने प्रण की रक्षा की थी अर्थात् पिता के प्रसन्नतार्थ न तो उन्होंने शादी ही की और न तमाम शरीर बाणों से बंध जाने पर भी उन्होंने शिखंडी पर शस्त्र या अस्त्र ही चलाया, उसी तरह आप भी अब तक अपने वचन की रक्षा करते चले आए और सैकड़ों आघात सह कर आपने उस पर किसी तरह का वार नहीं किया.

प्रभा० : बेशक ऐसा ही होता है, इन्द्रदेवजी ने जो कुछ किया वह दूसरा कोई नहीं कर सकता.
दया० : परन्तु अब जो मैं देखता हूँ तो उन दोनों स्त्रियों का तथा प्रभाकरसिंह और भैयाराजाजी का यकायक प्रकट होना कोई मामूली बात नहीं. इससे उन दोनों का बड़ा ही अनिष्ठ होगा. चाचाजी (इन्द्रदेव) के चुप रह जाने पर भी दुनिया उन्हें सत्यानाश कर डालेगी.

भैया० : इसमें भी क्या कोई शक है ? और इतना ही नहीं, उन दोनों का अनिष्ठ होने के हाथ-ही-साथ यह बात भी छिपी न रह जाएगी कि इन्द्रदेव जी ने हम लोगों के विषय में क्या-क्या कार्रवाई की है और उन दोनों के साथ कितना मुलाहिज़ा करते आये हैं.

इन्द्र० : मुझे अगर कुछ डर रहा है तो इसी बात का था. मैं नहीं चाहता कि मेरी इन कार्रवाइयों का सर्वसाधारण को पता लगे और मैं यही चाहता हूँ कि दारोगा तथा भूतनाथ को यह मालूम न हो कि मैंने उनके विषय में कोई काम किया है अथवा उनके भेदों को मैं जानता हूँ (कुछ सोच कर) परन्तु यह बात असम्भव-सी जान पड़ती है.

दयाराम : बेशक यह बात असम्भव है लेकिन मैं अपने शरीर से कदापि आपका प्रण झूठा न होने दूँगा. जिस तरह भीष्म जी ने अपने पिता की प्रतिज्ञा रक्खी थी उसी तरह मैं सब दुःख सहन करने पर भी आपकी, जिन्हें मैं पिता से बढ़ करके समझता हूँ, प्रतिज्ञा रक्खूँगा और अपने विषय में दोनों के ऊपर किसी तरह का दोष न लगने दूँगा.

इन्द्रदेव : (आश्चर्य से) मगर यह कैसे हो सकेगा ?
दयाराम : इसका होना कोई कठिन नहीं है, तमाम जमाना जान चुका है कि दयाराम मर गया. मेरे आत्मीय संबंधियों के दिल से धीरे-धीरे मेरा रंज भी निकल चुका है, अस्तु अब मुझे इस बात की कोई जरूरत नहीं रह गई कि मैं खुले मैदान प्रकट होकर उन लोगों से मिलूँ और सभों को अपना तथा आपका हाल मालूम होने दूँ. बस इसी सुन्दर घाटी में कहीं थोड़ी-सी जगह दे दें जहाँ मैं अपनी स्त्रियों के साथ रह कर बची हुई जिन्दगी ईश्वराराधना में बिता दूँ.

इन्द्रदेव : शाबाश-शाबाश, इस हिम्मत को देखकर मैं तुम्हारी सराहना करता हूँ, परन्तु यह कैसे हो सकता है कि मैं अपने हाथ से तुम्हारे पैर में कुल्हाडी मारूँ और इतने दिनों तक कैद की तकलीफ उठाने के बाद रिहाई मिलने पर भी तुम्हें दुनिया की हवा खाने या दुनिया के सुख-दु:ख से वंचित रखूँ ?

दयाराम : नहीं-नहीं, इसके लिए आप जरा भी चिन्ता न करें. मैं शपथपूर्वक आपसे कहता हूँ कि मुझे इन बातों की अब कुछ भी लालसा नहीं है. कदाचित् कभी मेरे दिल में यह आ भी जाय कि यहाँ से बाहर निकल कर दुनिया की हवा खाऊँ और जमाने की चालचलन को देखूँ तो यह बात भी आपकी कृपा से मेरे और मेरी स्त्रियों के लिए सहज हो जायेगी अर्थात् हम लोगों को आप थोड़ी-सी ऐयारी सिखा देंगे तो उसकी बदौलत दुनिया की सैर कभी-कभी कर लिया करूँगा. बात यह है कि ऐसा करने में मेरे दिल को जरा भी कष्ट न होगा, इसे आप सत्य समझें.

इन्द्रदेव : (प्रेम के कारण डबडबाई हुई आँखों से दयाराम की तरफ देख के) बेटा, तुम्हारी जहाँ तक प्रशंसा की जावे थोड़ी है. जबकि मेरी इज्जत, बात तथा प्रण की रक्षा करने वाला तुम्हारे ऐसा सुपुत्र दुनिया में मौजूद है तब मुझे किस बात की परवाह हो सकती है ? नि:सन्देह मैं तुम्हें पाकर अपने को कृतकृत्य समझता हूँ. ईश्वर तुम्हें चिरायु करे. जमना और सरस्वती को दुनिया की आफतों से बचे रहने के लिए मैंने ऐयारी सिखाई है और तुम्हें भी अवश्य सिखाऊँगा बल्कि इसके संबंध की बड़ी अनूठी चीजें दूँगा जिससे तुम सदैव प्रसन्न रहोगे. बहुत नहीं तो थोड़े दिनों तक तो तुम इस स्थान में गुप्त रीति से रहो फिर जैसी ईश्वर की मर्जी होगी देखा जायेगा, वह सर्वशक्तिमान जगदीश्वर सबकी इच्छा पूर्ण करने वाला है.

प्रभा० : (हाथ जोड़ कर) मेरी भी एक प्रार्थना है.
इन्द्रदेव : वह क्या ?
प्रभाकरसिंह : मुझे और इन्दुमति को भी आपने ऐयारी सिखाई जिसके कारण यद्यपि मेरी हिम्मत और ताकत बढ़ी हुई है परन्तु मैं भी दयारामजी का अनुकरण किया चाहता हूँ. आप मुझे आज्ञा दे कि मैं भी इनके साथ इसी घाटी में रहा करूँ, सिवाय आपके मेरा तो इस दुनिया में अब कोई रोने वाला भी नहीं है.

इन्द्रदेव : तुम्हारा घर है, तुम खुशी के साथ जब तक चाहो यहाँ रह सकते हो. परन्तु दयाराम की तरह गुप्त होकर तुम्हें रहने की तो कोई आवश्यकता नहीं है. इन्दुमति को यहाँ रख कर मेरी बदनामी को बचाते हुए दुनिया में घूम-फिर कर लोगों का उपकार कर सकते हो परन्तु भूतनाथ और दारोगा से यदि अपने को बचा सको तो.
प्रभाकरसिंह : मुझ अकेले को इन दोनों का कोई डर नहीं है, खैर, जैसा होगा देखा जायेगा.

भैया० : परन्तु मैं दारोगा को किसी तरह भी माफ नहीं कर सकता, मैं उसका और भाई साहब का जरूर सामना करूँगा और देखूँगा कि उस दुष्ट दारोगा की चालबाजी कहाँ तक काम करती है.

इन्द्र० : बेशक आपको जमानिया में जाकर अपना घर देखना चाहिए परन्तु इस बात को आप जरूर छिपाये रहियेगा कि मैंने आपकी कभी मदद की थी.
भैया० : हाँ, इस बात को मैं जरूर बचाऊँगा और आपका भेद प्रकट न होने दूँगा.

इसी तरह की बातें सभों में बड़ी देर तक होती रहीं. जब भोजन का समय हुआ तब सब कोई वहाँ से उठे और दूसरे कमरे में जाकर सभों ने भोजन किया. इन्द्रदेव ने आज नाना प्रकार के भोजन की सामग्री तैयार कराई थी जिसे देख कर सभों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि घर से इतनी दूर गुप्त स्थान में इतनी जल्दी ऐसा सामान क्योंकर तैयार कराया गया.

भोजन से निश्चिन्त होकर सब कोई आराम करने के लिए अपने-अपने कमरे में गये जिसका बन्दोबस्त इन्द्रदेव ने पहले ही से कर रखा था. दयारामजी के लिए तीन-चार कमरों और कोठरियों का बंदोबस्त हुआ था जिसमें तरह-तरह के आराम का सामान मौजूद था. दयाराम और उनकी स्त्रियों में दुःख उठाने पर मुद्दत के बाद मुलाकात हुई थी उन लोगों की खुशी का तो कहना ही क्या है अस्तु इस संबंध में हम ज्यादे और कुछ भी कहना मुनासिब नहीं समझते कि आज की रात उन लोगों के प्रेम का उद्गार किसी तरह कम न हुआ, हँसी-दिल्लगी में, उन लोगों ने जो-जो तकलीफें उठाई थीं, यह सब आज मानों स्वप्न के समान मालूम हो रही थीं.

एक सप्ताह तक सभी ने उस घाटी में रह कर हँसी-खुशी से बिताया, इसके बाद दयाराम, जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को उसी जगह छोड़ कर बाकी सभों को साथ लिए इन्द्रदेव इस तिलिस्मी घाटी के बाहर हुए.

[११]

इन्द्रदेव के कैलाश-भवन में आज भूतनाथ को बड़ी बेचैनी-बेताबी और उदासी के साथ बैठे हुए देखते हैं. इन्द्रदेव इस समय अपने पूजा के कमरे में बैठे पार्थिव पूजन कर रहे हैं और बीच-बीच में जब मौका मिलता है तो भूतनाथ से दो-चार बातें भी कर लेते हैं. सिवाय इन्द्रदेव और भूतनाथ के तीसरा कोई आदमी इस कमरे में दिखाई नहीं देता. हम नहीं कह सकते कि भूतनाथ को यहाँ आये हुए कितनी देर हुई है तथा इन दोनों में क्या-क्या बातें हो चुकी हैं परन्तु अब जो कुछ बातें होने वाली हैं वे जरूर सुनने के योग्य हैं.

भूत० : मेरी जिन्दगी तो मुफ्त में ही बरबाद हो रही है, दिन-रात दुश्मनों ही के खयाल में बीतता है. अपनी सफेद चादर में पड़े हुए एकमात्र धब्बे को ज्यों-ज्यों धोकर साफ करने की कोशिश करता हूँ त्यों-त्यों वह चादर गंदली ही होती जाती है और इसलिए मेरी अन्तरात्मा को सिवाय कष्ट के कुछ सुख का दर्शन भी नहीं होता.

इन्द्रदेव : तुम्हारे प्रारब्ध में जो कुछ बदा है उसे तुम भोग रहे हो, इसके सिवाय और मैं क्या कहूँ. केवल तुम ही दुःख नहीं भोगते बल्कि अपनी बेवकूफी से अपने साथ-ही-साथ अपने दोस्तों और साथियों को भी दुःखी करते हो. न-मालूम कै दफे मैं तुमको समझा चुका हूँ कि तुम इन बखेड़ों को छोड़ो और इस बात की धुन में न पड़ो कि दयाराम के मारने का कलंक जो तुम पर लगा है उसे मिटा कर साफ करोगे, मगर तुम्हारे दिल में मेरी कोई बात बैठती ही नहीं. दयाराम वाली जिस बात को केवल चार आदमी जानते थे उसे अब तुम्हारी बेवकूफी से बीस आदमी जानने लग गये हैं. तुम इस मामले को तूल न देते तो हम लोगों के मुँह से कोई गैर आदमी कभी न सुनने पाता.

भूत० : बेशक मुझसे भूल हो गई.
इन्द्र : अभी तक क्या हुआ है, अभी तो तुम दिनों-दिन भूलें करते ही जाओगे. दयाराम के मारने का कलंक कोई सच्चा कलंक नहीं था, वह काम वास्तव में तुमसे धोखे से हो गया, मगर उस संबंध में अब जो कुछ तुम कर रहे हो वह जान-बूझ कर रहे हो और इन सब पातकों का फल तुम्हें अवश्य भोगना ही पड़ेगा. इस समय जो तुम अपने लड़के के गम में विकल हो रहे हो यह भी इन्हीं सब पापों का फल है. ऐसा कर्म करके भी तुम अपने वंश की वृद्धि चाहते हो !

भूत० : (अपनी आँखों से आँसू पोंछ कर) अफसोस, मैं कहीं का न रहा.
इन्द्रदेव : बेशक ऐसा ही है, अब नहीं तो आगे चल कर तुम वास्तव में कहीं के भी न रहोगे. मैं तुमसे पूछता हूँ कि जमना और सरस्वती के साथ क्या तुम्हें ऐसा ही बर्ताव उचित था जो तुमने किया ?

भूत० : उन्होंने खुद मेरे साथ दुश्मनी की नींव डाली. मैं नहीं चाहता था कि उनके साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव करूँ.

इन्द्रदेव : मगर थोड़ी देर के लिए मान लिया जाये कि वे दोनों तुम्हारे साथ दुश्मनी करने के लिए उतारू हुईं मगर क्या कोई कह सकता है कि तुम्हारे ऐसे ऐयार का वे मुकाबिला कर सकती थीं ? कदापि नहीं, अगर तुम चाहते हो नेक-नीयती के साथ उन्हें मालिक समझकर उनके प्रहारों को बचाते हुए नेक और खिदमती कामों से उन्हें खुश कर लेते. मगर नहीं, तुम्हें तो ऐयारी का घमण्ड चढ़ा हुआ था, तुम्हारे अदृष्ठ ने तुम्हारा दिमाग आसमान पर चढ़ा दिया था, फिर ऐसा काम होता ही क्यों ? उनकी नेकनीयती और उनके पतिव्रत धर्म ने उनकी रक्षा की और अन्त में तुम उनका कुछ न बिगाड़ सके.

भूत० : जिसकी मदद आप करेंगे उसका भला मैं क्या बिगाड़ सकता हूँ ?
इन्द्रदेव : (कुछ बिगड़े हुए ढंग से) तुम्हारे पास क्या सबूत है कि मैं उनका मददगार बना था.
भूत० :सबूत तो कुछ भी नहीं है परन्तु.....

इन्द्रदेव : सिवाय मेरे कोई दूसरा उन्हें तुम्हारे दोस्त दारोगा के फन्दे से छुड़ा नहीं सकता था, बस यही तो कहोगे या कुछ और ?
भूत० :विचार तो मेरा ऐसा ही है, आज मैं आप से साफ-साफ कहता हूँ कि बेशक मैं इस मामले में अपराधी हूँ और इसके लिए पश्चात्ताप करता हूँ.

इन्द्रदेव : जब तुम्हारे किये कुछ हो ही नहीं सका तो अब जरूर ही पश्चात्ताप करोगे परन्तु इन्दुमति और प्रभाकरसिंह के बारे में शायद तुम पश्चात्ताप भी न करो.
भूत० : आज आप मुझसे बहुत ही जली-कटी बातें कर रहे हैं, ऐसा, तो कभी नहीं करते थे.
पूजा-विसर्जन करके इन्द्रदेव ने जवाब दिया-
इन्द्रदेव : तुम्हारा कहना ठीक है. तुम्हारे दुष्ट कर्मों को देखते-देखते अब मेरा चित्त बहुत ही दु:खी हो चुका है. मैं अपनी जुबान से तुम्हें दोस्त कह चुका हूँ उसी का निर्वाह करता चला आया हूँ, नहीं तो.....

भूत० : नि:संदेह आपने आज तक उस शब्द का ऐसा निर्वाह किया कि जैसा कोई नहीं कर सकता. आपका हौसला आपकी हिम्मत और आपकी मर्दानगी सराहने योग्य है. अब मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ. आप मेरे अपराधों को क्षमा करें, आज मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब से कदापि किसी पाप-कर्म में हाथ न डालूँगा.

इन्द्रदेव : तुम्हारी प्रतिज्ञा पर तो मैं विश्वास नहीं कर सकता परन्तु यह तुम स्वयं जानते हो कि मैं अपनी तरफ से तुम्हें दु:ख देने की इच्छा कदापि नहीं रखता और इस हिसाब से कहना चाहिए कि मैं हमेशा ही तुम्हारा कसूर माफ करता चला आता हूँ.

भूत० : नि:सन्देह मुझे यह बात माननी पड़ेगी. मेरा दिल इस बात की गवाही देता है, मैं खुद समझता हूँ कि मेरे ऐसे को तबाह कर देने के लिए आपका इशारा काफी है.

मगर नहीं, आप हमेशा ही मुझे समझाते और मेरे अपराधों को क्षमा करते चले आये हैं और इसी से आज मुझे पुन: आपके पास आने की हिम्मत हुई है नहीं तो वास्तव में मैं मुँह दिखाने लायक नहीं हूँ, पर आज मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई जिसके प्रकट होने से मैं सदा के लिए बेगुनाह साबित हो सकता हूँ साथ ही इसके मेरा और मेरे दोस्तों का उपकार भी हो सकता है.

इन्द्रदेव : वह क्या ?

भूत० : मुझे इस बात का ठीक-ठीक पता लग चुका है कि दयाराम जी अभी तक जीते हैं और जमानिया के कम्बख्त दारोगा ने उन्हें कैद कर रक्खा है. आप जानते हैं कि तिलिस्म से संबंध रखने के कारण दारोगा की ताकत कितनी बढ़ी-चढ़ी है, अस्तु यदि आप मेरी मदद करें तो मैं दयाराम को उसके कब्जे से छुड़ा लूँ. दयारामजी के छूट जाने पर हम लोगों में एक अजीब तरह की खुशी पैदा होगी और मेरे माथे से भी सदैव के लिए कलंक का टीका मिट जाएगा.

इन्द्रदेव : (सिर हिला कर) इस असम्भव बात को भला कौन मान सकता है ? भला दयाराम से दारोगा का क्या संबंध है ? मैं इस बात को कदापि नहीं मान सकता न इस आकाश-कुसुम के फेर में पड़ता हूँ. इसके अतिरिक्त तुम जानते ही हो कि दारोगा मेरा गुरुभाई है, अतएव तुम्हारी तरह उसके ऊपर भी किसी तरह का प्रहार नहीं करना चाहता, तुम्हें यदि दयाराम के जीते रहने का विश्वास हो तो जो कुछ उद्योग करते बने करो मगर मुझसे किसी तरह पर मदद पाने की आशा मत करो.

भूत० : (उदास होकर) क्या आपको दयारामजी के छूटने से प्रसन्नता न होगी ?

इन्द्रदेव : होगी और जरूर होगी परन्तु इसकी कोई आशा भी तो हो !

भूत० : यदि आप मेरी मदद करें तो मैं अपनी बात सच करके दिखा दूँ.

इन्द्रदेव : नहीं, दारोगा के विरुद्ध किसी कार्रवाई की मुझसे तब तक आशा मत रक्खो जब तक मुझे इस बात का पूरा विश्वास न हो जाये !

भूत० : मुझे जिस तरह मालूम हुआ है वह हाल सुनने ही से आपको मेरी बातों पर विश्वास हो जायेगा.
इन्द्रदेव : अजी वह निरंजनी और छन्नो वाली बात ही तो ! मैं इस मामले को अच्छी तरह सुन चुका हूँ. वे दोनों तथा ध्यानसिंह तुम्हें धोखे में डालना चाहते हैं. दुश्मनों की बातों पर तुम न मालूम क्योंकर विश्वास कर बैठते हो !

भूत० : (आश्चर्य से) यह बात आपको कैसे मालूम हुई ?
इन्द्रदेव : मुझे सब कुछ मालूम है और जिस तरह तुमने जंगल में छिप कर छन्नो की बातें सुनी हैं वह भी मैं जानता हूँ, मुझसे कुछ छिपा नहीं है.
भूत० : तो क्या आपके खयाल में वे सब बातें झूठ हैं ?

इन्द्रदेव : झूठ, बिलकुल झूठ !
भूत० : मैं स्वयं ध्यानसिंह के पास गया था. वह तो बड़े जोश से अपनी बात की पुष्टि करता है.
इन्द्रदेव : भले ही किया करे.

भूत० :मगर मुझे उसकी बातों पर पूरा-पूरा विश्वास होता है.
इन्द्रदेव : अगर विश्वास होता है तो उद्योग करके देख लो.
भूत० : मगर आप इस काम में कुछ भी मदद न करेंगे ?

इन्द्रदेव : कदापि नहीं, तुम्हारी मदद करके मैं स्वयं बदनाम हो सकता हूँ यद्यपि हजार दुष्टता करने पर भी तुम्हें और दारोगा को मैं बराबर माफ करता चला आया हूँ परन्तु अब किसी काम में भी तुम दोनों की मदद मैं नहीं कर सकता. बात तो यह है कि अब तुम दोनों ही से घृणा हो गई है.

भूत० : मैं कह चुका हूँ कि भविष्य में कभी ऐसा काम न करूँगा और जो कुछ कर चुका हूँ उसके लिए माफी माँगता हूँ.

इन्द्रदेव : केवल इतना कहने ही से मैं सन्तुष्ट नहीं हो सकता. जब तक तुम दुनिया में नेक काम करके अपने बुरे कामों का प्रायश्चित न करोगे तब तक मैं तुमसे कोई वास्ता न रखूँगा. हाँ, इस बात से तुम जरूर बेफ़िक्र रहना कि मैं तुम्हारे साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव अपनी जात से कदापि न करूँगा.
भूत० : इसका तो मुझे जरूर भरोसा है और आपको भी शायद विश्वास होगा कि मैं आपका कैसा लिहाज करता हूँ. मेरी जात से आपको कभी भी तकलीफ नहीं पहुँच सकती और.....

इन्द्रदेव : (बात काट कर) यह तो मैं समझता हूँ, परन्तु मेरे स्वजनों को जो तुम तकलीफ देते हो क्या उसका असर मेरे दिल पर नहीं होता है ?
भूत० :जरूर होता होगा, इस बात का तो मैं बेशक कसूरवार हूँ. मगर आप देख लीजिएगा कि आइन्दा मुझ से कभी ऐसी हरकत न होगी.
इन्द्रदेव० : अच्छा, मैं तुम्हारी इस बात को भी आजमा कर देखूँगा.

भूत० :जिस तरह आप चाहें आजमा लीजिए.
इन्द्रदेव : अच्छा अब तुम जाओ और दयाराम के विषय में उद्योग व्यर्थ समझो.
भूत० :मैं उम्मीद करता हूँ कि इस विषय में उद्योग करने से आप मुझे रोकेंगे नहीं और मुझे मेरी हिम्मत-भर कोशिश करने देंगे.

इन्द्रदेव : नहीं-नहीं, यह कदापि न समझो कि मैं तुम्हें रोकता हूँ, हाँ, अपने दिल का विश्वास तुम पर प्रकट करता हूँ, आइन्दा तुम्हारी खुशी.

भूत० :अच्छा तो मैं जाता हूँ परन्तु एक बात पूछने की लालसा मेरे दिल में बनी ही रह जायेगी जिसका कहना था तो बहुत जरूरी परन्तु आपके डर से अब पूछने में संकोच होता है.

इन्द्रदेव : संकोच की बात नहीं है, मैं खुले दिल से तुम्हें इजाजत देता हूँ कि जो कुछ तुम्हारे दिल में आवे कहो और पूछो. मैं पहिले कह चुका हूँ कि अपनी तरफ से तुम्हें सिवाय नसीहत करने के किसी तरह की तकलीफ कदापि न दूँगा, मगर साथ ही इसके यह बात भी जरूर है कि जब तक सीधी राह पर न आओगे और अपने पापों का प्रायश्चित्त न कर लोगे तब मैं किसी काम में तुम्हारी मदद न करूँगा, इसे खूब समझे रहना.

भूत० :(कुछ सोच कर) बस जब कि आपकी तरफ से कोरा जवाब ही मिल गया तब अब मुझे कुछ पूछने की जरूरत भी न रही.
इन्द्र : (मुस्कराते हुए) तथापि मैं सुन तो लूँ कि तुम क्या कहने को थे और क्या पूछना चाहते थे ?

भूत० : आपसे तो मैं वादा ही कर चुका हूँ कि भविष्य में अब किसी तरह का अपराध न करूँगा और आपने भी मुझे विश्वास दिला दिया है कि अपनी तरफ से किसी तरह की तकलीफ न पहुँचने देंगे, परन्तु मैं अपने चन्द बेईमान शागिर्दों की तरफ से बहुत लाचार हो रहा हूँ जो कि मुझसे बागी हो गये हैं और मेरी जान के पीछे लगे हुए हैं, ताज्जुब नहीं कि मैं उनके हाथ से मारा जाऊँ, अस्तु इसी विषय में आपसे मदद चाहता था.

इस मामले को इन्द्रदेव तो जानते ही थे और उन्हीं की मदद से भूतनाथ के शागिर्दों की जान बची थी तथापि अनजान बन कर आश्चर्य का नाट्य करते हुए इन्द्रदेव ने भूतनाथ से पूछा- "क्यों ऐसा क्यों हुआ ? तुम्हारे शागिर्द तो तुम्हारे बड़े भक्त थे !"

भूत० :हाँ, था तो ऐसा ही मगर मुझसे उन लोगों के विषय में एक ऐसी भूल हो गई जिसके लिए मैं बहुत ही पछता रहा हूँ.
इतना कह कर भूतनाथ ने अपने शागिर्दों का हाल उनके विषय में जो कुछ बेमुरौवती हो गयी थी सब सच-सच और साफ बयान कर दिया जिसे सुन कर इन्द्रदेव ने कहा, "मैं बहुत खुश हुआ कि तुमने यह किस्सा साफ-साफ बयान कर दिया.

बेशक वे लोग तुम्हें तकलीफ देंगे, यद्यपि मैं कह चुका हूँ कि तुम्हें किसी तरह की मदद न दूँगा तथापि तुम्हारी मुरौवत से इतना वादा करता हूँ कि तुम्हारी जान की रक्षा करूँगा और उन लोगों के हाथ से तुम्हारी जान पर नौबत न आने दूँगा, इससे तुम निश्चिन्त रहो, मगर तुम्हें यह किसी तरह भी न मालूम होने पायेगा कि मैंने कब और किस तरह तुम्हारी मदद की."

भूत० : आप समर्थ हैं, जो चाहे कर सकते हैं, अब मैं आपका भरोसा पाकर कुछ निश्चिन्त हो गया, अच्छा जाता हूँ, जय माया की.

इतना कह कर भूतनाथ वहाँ से विदा हुआ, जाते समय इन्द्रदेव ने कहा, "कभी-कभी तुम मुझसे मिलते रहना जरूर."

हमारे प्रेमी पाठक समझते होंगे कि चलो अब किस्सा खतम हो गया और बखेड़ा निपट गया.

जमना और सरस्वती को दयाराम मिल ही गये, प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का संयोग हो ही गया, साथ ही इसके भूतनाथ ने भी यह प्रण कर लिया कि अब भविष्य में कोई बुरा काम न करेगा इत्यादि, परन्तु नहीं, जमना, सरस्वती, दयाराम, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह वगैरह के लिए अभी सुख का जमाना नहीं आया.

उनका अदृष्ट अभी तक उनके सर पर नाच रहा है. जमानिया में गोपालसिंह जिस घटना के शिकार हुए थे और भूतनाथ को उस घटना से जैसा कुछ सरोकार था उसी तरह इन लोगों को भी उस घटना से घनिष्ठ संबंध था, इसलिए गोपालसिंह के साथ-ही-साथ इन सभों को बड़ी-बड़ी तकलीफें उठानी पड़ीं जैसा कि आगे चलकर आपको मालूम होगा.[१]

---

१. अपनी जीवनी लिखते-लिखते भूतनाथ यहाँ पर नोट लिखता है-

मैं पहिले भी कह चुका हूँ और अब भी कहता हूँ कि मेरी यह जीवनी मेरे दोस्तों के भरोसे पर लिखी जा रही है, अर्थात् राजा गोपालसिंह को ग्रहदशा से छुटकारा मिलने पर और राजा बीरेन्द्रसिंह की तरफ से मुझे माफी मिल जाने पर मुझे यह मौका मिला कि अपने इन्द्रदेव ऐसे मित्रों और मेहरबानों से जो कुछ भेद मुझे मालूम न थे उन्हें पूछ-पूछ कर अपने किस्से का सिलसिला दुरुस्त करूं. मगर इसी तरह जो कुछ हाल दारोगा अथवा उसके साथियों से संबंध रखता था उसका असल भेद मुझे मालूम न हुआ, जैसे भैयाराजा का परिणाम- उसे मैं किसी तरह भी पता लगा कर न लिख सका जिसके लिए मैं महाराज और महाराज कुमारों से क्षमा माँगता हूँ. इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन दिनों मुझसे बड़े-बड़े अपराध हो रहे थे और इन्द्रदेव उन सभों को क्षमा करते जाते थे परन्तु दारोगा के अपराधों को क्षमा कर देना जमानिया राज्य अथवा राजकुल के लिए जहर हो गया.

भले इन्द्रदेव दारोगा को किसी तरह की सजा न देते पर उसकी दुष्टता से राजा गिरधरसिंह को और उनको नहीं तो कम-से-कम गोपालसिंह को भी होशियार कर देते तो उन पर ऐसी मुसीबत का पहाड़ आकर न टूट पड़ता. यह सही है कि लक्ष्मीदेवी वाले मामले की इन्हें ठीक-ठीक खबर नहीं हुई और यदि कुछ खबर हुई भी तो उस समय जबकि राजा गोपालसिंहजी का देहान्त हो जाना सर्वसाधारण में प्रसिद्ध हो चुका था और इसीलिए उस समय इन्द्रदेव ने मामले को उठाना कदाचित् व्यर्थ ही समझा होगा.

इसके अतिरिक्त वे अपनी लड़की और स्त्री के गम में बिल्कुल ही उदासीन हो गये थे अस्तु जमाने की अवस्था पर ध्यान देना क्योंकर अच्छा मालूम होता होगा ? मतलब यह कि दारोगा के हाल से राजा गोपालसिंह को सच्ची अगाही न होना ही अनर्थ का मूल हो गया. भैयाराजा का मामला भी राजा गोपालसिंह को ठीक-ठीक मालूम न हुआ नहीं तो वे कुछ चैतन्य जरूर हो जाते. सच है, आग बुझाना और चिनगारी छोड़ देना, साँप मारना और उसके बच्चे की हिफाजत करना, बुद्धिमानों का काम नहीं.
इन्द्रदेव ने दारोगा की ताकत को तोड़ दिया सही मगर उसे छोड़ दिया. मगर सम्भव है कि मेरी नालायकी से भी उन्होंने धोखा खाया हो."

[१२]

भूतनाथ इन्द्रदेव से बिदा हो सीधे जमानियाँ की तरफ रवाना हुआ. इस समय वह अपनी असली सूरत में था और सफर भी उसका पैदल ही था. कोस-दो-कोस से ज्यादे न गया होगा कि सामने से एक नकाबपोश सवार आता हुआ दिखाई दिया.

चेहरे पर नकाब पड़े रहने के सबब से यद्यपि भूतनाथ उसे पहिचान न सका परन्तु उस नकाबपोश ने भूतनाथ के पास आकर उसे रोका और कहा, "कहो गदाधरसिंह इस समय कहाँ जा रहे हो ?" इतना कहने के साथ-ही-साथ उसने जरा-सा नकाब हटा कर अपनी सूरत भी दिखा दी जिससे भूतनाथ पहिचान गया कि यह भैयाराजा हैं.

फिर भी भूतनाथ को विश्वास न हुआ और वह सलाम करके बोला- "केवल चेहरा देख विश्वास कर लेने की हिम्मत नहीं पड़ती अस्तु कोई भेद की बात कह के अपना परिचय दीजिए और आइन्दे के लिए भी कोई परिचय नियत कर लीजिए."

भैयाराजा : हाँ-हाँ, इस बात को मैं भी पसन्द करता हूँ और केवल उस दिन की बात याद दिला कर तुम्हें अपना परिचय देता हूँ जिस दिन मैंने तुमको तिलिस्मी बाग में बेहोशी की दवा पिलाई थी और तुमने भविष्य में नेक राह पर चलने के लिए कसम खाई थी. दूसरों को तुम्हारे कसम खाने पर चाहे विश्वास न हो परन्तु मैं तुम्हारी उस दिन की प्रतिज्ञा पर विश्वास करता हूँ.

भूत० :(झुक कर अदब से सलाम करने के बाद) अब मुझे विश्वास हो गया. बेशक आप मुझे जब चाहें आजमा कर देख लीजिए, मुझे अपनी प्रतिज्ञा पर सदैव दृढ़ पायेंगे.
भैयाराजा : अच्छा यह बताओ कि इस समय तुम कहाँ से आ रहे हो और कहाँ जाते हो ?

भूत० : मैं इस समय इन्द्रदेव के यहाँ से आ रहा हूँ और दारोगा से मिलने के लिए जमानिया जाने का इरादा है.
भैयाराजा : मैं एक जरूरी काम के लिए तुम्हें कई दिनों से खोज रहा था, इत्तिफाक ही से तुम इस समय मुझे मिल गये.
भूत० : आज्ञा कीजिए, मैं दिलोजान से आपका काम करने के लिए तैयार हूँ. इस शरीर से अगर आपका कुछ काम निकले तो मैं अपने को बड़ा भाग्यवान समझूँगा.

भैयाराजा : अच्छा यहाँ तो बातें करने का मौका नहीं है, चलो किसी जंगल-मैदान में चल कर निश्चिन्ती से बैठें और बातें करें.
भूत० : जो आज्ञा.
घोड़े पर सवार भैयाराजा और रिकाब थामे हुए भूतनाथ दोनों आदमी वहाँ से रवाना हुए और डेढ़ घण्टे के अन्दर एक घने जंगल में पहुँच कर एक सुन्दर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए और बातें करने लगे.

भैयाराजा : आज क्या था कि तुम इन्द्रदेव के पास गये थे ?
भूत० : इस बात का पता लगा है कि दयाराम जी अभी तक जीते हैं और जमानिया के दारोगा ने उन्हें कैद कर रखा है, अस्तु इस विषय में इन्द्रदेव से मदद माँगने के लिए मैं गया था.
भैयाराजा : तो फिर क्या हुआ ?
भूत० : उन्होंने मदद करने से सूखा जवाब दे दिया और कहा कि 'मुझे दयाराम जी के जीते रहने का विश्वास नहीं होता.'
भैया० : अफसोस, न-मालूम क्या समझकर इन्द्रदेव ने ऐसा किया ? अच्छा तो अब तुम क्या करोगे ?

भूत० : इन्द्रदेव को चाहे विश्वास न हो परन्तु मुझे दयाराम के जीते रहने का विश्वास है अतएव जहाँ तक बन पड़ेगा मैं इस काम के लिए कोशिश जरूर करूँगा आगे मेरी किस्मत.
भैया० : बेशक कोशिश करनी चाहिए, लेकिन जिस दारोगा को खुश करने के लिए तुम मेरी जान लेने को तैयार हो गये थे उसी दारोगा के साथ तुम क्या करोगे सो मेरी समझ में नहीं आता, क्या उससे दोस्ती का नाता तोड़ दोगे ?

भूत० : दारोगा को खुश करने के लिए मैंने आपके साथ दुश्मनी नहीं की थी बल्कि अपना काम पूरा करने के लिए ऐसा किया था क्योंकि उस समय दारोगा मेरा काम कर रहा था और आपने मेरे काम में बाधा डाली थी. अब तो अपना ढंग बदलने के लिए प्रतिज्ञा ही कर चुका हूँ इसलिए आपसे झूठ बोलना या किसी काम को छिपाना भी उचित नहीं अस्तु जो बात है वह साफ कह देता हूँ, मेरी और दारोगा की दोस्ती भला कब निभ सकती है ? हाँ, मतलब साधने के लिए मैं दारोगा से कभी मिल जाऊँ तो कोई आश्चर्य नहीं है.

हाँ, यह कहिये आप मुझे क्यों खोज रहे थे और अब अपने लिए क्या कारर्वाई सोची है. जिस तरह आप दो दफे महल में जाकर अपनी स्त्री से मिले हैं वह ढंग भी अच्छा नहीं है, इसमें आपकी स्त्री बदनाम हो जायेगी और दारोगा को उनके साथ बुराई करने का मौका मिल जायगा क्योंकि आपके भाई साहब उस दुष्ट के वश में हो रहे हैं. इसके सिवाय मैं इस बात की इत्तिला भी आपको इसी समय दे देता हूँ कि आपकी स्त्री और कुँवर गोपालसिंह की माँ दोनों ही को मार डालने के लिए दारोगा प्रयत्न कर रहा है, अगर आप इसी तरह पर और कुछ दिन बिता देंगे तो अपनी स्त्री को जिन्दा न पाएँगे.

भैया० : (आश्चर्य और घबराहट से) क्या ऐसी बात है !
भूत० : बेशक ऐसा ही है. मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा.
भैया० : अगर तुम्हारा कहना ठीक है तो मुझे अपना ढंग जरूर बदल देना पड़ेगा. अच्छा अब तुमसे यह कह लूँ कि तुम्हें क्यों खोज रहा था तब इस मामले में आगे तुमसे राय लूँ.

भूत० : जो आज्ञा.
भैया० : तुम क्या उन शागिर्दों का हाल साफ-साफ मुझसे बयान कर सकते हो जो तुमसे बागी हो गये हैं ?
"जी हाँ मैं आपसे सच-सच बयान कर देता हूँ." इतना कह कर भूतनाथ ने उन शागिर्दों का सब ठीक-ठीक हाल भैयाराजा से बयान कर दिया जिसे सुनने के बाद भैयाराजा ने कहा, "उन शागिर्दों में से कई मुझे तुम्हारा दुश्मन समझ कर मुझसे मिले थे और मदद माँगते थे.

मैंने उनसे मदद का वादा किया परन्तु यह खयाल करके कि तुम अपने लिए अच्छा रास्ता अख्तियार कर रहे हो और तुमको बाहरी खतरों से बचाना चाहिए मैं तुम्हें उनकी बाबत इत्तिला दिया चाहता हूँ."
भूत० : (खुश होकर) आखिरी मरतबे वे लोग कब आपसे मिले थे ?
भैया० : कल शाम को मेरी उनसे मुलाकात हुई थी.

भूत० : क्या आपको उन लोगों का ठिकाना भी मालूम हुआ है कि वे लोग कहाँ रहते हैं ?
भैया० : हाँ मालूम हुआ है, एक दफे मैं उनके डेरे पर भी गया था.

इसके बाद घण्टे-भर तक भूतनाथ और भैयाराजा में बातचीत होती रही जिसके लिखने की यहाँ जरूरत नहीं जान पड़ती, पर अभी उन लोगों की बातें समाप्त नहीं हो पाई थीं कि सामने से आठ आदमी नकाबपोश लगाए घोड़ों पर सवार इनकी तरफ आते हुए दिखाई पड़े. दोनों सम्हलकर खड़े हो गए और उन सवारों की तरफ देखने लगे. नजदीक पहुँचने पर उन लोगों ने तलवारें म्याने से निकाल लीं जिससे इन दोनों को विश्वास हो गया कि ये सवार हमारे दुश्मन हैं, अस्तु भूतनाथ और भैयाराजा भी तलवार म्यान से निकालकर मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये.

पास पहुँचते ही एक सवार ने भूतनाथ पर तलवार का वार किया. भूतनाथ पैंतरा बदलकर वार खाली दे गया और तब बगल में होकर अपनी तलवार से सवार को घायल किया, भूतनाथ की तलवार दाहिने मोढ़े पर बैठी जिससे उसका दाहिना हाथ बेकार हो गया और तलवार उसके हाथ से छिटक कर जमीन पर गिर पड़ी साथ ही एक दूसरे सवार ने भूतनाथ पर वार किया जिसे भूतनाथ ने अपनी तलवार पर रोका और उसी तलवार से उस सवार पर हमला किया.

वह सवार भी उस सवार को बचा गया मगर इस वार से उसका घोड़ा बेकार हो गया. इस समय बाकी के सवारों ने भी भूतनाथ पर हमला कर दिया और चारों तरफ से भूतनाथ को घेर लिया. भैयाराजा अभी तक खड़े थे मगर जब उन्होंने भूतनाथ को घिरा हुआ देखा तो तलवार उठाकर उन सवारों पर टूट पड़े.

भूतनाथ यद्यपि कई दुश्मनों से घिर गया था परन्तु उसी फुर्ती, दिलावरी और होशियारी ने किसी को उस पर हावी न होने दिया अर्थात् सभों के वार बचाता हुआ बड़ी बहादुरी के साथ जवाब देता रहा और जब भैयाराजा भी उसकी मदद पर तैयार हो गये तब थोड़ी ही देर में उन सवारों की हिम्मत जाती रही क्योंकि भैयाराजा को भी उन सवारों ने वैसा ही बहादुर पाया जैसा भूतनाथ को.

थोड़ी देर की लड़ाई में दो सवार जान से मारे गये और चार जख्मी होकर जमीन पर सिसकने लगे, बाकी के दो सवारों ने पीठ दिखाकर मैदान का रास्ता लिया. यद्यपि भूतनाथ का इरादा हुआ कि जख्मी दुश्मनों के चेहरे पर से नकाब हटाकर सूरत देखे और पहिचाने के वे कौन हैं मगर इस काम को उसने पीछे के लिए छोड़ दिया और उन्हीं जख्मी दुश्मनों के घोड़े में से एक पर कूद के सवार हो भैयाराजा को यह कहता हुआ कि- 'आप इसी जगह ठहरिये और इनके चेहरे पर से नकाब हटाकर यह देखिए कि ये लोग कौन हैं—उन भागते हुए सवारों के पीछे घोड़ा दौड़ाया.

भैयाराजा को यह बात पसन्द न आई इसलिए उन्होंने भूतनाथ को आवाज देकर रोकना चाहा मगर भूतनाथ ने कुछ भी न सुना और बड़ी तेजी के साथ उन भागने वालों का पीछा किया. इस समय दिन अनुमान पहर-भर से कुछ ज्यादे बाकी था.

भैयाराजा ने जब यह देखा कि भूतनाथ ने उनकी कुछ भी न सुनी और भागने वाले दुश्मनों के पीछे चला ही गया तब वे भी अपने घोड़े पर सवार होकर भूतनाथ के पीछे रवाना हुए और थोड़ी कोशिश में भूतनाथ के पास जा पहुँचे क्योंकि भैयाराजा का घोड़ा बहुत ही तेज और ताकतवर था.

घण्टे-भर तक ये लोग बराबर भागने वालों का पीछा करते गये उन दोनों को छू न सके हाँ, पास जरूर पहुँच गये, यहाँ तक कि भागने वालों के और इनके बीच में चालीस या पचास का फासला रह गया होगा. चारों के घोड़े पसीने से तरबतर और परेशान हो गये और उनकी चाल की तेजी जाती रही.

कुछ देर बाद वे लोग पहाड़ी की तराई में जा पहुँचे. यहाँ पर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों का सिलसिला बहुत दूर तक चला गया था. कुछ दूर आगे बढ़ने पर यह मालूम होने लगा मानों ये लोग चारों तरफ से पहाड़ों के बीच घिर गए हैं. पत्थरों के रोड़ों और डोकों के कारण घोड़ों की चाल बहुत धीमी पड़ गई थी यद्यपि भूतनाथ और भैयाराजा बराबर पीछा करते ही चले गये. दिन यद्यपि-घण्टे भर से ज्यादे बाकी था परन्तु ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के बीच में पड़ जाने के कारण इन लोगों को यही मालूम होता था कि अब संध्या हो गई है.

पहाड़ों के बीच में चलते दोनों भागने वाले कई घूमघुमौवे रास्तों से चक्कर खाकर एक बहुत बड़े दर्रे के मुहाने पर जा पहुँचे और वहाँ भी न रुककर बराबर के दर्रे के अन्दर जाने लगे. जैसे-जैसे आगे जाते थे ऊपर से दोनों तरफ के पहाड़ आपुस में मिलते जाते थे यहाँ तक कि पहाड़ी दर्रे ने बहुत ऊँचे खोह या गुफा की सूरत पकड़ ली और तब ये लोग मानों एक साधारण अंधकर जा फंसे. उस समय दोनों ने अपने घोड़ों को रोका और भूतनाथ ने भैयाराजा से कहा- "अब तो हम लोग बहुत अंधकार और भयानक जगह आ पहुँचे हैं, यदि सामने से पाँच-दस दुश्मन आकर हम पर हमला कर दें तो हम लोगों का देखना और उन लोगों के हमले का जवाब देना कठिन हो जायगा."

भैया० : बेशक हम लोग बहुत ही बेढब जगह आ पहुँचे. मैंने तो तुम्हें इनका पीछा करने से मना किया था मगर तुमने न-जाने क्या समझ कर मेरी बात न मानी.
भूत० : मुझे विश्वास हो गया कि ये लोग जरूर मेरे बागी शागिर्दों में से ही हैं और पीछा करने से आज ही इन लोगों का पता मालूम हो जाएगा.

भैयाराजा : तुम्हारे बागी शागिर्दों का पता तो मैं खुद ही तुम्हें दिया चाहता था.
भूत० : मैंने खयाल किया कि उस तरह पता लगाने में बहुत दिन लग जायेंगे और ताज्जुब नहीं उन लोगों ने अपना सच्चा ठिकाना न दिखा कर आपको धोखे में डाला हो.
भैया० : मगर अब तो तुम उनका पीछा भी नहीं कर सकते और अगर पीछा करो तो उनका हाथ लगना असम्भव है.

भूत० : बेशक असम्भव है और रात हो जाने के कारण पीछे हट कर अपने ठिकाने पहुँचना और भी कठिन है. अच्छा मैं रोशनी करके एक दफे पुन: आगे बढ़ने की कोशिश करता हूँ.
भैया० : और अगर आगे चलकर अधिक दुश्मनों से मुकाबला हो गया तब क्या होगा ?

भूत० : अब जो कुछ प्रारब्ध में लिखा होगा सो होगा. अफसोस, इस समय मेरे पास वह अनूठी तलवार न हुई जो मैंने प्रभाकरसिंह की कमर से पाई थी, कमबख्त दुश्मन ने मुझे बेहोश करके वह तलवार ले ली.
भैया० : यह तो दस्तूर की बात है कि जब आदमी लाचार होता है तो उसे प्रारब्ध या दैव याद पड़ता है। मुझे उस तलवार का हाल अच्छी तरह मालूम है जो तुमने प्रभाकरसिंह से पाई थी. खैर उसके लिए तुम चिन्ता मत करो, मेरी कमर में भी इस समय एक वैसी ही तलवार है.

भूत० : (आश्चर्य से और खुश होकर) जो गुण उस तलवार में था वही आपकी तलवार में भी है ? अब तो मेरी हिम्मत किसी तरह टूट नहीं सकती.
भैया० : बेशक इसमें भी वही गुण है, समझ लो कि यह उसी जोड़ की तलवार है, मगर इससे यह न समझना कि यह तुम्हारी ही तलवार है या हमीं ने वह तुमसे छीन ली थी.
भूत० : नहीं-नहीं, भला ऐसा भी क्यों समझूँगा, आप तो नाहक मुझे शर्मिन्दा करते हैं. अच्छा तो अब वह तलवार आप अपने हाथ में ले लीजिए और मैं अपने बटुए में से रोशनी का सामान निकाल कर आगे बढ़ने की कोशिश करता हूँ

भैया० : अच्छा मैं तलवार निकाल लेता हूँ, तुम रोशनी करो. भूतनाथ ने अपने बटुए में से रोशनी का सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और फिर दोनों आगे की तरफ बढ़े. उस खोह की लम्बाई-चौड़ाई इतनी बड़ी थी कि ये दोनों खुले तौर पर सवार बखूबी आगे बढ़ते चले गए.
आधे घण्टे तक बराबर चले जाने के बाद ये दोनों आदमी खोह खतम करके मैदान में जा निकले और तब मालूम हुआ कि अभी सूर्य भगवान के अस्त होने में कुछ देर है.

ये लोग अब एक बहुत बड़े मैदान में जिसमें बहुत-से जंगली दरख्त भी लगे थे आ पहुँचे जिसके चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और बीच में चौथाई कोस का मैदान था.
जिस तरह जंगली कोल और भील अपने रहने के लिए जंगली पेड़ों को काट कर कुटिया बनाते हैं उसी तरह की कई झोपड़ियाँ मैदान में बनी हुई थीं और इधर-उधर पेड़ों के साथ बँधे सात-आठ घोड़े भी दिखाई दे रहे थे, मगर यहाँ किसी आदमी की सूरत इन दोनों को दिखाई न दी.

भूतनाथ और भैयाराजा घोड़े से नीचे उतर पड़े और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए. हम लोगों का यहाँ आना तो बिल्कुल ही बेकार मालूम पड़ता है. अब रात भी हुआ चाहती है और ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि किसी मुश्किल का सामना आ पड़े.

ये दोनों खड़े उन कुटियों की तरफ देखते हुए तरह-तरह की बातें सोच ही रहे थे कि यकायक आठ-दस आदमी झोपड़ियों के अन्दर से निकल कर इन दोनों की तरफ बढ़ते हुए दिखाई पड़े. भैयाराजा ने भूतनाथ से कहा, "गदाधरसिंह तुमने बहुत ही नादानी का काम किया जो इन लोगों का पीछा किया. सिर्फ हम दो आदमियों को अब न-मालूम कितने दुश्मनों का सामना करना पड़े और क्या हो. देखो ये लोग लड़ने के लिए मुस्तैद होकर हमारी तरफ आ रहे हैं."

[१३]

अब हम थोड़ा हाल जमानिया का लिखना चाहते हैं क्योंकि वहाँ राजाभैया की स्त्री बेचारी बड़े ही धर्म-संकट में पड़ी हुई है. यद्यपि लोग उसे सदैव ही साध्वी सती और सुशील समझते रहे हैं परन्तु जब से भैयाराजा ने गायब होकर अपना ढंग बदला है और छिप-छिप कर कई दफे अपनी स्त्री के पास आये हैं तब से उसकी प्रतिष्ठा हीन हो रही है. सभों की निगाह में वह खटकने लग गई है और घर के सभी कोई उस पर व्याभिचार का दोष दबी जुबान से लगाने लग गये हैं.

प्रायः सभों ही का यह खयाल हो रहा है कि इसके पास महल में छिप कर आनेवाला कोई इसका धर्म-विरुद्ध दोस्त है. यह बेचारी पति की आज्ञानुसार इस भेद को छिपा तो रही है परन्तु अपने ऊपर कलंक लगते देख उसका चित्त बड़ा ही दुःखी हो रहा है. जिन बड़े लोगों की निगाह में वह हमेशा ही सीता-सावित्री-सी बनी रहती थी आज वे ही लोग उन पर बदनामी का धब्बा लगाने लग गये हैं. यह सब उससे सहन नहीं होता परन्तु क्या करे मजबूर है, उसके पति की आज्ञा ही नहीं है कि वह इस भेद को खोल दे और अपनी चादर पर से कलंक का धब्बा मिटावे.

कम्बख्त दारोगा को भी उसे सताने का यह अच्छा मौका मिल गया है. वह बराबर महाराज को समझा-बुझा कर उसकी तरफ से उनका दिल मैला करता रहता और उस बेचारी को बदकार साबित करता जाता है. अभी तक वह बेचारी सब कुछ सहती रही और पति की आज्ञा के विरुद्ध उसने काम नहीं किया परन्तु अब उसे सहा नहीं जाता और सहते नहीं बन पड़ता. इधर बहुत दिनों से उसके पास भैयाराजा भी नहीं आये जो वह अपने दिल का हाल कहती या यही समझती कि तुम्हारी यह चाल ठीक नहीं बन पड़ती और इससे लोगों की निगाह में तुम बेइज्जत हुआ चाहते हो. उसके पास एक-दो बहुत नेक बुद्धिमान और नमक हलाल लौंडियें हैं जिनकी जुबानी उसे सब तरफ का हाल मिला करता है और वह जान रही है कि मेरी बेइज्जती दिनोंदिन बढ़ती चली जाती है, ताज्जुब नहीं कि किसी दिन महाराज मुझे खुल्लमखुल्ला दोषी कह कर मार डालने की आज्ञा दे दें.

साथ ही इसके अब उसे अपने पति की भी विशेष चिन्ता पड़ गई है क्योंकि बहुत दिनों से वे उसके पास नहीं आये हैं और न उनकी खबर ही मिली है. क्या करे, कहाँ जाये, किससे अपने दिल का हाल कहे और किस तरह अपने माथे से कलंक का टीका मिटाए, वह प्रायः इसी तरह की चिन्ता में डूबी रहती है. इस समय भी हम उसे ऐसी ही अवस्था में देख रहे हैं. दोपहर का समय है, घर के सरदार लोग औरत-मर्द सभी कोई खा पीकर अपने-अपने कमरे में आराम कर रहे हैं परन्तु वह बेचारी अपनी मलीन चारपाई पर बैठी हुई तलहत्थी पर बाल रक्खे इन्हीं सब चिन्ताओं में निमग्न है, तनोबदन की कुछ भी खबर नहीं है, कुछ भी नहीं मालूम कि मेरे पास कौन खड़ा है और क्या कह रहा है, परन्तु इसकी यह लौंडी कुछ देर से उसके पास खड़ी है और कुछ कहने की इच्छा से उसे दो-तीन बार सम्बोधन कर चुकी है.

प्रायः सभों ही का यह खयाल हो रहा है कि इसके पास महल में छिप कर आनेवाला कोई इसका धर्म-विरुद्ध दोस्त है. यह बेचारी पति की आज्ञानुसार इस भेद को छिपा तो रही है परन्तु अपने ऊपर कलंक लगते देख उसका चित्त बड़ा ही दुःखी हो रहा है. जिन बड़े लोगों की निगाह में वह हमेशा ही सीता-सावित्री-सी बनी रहती थी आज वे ही लोग उन पर बदनामी का धब्बा लगाने लग गये हैं. यह सब उससे सहन नहीं होता परन्तु क्या करे मजबूर है, उसके पति की आज्ञा ही नहीं है कि वह इस भेद को खोल दे और अपनी चादर पर से कलंक का धब्बा मिटावे.

कम्बख्त दारोगा को भी उसे सताने का यह अच्छा मौका मिल गया है. वह बराबर महाराज को समझा-बुझा कर उसकी तरफ से उनका दिल मैला करता रहता और उस बेचारी को बदकार साबित करता जाता है. अभी तक वह बेचारी सब कुछ सहती रही और पति की आज्ञा के विरुद्ध उसने काम नहीं किया परन्तु अब उसे सहा नहीं जाता और सहते नहीं बन पड़ता. इधर बहुत दिनों से उसके पास भैयाराजा भी नहीं आये जो वह अपने दिल का हाल कहती या यही समझती कि तुम्हारी यह चाल ठीक नहीं बन पड़ती और इससे लोगों की निगाह में तुम बेइज्जत हुआ चाहते हो. उसके पास एक-दो बहुत नेक बुद्धिमान और नमक हलाल लौंडियें हैं जिनकी जुबानी उसे सब तरफ का हाल मिला करता है और वह जान रही है कि मेरी बेइज्जती दिनोंदिन बढ़ती चली जाती है, ताज्जुब नहीं कि किसी दिन महाराज मुझे खुल्लमखुल्ला दोषी कह कर मार डालने की आज्ञा दे दें.

साथ ही इसके अब उसे अपने पति की भी विशेष चिन्ता पड़ गई है क्योंकि बहुत दिनों से वे उसके पास नहीं आये हैं और न उनकी खबर ही मिली है. क्या करे, कहाँ जाये, किससे अपने दिल का हाल कहे और किस तरह अपने माथे से कलंक का टीका मिटाए, वह प्रायः इसी तरह की चिन्ता में डूबी रहती है. इस समय भी हम उसे ऐसी ही अवस्था में देख रहे हैं. दोपहर का समय है, घर के सरदार लोग औरत-मर्द सभी कोई खा पीकर अपने-अपने कमरे में आराम कर रहे हैं परन्तु वह बेचारी अपनी मलीन चारपाई पर बैठी हुई तलहत्थी पर बाल रक्खे इन्हीं सब चिन्ताओं में निमग्न है, तनोबदन की कुछ भी खबर नहीं है, कुछ भी नहीं मालूम कि मेरे पास कौन खड़ा है और क्या कह रहा है, परन्तु इसकी यह लौंडी कुछ देर से उसके पास खड़ी है और कुछ कहने की इच्छा से उसे दो-तीन बार सम्बोधन कर चुकी है.

कुछ देर बाद उसने आप-ही-आप एक लम्बी साँस लेकर सर उठाया और दरवाजे की तरफ देखने की इच्छा की. उस समय उसकी निगाह लौंडी पर पड़ी और उसने ताज्जुब के साथ उससे पूछा, "बेला, तू कबसे यहाँ खड़ी है ?"
बेला : मैं तो बड़ी देर से यहाँ खड़ी हूँ बल्कि तीन दफे आपको बुला भी चुकी हूँ.
भैयाराजा की स्त्री : हैं, तीन दफे मुझे बुला चुकी है !
बेला : जी हाँ !
भैयाराजा की स्त्री : क्या कुछ नई खबर लाई है ?
बेला :जी हाँ, मैं आपके लिए कुछ खुशखबरी लाई हूँ !

इतना कह कर बेला ने उसके हाथ में एक चीठी दे दी. यह चीठी भैयाराजा के हाथ की लिखी हुई थी जिसकी लिखावट को उनकी स्त्री अच्छी तरह पहिचानती थी चीठी देखते ही उसका कलेजा धड़कने लगा और उसने बड़ी उत्कंठा से उस चीठी को पढ़ना आरम्भ किया यह लिखा हुआ था :—
"प्राणवल्लभे,

मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि इधर बहुत दिन बीत जाने पर भी तुमसे मिल न सका, तथापि आशा है कि तीन-चार दिन में किसी-न-किसी तरह तुमसे मुलाकात करूँगा. दारोगा ने मेरे साथ जैसा बर्ताव किया है उसे मैं कदापि भूल नहीं सकता. ईश्वर ही ने मेरी जान बचाई. मेरा इस तरह गायब होना मेरे दोस्तों को बुरा मालूम होता है, वे कहते हैं कि तुम्हारा ढंग बिल्कुल ही अनुचित है और तुम्हारी भी यही राय है, परन्तु मैं देखना चाहता हूँ कि मेरे भाई साहब मेरे लिए क्या करते हैं और उनके दिल में मेरी कितनी मुहब्बत है ? पर अभी तक तो मैंने कुछ भी नहीं देखा और तबीयत को कुछ भी चैन नहीं मिला, अब भविष्य में देखा जाय कि क्या होता है. इधर मैं कई तरह की विचित्र घटनाओं का शिकार हो रहा हूँ, तथापि कुशलतापूर्वक हूँ, तुम किसी तरह की चिन्ता मत करना और कोई ऐसा बन्दोबस्त करना जिससे महाराज का और तुम सभों का डेरा खासबाग में पड़ जाये. वहाँ ही मुलाकात कर सकूँगा.

तुम्हारा--शंकर

इस चीठी को पढ़ कर भैयाराजा की स्त्री बहुत प्रसन्न हुई. उसके चित्त से एक बोझ–सा उतर गया और वह सोचने लगी कि अब मैं हर तरह से अपनी बदनामी को बचा सकूँगी, अब मुझे कलंकित करने वाला कोई भी न रहेगा. अगर हर तरह से मजबूर हो जाऊँगी तो दुश्मनों का वार बचाने के लिए इस चीठी को ढाल बनाऊँगी अन्त में उसने बेला से पूछा यह चीठी तुम्हें किसने दी ? जिसके जवाब में बेला ने कहा कि जिस आदमी ने यह चीठी तुम्हारे पास पहुँचाने के लिए मुझे दी उसे मैं नहीं पहचानती. जब मैं तुम्हारी पूजा के लिए चन्दन खरीदने बाजार गई थी तब वह आदमी मिला था. इस चीठी को हिफाजत से तुम्हारे पास पहुँचाने की ताकीद करके वह न-मालूम कहाँ चला गया.

भैयाराजा की स्त्री की लौंडियों में यह बेला लौंडी बहुत ही विश्वासपात्र थी साथ ही इसके यह बुद्धिमान और चालाक भी ऐसी थी कि राजा के महल में कोई लौंडी न थी जो किसी बात में इसका मुकाबला कर सकती. इसके अतिरिक्त इसमें बहुत अनूठा गुण यह था कि यह छोटे-बड़े सभों ही को खुश रखती और जरूरत पड़ने पर सभों ही का थोड़ा-बहुत काम कर दिया करती. यही कारण था कि बेला का काम भी बहुत जल्द निकल जाया करता और समय पड़ने पर सभी कोई इसकी मदद के लिए तैयार हो जाते.

बेला यद्यपि मजदूरनी थी मगर उसका दिल अमीराना था. खान-पान, पहिरना सभी बातों में उसकी सफाई बढ़ी-चढ़ी थी और यद्यपि उसे रुपये-पैसे की आमदनी बहुत ज्यादे थी मगर वह बटोरना या जमा करना नहीं जानती थी. जो कुछ उसके हाथ में आता सभी खर्च कर देती और इस सबब से वहाँ के सभी आदमी कुछ-न-कुछ उसके अहसान से दबे रहते थे.

यह सब कुछ था मगर वह अपने मालिक-मालकिन की बहुत ही खैरख्वाह थी और उनके साथ मुहब्बत रखती थी तथा वे दोनों भी उसे दिलोजान से चाहते थे. भैयाराजा के छिप कर इस महल में आने-जाने का हाल बेला अच्छी तरह जानती थी परन्तु इस भेद को वह भी उसी तरह छिपाये हुए थी जैसाकि उसकी मालकिन अर्थात् भैयाराजा की स्त्री. जबकि भैयाराजा का भेद बेला को मालूम था तब समझ रखिए कि दारोगा की शैतानी का हाल या जो कुछ दारोगा ने भैयाराजा के साथ सलूक किया था वह भी बेला जरूर जानती थी.

बेला की उम्र यद्यपि चालीस वर्ष के ऊपर होगी परन्तु वह काम-काज और दौड़-धूप में बड़ी मेहनती थी. आलस्य तो उसके हिस्से में था ही नहीं. बेला ने पुनः भैयाराजा की स्त्री से कहा, "रानी, मैं और लोगों की तरह तुम्हें केवल दिलासा देना और समझाना-बुझाना पसन्द नहीं करती बल्कि होशियार कर देने के लिए और तुम्हें हमेशा चौकन्ना रहने के लिए बराबर ताकीद करते रहना पसन्द करती हूँ. यद्यपि भैयाराजा की इस चीठी का आ जाना तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छा सगुन है और यह तुम्हारे लिए बहुत ही अच्छा मामला हो सकता है परन्तु फिर भी मैं कहती हूँ कि आजकल का जमाना तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है.

भैयाराजा जी न मालूम क्या समझ कर अभी तक छिपे हुए हैं और यहाँ आकर खुले मैदान कार्रवाई करना पसन्द नहीं करते, पर जहाँ तक मैं देखती और समझती हूँ उनके ऐसा करने से कम्बख्त दारोगा का जोर बढ़ता जाता है. ताज्जुब नहीं कि एक दिन भैयाराजा जी का सामना हो जाने पर वह उन्हीं को झूठा बनावे. मैंने यह भी सुना है कि वह आजकल में तुम्हें मरवा डालने की धुन में लगा हुआ है और बदनाम करने की कार्रवाई तो रोज ही किया करता है."

भैया० की स्त्री : बेला, तेरा कहना बहुत ठीक है. उनकी कार्रवाई से मैं अच्छी तरह बदनाम हो गई हूँ, दारोगा तो हम लोगों का दुश्मन ही है, उसका कहना ही क्या परन्तु अब मैं इस भेद को खोल देना ही पसन्द करती हूँ यद्यपि उन्होंने चीठी में भी ऐसा करने की इजाजत नहीं दी है.
बेला : आखिर इसमें उन्होंने लिखा क्या है ?

भैया० की स्त्री : (चीठी बेला के हाथ में देकर) ले इसे तू खुद पढ़ ले !

बेला : (चीठी पढ़ के) चाहे जो हो मगर मैं उनके इस विचार की पक्षपाती नहीं हूँ. लो इसे रक्खो बेशक, इस चीठी से तुम्हें बहुत सहायता मिलेगी. अब तो मैं इस भेद को खोल देना ही पसन्द करती हूं. आज-कल में रानी साहेबा जरूर तुमसे इस विषय में बातचीत करेंगी, मुझे ऐसा अन्दाजा मिल चुका है.

भैया० की स्त्री : खैर अगर वे इस विषय में मुझसे बातचीत करेंगी तो मैं जो कुछ कहना है साफ-साफ कह दूँगी. अच्छा तो यह बता कि इस चीठी का जवाब लिख कर मैं उनके पास भेज सकती हूँ ?
बेला : मैं भी यही चाहती थी कि उन्हें एक चीठी लिख कर यहाँ के हाल-चाल की खबर कर दी जाये मगर लाचार हूँ कि इस चीठी को लाने वाले ने जवाब का इन्तजार नहीं किया और न कुछ जबानी ही कहा-सुना, बस चीठी हाथ में देकर चलता बना. अब अगर जवाब जाय तो कहाँ और किसके हाथ जाये ? उनका कुछ पता-ठिकाना भी तो मालूम नहीं है.

भैया० की स्त्री : फिर क्या किया जाये ? (बाहर की तरफ देखती हुई चौंक कर) ले देख भाभी (रानी साहिबा) तो स्वयं यहाँ आ रही हैं. आज वे बहुत जल्द सोकर उठ बैठी हैं.
बेला : मालूम होता है वे इस समय इस विषय में तुमसे बातचीत किया चाहती हैं, भरसक तो तुम तीन-चार दिन के लिए और बचा लो अर्थात भेद खोलने से रुकी रहो, इस चीठी मे उन्होंने तीन-चार दिन में तुमसे मिलने के लिए लिखा है, इसके बाद जैसा होगा देखा जायगा. अच्छा मैं बाहर जाती हूँ.

इतना कह कर बेला कमरे से बाहर निकल गई और रानी साहिबा कमरे के अन्दर दाखिल हुईं. भैयाराजा की स्त्री को रानी साहिबा बहुरानी के नाम से सम्बोधन करती थीं इस लिए अब हम भी उसे बहुरानी के नाम से पुकारेंगे.

रानी साहिबा को देखते ही बहुरानी उठ खड़ी हुई और प्रणाम करने के बाद उन्हें अपने पलंग पर बैठा के स्वयं नीचे बैठने लगीं मगर रानी साहिबा ने उसे ऐसा करने न दिया, प्यार से उसका हाथ पकड़ कर अपने पास बैठा लिया और इस तरह उन दोनों में बातचीत होने लगी.

इस जगह हम इतना कह देना जरूरी समझते हैं कि इन दिनों महल में प्रायः सभी आदमी बहुरानी पर दोषारोपण करते थे परन्तु रानीसाहिबा उसे बहुत चाहती और प्यार करती थीं तथा उनका दिल बहुरानी को कलंकित करने का साहस नहीं करता था.

रानी : बहुरानी, तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना चाहती और प्यार करती हूँ, और यह भी तुमसे छिपा हुआ न होगा कि आजकल तुम्हारे विषय में लोगों का खयाल कैसा हो रहा है, क्योंकि कई दफे किसी आदमी को कमन्द के सहारे तुम्हारे कमरे में आते-जाते कई लोगों ने देखा.

बहु० : मैं जानती हूँ कि महल में मुझे मानने और प्यार करने वाला अगर कोई है तो सिवाय आपके दूसरा नहीं. साथ ही इसके लोगों का दिल भी जिस तरह मेरी तरफ से फिर रहा है उसे भी खूब समझती हूँ. यदि आपकी कृपा मेरे ऊपर न होती तो न मालूम अब तक लोग मुझे किस दर्जे को पहुँचा चुके होते. यद्यपि इस विषय में आपने अभी तक मुझसे कुछ नहीं पूछा है तथापि मैं शपथपूर्वक सच-सच आपसे कहती हूँ कि मैं व्याभिचारिणी नहीं हूँ, पापिनी नहीं हूँ. और मुझ पर बदचलनी का धब्बा नहीं लग सकता. यद्यपि यह सच है कि मेरे पास एक आदमी कई दफे आ चुका है परन्तु वह आदमी ऐसा नहीं है कि मेरे पास आने लायक न हो अथवा उसके आने से मैं किसी तरह बदनाम हो सकूँ. वह भेद अब बहुत दिनों तक छिपा न रहेगा, पाँच-चार दिन के अन्दर ही आप-से-आप खुल जायगा और तब आपको मालूम होगा कि मैं कहाँ तक सच्ची हूँ.

रानी : (आश्चर्य के साथ) क्या तुम्हारे पास आने वाला कोई ऐसा आदमी है जिसे मैं जानती हूँ ?
बहु० : बेशक आप जानती हैं उसे लड़के समान मानती तथा प्यार करती हैं, चार-पाँच दिन के अन्दर ही आप पर यह भेद खुल जायगा.

रानी : ओफ, तुम्हारे इस कहने से मेरी उत्कंठा और भी बढ़ गई ! चार-पाँच दिन तक सब्र करना मेरे लिए बड़ा ही कठिन है खास करके ऐसी अवस्था में जबकि वह भेद तुम्हें मालूम है और तुम हर तरह से मेरी दिलजमयी कर सकती हो. अगर तुम मुझ पर भरोसा रखती हो और मेरी तरह तुम भी मुझे प्यार करती हो तो मुझसे तुम्हें छिपाने की जरूरत नहीं है. इस बात का मैं तुमसे वादा करती हूँ कि तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध मैं यह भेद किसी पर प्रकट न करूँगी, जब तक तुम न कहोगी इसे दिल की तह में छिपाये रहूँगी, लो अब तुम यह बता दो कि यह मामला क्या है.

बहु० : (कुछ सोच कर) लाचार हूँ कि आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं जिद नहीं कर सकती परन्तु चाहती यही थी कि अपने पति की आज्ञा का पालन करूं और स्वयं इस भेद को अपने मुँह से न खोलूँ.
रानी : (आश्चर्य से) तो क्या यहाँ तुम्हारे पास आने वाले भैयाराजा ही हैं ?

बहु०: जी हाँ. अब इस भेद का छिपाना मैं आप ही के सुपुर्द करती हूँ, यद्यपि मैं स्वयं इसके विरुद्ध हूँ और नहीं समझ सकती कि ऐसा करने में उन्होंने क्या फायदा समझ रक्खा है, अगर कुछ फायदा है तो यही कि व्यर्थ मैं बदनाम होती हूँ.

रानी : बेशक उन्होंने यह काम अच्छा नहीं किया. तुम देखती हो कि उनके गम में उनके भाई की क्या दशा हो रही है ! चन्द ही दिनों में कैसे दुबले हो गए हैं ! भला यह भी कुछ तुम्हें मालूम है कि उनके गायब होने का कारण क्या है ?

बहु० : हाँ मालूम है. दारोगासाहब उनका जीते रहना पसन्द नहीं करते और उन्हें मार डालने कि फिक्र में लगे थे. एक दिन मौका पाकर दारोगा ने उन्हें अपने खयाल से मार कर जमीन के अन्दर अपने मकान में दफना दिया मगर उनके किसी दोस्त ने उन्हें वहाँ से निकाल कर उनके बदले में दूसरा आदमी वहाँ गाड़ दिया. ईश्वर की मर्जी थी कि उनकी जान बच गई. दारोगा को इस बात की कुछ भी खबर नहीं, क्योंकि शायद ही उसने वह लाश निकाल कर देखी हो या उसे कुछ सन्देह हुआ हो. यही सबब है कि वे भूत बन कर एक दफे भाईजी (राजा साहब) को दिखाई दिये थे और राजा साहब को उन्होंने लिख कर बता भी दिया था कि 'मुझे दारोगा ने मार डाला है'.

रानी : (आश्चर्य और क्रोध से) जो कुछ तुम कहती हो बेशक सच होगा, मैं उस कम्बख्त दारोगा की बदमाशी को खूब जानती हूँ. मगर बड़े ही दुःख की बात है कि राजा साहब को उसने वश में कर रक्खा है और वे उसे पूरा योगी और महात्मा ही समझे बैठे हैं. सबूत देने पर भी वे दारोगा को बुरा न समझेंगे और बिना सबूत के दारोगा के विषय में किसी की जुबान हिलाने की ताकत ही कहाँ है. लेकिन अब जो यह सब हाल अगर राजा साहब से कह दूँ तो वे मुझे और तुझे कदापि सच्चा न समझेंगे इसलिए इस भेद को अभी छिपाये रखना उचित है.

खैर देखूँगी कि कम्बख्त दारोगा कहाँ तक साधू और महात्मा बनता है, दस-पाँच दिन के बाद मौका देख कर मैं गोपाल (कुँअर गोपालसिंह) से बातचीत करूँगी, वह बेचारा भी अपने बाप की बदौलत धोखे में पड़ा हुआ है. अच्छा यह तो बता कि आजकल भैयाराजा कहाँ हैं और किस फिक्र में हैं ! क्या इन दिनों यहाँ आए थे ?

बहु० : नहीं, वे तो उस दिन के बाद फिर कभी नहीं आए जिस दिन उनके आने के कारण पिछले नजरबाग में कोलाहल मचा हुआ था. वह भी दारोगा ही का काम था ! हाँ आज उनकी एक चीठी आई.
रानी : क्या वह चीठी मैं देख सकती हूँ ?
बहु० : हाँ-हाँ देखें, (चीठी देकर) आपसे भला मैं क्यों छिपाने लगी ?

रानी : (चीठी पढ़ कर) खैर, इस चीठी को पढ़ कर मुझे यह तो ढाढ़स हुई कि बेचारे भैयाराजा अभी तक कुशलपूर्वक हैं, नहीं तो उनके विषय में कैसे-कैसे बुरे गुमान पैदा होते थे ! बहुरानी, तू बेशक सच्ची साध्वी है, मुझसे कसूर हुआ कि मैंने तुझ पर शक किया. पहिले-पहिल जब मुझे इस बात की खबर लगी कि तेरे पास कोई आदमी छिप कर आता है तो मारे गुस्से के मैं जल-भुन कर कबाब हो गई, बिना कुछ सोचे-विचारे महाराजा को भी इस बात की खबर कर दी और उस समय तो मेरे रंज का कोई हद न रहा जब जाँच करने पर यह बात सच निकली, राजा साहब को भी इस बात का बड़ा ही दुःख हुआ, मगर अब मैं अपनी भूल पर पछताती हूँ. इसमें कोई सन्देह नहीं कि मैं तुमसे मुहब्बत रखती हूँ और यह भी सबब है कि अपनी भूल साफ-साफ बता देती हूँ, छिपाने और बात बनाने की कोई जरूरत नहीं समझती.

मगर अब मुझे इस बात की फिक्र पड़ गई कि महाराज का आईना रूपी दिल किस तरह साफ किया जाय जो कि तेरी तरफ से गंदला हो गया है और कम्बख्त दारोगा दिनों दिन उसकी गंदगी और भी बढ़ा रहा है.
इस भेद को खोल कर दारोगा पर जुर्म लगाना भी इस समय उचित नहीं जान पड़ता, कदाचित् वादे के मुताबिक भैयाराजा यहाँ न आये तो हम लोग सुफ्त में झूठे और बेईमान ठहराये जायेंगे और दारोगा को इस बात का और भी मौका लग जायगा कि हमारे सीधे-सादे महाराज को हम लोगों की तरफ से भी रंजीदा कर दे.

बहु० : आपका विचार बहुत ठीक है, पर मैं क्या कहूँ मेरी तो कुछ अक्ल ही काम नहीं करती. जो कुछ ठीक-ठीक बात थी वह मैंने आपसे साफ-साफ कह दी, अब जो आप मुनासिब समझें करें.
रानी : अच्छा यह चीठी किसके हाथ आई है ? इसका जवाब तूने दिया है या नहीं ?

बहु० : बेला मेरे लिए चन्दन खरीदने बाजार गई थी, वहाँ ही एक आदमी ने उसे यह चीठी देकर मेरे पास पहुँचाने की ताकीद की और बिना कुछ जवाब पाये जल्दी के साथ वहाँ से चला गया. मैं नहीं समझ सकती कि इसका जवाब उन्हें क्योंकर दिया जाय. खैर आप कोई ऐसा बन्दोबस्त कर दें जिसमें हम लोगों का और महाराज का डेरा कुछ दिन के लिए खासबाग[1] में चला जाय फिर जो कुछ होगा देखा जाएगा.

रानी : यह कौन बड़ी बात है, आज ही मैं इसका बन्दोबस्त करती हूँ और आशा है कि कल हमलोग खासबाग ही में दिखाई देंगे. वहाँ अगर भैयाराजा से मुलाकात होगी तो उन्हें समझाना चाहिए कि 'दारोगा से बदला लेने के लिए तुम्हारा ढंग समयानुकूल नहीं है. तुम तो घर के सरदार ठहरे, तुम्हें तो खुल्लमखुल्ला दारोगा का मुकाबला करना चाहिए.'

बहु० : अबकी दफे अगर वहाँ उनसे मुलाकात हुई तो मैं जरूर आपका सामना कराऊँगी, आप उन्हीं की जुबानी सुनेंगी कि दारोगा ने उनके साथ कैसा बर्ताव किया था.

रानी : मैं बहुत खुश होऊँगी अगर तुम मुझे उनसे मिलवाओगी, कम्बख्त दारोगा को मैं अच्छी तरह पहिचान गई हूँ.

---

१. खासबाग का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है, यह वही बाग है जिसमें मायारानी रहा करती थीं.

जब तक इस कम्बख्त को सजा न दी जायगी मेरे जी को चैन न पड़ेगा. आज दामोदरसिंह ने अपनी स्त्री को मेरे पास भेजा था और बहुत ही गुस रखने की ताकीद करते हुए यह कहला भेजा है कि —'दारोगा से होशियार रहना, वह तुमको और बहुरानी को मार डालने की फिक्र में है और चाहता है कि बलभद्रसिंह की लड़की से गोपालसिंह की शादी न होने पावे'.

बहु० : मुझे भी उड़ती हुई यह खबर लगी है.

रानी : खैर जो कुछ होगा देखा जाएगा, जितने दिन की जिन्दगी विधाता ने हम लोगों को दे रक्खी है उतने दिन तो कोई मारने वाला नहीं है और इसके अलावे जो कोई जैसा करेगा वैसा फल पावेगा.

बहु० :ईश्वर हमारा सहायक है, आप किसी तरह की चिन्ता न करें. आप खासबाग में चलने की फिक्र करें फिर जैसा होगा देखा जायगा.

रानी : कल हम लोग जरूर खासबाग में चले जायेंगे. कुछ सामान वगैरह लादने की जरूरत तो नहीं है कि तरद्दुद करना पड़ेगा, जिस तरह यहाँ सब दुरस्त है उसी तरह वहाँ भी किसी चीज की कमी नहीं है.

इसके बाद थोड़ी देर तक और भी इन दोनों में बातें होती रहीं तब अन्त में रानी साहिबा के इच्छानुसार महाराज ने भी खासबाग में जाना स्वीकार किया और दूसरे दिन प्रातःकाल खासबाग ही में महाराज का दरबार हुआ. बहुरानी और रानी साहिबा भी खासबाग में अपने-अपने ठिकाने जा बिराजीं जहाँ वे सब प्रायः रहा करती थीं.

उस दिन तो कुछ नहीं मगर दूसरे दिन सूर्य उदय होते ही रानी साहिबा और बहुरानी को यह खबर लगी कि आज चौकबाजार में दारोगा साहब ठीक चौमुहानी पर बेहोश पाये गए. एक कान कटा और मुँह में कालिख लगी हुई तथा गले में पुराने जूतों का हार पड़ा हुआ था. होश में आने के बाद उसी सूरत में महाराज के पास चले आ रहे हैं.

[१४]

देखते-ही-देखते भैयाराजा और भूतनाथ को कई दुश्मनों ने आकर घेर लिया और उन पर वार करना शुरू किया. मगर वाह रे भूतनाथ ! जिस तरफ तलवार घुमाता हुआ टूट पड़ता था उस तरफ दुश्मनों के दिल भी टूट जाते थे. यद्यपि भूतनाथ के बदन पर कई जख्म लगे परन्तु पाँच आदमियों को उसने बेकार कर जमीन पर सुला दिया. भैयाराजा की तो बात ही न्यारी थी, उनकी तिलिस्मी तलवार की बदौलत जो दुश्मन उनके सामने आया वही जख्मी और बेहोश होकर जमीन पर जा रहा और किसी को तनोबदन की खबर न रही, मगर भैयाराजा का भी बदन जख्मी होने से बचा न रहा.

अब पुनः उस मैदान में केवल भूतनाथ और भायाराजा दिखाई देने लगे. यद्यपि इस समय उन्होंने अपने दुश्मनों पर फतह पाई थी मगर इन दोनों का शरीर भी थकावट से चूर-चूर हो रहा था. एक तो सफर की हरारत दूसरे दुश्मनों से लड़ाई होने के कारण ये दोनों ऐसा थक गए कि अब तलवार क्या हाथ हिलाना कठिन-सा हो गया था, साथ ही इसके दिल में दुश्मनों की तरफ से बेफिक्री भी नहीं होती थी, यह सोचते थे कि शायद और दुश्मनों का सामना हो जाय तो मुश्किल होगी क्योंकि अब रात हो गई है जिसके कारण दुश्मनों का वार बचाना और कठिन हो जाएगा.

भैयाराजा और भूतनाथ दोनों आदमी एक पेड़ के नीचे बैठ गए और तरह-तरह की बातें सोचने लगे.
भैया० : भूतनाथ, मैं इस समय तुमसे पुनः एक सवाल किया चाहता हूँ.
भूत० : कहिए.
भैया० : तुम ठहरे दारोगा साहब के दोस्त, चाहे वह दोस्ती जाहिरदारी और खुदगर्जी ही के साथ क्यों न हो, मगर मैं हूँ दारोगा साहब का दुश्मन क्योंकि उसने मुझे मार डालने में किसी तरह की कसर नहीं उठा रक्खी थी और इस बात को तुम भी जानते हो क्योंकि उसके सहायक ही थे, या यों भी कह सकते हैं कि तुम्हारी ही मदद करते हुए दारोगा को मेरे साथ दुश्मनी करने की जरूरत आ पड़ी....

भूत० : (बात काट कर) अब आप कृपा कर इन सब शर्मिन्दा करने वाली बातों को जाने दीजिए, मैंने जो कुछ किया वह आपसे छिपा नहीं है. मैं खुद कह चुका हूँ कि मुझ-सा पापी और पतित इस दुनिया में कोई दूसरा न होगा. भविष्य के लिए अपना रास्ता बदलने की कसम खाता हुआ आप से माफी माँग चुका हूँ और आपने मुझे माफी देकर अपना बना लिया है, अस्तु अब पुनः जब तक आप मुझे पाप करते हुए न देखें या सुनें तब तक आपको ऐसी बात...

भैया० : (बात काटते हुए) नहीं-नहीं भूतनाथ, मेरे इस कहने का यह मतलब नहीं है कि तुम्हें उन सब बातों की याद दिला कर शर्मिन्दा करूँ, तुम मेरी बात तो पूरी तरह सुन लो !
मैं कहता हूँ कि तुम अभी दारोगा से दोस्ती रक्खा चाहते हो और मैं उससे बदला लेने की फिक्र में हूँ, ऐसी अवस्था में अगर ऐसे समय दारोगा से मुलाकात हो जाय तो तुम उसके साथ कैसा सलूक करोगे ? क्योंकि ताज्जुब नहीं कि यह कार्रवाई दारोगा की तरफ से की गई हो, ये सब उसी के आदमी हों, और यहां खुद उससे मुलाकात भी हो जाय, मेरा दिल घड़ी-घड़ी इन्हीं बातों की तरफ से ढुलकता है.

भूत० : जमना और सरस्वती के विषय में निःसन्देह दारोगा ने मेरी मदद की थी जिसके लिए मुझे उसका शुक्रगुजार होना चाहिये था मगर अब जबकि मैंने अपना रास्ता बदल दिया तो अपने पहिले के पाप कर्म में साथ रहने वाले पापी साथियों के साथ भाईचारे का बर्ताव नहीं कर सकता. यद्यपि किसी कारण से मैं उसके साथ जाहिरदारी का बर्ताव कर रहा हूँ सही, मगर अब तो मुझे उसकी भी जरूरत न रही क्योंकि अब न तो मुझे जमना, सरस्वती इत्यादि के साथ दुश्मनी करनी है और न उससे कुछ काम लेने की जरूरत ही जान पड़ती है, मैंने तो अब अपने को दयामय परमात्मा के भरोसे छोड़ दिया है और आपकी शरण में आ गया हूँ, जो कुछ होनी हो सो हो, मैं आपका ताबेदार हूँ, आप जो आज्ञा देंगे वही करूँगा.

भैया० : खैर तुम्हारी तरफ से दिलजमई तो हो ही चुकी थी अब पुनः हो गई मगर अफसोस यह है कि इन्द्रदेव ने हजार दुःखी होने पर भी अभी तक दारोगा के साथ कोई खोटा बर्ताव नहीं किया. मैं इन्द्रदेव के विरुद्ध कोई काम न करूँगा.

भूत० : बेशक ऐसा ही है, मुझे भी इन्द्रदेव का ख्याल है और साथ ही इसके दारोगा की जात से दयाराम का पता लगाना भी जरूरी है.

भैया० : (चौंक कर) वह देखो सामने से रोशनी कैसी आ रही है ?
भूत० : कोई आदमी लालटेन लिए हुए इसी तरफ आ रहा है.

भैया० : क्या इसे अपना दुश्मन समझें ?
भूत० : ऐसे मौके पर दोस्त की उम्मीद कब हो सकती है और अगर हो भी तो हमें अपनी तरफ से होशियार ही रहना चाहिए. उसका साथी कोई मालूम नहीं पड़ता, चलिए हम लोग आगे चलें.

यद्यपि ये दोनों आदमी बहुत सुस्त हो रहे थे तथापि हिम्मत करके उठ खड़े हुए और म्यान से तलवार निकाले हुए उस तरफ बढ़े जिधर वह आदमी लालटेन लिए आ रहा था. अँधेरा क्षण-क्षण में बढ़ता जाता था और इस आदमी के बदन की हरकत दिखाई नहीं पड़ती थी फिर भी वह तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ बेखौफ इनके पास आ पहुँचा और बोला—

आदमी : भैयाराजाजी, दुश्मनों के घर में भी अक्सर दोस्त दिखाई दे जाया करते हैं, देखिए मेरे हाथ में सिवा लालटेन के और कोई हर्बा नहीं है, कहिए इस लालटेन का और मुझ 'मेघराज' का आप मुकाबला कर सकते हैं ?

भैया० : (उत्साह से भरी हुई आवाज में) जब तक 'मेघराज' गरजेंगे नहीं तब तक मैं मुकाबिला करने के लिए तैयार हूँ. आओ मेरे प्यारे दोस्त, तुम खूब आये और अच्छे मौके पर आये, शायद इस जगह तुम कुछ मेरी मदद कर सको.

मेघ० : बेशक मैं आपकी मदद कर सकता हूँ, एक नहीं अगर आपके हजार दुश्मन भी यहाँ आ जायें तो मैं अकेला उनसे आपको बचा सकता हूँ.

इतना कह कर मेघराज ने अपना अंग झटकारा और उसके तमाम बदन से खौफनाक चिनगारियाँ निकलने लगीं जिसे देख कर भूतनाथ हैरान हो गया बल्कि डर कर कई कदम पीछे की तरफ हट गया. इसके बाद मेघराज ने सिर्फ भूतनाथ को दिखाने की नीयत से लालटेन ऊँची की जिससे उसके तमाम बदन की अवस्था साफ-साफ दिखाई देने लगी. भूतनाथ ने देखा कि वह बहुत ही बारीक सुनहरी तार से बना हुआ सुन्दर कवच पहिरे है और वह कवच ऐसी खूबी के साथ बना हुआ है कि हाथ-पैर और उंगलियाँ इत्यादि कुछ भी हिलाने से किसी तरह अंडस नहीं मालूम पड़ती. उसी ढंग के बनावट की एक टोपी भी उसके सर पर थी जिसके पिछली तरफ की झालर गरदन के नीचे तक लटक रही थी, जिससे उसकी गरदन पर भी कोई हर्बा काम नहीं कर सकता था. केवल इतना ही नहीं कि उसने इस कवच से अपने बदन को रक्षित कर रक्खा था, वह चाल-ढाल और रंग-ढंग से भी बहादुर मालूम होता था तथा बदन से कसरती और गठीला जान पड़ता था. मेघराज ने लालटेन नीचे करके पुनः भैयाराजा से कहा—

मेघ० : मैं इत्तिफाक से ही यहाँ आ पहुँचा हूँ, मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि आपके दुश्मन यहाँ आए हुए हैं और उन्होंने आपको फँसाने के लिए यहाँ कोई कार्रवाई कर रक्खी है अथवा आप यहाँ आकर दुश्मनों से घिर गये हैं. मुझे तो ईश्वर ने अकस्मात् ही यहाँ पहुँचा दिया. मैं उतरती समय पहाड़ के ऊपर से आप लोगों की लड़ाई देख रहा था और जल्द-से-जल्द आपके पास पहुँचने की कोशिश कर रहा था परन्तु रास्ता ऐसा खराब है कि हजार कोशिश करने पर भी समय पर आपके पास पहुँच न सका कि आपकी मदद करता, तथापि मैं जानता था कि आपके पास तिलिस्मी तलवार मौजूद है, सिर्फ इतने दुश्मन आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते और इस सबसे मुझे ढाढ़स बँधी थी.

मैं परसों से इन लोगों को यहाँ आते-जाते देख रहा हूँ मगर कुछ समझ में नहीं आता था, और इस समय भी मैं इन्हीं लोगों को देखने आ रहा था, आपको शायद यह बात मालूम न हुई होगी कि यह कार्रवाई आपके दारोगा साहब की है और यह सब आदमी भी उसी के हैं.

भैया० : (आश्चर्य से) हा ! क्या यह सब आदमी दारोगा के हैं ?

मेघ० : जी हाँ, ये सब उसी शैतान के आदमी हैं, बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह खुद भी इन्हीं में कहीं बेहोश पड़ा हुआ हो. इस लालटेन से सभी की सूरत देखने पर मालूम होगा.
भैया० : तो देखना चाहिये वह यहाँ है या नहीं, तुम जानते ही हो कि जब तब मैं इन लोगों को होश में न लाऊँ तबतक सब स्वयं चैतन्य नहीं हो सकते.

मेघ० : हाँ, मैं इस बात को और आपकी तिलिस्मी तलवार की तासीर को खूब जानता हूँ !
भैया० : अच्छा कुछ यह भी बता सकते हो कि हमारे दुश्मनों में से कोई और भी है या बस इतने ही थे जो इस समय यहाँ जख्मी और बेहोश पड़े हुए हैं.

मेघ० : मैं बिना तहकीकात किए नहीं कह सकता, खैर चलिए अपने बेहोश दुश्मनों की सूरत देखिये, यहाँ अगर कोई होगा भी तो हमारा क्या कर लेगा ?

इतना कहकर लालटेन लिये हुए मेघराज आगे बढ़ा और उसके पीछे-पीछे भैयाराजा तथा भूतनाथ चलने लगे. भूतनाथ को मेघराज के विषय में बड़ा आश्चर्य था और यह जानने के लिए उसका दिल बहुत ही बेचैन हो रहा था कि यह मेघराज कौन है ? इस बात को वह जरूर समझ गया था कि भैयाराजा उसे देखते ही पहिचान न सके इसलिए उसने बात के इशारे ही में अपना परिचय दिया और भैयाराजा ने भी इशारे ही में परिचय देकर अपने को प्रकट किया. इसमें तो कोई शक नहीं कि यह भैयाराजा का दोस्त है मगर कौन है सो मालूम नहीं होता.

लालटेन की रोशनी में भैयाराजा ने सभी दुश्मनों की सूरतें देखीं और उनमें से कइयों को पहिचाना भी. उन्हीं के बीच में दारोगा साहब भी पाये गये जो कि भैयाराजा की तिलिस्मी तलवार से जख्मी होकर बेहोश हो गये थे.
इस काम से निश्चिन्त होकर तीनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर बातचीत करने और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए.

उस समय भूतनाथ ने मौका पाकर मेघराज के विषय में भैयाराजा से पूछा कि "यह कौन हैं ? यदि कोई हर्ज न हो तो आप मुझे इनका परिचय दीजिए". इसके जवाब में भैयाराजा ने भूतनाथ से कहा, "मैं लाचार हूँ कि इन (मेघराज) की इच्छा के विरुद्ध इनका परिचय तुम्हें नहीं दे सकता, ये अगर मुनासिब समझेंगे तो अपना परिचय खुद ही तुम्हें देंगे."

भैयाराजा का जवाब पाकर भूतनाथ चुप हो रहा और फिर उसे मेघराज के विषय में कुछ पूछने की हिम्मत न पड़ी.
भैया० : (मेघराज से) अब बेहोश दुश्मनों के बारे में आपकी क्या राय होती है ? इनके साथ क्या सलूक करना चाहिए ?

मेघ० : यह बात आपकी मर्जी पर है, जो आप मुनासिब समझें करें.
भैया० : मैं तो यही चाहता हूँ कि इन सभी को कहीं पर कैद कर दूँ मगर मेरे पास कोई जगह इस योग्य नहीं है.

मेघ० : ठीक है परन्तु यह भी आप जानते हैं कि अपने यहाँ भी मैं इन सभी को नहीं रख सकता अस्तु बेहतर होगा कि इन सभों को कुछ सजा देकर छोड़ दिया जाय, दारोगा के लिए भी इस समय यही मुनासिब होगा.

भैया०: आप ठीक कहते हैं. इन सभों की नाक-कान काट कर छोड़ दिया जाय और दारोगा कम्बख्त का सिर्फ दाहिना कान थोड़ा-सा काट कर उसे जमानिया सदर बाजार के चौमुहाने पर रख दिया जाय जिसमें वहाँ के सभी आदमी अपने राजा के वजीर को ऐसी हालत में देख कर खुश हों. (भूतनाथ की तरफ देख कर) मैं तो यही मुनासिब समझता हूँ, कहिए आपकी क्या राय है ?

भूत० :सजा तो बहुत अच्छी तजवीज की गई है. जबकि आप इस दारोगा का सरे दरबार मुकाबला किया चाहते हैं तो अभी इसे कत्ल करने की जरूरत नहीं है. हुक्म दीजिए तो मैं शुरू करूँ ?

भैया० : हाँ, अब देर करने की जरूरत नहीं है, इन सभों के कान-नाक काट कर दुरस्त करो. इनके हर्बे भी ले लेने चाहिये."

भैयाराजा का हुक्म पाते ही भूतनाथ ने कार्रवाई शुरू कर दी, तलवार से सभों के नाक-कान काट डाले और अन्त में दारोगा का भी थोड़ा-सा दाहिना कान काटने के बाद अपने ऐयारी के बटुए में से स्याही निकाल कर खूब अच्छी तरह उसका मुँह काला किया और रंग-रोगन भी लगा कर उसकी विचित्र सी सूरत बना दी, इसके बाद एक घोड़े पर उसे कस के कमन्द से अच्छी तरह बाँध दिया.

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस मैदान में डाकुओं के कई घोड़े भी मौजूद थे, उन्हीं में से एक पर भूतनाथ ने दारोगा को कसा और भैयाराजा से कहा, "अब यहाँ से चलती समय इसको अपने साथ ले चलेगें और रात को मौका देख कर जमानिया के चौमुहाने पर छोड़ देंगे".

भैया० : ठीक है, (मेघराज से) यहाँ आने का रास्ता तो बहुत ही टेढ़ा और खराब है, ताज्जुब नहीं कि लौटती समय हम लोग रास्ता भूल जाये. क्या यहाँ के रास्ते को बन्द भी कर दिया जा सकता है ?

मेघ० : जी नहीं यह तो एक खुली घाटी है, सिर्फ यहाँ आने का रास्ता पेचीदा और भयानक होने के कारण कोई इस जगह आता नहीं, हाँ इतना जरूर है कि यह घाटी किसी तिलिस्मी घाटी के साथ मिली हुई है और तिलिस्म से भी कुछ सम्बन्ध रखती है.शायद दारोगा को यहाँ का हाल मालूम है, आपको नहीं यद्यपि सरजमीन आप ही के राज्य में है.

भैया० :बेशक यहाँ का हाल मुझे कुछ मालूम नहीं.

मेघ० :मेरा इरादा था कि मैं आज भर के लिए आप लोगों को यहाँ रोक लेता जिससे आपकी थकावट रात-भर आराम करने से अच्छी तरह मिट जाती और कुछ भोजन भी कर लेते. मैं यहाँ बहुत जल्द आप लोगों के खाने-पीने का इन्तजाम कर सकता हूँ.

भैया० :अगर ऐसा हो सके तो क्या ही अच्छी बात है, मैं भी यही चाहता हूँ. कि कुछ भोजन और बेफिक्री के साथ आराम करने का इन्तजाम हो जाता और इसके पहिले मैं स्नान भी कर लेता, मगर खौफ यही है कि कहीं और भी दुश्मन लोग यहाँ न आ जायें.

मेघ० : अब दुश्मनों के यहाँ आने का आपको खयाल ही क्यों होता है. मेरी मौजूदगी में दो-चार सौ दुश्मन भी आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते और अगर यह समझिये कि और लोग आकर आपके इन दुश्मनों को छुड़ा कर ले जायेंगे तो इनके लिए भी जो कुछ आप किया चाहते थे कर चुके, अब चाहे ये सब खुद-ब-खुद चले जायें या इन्हें कोई इनका दोस्त यहाँ आकर ले जाय. काम केवल इतना बाकी है कि दारोगा को जमानिया बाजार के चौमुहाने पर पहुँचा देना, सो इस काम में यदि विघ्न भी पड़ जाय तो आपका कोई हर्ज नहीं है.

भैया० :(कुछ सोच कर) अच्छा फिर जैसा आप कहें किया जाय.
मेघ० : बस यही ठीक होगा कि आप दोनों आदमी मेरे डेरे पर चलें और दारोगा को जो घोड़े पर लाद दिया गया है उतार कर एक गुफा में, जो मैं आपको बताऊँगा रख दें, फिर जाती समय पुनः घोड़े पर लाद दिया जाएगा.

इतना कह कर भूतनाथ को साथ ले मेघराज ने दारोगा को घोड़े पर से उतारा और गुफा में जो वहाँ से थोड़ी दूर पर थी रख कर उसका मुँह पत्थर से ढाँक दिया. उसी समय किसी चीज की रोशनी उस मैदान में घूमती हुई दिखाई दी जिसे देखते ही मेघराज चैतन्य हो गया. अपनी लालटेन का खटका उसने दबाया साथ ही एक मोटा शीशा लालटेन के मुँह पर आ गया जिसके कारण रोशनी तेज हो गई और दूर तक जाने लगी. मेघराज भी अपनी लालटेन की रोशनी इस तरह पहाड़ पर दौड़ाने और घुमाने लगा मानों उस पहिली रोशनी का जवाब देता हो. पहिले की आई हुई रोशनी उस सरजमीन पर अजीब ढँग से घूमती थी और मेघराज अपनी लालटेन की रोशनी से उसका जवाब देता था. पास में खड़ा हुआ भूतनाथ बड़े आश्चर्य से इस तमाशे को देख रहा था.

भूतनाथ ने यह तो जरूर समझ लिया कि मेघराज रोशनी का जवाब रोशनी से दे रहा है. वह कोई मेघराज का साथी है जिसने यहाँ लालटेन की रोशनी पहुँचाई है, वह रोशनी के इशारे से बात करता है और मेघराज उसका जवाब देता है, परन्तु हजार अक्ल दौड़ाने पर भी भूतनाथ को इस बात का पता न लगा कि उन दोनों में रोशनी के इशारे से क्या बातें हो रही हैं या किस तरह के अक्षर बनाये जा रहे हैं.

आधे घण्टे से ज्यादे देर तक मेघराज इस काम में लगा रहा, इसके बाद वह रोशनी गायब हो गई और मेघराज ने भी लालटेन से रोशनी देना बन्द करके अपनी लालटेन का खटका दबा कर फिर पहिले की तरह दुरुस्त कर लिया.
मेघ० : (भैयाराजा से) अच्छा तो अब आप दोनों आदमी मेरे पीछे चलें, मैं आपको अपने मकान पर ले चलूँ.

भैया० : मैं चलने के लिए तैयार हूँ मगर यह तो बताओ कि इस लालटेन की रोशनी से तुम किस आदमी के साथ बातचीत कर रहे थे और क्या बात की.
मेघ० : अभी इसका जवाब न दूँगा, समय पर स्वयं मालूम हो जायगा.
भूत० : उस वक्त मालूम हो जायगा जबकि सुनने के लिए मैं आपके साथ न रहूँगा ?

मेघ० : (भूतनाथ से) हाँ जी गदाधरसिंह, बेशक यही बात है. तुम्हारे सामने अपना भेद प्रकट करते डर मालूम होता है. भैयाराजा ने तुम पर भरोसा कर तुम्हें अपना लिया हो मगर अन्य आदमियों की इतनी हिम्मत कहाँ कि तुम पर भरोसा करें.
भूत० : निःसन्देह मैं अपने कर्मों की बदौलत ऐसा ही जवाब सुनने के योग्य हूँ.

मेघ० : आप खफा न हों, मेरा मतलब यह नहीं कि मैं अपनी बातों से आप को रंज पहुँचाऊँ. आजकल जमाने का ढंग ऐसा हो रहा है कि किसी को किसी पर भरोसा करने का साहस नहीं होता.
भूत० : है तो ऐसा ही, खैर चलिए आप अपना काम कीजिये.

"मेरे पीछे-पीछे चले आइये" इतना कह कर मेघराज आगे बढ़ा और भैयाराजा तथा भूतनाथ उसके पीछे-पीछे रवाना हुए. तमाम मैदान खतम करने के बाद पहाड़ी के ऊपर चढ़ने की नौबत आई. रात का समय होने से यद्यपि चढ़ने में तकलीफ होती थी, मगर फिर भी लालटेन से सहारा पाते हुए ये दोनों आदमी बराबर चले गये और लगभग पौन-कोस रास्ता चलने के बाद एक गुफा के मुँह पर पहुँचे जिसमें आदमी खड़ा होकर बखूबी जा सकता था.

दोनों आदमियों को साथ लिए हुए मेघराज उस गुफा के अन्दर चला. रास्ता बहुत ही पेचीदा और घूम-घुमौआ था तथा चढ़ाई की तरह चला गया था. लगभग चौथाई कोस चले जाने के बाद ये तीनों आदमी बाहर मैदान में निकले और पुनः कुछ दूर चलने बाद दूसरी गुफा के अन्दर घुसे मगर उसमें ज्यादे दूर जाना न पड़ा, कुल दो-ढाई सौ कदम जाने के बाद एक बन्द दरवाजा मिला जिसे मेघराज ने किसी गुप्त रीति से खोला और अपने दोनों साथियों को अन्दर कर लेने के बाद पुनः दरवाजा बन्द कर दिया. ध्यान लगाये रहने पर भी भूतनाथ को दरवाजा खोलने और बन्द करने का ढंग मालूम न हो सका.

अब ये तीनों आदमी एक ऐसे कमरे में पहुँचे जिसकी लम्बाई बीस गज और चौड़ाई दस गज के करीब होगी. कमरे में सभी तरह का सामान, जिसकी जरूरत आदमी को रोज ही पड़ सकती है, मौजूद था. कमरे के एक तरफ सुन्दर फर्श बिछा हुआ था जिस पर दस-बारह आदमी बखूबी आराम कर सकते थे. सामने की तरफ तीन दरवाजे थे जिनमें से इस समय एक दरवाजा खुला हुआ था जिसकी राह मेघराज अपने दोनों साथियों को कमरे के बाहर ले गया.

अब ये तीनों आदमी एक छोटे-से बाग में पहुँचे जो जंगली गुलबूटों और क्यारियों के बदौलत बहुत ही भला मालूम पड़ता था. पूरब तरफ से उदय होकर चन्द्रदेव कुछ ऊँचे हो अपनी चाँदनी फैलाने लग गये थे जिससे उस बाग पर और भी जोबन चढ़ रहा था और दिखाई दे रहा था कि यह पहाड़ी बाग तीन तरफ से ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से घिरा हुआ है.

उन पहाड़ियों पर कई सुन्दर-सुन्दर मकान और बँगले बने हुए थे जिनमें से चार या पाँच बंगलों के आगे तेज और चाँद का मुकाबला करने वाली सफेद रोशनी हो रही थी जिससे वहाँ की सरसब्ज जमीन पर दूर-दूर तक की चीजें बहुत साफ दिखाई दे रही थीं और इस बाग पर भी उनका अक्स बहुत अच्छी तरह पड़ रहा था. भूतनाथ ने देखा कि इस बाग में चार-पाँच आदमी भी मौजूद थे जो न-मालूम किस काम में व्यग्र और दौड़-धूप कर रहे हैं.
बाग के बीचोबीच संगमरमर का सुन्दर चबूतरा था और उस पर तरह-तरह की कई कुर्सियाँ रक्खी हुई थीं. मेघराज उसी चबूतरे पर चला गया और लालटेन रख कर अपने दोनों साथियों को बैठने के लिए कहा.

इस बाग में आने से यद्यपि भूतनाथ और भैयाराजा की तबीयत बहुत प्रसन्न हुई मगर थकावट और भी ज्यादे हो गई थी इसीलिए दोनों आदमी आराम कुर्सियों पर बैठ गये और पैर फैला कर चाँदनी में चारों तरफ की कैफियत देखने लगे. इस समय भूतनाथ के पेट में कुछ अजीब तरह की खिचड़ी पक रही थी और मेघराज का असल हाल जानने के लिए वह बहुत ही बेचैन हो रहा था.

यहाँ पहुँच कर मेघराज ने जफील बुलाई जिसे सुन कर बात-की-बात में तीन आदमी वहां आ पहुँचे और इशारा पाकर हर तरह का सामान जुटाने लगे. भैयाराजा और भूतनाथ ने स्नान किया, तब सन्ध्योपासन से निवृत्त हो भोजन किया और फिर निश्चिन्त होकर बैठने के बाद आपस में बातचीत करने लगे. इस समय रात पहर-भर, से ज्यादे जा चुकी थी और चाँदनी भी अच्छी तरह फैल रही थी. सहसा एक आदमी जो हाथ में कोई चीज लिए हुए था इन लोगों के सामने लाया गया जिसे देख कर भूतनाथ चौंक पड़ा और घबड़ाहट तथा खौफ के साथ उसकी तरफ देखने लगा. इस आदमी के हाथ में यद्यपि हथकड़ी न थी मगर पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थी.

मेघ० :(भूतनाथ से) कहो गदाधरसिंह इस आदमी को पहिचानते हो ?
भूत० : (दुखित ढंग से) बेशक पहिचानता हूँ, इसका बाप राजसिंह मेरी जिन्दगी का शैतान था, उसी की बदौलत मेरे ऐशो-आराम में फर्क पड़ा तथा मेरे धर्म और ईमान में बट्टा लगा, मेरे दोस्त दयाराम से मेरी जुदाई हुई और आज तक मैं दुर्दशाग्रस्त तरह-तरह की तलकीफों को सहता हुआ मारा फिरता हूँ. इसका नाम ध्यानसिंह है. यदि आपकी आज्ञा हो तो इससे दो-चार बातें करूँ.

मेघ० : हाँ-हाँ, तुम इससे जो चाहे बात कर सकते हो.
भूत० : (ध्यानसिंह से) कहो तुमने तो मुझे विश्वास दिलाया था कि दयाराम जी अभी तक जीते हैं और जमानिया के कम्बख्त दारोगा के कब्जे में है.

ध्यान० : बेशक मैंने आपने ऐसा ही कहा था और अभी तक मैं अपनी राय पर कायम हूँ..

भूत० : मगर तुम बिल्कुल झूठे और बेईमान हो. अच्छा हुआ कि तुम इस समय मुझे इस हालत में यहाँ दिखाई दिये. मैं तुमसे मिलने ही वाला था.
ध्यान० : आप जो कुछ समझें और कहें मैं अपनी बात का पूरा सबूत रखता हूँ. अगर मेरी मदद लेकर दयारामजी को खोजते तो जरूर दारोगा के यहाँ....

भूत० : यह सब फिजूल की बातें हैं, मैं तुम पर किसी तरह भी भरोसा नहीं कर सकता. (मेघराज से) क्या इसे आपने गिरफ्तार किया है ? इसके गिरफ्तार करने से दयारामजी का कुछ पता लगा या केवल सजा देने ही के लिए यह गिरफ्तार किया गया है.

मेघ० : इसका जवाब मैं कुछ भी नहीं दे सकता. यद्यपि मैं भैयाराजा की जुबानी सुन चुका हूँ कि तुमने प्रतिज्ञा की है कि भविष्य में अच्छी राह पर चलोगे और इन्होंने तुम पर भरोसा करके विश्वास भी कर लिया परन्तु हम लोगों का दिल भैयाराजा-सा नहीं है, हम लोग बिना जाँच किये किसी पर भरोसा नहीं करते.

मेघराज की बातों से यद्यपि भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया मगर वह चुप हो रहा, कुछ भी न बोला. मेघराज ने भैयाराजा को वहाँ से उठाया और बाग की एक रविश पर ले जाकर एकान्त में खड़ा हो कुछ बातें की और इधर भूतनाथ भी तब तक ध्यानसिंह से कुछ बातें करता रहा. इन सभों में क्या-क्या बातें हुई इसके लिखने की यहाँ कोई जरूरत नहीं मालूम पड़ती. बातों से छुट्टी पाकर पुनः सब कोई उस चबूतरे पर इकट्ठा हो गए, ध्यानसिंह वहाँ से हटा दिया गया और तब भैयाराजा ने मेघराज से कहा, "गदाधरसिंह की जुबानी मैंने सुना है कि दारोगा अब मेरी स्त्री को मार डालने के फिक्र में है इसलिए मैं चाहता हूँ कि वहाँ जाकर उसकी रक्षा करूँ और बन पड़े तो उसे वहाँ से निकाल लाऊँ."

मेघ० : बेशक आपको दारोगा से उनकी रक्षा करनी चाहिए और महाराज के सामने ही दारोगा से यह भी पूछना चाहिए कि उसने आपके साथ ऐसा गन्दा सलूक क्यों किया ? आपका छिप कर कार्रवाई करना मैं पसन्द नहीं करता.

भैया० : मेरे और दोस्तों की भी यही राय है अस्तु बेहोश दारोगा को जमानिया सदर बाजार के चौमुहाने पर पहुँचा देने के बाद मैं प्रकट हो जाऊँगा और देखूँगा कि भाई साहब के सामने ही मुझसे और दारोगा से क्योंकर निपटती है. अच्छा तो अब यहाँ से रवाना हो जाना चाहिए. अब हम लोगों की थकावट भी अच्छी तरह मिट गई और हम लोग बखूबी सफर करने लायक हो गए हैं.

मेघ० : मैं तो यही चाहता था कि रात-भर आप लोग यहाँ आराम करके प्रातः काल सफर करते.

भैया० : नहीं, अब मैं जहाँ तक शीघ्र जमानिया पहुँचूँ अच्छा है, तुम मुझे पुनः उसी जगह पहुँचा दो जहाँ से लाये थे. इन लोगों ने बेहोश दारोगा को गुफा के बाहर निकाला और मिलजुल कर घोड़े पर लादने के बाद बागडोर से अच्छी तरह कस दिया, बाकी बेहोश और जख्मी दुश्मनों को उसी जगह छोड़ दारोगा को लिए हुए भूतनाथ और भैयाराजा वहाँ से रवाना हुए. मेघराज भी तब तक भैयाराजा के साथ गया जब तक कि वे लोग पेचीदे रास्ते को तै करके सीधे पर न जा पहुँचे.

मेघराज के विषय में भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य और खुटका हो गया था. यद्यपि भूतनाथ ने देखा था कि वह अपना चेहरा नकाब से ढाँके हुए नहीं है तथापि यह निश्चय हो गया था कि उसकी सूरत जरूर बदली हुई है, मेघराज को पहिचानने के लिए उसने उद्योग तो किया था मगर सफल-मनोरथ न हुआ. अब भी उसे यह आशा जरूर थी कि सफर करते हुए भैयाराजा से मेघराज का भेद पूछेंगे और मुझे वे जरूर बता देंगे. मगर ऐसा न हुआ अर्थात भैयाराजा ने उसे दिलासा दे दिया मगर मेघराज का असल भेद नहीं बताया, इस बात की मजबूरी दिखाई कि 'मेघराज ने अपना भेद छिपाने के लिए मुझसे कसम खिला ली है'.

।। पाँचवा भाग समाप्त ।।

छठवाँ भाग

[१]

जमानिया में इस बात की धूम मची हुई थी कि दारोगा साहब सरे बाजार चौमुहानी पर बेहोश पाये गये, उनका मुँह काला था और दाहिना कान कटा हुआ था, गले में जूतों का हार था तथा बदन पर भी कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए थे. इस खबर से उनके दोस्त डर गये और दुश्मनों के चेहरों पर हँसी दिखाई दे रही थी. आदमियों के झुंड-के-झुंड उनकी अवस्था देखने के लिए चले जा रहे थे और जो देखता था वही खुश होता था. प्रायः सौ में नब्बे यही कहते थे कि 'बहुत अच्छा हुआ ऐसों की ऐसी ही सजा होनी चाहिए' !

यहाँ के राजा साहब सीधे-सादे रमहदिल और धर्मात्मा थे सही मगर बिल्कुल ही बेपेंदी के लोटा थे. उनके आत्मीय मित्र और सम्बन्धी लोग समय पड़ने पर जो कुछ उन्हें समझा देते थे वे उसी पर विश्वास कर लेते थे मगर जब कोई उसके विपरीत समझा देता तो वह पहिला खयाल उनके दिल से निकल जाता, अपनी राय कुछ भी कायम नहीं कर सकते थे, और इस सबब से भी उनकी रिआया में एक तरह की बेचैनी रहा करती थी और दारोगा की खूब चल बनी थी. वह महाराज के नाक का बाल हो रहा था और महाराज समझते थे कि हमारा राज्य इसी दारोगा की बदौलत रौनक पर है. महाराज आसक्ती और आराम-पसन्द बहुत ज्यादे थे और दारोगा उनकी इस आदत को बढ़ाने के लिए हमेशा कोशिश किया करता था.

होश में आकर दारोगा ने न तो अपना चेहरा साफ किया और न गले में से जूते का हार निकाला, उसी सूरत और हालत में सीधे महाराज की तरफ चला. खबर पाकर उसके कई नौकर-सिपाही भी वहाँ आ गये थे जिनकी जुबानी यह सुन कर कि महाराज का डेरा खासबाग में गया है वह भी खासबाग की तरफ रवाना हुआ.

जमानिया बाजार की चौमुहानी पर पहुँचा देने के पहिले दारोगा को भैयाराजा होश में ले आये और आइने के जरिये से उसे बता दिया कि तेरी सूरत कैसी की गई है और यह भी कह दिया था कि 'इसी सूरत में तू जमानिया बाजार की चौमुहानी पर छोड़ा जायगा जिसमें तमाम रिआया तेरी इस बेहूदी हालत को देखे, इसके बाद मैं भाई साहब के सामने पहुँच कर उसी जगह तुझसे बदला लूँगा'! इसके बाद दारोगा को बेहोश करके बाजार की चौमुहानी पर पहुँचा दिया गया था.

होश में आने के साथ ही दारोगा को भैयाराजा की बात याद आ गई और वह बिना कुछ जाँच किये सीधे महाराज की तरफ रवाना हो गया. खासबाग के दरवाजे तक तो उसके साथ सैंकड़ों आदमियों की भीड़ गई मगर आगे न जा सकी क्योंकि किसी ने नहीं रोका और वह सीधा महाराज के पास चला गया.
इस समय राजा साहब बाग के दूसरे दर्जे के नजरबाग में बैठे मुँह धो रहे थे और तीन-चार मुसाहब उनके इर्द-गिर्द बैठे तमाम शहर की झूठी-सच्ची खबरें सुना रहे थे. यकायक दारोगा उनके सामने जा पहुँचा और उनके पैरों पर गिरकर जार-जार रोने लगा. राजा साहब उसकी विचित्र सूरत देख कर हैरान हो गये और क्रोध में हो कर बोले, "यह तुम्हारी क्या दशा है ? किसने तुम्हारी यह सूरत बनाई ?"

दारोगा : (गले से जूतों की माला निकाल कर) यह सब आपके भाई साहब भैयाराजा की बदौलत है, उन्होंने ही मेरी यह दुर्दशा की है.
राजा : भैयाराजा कहाँ हैं ? ईश्वर उन्हें चिरायु करे. मैं तो उनके बिना अधमुआ हो रहा हूँ, अगर ईश्वर की कृपा से वे जीते-जागते हैं तो मेरे पास क्यों नहीं आते ?
दारोगा : आपके सामने क्यों आवेंगे. वे आपसे बागी हो गये हैं और स्वयम् जमानिया के राजा बना चाहते हैं. अच्छा जो कुछ उनके जी में आवे करें. आप जाने वे जाने, पर मेरी यह दुर्दशा क्यों हो रही है ? केवल इसीलिए कि मैं आपका खैरख्वाह हूँ और आपने राज्य का कुछ बोझ मेरे ऊपर डाल रक्खा है, इसी से तो लोग डाह करते हैं. खैर जो होना था हो गया.

अब आप जानिये और आपका राज्य जाने, अपना काम देखिये, मैं ऐसी बेइज्जती की नौकरी से इस्तीफा देता हूँ, मैं साधू और फकीरों की तरह जिन्दगी बिताने वाला, सिर्फ आपकी मुहब्बत में फँस कर बार-बार इस तरह की बेहुर्मती बर्दाश्त कर रहा हूँ, घर-गृहस्थी को छोड़ कर भी मुझे आराम नसीब नहीं.

राजा० : खैर कुछ कहो भी तो सही क्या मामला है ? भैयाराजा तुम्हें कहाँ मिले और तुम्हारी ऐसी दशा उन्होंने क्यों की ? आखिर इसका कुछ सबब भी तो होगा ?

दारोगा : सबब तो मैं आपसे कह ही चुका कि वे जमानिया का राज्य लिया चाहते हैं और मेरे जीते जी उनकी यह आशा पूरी नहीं हो सकती.

राजा० : उनकी यह आशा क्यों नहीं पूरी हो सकती ? बड़ी खुशी से मैं उन्हें यह राज्य देने के लिए तैयार हूँ. यद्यपि इस राज्य का मालिक मेरा लड़का मौजूद है मगर वह भी मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करेगा. यदि मैं भैयाराजा को यहाँ की गद्दी दे दूँगा तो गोपाल भी कुछ न बोलेगा.

दारोगा : तो आप यह भी करके देख लीजिये ! जिसमें आपकी जान सलामत रहे मैं भी उसी में खुश हूँ, मगर मेरी जान क्यों आफत में डाली जाय और मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक क्यों हो ? अपने हाथ से जब आप कुँअरजी का हक मारने के लिए तैयार हैं तो दूसरे को बोलने की क्या गरज पड़ी है ? मेरा हाल जो आप सुना चाहते हैं तो सुनिये मैं बयान करता हूँ. परसों भैयाराजा के भेजे हुए दो आदमी मेरे पास आये और एकान्त में मुलाकात करके इधर-उधर की बातें करने के बाद बोले कि 'भैयाराजा ने आपको बुलाया है, वे आपसे कुछ बातें किया चाहते हैं'.

मैं यह सुनकर प्रसन्न हुआ कि ईश्वर की कृपा से भैयाराजा जीते हैं क्योंकि मुझको और आपको भी उनके मरने का विश्वास-सा हो रहा था, अस्तु मैंने सोचा अब विलम्ब करना ठीक नहीं है, जहाँ तक जल्द हो सके उनसे मिलना और समझा-बुझा कर उन्हें आपके पास ले आना चाहिए खैर उन आदमियों के इच्छानुसार संध्या हो जाने पर मैंने तीन घोड़े मँगवाये.

एक पर आप सवार हुआ और दो पर उन दोनों को सवार कराके उनके पीछे-पीछे चल निकला. यहाँ से सातकोस की दूरी पर जो सुन्दर घाटी' नाम का आपका शिकारगाह है उसी में भैयाराजा को देख कर बहुत ही खुश हुआ और उनके पैरों पर गिर पड़ा उन्होंने मुझे उठा कर गले लगा लिया और अपने बगल में बैठा कर बातचीत करने लगे. उस समय दस-बारह आदमी नंगी तलवार लिये उनके पास मौजूद थे.

मुख्तसर यह कि मैंने उनसे यकायक गायब हो जाने का कारण पूछा, उनकी जुदाई से आपका जो कुछ हाल हो रहा है उसे कह कर बहुत कुछ समझाया-बुझाया और यहाँ आने के लिए जोर दिया. मगर मेरी बातों का उन पर कुछ असर न हुआ क्योंकि उनके दिल में राजा बनने का शौक उमड़ा था, अस्तु मेरी बात को काट कर वे मुझी को समझाने और लालच में डालने लगे.

मुझे तरह-तरह का सब्जबाग दिखा कर बोले कि 'तुम राजा साहब और गोपालसिंह को मार कर मुझे जमानिया का राजा बनाओ, जो कुछ तुम कहोगे मैं तुम्हें दूँगा और जन्म-भर तुम्हारा गुलाम बना रहूँगा, इत्यादि.' बातें तो बहुत लम्बी-चौड़ी हुई मगर मैं आपसे संक्षेप में बयान करता हूँ, मैंने उन्हें फिर भी बहुत धर्म-अधर्म की बातें समझा कर कहा कि आप घर चले चलिए, महाराज बड़ी खुशी से आपको गद्दी देने के लिए तैयार होंगे और अगर वे ऐसा न करेंगे तो मैं आपसे वादा करता हूँ कि जिस तरह बनेगा मैं आपको राजा बनाऊँगा.

सब कुछ मैंने कहा और समझाया मगर उनके दिल में एक न बैठी, बोले' कि 'उन दोनों के जीते रहते मैं निष्कंटक राज्य न कर सकूँगा, हमेशा खुटका बना रहेगा, इसलिये उन दोनों को मार डालना उत्तम है' इत्यादि बातें सुनते-सुनते मेरा जी ऊब गया और मैंने रंज हो उन्हें साफ जवाब दे दिया और कह दिया कि यह सब काम मेरे किये न होगा, मैं अपने मालिक के साथ नमकहरामी न करूँगा. मुझसे जवाब पाकर उन्हें क्रोध चढ़ आया और उन्होंने जो कुछ मेरे साथ किया उसका नमूना यही है जो कि आपने देखा. बहुत कुछ गाली-गुफ्तार के बाद मैं जबर्दस्ती बेहोश कर दिया गया और इस दर्जे को पहुँचाया गया.

दारोगा की बातें सुन कर राजा साहब को क्रोध चढ़ आया और भाई की मुहब्बत को एकदम भूल कर मारे क्रोध के काँपने लगे, एक चोबदार को कुँअर गोपालसिंह को बुला लाने की आज्ञा देकर दारोगा से बोले, "मैं नहीं जानता था कि भैयाराजा के पेट में ऐसा जहर भरा हुआ है ! मैं उन्हें बहुत ही नेक और सूधा समझता था !"

दारोगा : खयाल तो मेरा भी ऐसा ही था मगर परसों जो कुछ मैंने उनकी जुबान से सुना वह इस योग्य न था कि मेरे जैसा आदमी बर्दाश्त कर सके. छि: ऐसे सूधे भाई से और ऐसी संगदिली !!"
राजा : ऐसे भाई का मुँह देखना न चाहिए ! अरे मैं तो खुद उन्हें राज्य देने के लिए तैयार था, फिर ऐसी बदनीयती क्यों ? बेचारे गोपालसिंह ने उनका क्या बिगाड़ा था !

दारोगा : कुछ न पूछिये, उनकी बातें सुन कर तो मेरे होश उड़ गये, मैंने जो कुछ कहा वह बहुत ही मुख्तसर में है, कहीं उनकी जुबान से निकली हुई सभी बातें आपसे कहूँ तो आपके दुश्मनों की तबीयत ही खराब हो जाय. मैं आपको रंज पहुँचाया नहीं चाहता, पर उन्होंने मुझे इस बात की भी धमकी दी कि मैं भैया के पास पहुँच कर अपने सामने तेरी दुर्गति कराऊँगा और तुझे बेईमान साबित करके जेलखाने की गन्दी कोठरी में जन्म-भर के लिए भेजवाऊँगा. अब देखिए परमात्मा क्या दिखाता है !
राजा : परमात्मा जो कुछ करेगा अच्छा ही करेगा. वह मेरे सामने आवें तो.

इसी तरह की बातें कह-कह कर दारोगा राजा साहब के गुस्से को बढ़ाता रहा, यहाँ तक कि कुँअर गोपालसिंह भी आ पहुँचे और दारोगा की अवस्था देख कर आश्चर्य करने लगे तथा अपने पिता को क्रोध में भरे देख कर बहुत ही बेचैन हुए. प्रणाम करने के बाद हाथ जोड़ कर खड़े हो गये और हुक्म का इन्तजार करने लगे. राजा साहब ने मुहब्बत की निगाह से कुँअर साहब की तरफ देखा और अपने पास वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया.
कुँअर : (कुर्सी पर बैठ कर दारोगा से जो अभी तक जमीन पर बैठ कर आँसू गिरा रहा था) यह क्या मामला है ? आप ऐसी सूरत में क्यों दिखाई देते हैं ?

राजा : तुम्हारे चाचा साहब ने इनकी यह दुर्दशा कर डाली है.
कुँअर : (आश्चर्य से) सो क्या ! क्या चाचाजी की कुछ खबर मिली है ?

राजा : हाँ, वे ईश्वर की कृपा से कुशलपूर्वक हैं मगर हमारे और तुम्हारे दुश्मन हो रहे हैं.

कुँअर : ऐसा क्यों ? हम लोगों ने तो उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ा ! वे तो मुझ पर बड़ी ही कृपा रखते है और आपसे भी उन्हें अतीव स्नेह है !

राजा : वह सब दिखौआ मामला था, नहीं तो इस बेचारे की ऐसी दुर्दशा वे न करते. इन्हें अपनी राय में मिलाना चाहते थे मगर जब इन्होंने हमारा पक्ष न छोड़ा तब इनके साथ ऐसा बर्ताव किया गया. यही सुनने के लिए तो हमने तुमको बुलाया है, (दारोगा की तरफ देख कर) हाँ, एक दफे वे सब बातें फिर बयान कर जाओ जिसमें गोपाल को भी मालूम हो जाय कि इनके चाचा साहब इन पर कैसे मेहरबान हैं.

राजा साहब की आज्ञा पाकर दारोगा ने पुन: वह किस्सा बयान किया जिसे पहिले सुना चुका था. उसे सुन कर कुँअर साहब हैरान हो गये, मगर उनके दिल में यह बात बैठी नहीं इसलिये दारोगा तथा अपने पिता को कुछ जवाब न दिया केवल यही सोचते रह गये कि यह किस्सा कहाँ तक होगा ? यदि चाचा साहब मिलें तो बातों का मुकाबला करके कोई राय कायम की जाय.

राजा : (कुँअर से) कहो चुप क्यों हो ? जो कुछ हाल था तुमने सुन ही लिया.

कुँअर : जी हाँ सुना मगर यह भी मालूम हुआ कि चाचाजी स्वयं आने वाले हैं. यदि वे आ गये तो उनकी बातें सुनने पर अपनी राय कायम कर सकूँगा.

राजा : बाबाजी[1] जो कुछ कहते हैं उसमें रत्ती बराबर झूठ नहीं होगा !
कुँअर : सम्भव है.
राजा साहब ने अपने हाथ से दारोगा को जमीन पर से उठाया उसके आँसू पोंछे और अपने सामने ही सफाई करने का हुक्म दिया. उन दिनों यह नियम था कि जब राजा साहब का डेरा खासबाग में जाता था तब दारोगा को भी उसी बाग के नियत स्थान में रहना पड़ता था. अस्तु राजा साहब ने उसे दिलासा देकर और समझा-बुझा कर उसके डेरे में भेजा और स्वयं स्नान इत्यादि की फिक्र में पडे. कुँअर गोपालसिंह वहाँ से उठ कर महल में गये और अपनी माता से मिल कर दारोगा का सब हाल जो कुछ किस्सा उसने दुर्दशा का कहा था वह भी बयान किया. जवाब में रानी, साहिबा ने कहा कि दारोगा ने भैयाराजा के विषय में जो कुछ किस्सा कहा है वह सब झूठ है, असल में कसूर दारोगा ही का है, वह खुद भैयाराजा को मारने की फिक्र में पड़ा हुआ है.

इतना कह रानी साहेबा ने वह सब हाल जो बहुरानी की जुबानी सुना था कुँअर गोपालसिंह से बयान किया जिसे सुन कर वे बहुत ही हैरान हुए, यद्यपि मुँह से कुछ न बोले मगर दिल में बड़े गौर के साथ सोचने लगे कि असल में भेद क्या है और बात कौन-सी सच है.

भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर कुंअर गोपालसिंह पुनः अपने पिता के पास गए और देर तक वहाँ बैठ कर बातचीत करने बाद हाथ जोड़ कर बोले, "इधर बहुत दिनों से इन्द्रदेवजी से मुलाकात नहीं हुई, वे भी यहाँ न आए, न-मालूम क्या सबब है, उनसे मिलने को दिल चाहता है, आज्ञा हो तो एक दिन के लिए उनके पास जाऊँ." महाराज ने यह कह इन्द्रदेव के पास जाने की इजाजत दी कि 'जाओ मगर होशियार रहना. क्योंकि तुम्हारा चाचा तुम्हारे खून का प्यासा हो रहा है, ऐसा न हो कि कहीं रास्ते में मिले और तुम्हें धोखा दे. अपने साथ आदमी और सवार काफी तौर पर ले जाना'.

---

१. उन दिनों दारोगा बह्मचारियों और साधुओं की तरह अपने आपको बनाये रहता था.

[२]

इन्द्रदेव अपने कैलाश-भवन के नजरबाग में संध्या के समय क्यारियों में घूम-फिर कर गुलबूटों का आनन्द ले रहे थे जब कुँअर गोपालसिंह के आने की उन्हें इत्तिला मिली, वे खुशी-खुशी कदम बढ़ाये हुए दरवाजे की तरफ गए तथा इस्तकबाल करके उन्हें अपने साथ पुनः उसी नजरबाग में ले आये और एक चबूतरे पर जहाँ कई कुर्सियाँ बिछी हुई थीं, दोनों आदमी बैठ कर बातें करने लगे.

इन्द्र० : आज तो आपके अनूठे दर्शन हुए ! भला किसी तरह मेरी याद तो आयी !
कुँअर : (मुस्कुराते हुए) अगर आप मुझे भूल गये तो क्या मैं भी आपको भूल जाऊँ !
इन्द्र० : असल में तो मित्रों और मुलाकातियों को भूल जाना आप ही लोगों का काम है, मैं तो गरीब आदमी हूँ जो किसी भी तरह अपने अमीर मेहरबानों को भूल नहीं सकता.

कुँअर० : यही सबब है कि इतने दिनों तक आपने मेरी खबर न ली. आखिर मैं अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद होकर आपके पास दौड़ा आया, सोचा कि क्या जाने कल को क्या हो जाय, एक दफे चल के मुलाकात तो कर लें.
इन्द्र० : इसका क्या अर्थ है ? जिन्दगी से नाउम्मीद हो जाना कैसा ?

कुँअर : सुना है कि मेरे चाचा साहब मुझसे नाखुश हैं और मुझे तथा मेरे पिता को भी मार डालने की फिक्र में पड़े हैं.
इन्द्र० : (हँस कर) यह आपको किसने कह दिया ? भैयाराजा ऐसे महात्मा आदमी पर ऐसा कलंक लगाने वाला कौन निकल आया ! स्वप्न में भी मुझे ऐसी बेतुकी बातों पर विश्वास नहीं हो सकता. क्या उनका कुछ पता लगा ?

कुँअर : हाँ, आपके गुरुभाई साहब ने ही तो यह बात कही है !

इतना कह कर गोपालसिंह ने दारोगा साहब का कुल हाल जो हम ऊपर लिख आए हैं इन्द्रदेव से बयान किया और पूछा कि 'इस मामले में आपकी क्या राय है ?'

इन्द्र० : असल में जो कुछ मामला है उसे मैं खूब जानता हूँ मगर अपनी तरफ से मैं दारोगा को नुकसान पहुँचाना नहीं चाहता और आपसे भी ऐसी ही आशा रखता हूँ. परन्तु में यह जरूर कहूँगा कि आप अपने चाचा साहब की तरफ से बिल्कुल ही बेफिक्र रहिए और दारोगा की तरफ से क्षण-भर के लिए भी गाफिल मत होइये यह तो मुझे विश्वास नहीं है कि वह आपको तकलीफ देगा मगर इसमें कोई शक नहीं है कि वह आपके चाचा साहब का जानी दुश्मन है और एक दफे उन पर अच्छी तरह हाथ साफ कर चुका है मगर ईश्वर ने उनकी जान बचा ली.

कुँअर : अच्छा यह तो बताइये कि चाचाजी और दारोगा के बीच में दुश्मनी क्यों पैदा हो गई और चाचाजी ने एकदम से हम लोगों को क्यों छोड़ दिया ?

इन्द्रदेव: मामला बड़ा पेचीदा है. असल में वह आपके चाचा साहब का दुश्मन न था, मगर मजबूर होकर अपनी जान बचाने के लिए उनसे दुश्मनी करने की जरूरत पड़ी. यदि आप इस बात का वादा करें कि मेरी तरफसे आप भी इस भेद को छिपाये रहेंगे और उन दोनों का फैसला उन्हीं दोनों की अक्ल पर छोड़ देंगे तो मैं आपसे यह रहस्य बयान करूँ. इसमें शक नहीं कि मेरी जुबानी जो आप सुनेंगे उससे आपको दारोगा पर क्रोध जरूर आवेगा परन्तु आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप दोनों में से किसी का भी पक्ष न लें क्योंकि आपके पिता दारोगा साहब को इष्टदेव की तरह मानते हैं और हम लोगों के हजार कहने पर भी वे दारोगा को झूठा और नमकहराम नहीं समझेंगे, ऐसी अवस्था में अपनी जबान हिला कर राजा साहब से बुरे बनना बुद्धिमानी के विरुद्ध है, मौका मिलने पर जो कुछ होगा देखा जाएगा.

कुँअर : आपका कहना बहुत ठीक है, आप भरोसा रक्खे कि मैं आपकी आज्ञा के विरुद्ध कभी कोई काम न करूँगा और इस भेद को जब तक आप न कहेंगे आप ही की तरह अपने दिल में छिपाए रहूँगा तथा दारोगा को भी मालूम न होने दूँगा कि मैं उससे होशियार हूँ.

इन्द्र० : ऐसा ही होना चाहिए. अच्छा सुनिये मैं आपसे असल भेद कहता हूँ. आपको दयाराम का कुछ हाल मालूम है ?
कुँअर : इतना मुझे आप ही ने कहा था कि उन्हें राजसिंह कैद करके ले गया था और वे धोखे में भूतनाथ के हाथ से मारे गए. बस इससे ज्यादे मुझे कुछ भी नहीं मालूम है.

इन्द्र० : हाँ बेशक मैंने आपसे कहा था मगर यह नहीं कहा था कि उनकी दोनों स्त्रियाँ मेरे पास जीती-जागती मौजूद हैं क्योंकि उनके मरने की खबर तमाम दुनिया में फैल चुकी थी. यह भेद मैंने आपसे इसलिए छिपा रक्खा था कि उन दोनों ने भूतनाथ से अपने पति का बदला लेने के लिये प्रण कर लिया था मगर भूतनाथ का वे कुछ बिगाड़ नहीं सकती थीं क्योंकि वह बड़ा ही होशियार है और मैं भी इस खयाल से भूतनाथ का मारा जाना पसन्द नहीं करता था कि असल में उसका कोई कसूर नहीं है, उसने जान-बूझ कर दयाराम को नहीं मारा था बल्कि धोखे में ऐसी घटना हो जाने का उसे बड़ा ही दुःख था मगर चूँकि दलीपशाह वगैरह को यह बात मालूम थी और दलीपशाह पर भूतनाथ को भरोसा नहीं था इसलिए भूतनाथ इस फिक्र में बराबर ही लगा रहता था कि भेद खुलने न पावे और मैं बदनाम न हो जाऊँ.

दयाराम की दोनों स्त्रियों को मैंने इस बात की इजाजत तो दे दी कि तुम लोग गदाधरसिंह से बदला लो और स्वयं उनकी मदद भी करता रहा पर इस बात की सख्त ताकीद कर दी कि गदाधरसिंह की जान पर कोई धक्का लगने न पावे. मगर वे उस काम को बखूबी और खूबसूरती के साथ न कर सकीं, यहाँ तक कि गदाधसिंह पर उनका भेद खुल गया और वह उन दोनों को मार डालने की फिक्र में पड़ा, क्योंकि उसे दोनों के जरिये से अपनी बदनामी का ख्याल हो गया.

इस काम में गदाधरसिंह ने दारोगा से मदद ली और दारोगा ने उन दोनों को तथा साथ ही उनके प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को भी गिरफ्तार कर लिया. यह हाल भैयाराजा को मालूम हो गया और वे उन सभों को छुड़ाने के लिए दारोगा पर टूट पड़े मगर दारोगा ने अपना भेद छिपाये रखने की नीयत से भैयाराजा को भी कैद कर लिया. मैंने बड़ी मुश्किल से उन सभों को दारोगा और गदाधरसिंह के पंजे से छुड़ाया, ऐसे ढंग से कि अभी तक दारोगा तथा गदाधरसिंह को इस बात का गुमान भी न हुआ होगा कि मैंने ही उन सभों को उनके पंजे से छुड़ाया था.

कुँअर : (आश्चर्य करते हुए) यह तो बहुत ही अनूठा किस्सा आप बयान कर रहे हैं ! मगर कहने के ढंग से मालूम होता है कि आप बहुत संक्षेप में कह रहे हैं, ऐसे नहीं, आप मेहरबानी करके खूब खुलासे तौर पर बयान कीजिये.
इन्द्र० : आप मेरे दिली दोस्त हैं इसलिए मैं आपसे यह भेद की बात कह रहा हूँ मगर खूब होशियार रहें कि कोई आपके दिल के अन्दर से यह भेद निकालने न पावे कि यह हाल आपको मालूम है, मैं खुलासा बयान करता हूँ.

इतना कह कर इन्द्रदेव ने जमना, सरस्वती, इन्दुमति, प्रभाकरसिंह, दारोगा और भूतनाथ इत्यादि का तथा इनको अपने मदद करने का कुल हाल जो ऊपर लिख आये हैं, गोपालसिंह से बयान किया. दयाराम, निरंजनी, छन्नो और ध्यानसिंह वगैरह का हाल भी कहा, कि दयाराम को दारोगा की कैद से छुड़ा लाये हैं और वे अब फलानी जगह हैं.

सबके अन्त में इन्द्रदेव ने अपनी तरफ की यह राय दी- "मेरी समझ में तो गदाधरसिंह और दारोगा वगैरह सभी बेकसूर समझे जा सकते हैं, क्योंकि सभी ने अपनी-अपनी जान बचाने के लिए ही ऐसे पाप किये. मगर फिर भी आपके दारोगा साहब की नीयत अच्छी नहीं है, हम नहीं कह सकते कि उनके पापों की गिनती कहाँ तक तरक्की करेगी मगर आपको अभी एकदम से सन्नाटा खींचे रहना चाहिए, क्योंकि अगर आप ऐसा न करेंगे तो राजा साहब की मुहब्बत आप पर से जाती रहेगी. देखिये भैयाराजा से राजा साहब को कितनी मुहब्बत थी मगर अब इस समय दारोगा के सामने उस मुहब्बत की कुछ कदर न रही."

कुँअर : आपका कहना बहुत ठीक है, जो कुछ आपने कहा मैं वैसे ही करूँगा. मगर इस किस्से को सुन कर तो मैं हैरान हो गया, मेरी बुद्धि ठिकाने न रही ! ताज्जुब नहीं कि कई दिनों तक मुझे रात को नींद न आवे ! आह, दुनिया भी क्या चीज है और इसमें कैसी-कैसी घटनाओं का आविर्भाव हुआ करता है !

इन्द्र० : बेचारे भैयाराजा बिल्कुल ही निर्दोष हैं, उनका तो व्यर्थ ही होम करते हाथ जला है, थोड़ी-सी भूल ने उन्हें बर्बाद कर रक्खा है.

बिना सोचे-विचारे जल्दी में जब आदमी से कोई चूक हो जाती है तो फिर उसका सम्हालना मुश्किल हो जाता है. इस दारोगा के पंजे से जब मैंने उन्हें छुड़ाया था उसी समय अगर वे महाराज के सामने जा पहुँचते तो जरूर अपना दिल ठण्डा कर लेते मगर अब तो दारोगा ने अपना रंग जमा लिया. मुझे उनकी बड़ी ही फिक्र लगी हुई है, देखा चाहिए क्या होता है.

कुँअर : आपने बहुत ही अच्छा किया कि यह सब हाल मुझसे कह दिया नहीं तो क्या जाने मुझसे कोई भारी भूल हो जाती और पीछे पछताना पड़ता.
इन्द्र० : इसी खयाल से तो मैंने आपको होशियार कर दिया. अब आपको बड़ी होशियारी और चालाकी से काम लेना चाहिये.

[३]

रात का समय है और दारोगा अपने खासबाग[१] वाले मकान में एकान्त कमरे में बैठा हुआ जैपाल से बातें कर रहा है.
दारोगा: न-मालूम क्या समझ कर भैयाराजा ने मेरी जान छोड़ दी नहीं तो मैं बड़े ही बेमौके जा फँसा था ! कार्रवाई तो मैंने बहुत अच्छी की थी मगर इस बात की खबर न थी कि भैयाराजा के पास तिलिस्मी तलवार मौजूद है.

जैपाल० : खैर, जो कुछ होना था सो हो गया अब आपको बहुत सावधानी के साथ काम करना चाहिए, ताज्जुब नहीं कि भैयाराजा अब खुद राजा साहब के पास आवें और आपका मुकाबला करें. यद्यपि मेरा तो खयाल यहीं है कि अब राजा साहब उनकी बातों पर कदापि विश्वास न करेंगे क्योंकि आपने उनको खूब ही दुरुस्त कर रक्खा है.

---

१. खासबाग में दारोगा के लिए एक मकान मुकर्रर था और वह भी खासबाग के तिलिस्म से मिला हुआ था.

दारोगा : बेशक अब राजा साहब उनका पक्ष न करेंगे, हाँ, गोपालसिंह का बन्दोबस्त करना जरूरी है.
जैपाल० : जबकि आप सोचते हैं कि भैयाराजा और उनकी स्त्री को मार डालने के बाद रानी साहबा और राजा साहब को भी मार डालोगे तो गोपालसिंह को छोड़ने की क्या जरूरत है ? उन्हें भी निपटा कर निष्कण्टक राज्य कीजिए.

दारोगा: यह सोचना तुम्हारी भूल है. हमारी कमेटी के बड़े-बड़े रईस लोग जो अभी तक मेरी इज्जत करते हैं वे एकदम से मेरे दुश्मन हो जायेंगे और समझेंगे कि दारोगा ने राजा बनने की नीयत से यह कमेटी रची थी. वे मुझे कदापि राजा न बनने देगें और तमाम फौज भी मेरी दुश्मन बन जायेगी.

ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि कोई दूसरा राजा आकर जमानिया में दखल जमा ले और अगर ऐसा हुआ तो मैं बड़ी दुर्दशा से मारा जाऊँगा, मुझे राजा बनने में सुख नहीं है, मैं नाममात्र के लिए गोपालसिंह को राजा बनाऊँगा और खुद राज्य करूँगा. जब गोपालसिंह की शादी हेलासिंह की लड़की से हो जाएगी तब बेशक गोपालसिंह मारे जाएँ तो कोई हर्ज नहीं. उस समय उनकी स्त्री को रानी बनाऊँगा और उसे ऐयाशी पर उतारू करके आप आनन्द करूँगा. फिर मेरा मुकाबला करने वाला कोई भी न होगा.

जैपाल० : बात तो आपने बड़े दूर की सोची ! मेरा खयाल इन सब बारीकियों की तरफ नहीं गया था. बेशक आप बुद्धि के तेज हैं और आप नीति को खूब समझते हैं.
दारोगा: अब तो गोपालसिंह को खुशामद से या जिस तरह बनेगा अपने ऊपर प्रसन्न करूँगा और तब देखूँगा कि किस्मत क्या दिखाती है. सबसे बड़ा काम तो यह है कि उनकी शादी हेलासिंह की लड़की से हो जाए.

जैपाल० : मगर दयाराम वाला खुटका मेरे दिल को बहुत ही बेचैन किये हुए है. न-मालूम उसे कौन छुड़ा ले गया और अब वह कहाँ है. यह और भी ताज्जुब है कि वह अभी तक प्रकट नहीं हुआ. जब वह प्रकट होगा तो मुझे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा और उस समय इन्द्रदेव भी मेरा दुश्मन बन जायगा.

जैपाल० : बेशक दयाराम का गायब हो जाना बहुत ही बुरा हुआ. मेरा तो खयाल है कि खुद गदाधरसिंह उसे छुड़ा ले गया. जमना, सरस्वती, इन्दुमति और प्रभाकरसिंह का भी कुछ हाल मालूम नहीं हुआ, वे सब भी तो आपकी फिक्र में होंगे.
दारोगा: बेशक उनके लिए भी मैं तरद्दुद में हूँ, हाँ, अगर गदाधरसिंह ने मेरा साथ दिया तो मैं उन सभी की तरफ से शायद बेफिक्र हो जाऊँगा.

जैपाल० : गदाधरसिंह का तो खुद ही उन लोगों की बदौलत नाक में दम हो रहा है.
दारोगा : सही है, मगर फिर भी जब वह उन लोगों की फिक्र में है तो कुछ करके ही छोड़ेगा.

जैपाल० : अगर वह ऐसा करे भी तो उसमें आपकी क्या भलाई हो सकती है जबकि वह स्वयं आपसे रंज है ? इधर वाला मामला बहुत ही बुरा हो गया, भैयाराजा के साथ-ही-साथ आप गदाधरसिंह पर भी वार कर बैठे सो अच्छा नहीं किया.

दारोगा: अगर मेरा वार खाली न जाता और भैयाराजा तथा गदाधरसिंह मारे जाते तो तुम ऐसा न कहते बल्कि मेरी तारीफ करते, अब जब मामला बिगड़ गया है तो जो चाहे कहो, फिर भी मुझे इस बात से दिलजमई है कि गदाधरसिंह लालची है, दौलत के आगे वह धर्म, ईमान और इज्जत वगैरह कुछ नहीं समझता.

जैपाल० : गदाधरसिंह को कब्जे में करने के लिए यह तरकीब बहुत अच्छी होगी कि आप उसके बागी ऐयारों और शागिर्दों को अपना पक्षपाती बनावें.
दारोगा : बात बहुत अच्छी है मगर मैं उन लोगों को खोजूँ क्योंकि ! उन सभों का मिलना ही तो बड़ा कठिन है.

जैपाल० : उनमें से एक आदमी मुझे मिला था और मैंने उससे आपके विषय में बातचीत भी की, अगर आप कहें तो मैं इस बारे में उद्योग करूँ.

दारोगा: जरूर कोशिश करनी चाहिए, खर्च करने के लिए मैं हर तरह से तैयार हूँ. बात यह है कि या तो गदाधरसिंह हमारे कब्जे में आ जाय और या फिर दुनिया से उठा दिया जाय. (ऊँची साँस लेकर) अफसोस ! दयाराम का हमारे कब्जे से निकल जाना बहुत बुरा हुआ, नहीं तो गदाधरसिंह मेरे तलवे चाटा करता और जो कुछ मैं कहता वह झख मार के करता. तुम कहते हो कि दयाराम को गदाधसिंह छुड़ा ले गया मगर मेरा दिल बात को कबूल नहीं करता. जब दयाराम के विषय मे बातचीत करने के लिए वह मेरे पास आया था उसके पहिले ही कोई मेरी सूरत बन कर दयाराम को छुड़ा ले गया था, जैसाकि भूतनाथ ने भी मुझसे कहा था. और मैंने भूतनाथ से बहाना किया था कि वह दूसरा ही कैदी था.

जैपाल० : हो सकता है, तो अगर गदाधरसिंह नहीं तो भैयाराजा का यह काम होगा क्योंकि व जमना और सरस्वती की दिलोजान से मदद कर रहे हैं.

दारोगा 'सम्भव है कि भैयाराजा ही ने ऐसा किया हो. अफसोस यह कई दफे मेरे पंजे में आकर निकल गया है. अच्छा बकरे की मां कब तक खैर मनावेगी अबकी दफे तो भैयाराजा को तिलिस्मी तलवार ने बचा लिया, जख्म लगते ही मैंने पहिचान लिया कि फलानी तलवार होगी, मैं बहुत जल्द उसे महाराज से माँग लूँगा.

जैपाल० : आप तिलिस्म के दारोगा ठहरे, आपके पास तो जरूर ऐसी तलवार होनी चाहिए. बल्कि मेरे पास भी पास भी होनी चाहिए क्योंकि मैं आपका मित्र हूँ.

दारोगा : अच्छा अब मैं उस काम की फिक्र करता हूँ जिसके लिए तुमने राय दी थी. तुम जाकर अपना रथ तैयार कराओ और खुद हाँकते हुए खासबाग के पिछले दरवाजे की तरफ लाकर मेरा इन्तजार करो. ईश्वर चाहेगा तो आज ही मेरा वह काम हो जाएगा फिर दूसरे की फिक्र करूँगा.

जैपाल० : बहुत अच्छा मैं जाता हूँ.

[४]

खासबाग में महल के अन्दर जो कमरा बहुरानी के लिए मुकर्रर था उसमें इस समय सिवा बहुरानी के कोई दूसरा दिखाई नहीं देता, यहाँ तक कि कोई लौंडी भी उस कमरे में मौजूद नहीं है जो जरूरत पर काम आवे, हम आश्चर्य के साथ देखते हैं कि उस कमरे में दीवार के साथ जो आलमारियाँ बनी हुई हैं उनमें से इस समय एक आलमारी कुछ अधुखुली-सी मालूम पड़ती है और उसके अन्दर से एक आदमी सर निकाल कर उस कमरे की अवस्था को बड़े गौर से देख रहा है.

आधी रात का समय है. कमरे के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ है, केवल एक सुन्दर मसहरी पर बहुरानी आराम की नींद सो रही हैं और उसकी नाक से कोमल खर्राटे की आवाज आ रही है. कमरे में पूरब और पश्चिम की तरफ की खिड़कियाँ खुली हुई हैं और पूरब तरफ वाली खिड़की से जो आम की बारी की तरफ पड़ती है, ठंडी-ठंडी हवा आ रही है जिससे बहुरानी की मसहरी का जालीदार नफीस पर्दा दरियाई लहरों की तरह झकोरे ले रहा है, कमरे की दीवारगीरों में से दो में मोमबत्ती की रोशनी हो रही है.
उस आदमी ने जो आलमारी के अन्दर से सर निकाल कर झाँक रहा है, देखा कि इस कमरे का सदर दरवाजा जिधर से लोग इस कमरे में आते-जाते हैं, खुला हुआ है मगर जहाँ तक बाहर की तरफ निगाह जाती है कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता.

धीरे-धीरे उस आलमारी के दोनों पल्ले अच्छी तरह खुल गये और वह आदमी जो सिर निकाल कर झाँक रहा था और जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी, निकल कर कमरे में दाखिल हुआ धीरे-धीरे पैर रखता हुआ वह सदर दरवाजे के पास पहुँचा और उसे बहुत धीरे-से बन्द करके अन्दर से कुण्डी चढ़ा ली और तब उस मसहरी के पास आया जिस पर बहुरानी आराम कर रही थीं. उसने मसहरी का पर्दा हटाया और हाथ से हिला कर बहुरानी को जगाया. बहुरानी जब चैतन्य हुईं तो अपने सामने एक नकाबपोश को देख कर हैरान हो गईं मगर दिल कड़ा करके बोलीं, "तुम कौन हो जी ?"

इसके जवाब में नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब हटा कर कहा, "देखो और पहिचानो कि मैं कौन हूँ।"
नकाब हटते ही भैयाराजा की सूरत देख बहुरानी शरमा गई, मुस्कराती हुई उठ खड़ी हुई और बोली, "मैं कई दिन से तुम्हारा इन्तजार कर रही हूँ, तुमने तो मुझे ऐसा छोड़ा कि मानों मैं तुम्हारी कुछ थी ही नहीं ! ऐसा ही था तो मुझे भी अपने साथ ले जाते, जो कुछ मुसीबत आती उसके झेलने में मैं भी शरीक होती और खुशी–खुशी तुम्हारे साथ दिन बिताती !"

भैया० : (मुस्कुराते हुए) यह तो ठीक है मगर बिना किसी तरह का बन्दोबस्त किये तुम्हें ले जाना क्या सहज बात है ? मैं तो मर्द ठहरा, हर तरह पर हर जगह जाकर समय बिता सकता हूँ मगर तुम्हारे लिये तो यह बात नहीं हो सकती. अब मौका देख कर मैं तुम्हारे पास आया हूँ और खास करके इसलिये आया हूँ कि तुम्हें यहाँ से ले जाऊँ.
बहु० : खैर मैं चलने के लिये तैयार हूँ, मुझे उज्र ही क्या हो सकता है, आराम से बैठो और सुनाओ तो सही कि इधर क्या-क्या मामले हुए ? दारोगा कम्बख्त को तो तुमने खूब ही छकाया ! (दरवाजे की तरफ देख कर) क्या इस दरवाजे को तुमने बन्द कर दिया है ? मैं तो खुला छोड़ कर सोई थी.

भैया० : हाँ, मैंने ही बन्द किया.
बहु० : अच्छा बैठिये और मेरी बातों का जवाब दीजिये.
भैया० : नहीं, मैं इसलिए नहीं आया हूँ कि आराम से तुम्हारे पास बैठूँ और बेफिक्री के साथ तुमसे बातें करूँ समय बहुत नाजुक है, बस तुम्हें यहाँ से जल्द चल देना ही चाहिए !

बहु० : (शोखी से) अब इतनी जल्दी क्या पड़ गई ? बैठो तो सही, मैं तो सोचे हुए थी कि अबकी दफे तुम आओगे तो प्रकट रूप में अपने भाई के साथ मिलोगे और खुल्लमखुल्ला दारोगा का मुकाबला करोगे जैसाकि तुमने लिखा था. इस राय को मैं बहुत पसन्द करती हूँ और तुम्हारी भावज साहिबा भी ऐसा ही करने के लिए कहती हैं उनसे मुलाकात तो कर लो. मैंने उनसे वादा किया है कि अबकी आवेंगे तो तुम्हारा सामना कराऊँगी.

भैया० : बेशक मैं भी ऐसा ही चाहता था मगर अब मेरे दोस्तों की दूसरी राय हो गई है जो इससे बहुत अच्छी है. बस अब तुम किसी तरह का सोच-विचार मत करो और जल्दी से मेरे साथ चलो, किसी को खुटका हो जायगा तो ठीक न होगा.

बहु० : तो क्या बस निश्चय हो गया कि मैं तुम्हारे साथ चली चलूँ ?
भैया० : हाँ, मैं कहता हूँ कि चलने में जल्दी करो.
बहु० : अब इसी तरह ? बिना कुछ सामान लिए !
भैया० : हाँ, बस इसी तरह !

बहु० : अच्छा चलो, मैं तुम्हारे साथ चलने में खुश हूँ, किस राह से चलोगे ?
भैया० : जिस तिलिस्मी रास्ते से आया हूँ उसी गुप्त राह से तुम्हें ले चलूँगा. मैं तो इतनी देर भी न लगाता जितनी बातचीत में लग गई है और तुम्हें बेहोश करके अपनी पीठ पर लाद कर जल्दी से ले भागता मगर क्या करूँ रास्ता इस लायक नहीं है. मेरे पीछे-पीछे चली आओ, कुछ दूर तक अँधकार में चलना होगा.

बहु० : मैं हर तरह से चलने के लिए तैयार हूँ, चलो.
इतना कह कर बहुरानी तैयार हो गई और भैयाराजा के पीछे-पीछे चल खड़ी हुई. भैयाराजा जिस आलमारी के अन्दर से निकले थे उसी में अपनी स्त्री को लिए हुए चले गये. भीतर से वह आलमारी बहुत लम्बी-चौड़ी थी और उसमें नीचे की तरफ उतर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं. भीतर जाकर भैयाराजा ने न-मालूम किस ढंग से दरवाजा बन्द कर लिया और नीचे उतरने लगे. आगे-आगे भैयाराजा और पीछे-पीछे पीठ पर हाथ रक्खे हुए बहुरानी जाने लगी, रास्ता तंग और अंधकारमय था मगर सीढ़ियाँ बहुत छोटी थीं इसलिए उतरने में आसानी थी.

बहुत दूर तक नीचे उतर जाने के बाद वे दोनों एक कोठरी में पहुँचे जिसमें एक लालटेन की रोशनी हो रही थी. यह लालटेन भैयाराजा ऊपर जाते समय छोड़ गये थे.

इस कोठरी में पूरब और पश्चिम की तरफ से दो दरवाजे थे जिनमें से पूरब तरफ वाला दरवाजा इस समय खुला हुआ था. भैयाराजा ने वह लालटेन उठा ली और बहुरानी को साथ लिए हुए उस दरवाजे के अन्दर चले गये. भीतर जाकर उन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया. केवल दोनों पल्ला मिला कर दबाने ही से एक खटके की आवाज हुई और वह दरवाजा मजबूती के साथ बन्द हो गया. अब ये दोनों आदमी एक सुरंग में दाखिल हुए और चुपचाप बहुत दूर तक चले गये. आधी घड़ी के बाद पुनः एक कोठरी मिली जिसका भैयाराजा ने एक मुट्ठा घुमाकर, जो उस दरवाजे में लगा हुआ था, खोला बहुरानी इस दरवाजे के खोलने का ढंग भी अच्छी तरह समझ न सकी क्योंकि मुट्ठा घुमाने में भी कोई खास तरकीब थी.

दरवाजे के अन्दर घुस कर भैयाराजा ने लालटेन बुझा दी और अब पुनः बहुरानी को अन्धकार में चलना पड़ा यह बात बहुरानी को अच्छी नहीं मालूम हुई और उसने कुछ चिढ़ कर भैयाराजा से कहा, "भला यहाँ पर लालटेन बुझा देने की क्या जरूरत थी ? व्यर्थ ही अन्धकार में चलाकर तकलीफ देना....!"
भैया० : घबड़ाओ मत, यहाँ पर दो-चार चीजें ऐसी हैं जिन्हें देख कर तुम डर जाती इसीलिए मैंने लालटेन बुझा दी. बेखटके मेरे पीछे-पीछे चली आओ, मगर देखो आगे कुछ दूर तक पानी में चलना पड़ेगा.

वास्तव में यही बात थी. बहुरानी के कान में पानी के बहने की मीठी-मीठी आवाज आई और चन्द कदम चलने के बाद पानी में पैर पड़ा जिससे वह कपड़ा कुछ उठाकर चलने लगीं. मालूम होता है कि सुन्दर चिकने फर्श पर पानी बह रहा है जो कहीं बित्ता-भर, कही ज्यादे और कहीं उससे कम होगा. वहाँ पर बहुरानी को कई दफा चक्कर लगाना पड़ा और अन्त में वह एक चौखट लांघ कर सूखी जमीन पर पहुँची और पीछे से पुनः दरवाजा बन्द होने की आवाज आई.

यहाँ पर भैयाराजा ने लालटेन जलाई और बहुरानी को साथ लिए हुए आगे की तरफ बढ़े. अब वे दोनों एक मामूली सुरंग में जा रहे थे और रास्ता ऊँचाई की तरफ चढ़ रहा था. कुछ दूर जाने के बाद पुनः एक दरवाजे के पास पहुँचे और जब वह खोला गया तो दोनों आदमी खासबाग के बाहर होकर मैदान में पहुँचे जहाँ ठंडी-ठंडी हवा के झोंके लग रहे थे और एक रथ जिसमें मजबूत घोड़े जुड़े हुए थे, सामने खड़ा था.

दरवाजा बन्द करने के बाद भैयाराजा ने बहुरानी को उस रथ पर सवार कराया और आप भी सवार होकर रथ हाँकने का हुक्म दिया. रथ कुछ दूर निकल जाने के बाद उन्होंने बहुरानी से कहा, "मैं वास्तव में भैयाराजा नहीं हूँ, मैं वही दारोगा हूँ जिसे भैयाराजा ने बेइज्जत किया था. तुम्हें जहन्नुम की सैर कराने के वास्ते लिए जाता हूँ, ताज्जुब नहीं कि वहाँ बहुत जल्द असली भैयाराजा से तुम्हारी मुलाकात हो. बस खबरदार, चिल्लाने की कोशिश मत करना !"

[५]

बहुरानी के फंसे जाने के घंटे-भर बाद असली भैयाराजा उसी राह से बहुरानी के कमरे में दाखिल हुए जिस राह से दारोगा उन्हें धोखा देकर ले गया था. बहुरानी की मसहरी खाली देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ और यह सोचकर कि कोई दुर्घटना जरूर हुई है उनका कलेजा धड़कने लगा. वे इधर-उधर की चीजों पर निगाह दौड़ाते हुए सदर दरवाजे पर गये तो दरवाजे को अन्दर से बन्द पाया जिससे उनका शक और भी मजबूत हो गया और वे सोचने लगे कि जरूर बहुरानी इसी कमरे में थी. अगर यहाँ न होती तो दरवाजा अन्दर से क्योंकर बन्द होता ! तो क्या वह अपनी खुशी से कहीं बाहर चली गई ? नहीं, बाहर जाने का यह तिलिस्मी रास्ता तो उसे मालूम ही न था. वह क्योंकर बाहर गई होगी ! तब वह जरूर किसी धोखे में डाली गई.

इसी प्रकार से कुछ देर सोचने के बाद पुनः भैयाराजा सदर दरवाजे के पास गये और उसकी कुण्डी जो अन्दर से बन्द थी खोल कर उसी तिलिस्मी राह से दरवाजे खोलते और बन्द करते हुए मकान और बाग के बाहर निकल गये और उस जगह पर पहुँचे जहाँ दारोगा ने बहुरानी को रथ पर चढ़ाया था. वहाँ भूतनाथ खड़ा उनका इन्तजार कर रहा था जिसे वे बाहर चले आए.

भूत० :(आश्चर्य से) आप बहुत जल्द बाहर चले आए.

भैया० : हाँ, जिस काम के लिए मैं गया था वह काम नहीं हुआ अर्थात मेरी स्त्री उस कमरे में मुझे नहीं मिली जो उसके रहने का स्थान था. मैं वहाँ कुछ देर तक ठहर कर उसका इन्तजार करता अगर उस कमरे का दरवाजा खुला हुआ देखता मगर आश्चर्य तो यह है कि कमरे का दरवाजा अन्दर से बन्द था.
भूत० : अगर दरवाजा अन्दर से बन्द था तो वे जरूर कमरे के अन्दर ही रही होंगी. अस्तु ताज्जुब नहीं किसी मुसीबत में फँस गई हों.

भैया० : मैं भी तुम्हारे दूसरे खयाल का पक्षपाती हूँ, वह जरूर किसी मुसीबत में फँस गई हैं क्योंकि एक तो उसे वहाँ से बाहर निकल जाने का तिलिस्मी रास्ता मालूम न था, दूसरे....
भूत० : तो जरूर कोई दुश्मन वहाँ पहुँचा जिसने उन्हें धोखा दिया.
भैया० : यह काम दारोगा के सिवाय और कौन कर सकता है ? अगर वास्तव में वह कहीं गायब हो गई या उसे किसी दुश्मन ने फँसा लिया है तो कल मेरे जासूस इस बात की खबर देंगे.

भूत० : मैं तो इस समय भी पता लगाने की कुछ कोशिश करूँगा.
इतना कह कर भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर बत्ती जलाई और वहाँ की जमीन को गौर से देखने लगा. रथ के दोहरे पहिए का निशान जमीन पर देखकर वह चौंका और बोला, "देखिए यह चार पहिये के रथ का निशान यहाँ मौजूद है. जरूर वह यहाँ तक लाई गई हैं और यहाँ से रथ पर बैठाकर उन्हें कोई ले गया है. अब आप अपने डेरे पर जाइये और मुझे पता लगाने के लिए इसी जगह पर छोड़ दीजिए, मैं इसी निशान से दुश्मन का पता लगा लूँगा !"

भैया० : अगर मैं भी तुम्हारे साथ रहूँ तो क्या हर्ज है ?
भूत० : नहीं, मुझे इस काम में रोशनी का सहारा लेना पड़ेगा चाहे वह रोशनी किसी चिराग या मोमबत्ती की हो या चमकते हुए सूर्य भगवान के किरणों की. अगर मुझे कोई देख भी लेगा तो कुछ चिन्ता नहीं मगर आपको कोई देख ले तो आपकी इच्छा के विरुद्ध होगा.

भैया० : हाँ यह तो ठीक है, खैर-तुम अपना काम करो, मैं कुछ देर तक तुम्हारे साथ रह फिर मौका पा हट जाऊँगा और सवेरा होते-होते तक भाई साहब के पास पहुँचूँगा तथा मुकाबले में देखूँगा कि ईश्वर की तरफ से हमारा क्या फैसला होता है.

भूत० : बहुत खूब, इसमें कोई मुजायका नहीं उस रथ के पहियों का निशान बिना कहीं से बिगड़े या खराब हुए दारोगा के मकान तक चला गया था क्योंकि अभी तक उस रास्ते पर आमदरफ्त नहीं हुई थी जिससे कि वह निशान बिगड़ता और नष्ट होता, अस्तु भूतनाथ और भैयाराजा को विश्वास हो गया कि बहुरानी को मुसीबत में डालने वाला यह दारोगा ही है.

भैया० : लो गदाधरसिंह, हमलोगों का गुमान बहुत ठीक निकला, अब तुमको चाहिये कि उस दुष्ट के कब्जे से मेरी स्त्री की जान बचाओ.

भूत० : आप इस काम का बोझ मुझ पर डाल कर जाइये और राजासाहब से मिलने की फिक्र कीजिये, वहाँ जाने पर आपको महल के अन्दर का हाल-चाल भी मालूम हो जायेगा जो आपकी स्त्री के गायब होने के बाद वहां पैदा हुआ होगा तथा घटना की सच्चाई जानी जायगी.

"अच्छा" कह कर भैयाराजा वहाँ से चले गए और सूर्य उदय होने के पहिले ही बिना रोकटोक खासबाग में दाखिल होकर राजा साहब के पास पहुँचे जो कि नजरबाग के सामने एक चन्दन की चौकी पर बैठे हाथ-मुँहधो रहे थे, अभी तक बहुरानी के गायब होने का हाल उन्हें मालूम नहीं हुआ था मगर महल के अन्दर लौंडियों में कानाफूसी मची हुई थी.

भैयाराजा पर निगाह पड़ते ही राजा साहब अपना काम छोड़ उठ खड़े हुए और चौकी से नीचे कूद कर नंगे ही पाँव उनकी तरफ झपटे जो राजा साहब को उठते देख तेजी के साथ उनकी तरफ बढ़ते जा रहे थे.

राजा साहब ने बड़े प्रेम से भैयाराजा को गले लगा लिया और दोनों की आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगे. कई आदमी दौड़े हुए कुँअर गोपालसिंह के पास चले गए और उन्हें भैयाराजा के आने की खबर दी.

कुछ देर बाद भैयाराजा का हाथ पकड़े हुए राजा साहब दालान में आए जहाँ बहुत-सी कुर्सियों के अतिरिक्त चाँदी-सोने की भी दो कुर्सियाँ रखी हुई थीं जिन पर हाँ, नहीं करते हुए दोनों भाई बैठ गए और इस तरह बातचीत करने लगे:-
राजा: क्यों भाई, हमने क्या कसूर किया जो तुम इस तरह हमें छोड़ कर चले गए थे ?

भैयाराजा: मैं तो सदा ही आपके चरणों का दास हूँ और जितना प्रेम आप मेरे साथ रखते हैं उसे भी मैं खूब जानता हूँ, फिर यह कब हो सकता है कि मैं आपको कसूरवार समझूँ और रंज होकर चला जाऊँ. मगर इतना जरूर है कि आपने दारोगा के फेर में पड़ कर मेरी जान का कुछ खयाल न किया. मैंने आपके कमरे में पहुँचकर यह प्रकट कर दिया कि दारोगा ने मुझे मार डाला है. मगर आपने इस पर कुछ भी ध्यान न दिया यद्यपि यह बात बहुत ही ठीक थी और वास्तव में दारोगा ने मुझे मार डाला था परन्तु ईश्वर ने एक मददगार पहुँचा दिया जिसने मेरी जान बचा ली और अपने घर ले जाकर मुझे आराम से रक्खा. मैं कई दिनों तक इस बात का इन्तजार करता रहा कि देखें आप मेरे लिए क्या करते हैं मगर जब मैंने देखा कि मेरी बनिस्बत दारोगा पर आप ज्यादे मुहब्बत रखते हैं तब मैं लाचार और हताश होकर रह गया.

राजा: मेरे सोने वाले कमरे में पहुंचकर जो कुछ तुमने किया और जमीन पर लिख कर बताया उस पर मुझे कैसे विश्वास हो सकता था ? मैं तो भूत प्रेत का तमाशा समझकर चुप रहा. फिर आश्चर्य है कि तुम दारोगा की शिकायत करते हो कि 'उसने मुझे मार डालने का प्रयत्न किया' मगर मेरी समझ में नहीं आया कि उसने तुम्हारे साथ ऐसा सलूक करने में अपना क्या फायदा समझ रक्खा था ? आखिर यह भी कहो कि उसने ऐसा क्यों किया ? मैं समझता हूँ कि इस मामले में तुम्हें धोखा हुआ है और इसी धोखे में पड़कर तुमने दारोगा के साथ बड़ी बेइन्साफी की. उनका कान काट डाला और मुँह काला करके जूतों का हार गले में डालकर सरे बाजार छोड़ दिया.

भैया० : जी नहीं, मुझे धोखा नहीं हुआ और दारोगा के साथ जो मैंने यह कार्रवाई की वह भी बेजा नहीं की. असल में तो वह मार डालने के लायक था मगर इस खयाल से मैंने उसकी जान न ली थी कि आप उसे अपना दोस्त समझते हैं और मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहता.

केवल थोड़ी-सी सजा देकर छोड़ दिया, सो भी ऐसी हालत में जब कि आपने मेरे बारे में उसकी करतूतों पर कुछ ध्यान नहीं दिया.
इसी बीच में कुँअर गोपालसिंह भी आ गये और अपने पिता और चाचा को प्रणाम करके आश्चर्य करते हुए एक कुर्सी पर बैठ गये.
राजाः फिर भी मैं यही कहता हूँ कि तुमको दारोगा के बारे में धोखा हुआ जबकि इतने दिनों तक उसने तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया तो अब उसे ऐसा कौन-सी जरूरत आ पड़ी थी कि तुम्हें....

भैया० : (बात काट कर) जी उस दिन की घटना ही ऐसी बेढब थी कि दारोगा के लिए मुझे मार डालने की जरूरत आ पड़ी. मैं वह घटना बयान करता हूँ, आप सुनिये.
इतना कह कर भैयाराजा ने उस दिन का सब हाल बयान किया और जमना, सरस्वती और प्रभाकरसिंह का हाल भी कह सुनाया मगर यह नहीं कहा कि भूतनाथ को इस मामले से क्या सम्बन्ध था अर्थात् भूतनाथ को इस मामले से बिल्कुल ही अछूता रक्खा. यहाँ तक कि इस किस्से में उसका नाम भी नहीं लिया.

भैयाराजा की जुबानी सब हाल सुन कर राजा साहब को बड़ा ही आश्चर्य हुआ. वे सिर झुका कर कुछ सोचते रहे और तब बोले-
राजा : इस समय जमना, सरस्वती और प्रभाकरसिंह कहाँ है ?

भैया० : वे अपने उसी दोस्त के यहाँ हैं जिसने उनकी और उनके साथ ही साथ हमारी भी रक्षा की थी. उन्हें आपके सामने बुला कर उनकी गवाही दिला सकता हूँ.
राजा : नहीं-नहीं, गवाही की क्या जरूरत ? अगर मैं तुम्हें झूठा समझूँगा तो उन्हें सच्चा क्यों समझूँगा ? मगर तुमने बड़े ही आश्चर्य की बात कही. दारोगा ने तो तुम्हारी दुश्मनी का कारण मुझसे कुछ और ही बयान किया था.
भैया० : उसने क्या कहा था ?

इसके जवाब में सीधे-सादे राजा साहब ने वह सब हाल कह सुनाया जो दारोगा ने गढ़ कर राजा साहब से कहा था अर्थात भैयाराजा आपको और कुँअर गोपालसिंह को मार कर स्वयं जमानिया के राजा बनना चाहते हैं और इसी काम में मदद माँगते थे, देने से इनकार किया तब मेरी वह दुर्दशा की गई इत्यादि.

भैया० : (क्रोध में आकर) क्या उस दुष्ट ने आपसे ऐसा कहा ! और आपके दिल में यह बात बैठ भी गई ?
इसका जवाब राजा साहब ने कुछ भी न दिया जिससे भैयाराजा समझ गये कि दारोगा की बातों पर भाई साहब को विश्वास हो गया है.

भैया० : खैर आप दारोगा को यहाँ बुलाइये, मैं जरा उससे पूछूँ तो सही.
राजा : हमारी-तुम्हारी बातों में उसे बुलाने की जरूरत ही क्या है ?

ऐसा जवाब राजा साहब ने इस खयाल से दिया कि उन्हें इस बात का शक हो गया कि दारोगा यहाँ आवेगा तो भैयाराजा उसे जरूर मारेगें मगर भैयाराजा को यह जवाब बहुत बुरा लगा और वह राजा साहब का मतलब समझ गए. भैयाराजा कुछ और कहा ही चाहते थे कि लौंडियों का कोलाहल सुन कर सब कोई चौंक पड़े और उस तरफ देखने लगे जिधर तीन-चार लौंडियाँ घबराई हुई आकर खड़ी हो गई थीं, बहुरानी के गायब हो जाने से महल में कोलाहल मच चुका था और वही खबर सुनाने के लिए लौंडियाँ आई थीं.

राजा साहब ने बड़े ही आश्चर्य के साथ यह खबर सुनी और भैयाराजा की तरफ देखकर कहा, "मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारी ही इच्छानुसार यहाँ से चली गई होगी क्योंकि मैंने यह सुना है कि तुम कई दफे महल में उससे मिलने के लिए आये थे. पहिले तो मुझे यह बात मालूम न थी और महल में आने वाले को चोर या बदमाश समझता था मगर जब वह तुम्हारी भावज ने तुम्हारी स्त्री से सुन कर मुझसे कहा तब मुझे मालूम हुआ कि महल में आने वाले तुम्हीं हो और तब मैं एक तरह पर निश्चिन्त-सा हो गया."

भैया० : (कुछ क्रोध में आकर) बेशक यह काम भी आपके दारोगा साहब ही का है. जब तक अपने लिए कोई ठिकाना नहीं बना लेता तब तक मैं उसे यहाँ से क्योंकर ले जा सकता था ? आप दारोगा को जरूर बुलाइये, बिना उसके आए मेरी बातों का कोई नतीजा नहीं निकलेगा. मुझे आपका और बेचारे गोपालसिंह का दुश्मन बनाया और आपने भी उस पर विश्वास कर लिया ! जरूर मेरी स्त्री का चोर वही दुष्ट है. आप इस बात से निश्चिन्त रहिए, मैं कदापि जमानिया का राजा नहीं बनना चाहता. यदि आपको इस बात का विश्वास न होगा तो मैं अपने को आपके सामने ही मार कर आपके दिल से यह खुटका दूर कर दूँगा मगर अपने मरने से दारोगा को सुखी न होने दूँगा. पहिले दारोगा और अपनी स्त्री को मार कर निश्चिन्त हो जाऊँगा तब आपके चरणों में अपना सर अर्पण करूँगा. अपनी स्त्री को इसलिए मारूँगा कि मेरे बाद उसे किसी तरह का दुःख न भोगना पड़े.

राजा० : नहीं-नहीं-नहीं, ऐसा न करो, मैं इस खूनखराबे को पसन्द नहीं करता, मैं खुशी से तुम्हें यहाँ का राजा बनाने के लिए तैयार हूँ और मुझे विश्वास है कि गोपाल को भी इसमें कोई उज्र न होगा क्योंकि वह बड़ा ही पितृ-भक्त है और मेरी आज्ञा को ईश्वर की आज्ञा के समान मानता है, साथ ही इसके दारोगा को भी इस राज्य से अलग करके तुम्हें बेफिक्र कर दूँगा और उसे अपने साथ जंगल में ले जाकर किसी ठिकाने निवास करूँगा क्योंकि वह मेरा साथ छोड़ना पसन्द न करेगा !

भैया० : अफसोस, आपकी सभी बातों से दारोगा की तरफदारी टपकती है. उसके सामने आपके दिल में मेरी कुछ भी कद्र नहीं है और उसकी बातों के आगे मेरी बातें सच्ची नहीं समझी जाती हैं, अस्तु मैं वही करूँगा जो कह चुका हूँ क्योंकि इतना कह जाने पर भी मैं आपको ईश्वर के समान मानता हूं.

मैं इस बात को साबित करके दिखा दूँगा कि मेरी स्त्री का चोर भी वही है. बेशक मुझसे भूल हुई कि इतने दिनों तक गायब रह कर आपकी मुहब्बत की जाँच करता रहा ! आज मुझे मालूम हो गया कि दारोगा के सामने मेरी कितनी इज्जत है. मैं अब एक क्षण भी यहाँ रहना पसन्द नहीं करता और आपका चरण छूकर बिदा होता हूँ.

इतना कह कर भैयाराजा उठ खड़े हुए और राजा साहब का चरण छूकर वहाँ से रवाना हुए. राजा साहब कितना ही, "हाँ-हाँ, सुनों-सुनों !" कहते रहे मगर भैयाराजा ने एक भी न सुनी लाचार राजा साहब बैठे-के-बैठे रह गये मगर कुँअर गोपालसिंह उठ खड़े हुए और भैयाराजा के पीछे-पीछे बाग के बाहर निकल गये.

वहाँ पर गोपालसिंह ने भैयाराजा का पैर पकड़ लिया और कहा, "आप जहाँ जी चाहे जाइये मगर मेरी दो-चार बातें सुनते जाइये ! मैंने आपका कोई कसूर नहीं किया है और न मैं आपको अपना दुश्मन समझता हूँ, अस्तु मुझ पर जो आपका प्रेम है उसका खून मत कीजिये !"

भैयाराजा अटक गये, उन्होंने गोपालसिंह को उठा कर छाती के साथ लगा लिया और बोले, "नहीं बेटा, मुझे तुमसे रंज नहीं बल्कि तुम्हारे मिजाज और तुम्हारी लायकी से मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ, तुम्हें होनहार समझता हूँ और तुम पर भरोसा रखता हूँ, कहो क्या कहते हो ?"

गोपालः मुझे जो कुछ कहना है एकान्त में कहूँगा, यहाँ बहुत से आदमी हैं.
भैया० : अच्छा मैं तुम्हारे साथ एकान्त में चलता हूँ.

[६]

दिन तीन पहर से ज्यादे ढक चुका है और बाजारों में लोगों की आमदरफ्त बढ़ती जा रही है जो कि दोपहर के समय धीरे-धीरे घटती हुई बिल्कुल कम हो गई थी. बाजार की बड़ी-बड़ी दूकानें भी धीरे-धीरे खुलती जा रही हैं जो सुबह से दोपहर तक व्यवहार करने के बाद बन्द हो गई थीं और उन छोटी-छोटी दूकानों की भी रौनक बढ़ती जा रही है जिनके मालिक सुबह से खोल कर दो घण्टे रात जाते तक भी बन्द करना पसन्द नहीं करते.

जमानिया यद्यपि बहुत छोटा राज्य और मामूली शहर है मगर फिर भी यहाँ का चौक और महाजनी बाजार रौनक पर है और जरूरत की सभी चीजें मिल जाया करती हैं, महाजनों में लेन-देन हुण्डी-पत्री का व्यवहार भी अच्छी तरह से होता है तथा बजाजे और बनारसी माल की दुकानें भी बहुत-सी हैं जिनकों कभी इस बात की शिकायत करने का मौका नहीं मिलता कि 'बिक्री कम होती है और मुनाफे में लज्जत नहीं है' ! हाँ इस बात की शिकायत लोग जरूर करते हैं कि हमारे राजा साहब को किसी बात का शौक नहीं, अगर होता तो इस शहर की रौनक चौगुनी हो गई होती.

शहर की गलियाँ बहुत तंग और इमारतें मामूली दर्जे की हैं परन्तु चौक और महाजनी बाजार की सड़कें कुछ चौड़ी, इमारतें तथा दूकानें बड़ी-बड़ी हैं, क्योंकि इसके पास ही यहीं के राजा साहब का महल है और बड़े-बड़े ओहदेदारों तथा कारिन्दों और फौजी अफसरों का रहना भी इस बाजार के पास ही होता है.

धीरे-धीरे चौक बाजार में भिश्तियों ने छिड़काव भी कर दिया (जो कि दुकानदारों की तरफ से थे) और दूकानें सब खुल गईं तथा संध्या होने तक बाजार पूरी रौनक पर हो गया और सैलानी लोग भी टहलते हुए दिखाई देने लगे, ऐसे समय हम एक ऐसे आदमी को जो रंग-ढंग से कोई देहाती जमींदार मालूम होता था सड़क पर टहलते और इधर-उधर निगाहें दौड़ाते हुए देखते हैं.

इसकी पोशाक कुछ अजीब ढंग की है. सर पर बहुत बड़ी गुलेनार रंग की पगड़ी और बदन में घेरदार जामा है जिसके दोनों बगल खूब चुन्नट पड़ी हुई है तथा पायजामे की मोहरी भी इतनी चौड़ी है कि एक-एक पैर में खासा मोटा-ताजा आदमी बखूबी घुस जाय. बसन्ती रंग का बारह या चौदह हाथ लम्बा कपड़ा जिसमें चारों चरफ सुनहरा गोटा टंका हुआ है कमर में लपेटे है और उसमें एक खंजर भी खुँसा हुआ था.
माथे में रामानन्दी तिलक और गले में तीन-चार छोटे-बड़े दानों की तुलसी की माला है और सबसे बढ़ कर यह बात है कि हाथ में मोटा-सा माथे तक का लट्ठ लिए हुए है जिसे हर कदम पर अपने भद्दे पैरों के साथ-ही-साथ पटकता हुआ चल रहा है.

इस आदमी के पीछे-पीछे इसका एक नौकर भी है जिसके सर पर गन्दा मटमैला साफा और बदन में जगह-जगह से फटी हुई मिरजई पड़ी हुई है. यद्यपि उसकी धोती का कपड़ा छोटा नहीं है मगर घुटने के उपर ही दिखाई देता है. कन्धे पर छोटा-सा थैला जिसमें शायद लोटा, डोरी, कोयला तथा तम्बाकू वगैरह होगा और हाथ में बड़ा-सा नारियल लिये कुछ पीछे-पीछे जा रहा है.

इस जमींदार सूरत वाले आदमी की निगाह चौक की एक बहुत बड़ी दूकान पर पड़ी जिसके ऊपर लटकते हुए तख्ते पर बड़े हरफों में यह लिखा हुआ था-

"यहाँ पर ऐयारी का सभी सामान मिलता है,
ऐयारी सिखाई जाती है, और ऐयारों को

रोजगार भी दिलाया जाता है. आइए
दूकान की सैर कीजिये-"

इस लिखावट को पढ़ कर वह आदमी अटक गया और दूकान की तरफ गौर से देखने लगा. दूकान बड़ी खूबसूरत रंगी हुई थी. खम्भों पर रंग-बिरंगे कपड़ों के गिलाफ चढ़े हुए थे और आगे की तरफ एक सुन्दर सायबान बना हुआ था जिसके चबूतरे पर बैठने के लिए छोटी-बड़ी बहुत-सी कुर्सियाँ रक्खी हुई थीं. कमरे में तलवार लगाये चार-पाँच सिपाही भी काम करते हुए दिखाई देते थे.

कुछ देर देखने के बाद वह आदमी दूकान के अन्दर चला गया और वहाँ की चीजों को बड़े गौर से देखने लगा. एक आदमी जो शायद सौदा बेचने के लिए मुकर्रर था उसके सामने आया और बड़ी लनतरानी के साथ तारीफ करता हुआ तरह-तरह की चीज़ें दिखाने लगा जोकि शीशे की सुन्दर आलमारियों में करीने से सजाई हुई थीं, दूकानदार ने कहा-

"देखिये तरह-तरह की दाढ़ी और मूँछे तैयार हैं, बीस वर्ष से लेकर सौ वर्ष का आदमी बनना चाहे तो बन सकता है. जो पूरी तौर पर ऐयारी नहीं जानते. बनावटी दाढ़ी-मूछें तैयार करने का जिन्हें इल्म नहीं, वे इन दाढ़ी-मूँछों को बड़ी आसानी से लगा कर लोगों को धोखे में डाल सकते हैं, मगर जो काबिल ऐयार हैं और मनमानी सूरत बनाया करते हैं अथवा जो किसी की नकल उतारने में उस्ताद हैं उनके लिए तरह-तरह के खुले हुए बाल अलग रक्खे हुए हैं. (लकड़ी के डिब्बों को खोल कर दिखाते हुए) इन सुफेद और स्याह बालों से वे अपनी मनमानी सूरतें बना सकते हैं, देखिये बारीक, मोटे, सादे और घुँघराले वगैरह सभी तरह के बाल मौजूद हैं, इसके अलावा यह देखिये (दूसरी आलमारी की तरफ इशारा करके) तरह–तरह की टोपियाँ जोकि पूरब. पश्चिम, उत्तर और दक्खिन के मुल्कों वालें पहिरा करते हैं तैयार लटक रही हैं, साफे.

पगड़ी और मुडासों की भी कमी नहीं है, बस सर पर रख लेने की देर है! आइए इधर दूसरे कमरे में देखिए ये तरह-तरह के बटुए लटक रहे हैं जिनमें रखने के लिए एक तरह का सामान भी इस दुकान में मौजूद रहता है. (तीसरे कमरे में जाकर) इन छोटे-बड़े हल्के-भारी सभी तरह के कमन्द और हर्बों की सैर कीजिये जिनकी प्रायः सभी ऐयारों को जरूरत पड़ती है. आप ऐयार हैं इसलिए मैं आपको यहाँ की हर एक चीज की सैर अच्छी तरह कराया चाहता हूँ."

"आप ऐयार हैं" यह सुन कर वह जमींदार ठमक गया और दूकानदार का मुँह देखने लगा.
दूकान० : आप आश्चर्य क्यों करते है, मैं अभी बहुत-सी चीजें आपको दिखलाऊँगा, क्योंकि ऐयार होने के साथ ही आप अमीर भी मालूम पड़ते हैं.
जमींदार० : आपका खयाल गलत है. आपने क्योंकर जाना कि हम ऐयार हैं और अमीर हैं ?

दूकान० : यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, मेरा तो दिनरात का यह काम ही ठहरा. मैं खुद ही ऐयार हूँ और हर घड़ी ऐयारों से वास्ता पड़ा ही करता है. अक्सर ऐयार लोग मुझसे अपने काम में सलाह लेने आया करते हैं और मैं उन्हें अपनी फीस लेकर अच्छी सलाह दिया करता हूँ मगर किसी का भेद नहीं खोलता और एक की बात दूसरे से नहीं कहता.

यह तो हमारी हाल ही में यह नई दूकान हुई है, लेकिन हर एक बड़े शहर में हमारे मालिक की बड़ी-बड़ी दूकानें है जिनमें मेरे ऐसे-ऐसे सैकड़ों ऐयार काम करने के लिए नौकर हैं. ऐयारों से दिन-रात व्यवहार करके हम लोग पक्के हो गए हैं अतएव आपको पहिचान लिया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है और इसके लिए आप किसी तरह की चिन्ता न करें. आइये और इस कमरे की सैर कीजिए जिसमें तरह-तरह की दवाइयाँ तैयार हैं और होती हैं.

दूकानदार की चलती-फिरती बातें सुन कर वह जमींदार दंग हो गया और फिर भी न बोला, उसके साथ उस दूसरे कमरे की सैर करने चला गया और वहाँ देखा कि तरह-तरह की बहुत-सी शीशे की आलमारियों में सोने, चाँदी, तावें, और पीतल के छोटे-बड़े कई प्रकार डिब्बे और डिबियाएँ सजाई रक्खी हैं और कई नौकर जमीन पर बैठे खलबट्टा चला रहे हैं जिनमें हरी, पीली, सुफेद, काली तरह-तरह की दवाएँ घुट रही हैं.

दूकान० : यह देखिए इन आलमारियों में जितने डिब्बे और डिबियायें आप देखते हैं सभी में तरह-तरह की दवाइयाँ मौजूद हैं जो कि ऐयारों के सुभीते के लिए बना कर रक्खी हुई हैं. हमारी दवाओं में इस बात की शर्त है कि पाँच बरस तक कुछ भी खराब नहीं होती और इनके इस्तेमाल से किसी का नुकसान नहीं पहुँचता. इस दूकान में कोई भी ऐसी दवा आपको नहीं मिलेगी जिसमें किसी तरह का जहरीला असर हो या जिससे किसी को किसी तरह का नुकसान पहुँचे, क्योंकि किसी ऐयार का यह धर्म नहीं है कि अपने काम से सर्वसाधारण या खास व्यक्ति को नुकसान पहुँचावे, अगर ऐसा करे तो वह ऐयार नहीं पूरा बेईमान और दगाबाज है.

ऐयार का यही काम है कि अपने मालिक के लिए छिपे हुए मामले का पता लगाये; दुष्टों, चोरों और खूनियों का पता लगाये; राजाओं-रईसों की लड़ाइयों को जिनमें बहुत-से आदमियों का खून होना संभव है अपनी कारीगरी से रोके और सहज ही में मामला को तै कर डाले, जो लोग इसके विपरीत करते हैं उन्हें ऐयार नहीं समझता. वे चोर, बदमाश और डाकू हैं तथा किसी भले आदमी के पास बैठने लायक नहीं और उनका किसी रईस को भरोसा न करना चाहिए. अस्तु इस दूकान में जितनी चीजें हैं सब ईमानदार ऐयारों ही के लिए हैं.

सम्भव है कि इन चीजों से कोई बुरा काम ले जिसमें कि हम लोगों का कोई कसूर नहीं है मगर हम लोग अगर किसी को ऐसा करते देखते और सुनते हैं तो सजा देने के लिए भी तैयार हो जाते हैं, हम लोग बहुत ठीक और कीमती दवाइयाँ रखते हैं, हमारे यहाँ की बेहोशी की दवा अगर किसी को ज्यादे भी खिला-पिला या सुँघा दी जाय तो उसका कुछ नुकसान नहीं होता या अगर पाँच-पाँच सात-सात दिन तक भी उससे किसी आदमी को बेहोश रक्खा जाय तो दिल और दिमाग में किसी तरह की खराबी नहीं पहुँच सकती, इसी तरह चेहरे पर लगाने के लिए भी जितने तरह के रोगन हैं उनसे बदन की जिल्द में धब्बा नहीं पड़ने पाता और न चमड़े का रंग ही बदलता है जिल्द में खुरदुरापन नहीं आता.

इसके अलावा पक्का रोगन भी इस दूकान में मौजूद है जो कि एक खास किस्म के अर्क से अगर धोया न जाय तो महीनों तक अपना रंग कायम रखता है, मसा और तिल बनाने का मसाला भी इस दूकान में बहुत अच्छा तैयार है. तारीफ तो यह है कि हमारे यहाँ की किसी दवा में बदबू नहीं है, सभी खूशबूदार चीजों के पुट देकर तैयार की जाती हैं. आप इस दूकान की कोई चीज इस्तेमाल करके देखिए, हाँ इस दूकान में खाने की चीजें भी ऐसी बनती हैं कि जिन्हें आप महीनों तक ऐयारी के बटुए में रख कर सफर में काम ले सकते हैं और बिगड़ने नहीं पाती तथा उनमें किसी तरह की छूत भी नहीं है अर्थात् खालिस घी, चीनी, दूध और फल से बनाई जाती है. आप नमूने के तौर पर कुछ खाकर भी देख सकते हैं.

जमी० : बेशक आपकी दूकान बड़े काम की है, मगर मैं समझता हूँ कि यह अभी थोड़े ही दिनों से कायम हुई है.
दुकानदारः यह तो मैं खुद ही कह चुका हूँ कि बड़े शहरों में हमारे मालिक की बहुत-सी दूकानें हैं, यहाँ भी थोड़े दिनों से एक शाखा खोली गई है.
इतने ही में एक आदमी की सूरत देख कर वह जमींदार चौंक पड़ा जो कि आलमारियों के शीशों को रेशमी कपड़े से पोछ कर साफ कर रहा था. यद्यपि जमींदार ने अपने दिल के भाव को छिपाने के लिए बड़ी कोशिश की मगर फिर भी दूकानदार समझ ही गया और बोला, "मगर इस शहर में हम लोगों को नौकरों की बड़ी तकलीफ हुई. हम सिर्फ सात आदमी ऐसे हैं जो कि एक साथ मालिक के भेजे हुए इस शहर में आये हुए हैं और जिनको कि हम अपना साथी कह सकते हैं.

बाकी के जितने आदमी आप देखते हैं सब इसी शहर में नौकर रक्खे गये हैं और इसीलिए हम लोग दवा के काम में इनसे मदद नहीं लेते."
जमी० : ठीक है, यह काम आपने बड़ी होशियारी का किया क्योंकि (धीरे-से कान में मुँह लगा कर) इस शहर के आदमी बड़े बेईमान होते हैं खास कर इन दिनों तो...

दूकान० : मैं उम्मीद करता हूँ कि आपसे इस काम में मुझे मदद मिला करेगी.
जमीं० : जरूर, मैं अक्सर आया करूँगा और अपने दोस्तों को भी लाऊँगा !
दूकान० :कोई चीज खरीदने की इच्छा है ?
जमीं० : हाँ, मुझे कुछ चीजों की जरूरत भी है जो कि मैं एकान्त में आपसे कहूँगा, आप किसी दूसरे कमरे में चलिए.

जमींदार को साथ लिए दूकानदार साहब जिसका नाम रामेश्वरचन्द्र था, एक दूसरे कमरे में चले गये जो खास करके ग्राहकों और रईसों के बैठने व आराम करने के लिए मुकर्रर था. यह कमरा बहुत साफ और साधारण ढँग पर सजा हुआ था. इसकी दीवार और छत आसमानी रंग की थी और जमीन पर सुफेद फर्श बिछा हुआ था तथा बारह कुर्सियाँ और चार-पाँच कोच भी रक्खे हुए थे जिनकी गद्दियों के ऊपर सुफेद चाँदनी बन्द के सहारे बँधी हुई थी. छत में दस-बारह शीशे लटक रहे थे जिनमें इस समय रोशनी हो चुकी थी. रामेश्वचन्द्र ने जमींदार को ले जाकर एक कोच पर बैठा दिया तथा आप एक कुर्सी खैंच कर उनके पास ही बैठ गया और बातचीत करने लगा.

रामेश्वर० : हाँ, अब आप फरमाएँ आपको किस-किस चीज की जरूरत है ?
जमींदार० : एक तो मुझे ऐसी पोशाक की जरूरत है जो खास काबुल के रहने वाले अमीर मुगल लोग पहिरते हैं.

रामेश्वर० : तैयार, मौजूद है, और फरमाइये ?
जमींदार० : ऐसी दवा भी चाहिये जो आदमी को कम-से-कम सात दिन तक के लिए गूँगा बना सके

रामेश्वर० :करीब-करीब ऐसी ही दवा मैं दे सकता हूँ जो कि किसी की जुबान पर लगा देने से वह बोलने लायक न रहेगा. जुबान की शक्ति बिल्कुल जाती रहेगी मगर उसे खाने-पीने में किसी तरह की तकलीफ न होगी और न कोई चीज बदजायका मालूम पड़ेगी.
जमींदार० : बस इस वक्त मैं बतौर आजमाइश के सिर्फ ये दो चीज ही आपके यहाँ से खरीदूँगा, अगर आपके यहाँ की दवा ठीक निकली तो मैं दो-तीन दिन में आपसे मिल कर बहुत-सी चीजें खरीदूँगा.

दूकानदार रामेश्वरचन्द्र ने थोड़ी ही देर में दोनों चीजें लाकर जमींदार के सामने रख दीं और दस अशर्फी उनकी कीमत माँगी जो कि उसी वक्त जमींदार ने अपनी कमर से निकाल कर दे दी और कहा कि-'ये चीजें मेरे नौकर के हवाले कर दी जायें जिसे कि मैं दूकान के बाहर छोड़ आया हूँ, दूकानदार ने ऐसा ही किया चलते समय जमींदार ने दूकानदार से कहा-
जमींदार० : दूकान के लिए यह मकान आपको बहुत अच्छा मिल गया है, असल में यह ऐयारों के ही रहने लायक है. मैं इसके हर दर्जे, कोठरियों, कमरों और तहखानों से वाकिफ हूँ.

रामेश्वर० : जी हाँ, यह मकान हमको बहुत अच्छा मिल गया है और मकान मालिक भी बहुतनेक आदमी हैं.
जमींदारः हाँ, मैं जानता हूँ, यह मकान यहाँ के एक ओहदेदार रईस दामोदर सिंह का है और उन्होंने अपने दामाद इन्द्रदेव को दहेज के साथ दे दिया है, तो आपने इसे किससे किराये पर लिया है ? दामोदरसिंहजी से या इन्द्रदेव से ?
रामेश्वर० : देवजी की सूरत मैंने अभी तक नहीं देखी मगर सुना है कि यहाँ के दारोगा साहब के वे गुरूभाई हैं और बड़े लायक आदमी हैं ?

जमींदार० : ठीक है, वास्तव में ऐसा ही है.
इतना कह कर जमींदार वहाँ से रवाना हुआ मगर अभी दूकान के बाहर नहीं हुआ था कि सामने से दूकान के अन्दर आते हुए गदाधरसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जो कि इस समय अपनी असली सूरत में था. जमींदार भूतनाथ को देख कर सहम गया लेकिन भूतनाथ ने उस पर एक मामूली निगाह डालने के अतिरिक्त और कुछ खयाल नहीं किया.

उस जमींदार के चले जाने के बाद रामेश्वरचन्द्र ने भूतनाथ को अन्दर वाले एकान्त के कमरे में बड़ी खातिर से बैठाया और पूछा, "कहिए कुशल तो है ?"

भूत० : हम लोगों से कुशल-मंगल पूछना तो व्यर्थ ही है जब तक निद्रादेवी की गोद में हैं तब तक तो कुशल है और जहाँ उससे सम्बन्ध छूटा कि दिमाग में चक्कर आने लगे. तरह-तरह के खयालात, तरह-तरह के विचार और तरह-तरह के मनसूबों से दम-भर के लिए भी फुरसत नहीं. केवल इतना ही नहीं शरीर का सुख भी मिलना कठिन ही होता है, न दिन को दिन गिनना पड़ता है न रात को रात, न जाड़े का खौफ न गर्मी का खयाल, न बरसात से डर न धूप से परहेज. बस केवल अपने काम की धुन लगी रहती है, जिस पर भी मेरे ऐसे कम्बख्त का तो पूछना ही क्या है जिसे मालिक के काम की फिक्र तो नाम मात्र को ही है परन्तु बाहरी सैकड़ों तरफ के तरद्दुदों का शिकार हो रहा है. सच तो यों है कि ऐयारी का पेशा ही बहुत बुरा होता है.

रामे० : (मुस्कुरा कर) भला आपकी इस बात को मैं क्योंकर मान लूँगा ?
भूत० :सो क्यों ?
रामे० : आपको ऐयारी पेशे में तो किसी तरह की तकलीफ हुई नहीं, हाँ मानसिक विकारों के कारण आप जरूर परेशान हो रहे हैं. इसमें ऐयारी पेशे का तो कोई कसूर है नहीं, इसे तो आप मुफ्त ही बदनाम कर रहे हैं.

भूत० : एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक है मगर मेरे मानसिक विकारों की उत्पत्ति तो ऐयारी ही के सबब से है.
रामे० : सो भले ही हुआ करे. सभी ऐयारों का दिल तो एक-सा नहीं होता. इन्द्रदेव क्या ऐयार नहीं ? फिर आपकी तरह तरद्दुद में क्यों नहीं फँसते ?

भूत० : (मुस्कुरा कर) उनकी बात जाने दो ! वे महात्मा हैं बल्कि देवता हैं, हम लोग नालायक और अभागे हैं अतएव दुःख भी हमीं लोगों के हिस्से में पड़ा हुआ है. खैर इस बहस को जाने दो क्योंकि मुझे इस समय इतनी फुरसत नहीं है.

यह बताओ कि तुमको भैयाराजा की कुछ खबर है ? मैं इस समय उन्हीं का पता लगाने के लिए तुम्हारे पास आया. तुम्हारी दूकान तो हम लोगों के लिए एक लाभदायक अड्डा है.
रामे० : इसी ख्याल से तो यह कारखाना खोला गया है. अच्छा तो आप इस समय भैयाराजा का केवल पता ही पूछना चाहते हैं या उनसे मिलना भी चाहते हैं ?

भूत० : वाह वाह, अगर मुलाकात हो जाय तो फिर पूछना क्या है ?
रामे० : वे आज दोपहर के समय भेष बदले हुए मेरे पास आये थे ! आपके नाम की एक चीठी दे गये हैं और कह गये हैं कि आधी रात के समय हम पुनः यहाँ आवेंगे अगर गदाधरसिंह से मुलाकात हो जाय तो उन्हें उस समय यहाँ आकर मुझसे मिलने के लिए कह देना. (एक चीठी निकाल कर और भूतनाथ के हाथ में देकर) लीजिये इस चीठी को पढ़िये.

भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द्र के हाथ से चीठी ले ली और बड़े उत्साह से उसे पढ़ना आरम्भ किया. यह लिखा हुआ था:-
"मेरे प्यारे गदाधरसिंह,

क्या उस बात का पता लगा जिसकी खोज में तुम मुझसे जुदा हुए थे ? क्या वास्तव में वही शैतान उसका चोर है जिस पर तुमने शक किया था ? मैं आधी रात के समय यहाँ आऊँगा, अगर सम्भव हो तो मुझसे जरूर मुलाकात करो, यदि न मिल सको तो इस चीठी का जवाब लिख कर रामेश्वर के पास रख दो, मैं आकर ले लूँगा !

तुम्हारा वही-भैया०

चीठी पढ़ने के बाद भूतनाथ ने भी उसी जगह से कलम-दवात और कागज उठा कर यह जवाब लिखा:-
"मेरा खयाल ठीक निकला, उसी शैतान ने यह काम किया है.

भूत०

चीठी लिफाफे में बन्द करके भूतनाथ ने उस पर अपनी मोहर लगाई और रामेश्वर के हाथ में देकर कहा, "यह जवाब उनको दे देना और कह देना कि मैं रात को यहाँ उनसे जरूर मिलूँगा, अगर मेरे आने में देर हो जाय तो मेरा इन्तजार करें."

रामे० : (चीठी लेकर) बहुत खूब मैं उन्हें तब तक रोके रहूँगा जब तक आप न आवेंगे. (मुस्कुरा कर) कहिये कुछ खरीदना है ?

भूत० :(हँस कर) हाँ तुम्हारा सर खरीदना है ! अच्छा यह तो बताओ कि यह जमींदार कौन था जो अभी-अभी यहाँ से गया है ?

रामे० : इसमें तो कोई शक नहीं कि कोई ऐयार है मगर बेवकूफ है. ज्यादे हाल अभी मालूम नहीं हुआ है क्योंकि आज वह पहिले ही मर्तबे यहाँ आया है.

भूत० : मुझे उस पर शक होता है कि वह जरूर मेरे बागी शागिर्दों में से है.

रामे० : आपके शक को हम लोग यकीन के दर्जे तक मानते हैं. अगर ऐसा भी हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं, देखिये दूसरी मुलाकात में कुछ-न-कुछ पता लग ही जायगा.

भूत० : अच्छा तो मैं जाता हूँ, ज्यादे देर तक नहीं ठहर सकता.

रामे० : क्या कोई जरूरी काम है ? कुछ भंग-बूटी की नहीं ठहरेगी ?

भूत० : नहीं, इस समय मुझे भंग का कुछ खयाल नहीं है क्योंकि एक कठिन काम का बाँधनू बाँध चुका हूँ जिसे आज जरूर पूरा करना है. हाँ भैयाराजा से मिलने के समय जब रात को आऊँगा तो जरूर बूटी छानूँगा और स्नान करके तुम्हारा ही सर खाऊँगा भी.

रामे० : (हँसकर) बहुत अच्छा, मैं हाजिर हूँ, बन्दोबस्त कर छोड़ूँगा.

भूत० : (कुछ सोच कर) अच्छा एक काम करो, कुछ सामान दो तो मैं इसी जगह सूरत भी बदलूँ, नहीं तो तरद्दुद करना पड़ेगा.
रामे० : लीजिये हर तरह का सामान तो मौजूद ही है, चलिये फिर तहखाने में.
भूत० : हाँ चलो !
दोनों आदमी उठ खड़े हुए और पास का एक दरवाजा खोल कर दूसरे कमरे में चले गये.

कुछ देर के बाद भूतनाथ एक साधु की सूरत बना हुआ हाथ में एक सुन्दर तानपूरा लिये उस कमरे के बाहर निकला. साथ में रामेश्वरचन्द्र भी मौजूद था जिससे कुछ बातें करने के बाद भूतनाथ दूसरे दरवाजे की राह से मकान के बाहर निकला.

भूतनाथ इस दूकान के अन्दर अकेला आया था सही परन्तु उस बाजार में वह अकेला नहीं आया था बल्कि उसके साथ सूरत बदले हुए उसके दो शागिर्द भी थे जिन्हें वह दूकान के बाहर बल्कि दूकान से कुछ दूर हट कर छोड़ गया था और कह गया था कि इसी जगह घूमते-फिरते कुछ समय बिताओ और मेरे आने का इन्तजार करो. मैं रामेश्वरचन्द्र की दूकान में जाता हूँ, शायद कोई काम बन जाय, अस्तु जब भूतनाथ दूकान से निकल कर बाहर आया तो इशारे से अपने को प्रकट करके उन दोनों को साथ लिया और उस सड़क पर चल पड़ा जो खासबाग की तरफ चली गई थी.

इसी सड़क पर कुछ दूर आगे जाकर नागर का मकान था जो एक छोटे-से बगीचे के अन्दर बना हुआ था या यों कहिए कि उस मकान के चारों तरफ कुछ थोड़ी-सी जमीन छूटी हुई थी जिसमें उसने कुछ फूल-पत्ते और चन्द मेवों के दरख्त लगा रक्खे थे, और एक छोटी-सी चारदीवारी कायम करके सड़क की तरफ एक फाटक बनाया था जहाँ प्रायः उसके दो-एक नौकर रहा करते थे.

नागर के मकान के सामने एक महाजन का मकान था जिसके आगे ऊँचा और पक्का चबूतरा था जिस पर दस-पन्द्रह आदमी बखूबी बैठ सकते थे. इस समय जबकि भूतनाथ वहाँ पहुँचा बिल्कुल सन्नाटा था.

चलता-चलता भूतनाथ वहाँ अटक गया और चबूतरे के पास खड़ा होकर नागर के मकान की तरफ देखने लगा, उस फाटक के बाहर निकलते हुए एक आदमी को भूतनाथ ने देखा और अपने एक शागिर्द से कहा कि मैं इसी जगह ठहरता हूँ तुम इसके पीछे-पीछे जाकर पता लगाओ कि यह आदमी कौन है, मुझे शक होता है कि यह दारोगा साहब का आदमी है.

आज्ञानुसार भूतनाथ का शागिर्द उस आदमी के पीछे-पीछे चला गया और थोड़ी ही देर मैं लौट आकर बोला, "आपका खयाल बहुत ठीक है, वह दारोगा साहब का खास कृपापात्र (नौकर) टीमल है, आगे तम्बोली की दूकान पर बैठ कर पान बनवा रहा है."

भूत० : (प्रसन्न होकर) तो बस इसमें कोई सन्देह नहीं कि दारोगा साहब यहाँ आ गये हैं. सच तो यों हैं कि इस समय ईश्वर ही ने मेरी सहायता की, जिस काम के लिए मैं जा रहा था वह ईश्वर चाहेगा तो इसी जगह निकल जायगा. अगर दारोगा के साथ-साथ जैपाल भी वहाँ आया हो तब तो कहना ही क्या है.

शागिर्द० : जैपाल जरूर आया होगा. ऐसे-ऐसे मौके पर दारोगा उसे अपना सहायक बना कर जरूर साथ रखता है और उसकी ताकत पर भरोसा करता है.
भूत० : तुम्हारा कहना बहुत ठीक है. अच्छा मैं इसी वेष में इस मकान के अन्दर जाने का उद्योग करता हूँ, जब जाऊँगा तुम दोनों को अपने साथ लेता जाऊँगा. वहाँ क्या करना होगा सो मैं अभी से इसी जगह तुम दोनों को समझाए देता हूँ.

इतना कह कर भूतनाथ ने समय के अनुसार जो कुछ मुनासिब था अपने दोनों शागिर्दों को समझा दिया और इसके बाद उसी चबूतरे पर बैठ कर तानपूरा छेड़ता हुआ गाने लगा.
भूतनाथ परले सिरे का गवैया था और इस फन को बहुत अच्छी तरह जानता था परन्तु सिवाय उसके अन्तरंग मित्रों के और कोई विशेष इस बात को जानता न था और न हर एक के सामने वह कभी गाता ही था, यहाँ तक कि दारोगा और नागर को भी इस बात का पूरा ज्ञान न था.

भूतनाथ ने बड़ी विज्ञता के साथ बागेश्वरी की एक तान लगाई जिसकी आवाज नागर के कान तक पहुँची और एक दफे उसका कलेजा हिल गया, नागर वेश्या थी और गाने-बजाने का काम करती थी. यद्यपि ओस्तादों के खयाल से वह इस फन में ओस्ताद नहीं मानी जाती थी परन्तु वास्तव में उसकी समझ अच्छी थी और गाने-बजाने का उसे बहुत शौक था. वह हमेशा इस फन के ओस्तादों को ढूँढा करती थी. भूतनाथ भी इस सबब से कि नागर को संगीत का बहुत शौक है और वह बहुत अच्छा गाती है उसे जी-जान से प्यार करता था, दारोगा का नागर से मुहब्बत करना यद्यपि भूतनाथ को बुरा मालूम होता था मगर नागर भूतनाथ से यही प्रकट करती थी कि मैं मुहब्बत तुम ही से करती हूँ और दारोगा साहब को केवल रकम वसूल करने के लिए लगा रक्खा है, मगर वास्तव में क्या बात थी सो नागर ही जाने, रण्डियों की माया बड़े-बड़े बुद्धिमानें को उल्लू बना डालती है.

निःसन्देह उस समय दारोगा साहब और उनके साथ जैपाल भी नागर ही के यहाँ बैठे हुए थे और भूतनाथ की तान ने उन दोनों का दिल भी अपनी तरफ खैंच लिया था. कुछ देर तक तो वे तीनों सन्नाटे में आकर उस गीत को सुनते रहे इसके बाद नागर ने दारोगा से इजाजत लेकर अपना आदमी यह देखने के लिए भेजा कि गाने वाला कौन है.

जब उसे यह मालूम हुआ कि गाने वाला एक साधु है जो अपने दो शिष्यों के साथ सामने के चबूतरे पर बैठा गा रहा है तब उसने बड़े आग्रह के साथ साधुरूपी भूतनाथ को बुलाया, दो-चार नखरे-तिल्ले तथा हाँ-नहीं के बाद भूतनाथ नागर के पास गया जहाँ दारोगा और जैपाल मस्त बैठे हुए नागर से बातें कर रहे थे.

भूतनाथ अपने दोनों शागिर्दों को बंगले के बाहर छोड़ गया जहाँ नागर के कई नौकर-सिपाही भी थे और खुद जब नागर के सामने गया तब उसे मालूम हुआ कि इस समय ये तीनों आदमी शराब के नशे में मस्त हैं, जरूर हमारे आने के पहिले यहाँ बोतल और प्याले भी मौजूद रहे होंगे.
तीनों आदमियों ने साधुरूपी भूतनाथ को प्रणाम किया. नागर ने बड़ी खातिर से उसे अपने पास बैठाया और उसके गाने की तारीफ करने लगी.

नागर० : (साधु से) कहिये महात्माजी, आपका मकान कहाँ है ?
साधु० : भला साधुओं का भी कहीं मकान होता है ?
नागर० : क्यों नहीं, आखिर कहीं गुरू का स्थान या मठ वगैरह होता ही है.

साधु० : जो अपना मठ और स्थल रखते हैं वे साधु नहीं हैं. हम उन लोगों में नहीं है जिन्हें अपने पीछे का खयाल रहता है. हम तो जहाँ रह गये वहीं हमारा स्थान है और जिसने हमें भोजन दे दिया वही हमारा गुरू और सर्वस्व है.

नागर० : ठीक है, वास्तव में आप लोगों के लिए ऐसा ही होना चाहिए, अब यह बताइये कि इस समय आपका आना कहाँ से होता है ?

साधु० : हमें इस शहर में आये अभी तीन-चार घण्टे से ज्यादे नहीं हुए है, नेपाल से आ रहे हैं, वहाँ बड़े-बड़े गवैयों का जमघट हुआ था, बस गाना सुनने के शौक में वहाँ गये थे.

नागर० : आखिर इस समय डेरा कहाँ किया है ?
साधु० : मैं तो पहिले ही कह चुका कि जहाँ बैठ गये. वहीं डेरा है.
नागर० : तो बेहतर होगा कि आप मेरे ही मकान में डेरा डालें, यहाँ अक्सर गाना-बजाना भी हुआ करता है और आप भी बहुत अच्छा गाते हैं

साधु० : खैर जैसा होगा देखा जायगा.
नागर० : मुझे आपकी आवाज बहुत ही भली मालूम हुई इसीलिए आपको तकलीफ दी है, अगर कृपा कर कुछ गाइये तो....
साधु० : क्या हर्ज है, मैं गाता हूँ सुनिये, मालूम होता है कि आपको भी गाने का शौक है.

इतना कह कर साधु महाशय ने तानपूरा छेड़ा और मालकौस का एक ध्रुपद गाने के बाद उसे जमीन पर रख दिया, इनका गाना सुन कर दारोगा, नागर और जैपाल तीनों ही बहुत प्रसन्न हुए और उनकी यही इच्छा हुई कि बाबाजी और कुछ गावें मगर जब उन्होंने बाबाजी से गाने के लिए कहा तब बाबाजी ने यह जवाब दिया कि 'अब तो गांजे का एक दम लगा लेंगे तब गावेंगे'.
नागर० : मैं आपके लिए अभी गांजे का बन्दोबस्त करती हूँ.

साधु० : बन्दोबस्त करने की कोई जरूरत नहीं, मेरे पास सब सामान अर्थात् गाँजा, सुर्ती, चिलम वगैरह तैयार है, आप केवल अग्नि मँगा दीजिये और कमरे के सब दरवाजे बन्द करके मेरा गाना सुनिये. दरवाजा बन्द किये बिना आवाज कायम नहीं होती और गूँजती भी नहीं.
नागर० : जैसा आप कहते है वैसा ही होगा.

नागर ने एक बर्तन में कण्डे की आग मँगवा दी और तब अपने हाथ से कमरे के सब दरवाजे बन्द कर दिये. साधु ने अपनी कमर में से अनमोल अद्भुत गाँजा जिसमें बेहोशी पैदा करने वाली एक प्रकार की दवा मिली हुई थी निकाला और चिलम तैयार कर धुएँ का गुब्बारा बाँधने लगे, यहाँ तक कि धुएँ से तमाम कमरा भर गया, यद्यपि यह बात दारोगा साहब को कुछ बुरी मालूम हुई मगर नागर की खातिर से चुप रहे. साधु ने तानपूरा उठा लिया और गाना शुरू किया.

अबकी दफे गाना सुनकर सब-के-सब मदहोश हो गये. उस गाँजे के धुएँ ने भी सबका दिमाग बिगाड़ दिया और धीरे-धीरे नागर, दारोगा और जैपाल तीनों आदमी बेहोश होकर जमीन पर लम्बे हो गये.
उस समय भूतनाथ कमरे के बाहर आया और अपने दोनों शागिर्दों को ढूँढने लगा. थोड़ी दूर जाकर भूतनाथ को देखते ही उसके एक शागिर्द ने कहा, "हम लोग अपना काम कर चुके हैं, अब यहाँ कोई आदमी ऐसा नहीं है जो होश में हो."
भूत० :शाबाश, खूब काम किया ! कमरे के अन्दर मैं भी अपना काम कर चुका हूँ. अब तुम दोनों आदमी मेरे पीछे-पीछे चले आओ.

दोनों शागिर्दों को साथ लिये हुए भूतनाथ पुनः कमरे के अन्दर गया. जैपाल के बदन पर से उसके तमाम कपड़े उतार कर उसने जैपाल को अपने शागिर्दों के हवाले किया और कहा, "बस इसे तुम दोनों आदमी उठा कर लामाघाटी में ले जाओ और कैद कर रक्खो तथा यहाँ जितनी हल्की और कीमती चीजें दिखाई देती हैं सभी उठा कर लेते जाओ.

भूतनाथ की आज्ञानुसार उसके दोनों शागिर्द वहाँ की कीमती चीजें और जैपाल को लेकर चले गये और तब भूतनाथ कमरे का दरवाजा बन्द करके दीवार के साथ लगे हुए एक आइने के सामने बैठ गया. बहुत चालाकी से उसने अपनी सूरत जैपाल की सूरत के समान बनाई और उसके तमाम कपड़े पहिर कर तथा कमरे का एक दरवाजा खोल कर उसी जगह दारोगा और नागर के पास लेट गया.

बची हुई रात और पहर-भर दिन चढ़े तक वे लोग बेहोश पड़े रहे.
भूतनाथ की आँखों में यद्यपि नींद न थी परन्तु वह मौके का इन्तजार करता हुआ चुपचाप उसी जगह पड़ा रहा. इस बीच में भूतनाथ ने देखा कि नागर की लौंडियाँ और नौकर कई दफे कमरे के दरवाजे पर उन लोगों को देखने के लिए आए परन्तु नागर और बाबाजी वगैरह को बेहोश देख चुपचाप लौट गए, उन लोगों को जगाने या होशियार करने की किसी ने हिम्मत नहीं की.

सबके पहिले दारोगा की बेहोशी दूर हुई और वह उठ कर बड़ी घबराहट के साथ चारों तरफ देखने लगा तथा पहर-भर दिन चढ़ा हुआ जान कर बहुत ही परेशान हुआ क्योंकि वह नागर के घर में बहुत चोरी के साथ छिप कर आया करता था, अब दिन के समय यहाँ से जाना उसे बड़ा कठिन मालूम हुआ तथा इस बात की भी चिन्ता हुई कि न-मालूम हमारे घर पर हमारे न रहने के सबब से लोगों को क्या गुमान हुआ होगा और राजा साहब ने भी मुझे याद किया होगा या नहीं, इत्यादि.
होश-हवास दुरुस्त करके दारोगा ने नागर और जैपाल को हिला-हिला कर जगाया और जब वे दोनों भी उठ कर बैठे तो इस तरह बातचीत होने लगी-

नागर० : (आश्चर्य से चारों तरफ देख कर) यह हम दोनों को क्या हो गया था ? (दारोगा से) आपने हमको जगाया क्यों नहीं ?
दारोगा० : मैं खुद जागता तब तो तुम्हें भी जगाता.
नागर० : आखिर मामला क्या है ?

जैपाल० : क्या उस साधु ने हम लोगों को धोखा दिया ?
दारोगा० : बेशक यही बात है.
नागर० : (चारों तरफ देख कर) जरूर वह कोई ऐयार था ! देखिए मेरी बहुत-सी कीमती चीजें भी यहाँ से गायब हैं ! सोने के गुलदस्ते, इत्रदान, पानदान, रिकाबियाँ इत्यादि सभी चीजें भी यहाँ से गायब हैं ! उस खूँटी पर मेरी मोती की माला टंगी हुई थी वह भी दिखाई नहीं पड़ती ! बेशक वही इन सब चीजों को भी उठा ले गया. कम्बख्त लौंडी, गुलाम और सिपाहियों ने भी हम लोगों की कुछ खबर नहीं ली !

दारोगा० : मालूम होता है कि उस साधु ने उन लोगों पर भी कोई करामात की होगी. जरूर वह कोई ऐयार था मगर हम लोगों को यहाँ छोड़ क्यों गया, यही आश्चर्य है!
जैपाल० : अजी वह ऐयार नहीं बल्कि चोर था, तभी तो यहाँ की कीमती चीजें सब उठा ले गया. ऐयार लोग चोरी करने के लिए किसी के घर में नहीं घुसते, अगर वह ऐयार होता तो जरूर हममें से किसी-न-किसी को ले गया होता.
दारोगा० : तुम्हारा कहना ठीक है, वह जरूर चोर था, ऐयार नहीं.

नागर० : आखिर लौंडी, गुलाम और पहरे के सिपाही लोग क्या झक मार रहे थे ? उन्हें बुला कर पूछूँ तो कुछ पता लगे.
इतना कह कर नागर वहाँ से उठी और बाहर जाकर उसने दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि उस साधु के साथ दो शागिर्द भी थे जिन्हे वह बंगले के बाहर छोड़ गया था. उन्हीं दोनों शागिर्दों ने अपनी कारीगरी से बाहर के लौंडी गुलाम और सिपाहियों को बेहोश कर दिया था इसलिए किसी को भी इस बात की खबर नहीं है कि वह साधु कमरे के अन्दर से क्या ले गया और कब चला गया.

अपने नौकरों की फजीहत करने के बाद नागर पुनः कमरे के अन्दर आई और दारोगा साहब से बाहर का सब हाल सुना कर बोली, "आपकी हुकूमत इस जमानिया में बहुत ही अच्छी है. ऐसे-ऐसे चोर और बदमाश यहाँ बसते हैं और जब आप ही लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं तो बेचारे रिआया लोगों की रक्षा तो बस विधाता ही के आधीन है मेरी जितनी चीजें यहाँ से गई सब आप ही को देनी पड़ेंगी !"

दारोगा० : (शर्मिन्दगी के साथ) बेशक मैं दूँगा और तुम्हें दिखा दूँगा कि ऐसे बदमाशों के साथ मैं कैसा सलूक करता हूँ. (जैपाल की तरफ देख के) अब यहाँ से घर जाना मेरे लिए बड़ा ही मुश्किल है. जितना मैं छिप कर रात के समय आता हूँ उतना ही मेरा परदा खुला चाहता है. अब दिन के समय मैं क्योंकर यहाँ से बाहर निकलूँगा ? न-मालूम मेरे घर पर कितने आदमी आकर लौट गये होंगे और लोगों के दिल में क्या-क्या बातें पैदा हो रही होंगी अथवा लोग मेरी खोज में कैसा हैरान हो रहे होंगे. राजा साहब को अगर मेरे गायब हो जाने की खबर लगी होगी तो.....

जैपाल० : बेशक बड़ी मुश्किल का सामना है. मेरी तो यह राय है कि आज दिन-भर आप इसी घर में रह जाइये, मैं जाकर सब तरह की आहट ले आता हूँ और आपके आदमियों को भी शान्ति दे आता हूँ. इसके अतिरिक्त यदि और कोई जरूरी काम हो तो कहिये मैं उसे भी ठीक कर आऊँ.
दारोगा० : तुम्हारा कहना ठीक है, ऐसा ही करने से काम चलेगा.

इतना कह कर दारोगा ने जैपाल को एकान्त में ले जाकर कुछ समझाया और अपनी कमर से तीन-चार तालियों का एक गुच्छा निकाल कर और जैपाल के हाथ में देकर कहा, "हमारे घर में तुम्हें कोई रोकने वाला है नहीं क्योंकि हमारे सभी आदमी जानते हैं कि दारोगा साहब और जैपाल में कोई भेद नहीं है, अस्तु तुम घर में जाकर एक दफे कैदियों की खबर लेना और उनके लिए भोजन और पानी का बन्दोबस्त अपने हाथ से कर देना. इसके बाद तुम राजा साहब से मेरे कहे मुताबिक कार्रवाई करना और रामेश्वरचन्द्र की भी खबर लेना जिसने ऐयारी की दुकान खोल रखी है. असल में वह कौन है इस बात का पता लगाना बहुत जरूरी है.

मैं अपने यहाँ के दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह को भी इस काम पर मुकर्रर कर आया था, शायद उन्होंने कुछ पता लगाया हो, शाम को जब तुम यहाँ आओगे और तुम्हारी जुबानी सब हालचाल मुझे मालूम हो जायेगा तब मैं यहाँ से घर चलूँगा."

जैपाल, जो असल में भूतनाथ था, दारोगा से विदा होकर नागर के मकान से बाहर निकला और पहिले रामेश्वरचन्द्र की दुकान की तरफ चला, क्योंकि वह रामेश्वचन्द्र से वादा कर आया था कि रात को जब भैयाराजा यहाँ आवे तो उन्हें रोकना मैं उनसे मिलने के लिए जरूर आऊँगा, अस्तु वह इस बात से बेचैन था कि वादे के मुताबिक भैयाराजा से मिलने के लिए रामेश्वरचन्द्र की दुकान में न जा सका.

[७]

रामेश्वरचन्द्र की दूकान की तरफ जाते-जाते रास्ते में भूतनाथ ने सोचा, "मैं रामेश्वरचन्द्र से मिलने के लिए जाता तो हूँ परन्तु यदि मैं अपना परिचय न दूँ और जैपाल ही बना हुआ उससे मिलूँ तो क्या वह मुझसे सीधा-सादा और रूखा बर्ताव करेगा या दारोगा का दोस्त समझ कर डरेगा और खातिरदारी से मिलेगा ? अथवा मुझे फँसाने की फिक्र करेगा ? वह क्या करेगा इस बात को देखना चाहिए और कुछ देर तक जैपाल ही बने रह कर और जैपाल ही के ढंग पर बातचीत करके जाँचना चाहिए कि वह कैसा बर्ताव करता है."

इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ भूतनाथ रामेश्वरचन्द्र की दुकान पर जा पहुँचा और जब उससे मुलाकात हुई तो जिस तरह पढ़े-लिखे दूकानदार लोग ग्राहकों की खातिरदारी करते हैं उसी तरह खातिरदारी के साथ वह नकली जैपाल को दूकान के अन्दर ले गया और अपने एकान्त वाले बैठने के कमरे में ले जाकर कुर्सी पर बैठा के बातचीत करने लगा.

रामेश्वर० :कहिए, मिजाज तो अच्छे हैं ?
जैपाल० :ईश्वर की कृपा से मैं बहुत अच्छा हूँ. (मुस्कुरा कर) आप अपनी दूकान का हाल कहिए, दिनोंदिन तरक्की तो हो रही है न ?

रामेश्वर० : आप लोगों की कृपा रहेगी तो तरक्की में सन्देह ही क्या है ? अभी तो यहाँ मुझे आठ पहर भी नहीं बीते हैं मगर फिर भी मैं यह जरूर कहूँगा कि आप और दारोगा साहब किस्मतवर हैं क्योंकि यहाँ आने के साथ ही एक अनूठा शिकार हाथ लगा.

जैपाल० : (ताज्जुब और प्रसन्नता की सूरत बना कर) हाँ ! किसको फाँसा सो तो कहो ?
रामेश्वर० : यहाँ आकर हम लोगों ने असली रामेश्वर को खूब ही धोखा दिया और उसे फँसा लेने के बाद खुद रामेश्वरचन्द्र बन कर इस दूकान पर कब्जा कर लिया उसके नौकरों को अभी तक इस बात की कुछ खबर नहीं लगी. इसके बाद रात को तीन बजे भैयाराजा यहाँ आये. मालूम होता है कि उन्होंने गदाधरसिंह और रामेश्वरचन्द्र से यहाँ आकर मिलने का वायदा किया था. खैर, वे तो-हमारी तरफ से बेफिक्र ही थे इसलिए सहज ही में फँस गये. कुछ खिला-पिला कर हमने उन्हें बेहोश कर दिया और गिरफ्तार कर लिया.

जैपाल० : शाबाश-शाबाश, यह बड़ा ही काम हुआ. इस समय वे दोनों कहाँ हैं ?

रामे० : इसी मकान में हैं, नीचे के तहखाने में मैंने उन्हें बन्द कर रक्खा है, अब इस फिक्र में हूँ कि किसी तरह मौका देख कर उन्हें दारोगा साहब के घर पहुँचाया जाये और यहाँ के आदिमयों को किसी तरह का गुमान न होने पावे.

जैपाल० : ठीक है, तो इस काम को मैं अपने हाथ से करूँगा. रात को मैं कुछ आदमियों को साथ लेकर सौदा खरीदने के बहाने यहाँ आऊँगा और यह काम बड़ी खूबसूरती के साथ कर दूँगा, तब तक उनकी हिफाजत करो.

नकली जैपाल अर्थात भूतनाथ का तो यहाँ की अवस्था जान कर कलेजा हिल गया, यह तो सिर्फ इत्तिफाक की बात थी कि नकली रामेश्वरचन्द्र ने भूतनाथ को असली जैपाल समझकर सब हाल कह दिया नहीं तो बड़ा बुरा होता और धोखे में पड़ कर स्वयं भूतनाथ भी शायद गिरफ्तार हो जाता मगर खैरियत गुजरी कि ऐसा नहीं होने पाया. असली रामेश्वरचन्द्र वास्तव में भूतनाथ का शागिर्द है और जितने आदमी दूकान के मुखिया हैं सभी भूतनाथ और भैयाराजा के शागिर्द और नौकर हैं.

भैयाराजा ने इन्द्रदेव की मदद से और भूतनाथ के भरोसे पर यह ऐयारी की दूकान कायम की थी और निःसन्देह इस दूकान के जरिये ये लोग बड़े-बड़े अनूठे काम कर गुजरते मगर दारोगा के ऐयारों ने इनके काम में बाधा डाल दी जिससे भूतनाथ को बड़ा ही कष्ट हुआ और वह सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए, बहूरानी को छुड़ाने की फिक्र करते-करते भैयाराजा से भी हाथ धो बैठे.

अब किस तरकीब से इन सभों को छुड़ाया जाये ? अगर खुल्लम खुल्ला नकली रामेश्वर से भिड़ जायें तो यह दूकानदारी चौपट हो ही जायेगी बल्कि चौपट हो गई क्योंकि दारोगा के ऐयारों को मालूम हो ही गया कि यह जाल वास्तव में गदाधरसिंह का फैलाया हुआ है परन्तु फिर भी जब तक मैं जैपाल बना हुआ दारोगा को अपने कब्जे में रक्खूँगा तब तक इस दूकान से कुछ न कुछ काम निकलता रहेगा, या जब तक दारोगा को यह विश्वास रहेगा कि हमारा ही ऐयार रामेश्वरचन्द्र बना हुआ इस दूकान पर है तब तक यह दूकान कायम रहेगी, अगर कोई ऐसी तरकीब निकल आवे कि हम इस ऐयार को गिरफ्तार करके पुनः अपने रामेश्वरचन्द्र को यहाँ कायम कर दें तो बड़ा ही काम हो.

वह दारोगा के आदमियों के सामने दारोगा ही का एक ऐयार बना रहेगा और उन्हीं के ढब की बातें किया करेगा. ऐसी अवस्था में काम भी ज्यादे निकलेगा. मगर समस्या जरा कठिन है. मेरे ज्यादे देर तक यहाँ ठहरने से या विशेष बातचीत करने से कहीं इस ऐयार को मुझी पर शक न हो जाए. हाँ, ..यह भी मालूम होना चाहिए कि असल में यह ऐयार कौन है ? क्या बिहारीसिंह और हरनामसिंह में से यह कोई है ?

चलती समय दारोगा ने मुझसे कहा था कि मैंने अपने दोनों ऐयारों को इस काम पर मुकर्रर किया है. जरूर यह उन्हीं दोनों में से कोई होगा. इस समय दारोगा के मकान पर मेरा जाना भी बहुत जरूरी है अगर ऐसा न करूँगा तो बड़ा हर्ज होगा. मगर अब इसका पीछा छोड़ देना भी मुझे अच्छा नहीं मालूम होता. यद्यपि मैंने इससे यह कह दिया है कि रात को आकर दोनों कैदियों को ले जाऊँगा, मगर यह बात ठीक नहीं है, खैर मैं कोई-न-कोई तरकीब ऐसी जरूर करूँगा कि इसे फँसा लूँ.

इसी तरह की बातें भूतनाथ ने थोड़ी देर में सोची सो भी ऐसे ढंग से कि नकली रामेश्वरचन्द्र को किसी तरह का शक नहीं हुआ और न उसने यह समझा कि जैपाल कुछ सोच रहा है.
नकली रामेश्वर० : अच्छा तो अब आपका इरादा क्या है सो कहिए.

भूत० : इरादा तो यही था कि इस समय यहाँ से जाकर दारोगा साहब का जरूरी काम करूँ और रात को यहाँ आकर दोनों कैदियों को ले जाऊँ मगर फिर सोचता हूँ कि रात को मेरा यहाँ आना शायद कठिन हो जाये तो ताज्जुब नहीं क्योंकि एक ऐयार ने दारोगा सहब को बेढब धोखे में डालकर उन्हें नागर के मकान में फँसा दिया और वे इस समय दिन होने के कारण अपने घर जा नहीं सकते, मैं उनके घर जाकर उनके बिगड़े हुए कामों को सुधारने की फिक्र करूँगा और उनके गायब होने से जो घबराहट फैली हुई होगी उसे शान्त करने के बाद राजा साहब से मिलूँगा क्योंकि उन्होंने दारोगा साहब को जरूर याद किया होगा.

नकली रामेश्वर० : (आश्चर्य से) किसी ऐयार ने दारोगा साहब को धोखे में डाला ! क्या मामला हुआ सो तो कहिए ?

भूत० : अजी ऐसी दिल्लगी हुई कि अगर सुनोगे तो हँसते-हँसते लोट जाओगे.

नकली रामेश्वर० : क्या-क्या, कुछ कहिए भी ?

भूत० : एक बड़े महात्मा बाबाजी आये थे. नागर के सामने वाले मकान के नीचे जो चबूतरा है उसी पर बैठ कर गाने लगे, गाना बेशक मजेदार था, सुनने के साथ ही नागर का जी बेचैन हो गया. उसने बाबाजी को अपने यहाँ बुलवाया, बड़े नखरे-तिल्ले के साथ बाबाजी आये और सभों को उल्लू बना गये.

इतना कहकर नकली जैपाल अर्थात् भूतनाथ ने मसखरेपन के साथ यह सब हाल बयान किया जो उसकी बदौलत नागर के मकान पर हुआ था. उसे सुन कर नकली रामेश्वर पहिले तो बहुत हँसा और तब अफसोस करने लगा.

इसके बाद दोनों आदमियों में देर तक बातचीत होती रही. अन्त में भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द्र से कहा कि 'अच्छा होता अगर इस समय मैं असली रामेश्वरचन्द्र और भैयाराजा से मुलाकात कर लेता, सम्भव है कि उनकी मुलाकात से कोई काम निकल जाये. फिर क्या जाने रात को आना हो या न हो'.

नकली रामेश्वरचन्द्र ने इस बात को खुशी से मंजूर कर लिया और कमरे का दरवाजा बन्द करके (जिससे किसी को कुछ मालूम न हो) भूतनाथ को उस कोठरी में ले गया जिसमें तहखाने का रास्ता दीवार में बहुत ही गुप्त ढंग से बना हुआ था और जिसका हाल न-मालूम किस ढंग से नकली रामेश्वरचन्द्र को मालूम हो गया था, यद्यपि उस तहखाने में भी एक रास्ता तहखाने और मकान से बाहर निकल जाने के लिए था, अगर मालूम होता तो शायद उस तहखाने में कैदियों को बन्द न करता यद्यपि उन दोनों के हाथ-पैर बँधे हुए थे और वे अपनी रिहाई के लिए कुछ उद्योग नहीं कर सकते थे.

नकली रामेश्वरचन्द्र भूतनाथ को साथ लिए तहखाने के अन्दर चला गया और वहाँ पहुँच कर भूतनाथ ने अपने शागिर्द रामेश्वरचन्द्र और भैयाराजा को हथकड़ी-बेड़ी से मजबूत बैठे हुए देखा. एक मद्धिम चिराग की रोशनी तहखाने में हो रही थी और गर्मी के सबब से दोनों कैदी परेशान मालूम पड़ते थे.

भैयाराजा को ऐसी अवस्था में देख कर भूतनाथ का जी बेचैन हो गया और क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गईं.

पहिले तो भैयाराजा के पास जाकर भूतनाथ ने कोई ऐसा बँधा हुआ इशारा किया जिससे भैयाराजा को मालूम हो गया कि वह जैपाल नहीं बल्कि भूतनाथ है, इसके बाद भूतनाथ ने नकली रामेश्वरचन्द्र की तरफ देख के कहा, "क्यों बे नमक हराम, तुझे अपने हाथों से भैयाराजा को हथकड़ी और बेड़ी पहिनाते शर्म नहीं आई ?

जिसके नमक से तेरा शरीर पला हुआ है उसके साथ ऐसी कार्रवाई करते कलेजा हिल नहीं गया और अब इनके सामने आते तुझे शर्म नहीं मालूम हुई !"

भूतनाथ की ऐसी बातें सुन कर नकली रामेश्वर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ. वह गौर से नकली जैपाल अर्थात् भूतनाथ की सूरत देखने लगा, इसके बाद बोला, "मालूम होता है कि तुम कोई ऐयार हो, जैपालसिंह नहीं !"

भूत० :बेशक यही बात है, अगर अभी तक तू नहीं समझा तो अब समझ जा कि मेरा नाम गदाधरसिंह है, बस-बस, भागने का उद्योग मत कर, मैं इसी जगह तेरा मुकाबला करने को तैयार हूँ.

रामे० :खैर अब सिवाय मुकाबले के और कुछ हो भी नहीं सकता.

इतना कह कर नकली रामेश्वरचन्द्र ने फुर्ती के साथ खंजर निकाल कर भूतनाथ पर वार किया मगर कुछ न कर सका.

भूतनाथ ने उसका वार खाली कर दिया और पीछे पहुँच कर इस जोर से उसकी कमर में लात जमाई कि वह सम्हल न सका और मुँह के बल जमीन पर गिर पडा. तुरन्त भूतनाथ ने उस पर कब्जा कर लिया और कमन्द से हाथ-पैर बाँधने के बाद एक किनारे रख दिया.
इसके बाद वह भैयाराजा के पास पहुँचा और उनके हाथ-पैर खोल देने के बाद असली रामेश्वरचन्द्र को भी हथकड़ी-बेड़ी से रिहाई दी.

इतना करके भूतनाथ ने शागिर्द की मदद से जब नकली रामेश्वरचन्द्र की जाँच की तो मालूम हुआ कि वह वास्तव में हरनामसिंह है[१]. कमन्द खोल कर उसे हथकड़ी और बेड़ी पहिरा दी गई और उसी तहखाने में उसे छोड़ कर तीनों आदमी बाहर निकल आये. ऊपर की कोठरी में पहुँच कर भूतनाथ ने भैयाराजा की सूरत बदली और थोड़ी ही देर में वे तीनों आदमी दूकानदारी के कमरे में खुले आम बैठ कर बातचीत करते हुए दिखाई देने लगे. उस समय भूतनाथ ने अपना सब हाल भैयाराजा और रामेश्वरचन्द्र से बयान किया और कहा, "अब हमें बहुत जल्द कुछ काम करना चाहिए . समय बीतता चला जा रहा है."

थोड़ी ही देर में तीनों आदमियों ने यह निश्चय कर लिया कि अब क्या करना चाहिए और इसके बाद रामेश्वरचन्द्र को उसी दूकान में छोड़ अपने साथी शागिर्दों को कुछ समझा कर भूतनाथ और भैयाराजा वहाँ से रवाना हुए. भूतनाथ जैपाल की सूरत में था और भैयाराजा हरनामसिंह बने हुए थे.

सबके पहिले इन दोनों ने दारोगा के मकान में जाने का इरादा किया क्योंकि वहाँ से भैयाराजा की स्त्री को छुड़ाना बहुत जरूरी था. केवल इतना ही नहीं भूतनाथ यद्यपि इसके पहिले दारोगा के मकान में से सूखा लौट आया था तथापि अभी तक उसे इस बात का निश्चय था कि दयाराम जरूर दारोगा के मकान ही में कैद है अतएव उसको दयाराम की भी धुन लगी हुई थी.

भूतनाथ और भैयाराजा, रामेश्वरचन्द्र की दूकान से बाहर निकल कर थोड़ी दूर आगे गये थे कि यकायक भूतनाथ की निगाह मेघराज पर पड़ी जिसे वह आज के कई दिन पहिले एक तिलिस्मी पहाड़ी में विचित्र ढंग से देख चुका था और भैयाराजा के साथ ही वह भी जिसका मेहमान बन चुका था.

---

१. चन्द्रकान्ता सन्तति में मायारानी के दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह का नाम आया है.

इस समय मेघराज अकेला नहीं था. उसके साथ सिपाहियाना ठाठ का एक आदमी और था जिसे भूतनाथ ने नहीं पहिचाना मगर उसे इस बात का विश्वास जरूर हो गया कि मेघराज की तरह यह भी अपनी सूरत बदले हुए है. मेघराज को देखते ही भूतनाथ का कलेजा हिल गया और एक दफे रोमाँच हो जाने के बाद ही कुछ देर के लिए उसके दिल में धड़कन पैदा हो गई. ऐसा क्यों हुआ सो तो हम कह नहीं सकते हाँ इतना कह देना जरूरी है कि इस समय भी मेघराज की सूरत-शक्ल तथा पोशाक वैसी ही थी जैसी कि उस दिन भूतनाथ देख चुका था.

जिस तरह भूतनाथ और भैयाराजा ने मेघराज और उसके साथी को देखा उसी तरह मेघराज ने भी इन दोनों को देखा परन्तु ये दोनों जैपाल और हरनामसिंह की सूरत में थे इसलिए मेघराज ने इन दोनों की तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया मगर भैयाराजा अपने को रोक न सके. उन्होंने आगे बढ़ कर मेघराज का एक हाथ पकड़ लिया और धीरे-से कहा जिसे भूतनाथ ने भी सुना, "मेघराज, वाह-वाह खूब पहुँचे. आज तुम हम लोगों के साथ ही मिल कर गरजों. अपना परिचय दो तो और भी कुछ कहूँ. मैं हूँ इन्द्र भैया."

मेघराज० : पावस में 'तड़ित' की कमी नहीं है, आपने धोखा नहीं खाया. मेरे साथ वैद्य है.
भैया० : बस तो ठीक है. जिस तरह मैं हरनामसिंह की सूरत में हूँ उसी तरह यह मेरा साथी भूतनाथ भी जैपाल की सूरत में है. बस अब जो कुछ कहना है वह निराले में कहूँगा. मौका अच्छा है. तुम भी मेरे साथ बन जाओ.

इतना कह कर भैयाराजा आगे की तरफ बढ़े और उस तरफ चले जिधर कुछ सन्नाटा मिलने की उम्मीद थी और उनके पीछे-पीछे भूतनाथ तथा मेघराज और उसका साथी ये तीनों रवाना हुए.

भैयाराजा ने इस समय मेघराज से जिस तरह की बातचीत की और अपना तथा भूतनाथ का भेद खोल दिया यह भूतनाथ को पसन्द न आया बल्कि बहुत बुरा मालूम हुआ मगर मौका मुनासिब न समझ वह कुछ न बोला और चुपचाप उनके पीछे चला गया.

थोड़ी देर में वे चारों आदमी एक छोटे-से बगीचे में जा पहुँचे जहाँ इन लोगों के लायक अच्छा सन्नाटा था. भैयराजा ने भूतनाथ को एक पेड़ के नीचे बैठ जाने के लिए कहा और स्वयं वहाँ से कुछ दूर पर दूसरे पेड़ के नीचे मेघराज और उसके साथी को लेकर जा बैठे और बातचीत करने लगे.

भैयाराजा की पहली कार्रवाई से भूतनाथ को रंज हो चुका था. अब यह दूसरी कार्रवाई भूतनाथ के लिए और भी दुःखदायी हुई. भूतनाथ को अलग छोड़ कर तीनों आदमियों का एकान्त में बातचीत करना भूतनाथ को सहन न हुआ और उसके अन्दर क्रोधाग्नि एकदम भभक उठी, आँखों के साथ ही उसके चेहरे ने भी सुर्खी पकड़ ली. कुछ देर तक तो वह टेढ़ी निगाह से उन तीनों की तरफ देखता रहा और फिर दाँत पीस कर धीरे-से बोल उठा, "क्या मैं भैयाराजा के हाथ बिक गया हूँ ! वे मुझसे भेद रक्खे और मैं उनके लिए जान दूँ ! गदाधरसिंह ऐसा उल्लू नहीं है." इतना कह कर चुप हो गया और न-मालूम क्या सोचने लगा.

भैयाराजा, मेघराज और उसके साथी के बीच आधे घंटे तक बातचीत होती रही, इसके बाद वे तीनों उठ खड़े हुए और भूतनाथ के पास आकर राजाभैया ने कहा, "चलो साहब, अब उठो और अपने काम की फिक्र करो."

भूत० : (उठ कर मेघराज की तरफ बता कर) ये दोनों साहब अब किधर जायेंगे ?
भैया० : ये दोनों भी हमारे साथ ही रहेंगे.
भूत० : तो क्या हम लोगों का भेद इनसे जाहिर कर दिया गया ?

भैया० : हाँ, इनसे हम लोगों का कोई भेद छिपा नहीं रह सकता.
भूत० : मगर इनका भेद हमसे छिपा ही रहेगा ?
भैया० : हाँ, कुछ दिनों के लिए तो ऐसा ही रहेगा.
भूत० : तो ऐसी हालत में हम लोगों का मिल-जुलकर काम करना बहुत कठिन है.

भैया० : कुछ भी कठिन नहीं है.
भूत० : जरूर कठिन है बल्कि असम्भव है !
भैया० : सो क्यों ?
भूत० : जबकि इनका भेद मुझसे छिपा रहेगा तो अपने भेद की बातें मैं इनसे क्यों कहूँगा ? ऐसी अवस्था में ठीक काम भी न हो सकता.
भैया० : तुम इन्हें अपना दोस्त समझो और विश्वास रक्खो कि इनसे सिवाय नफे के नुकसान कभी न पहुँचेगा.

भूत० : आप तो सब कुछ समझाते हैं मगर मेरा दिल भी कुछ समझे तब तो.
भैया० : दिल को समझाओगे और दिलासा दोगे तो सब कुछ समझ लेगा.
भूत० : मेरा दिल ऐसा कच्चा और नादान नहीं है.
भैया० : तब कैसे काम चलेगा ?

भूत० : काम चले या अटका रहे अथवा जहन्नुम में जाय. मैं उस आदमी के साथ क्षण-भर भी रहना पसन्द नहीं करता जिसका कुछ भी हाल अपने को मालूम न हो. पहिले दफे जब इनसे मुलाकात हुई थी तब आपने इनका परिचय मुझे नहीं दिया और आज भी वही हाल हो रहा है. केवल इतना ही नहीं, मुझे अलग छाँट कर आप इन लोगों से बात करते हैं और ऐसे काम में मुझे इनका साथी बनाते हैं जिसमें कदम-कदम पर जान जोखिम का सामान है, नहीं-नहीं, गदाधरसिंह ऐसा बेवकूफ नहीं है. हजारों दुश्मनों से अपने को बचाये रहने वाला गदाधरसिंह ऐसी बेवकूफी करके गन्दी नादानी के साथ अपने गले पर अपने हाथ से छुरी नहीं चलावेगा.

भैया० : फिर तुम क्या चाहते हो ?
भूत० : बस इनका परिचय चाहते हैं !
भैया० : इनका परिचय तो अभी तुम्हें नहीं मिल सकता क्योंकि ये अपना भेद अभी प्रकट नहीं किया चाहते.

भूत० : फिर आपको क्या हक था कि मेरी इच्छा के विरुद्ध आप मेरा भेद इनसे प्रकट कर दें ?
भैया० : इसलिए कि मैं इन्हें खूब जानता हूँ और मेरा इन पर विश्वास है.
भूत० : आप इन पर भले ही विश्वास रक्खे मगर मैं इन पर भरोसा नहीं रखता, अस्तु मेरे भेद के मालिक ये कैसे हो सकते हैं ? यह आपकी जबर्दस्ती है कि मेरा भेद मेरी मर्जी के बिना इनसे कहते हैं और इनका परिचय तक भी मुझे नहीं देते.

मेघ० : गदाधरसिंह, मेरा भेद बहुत दिनों तक तुमसे छिपा न रहेगा और जब तुम मुझे जानोगे तो इतने दिनों तक भेद छिपाये रखने की शिकायत न करोगे.
भूत० : चाहे ऐसा ही हो मगर जबकि मैं तुमको जानता ही नहीं तो तुम्हारी बातों पर क्योंकर विश्वास कर सकता हूँ.

मेघ० : (कुछ तीखेपन से) तुम्हारी इन बातों से रंज होकर मैं चला जाता और तुम्हारा साथी नहीं बनता मगर इसलिए जाना पसन्द नहीं करता कि दारोगा तथा दारोगा के कमान से जितना तुमको और भैयाराजा को सम्बन्ध है उससे कहीं ज्यादा मुझको सम्बन्ध है, इसलिए मैं दारोगा के मकान में जरूर जाऊँगा और अपना काम करूँगा.

भूत० : हाँ-हाँ तुम भले ही दारोगा के मकान में जाओ मगर मेरे बताये हुए रास्ते से क्यों जाओगे ? अपने लिए खुद अपना रास्ता बनाओ ! मैंने जो कुछ मेहनत की है वह तुम जैसे एक अनजान आदमी के फायदा उठाने के लिए नहीं की है.

भैया० : सुनो गदाधरसिंह, तुम व्यर्थ ही क्रोध करते हो और मेरी बात मान कर कुछ दिनों के लिए सब्र नहीं करते. जबकि हम इन्हें और तुम्हें अपना समझते हैं तब हमारी-तुम्हारी कार्रवाई से अगर बिना नुकसान के हो सके तो ये भी फायदा उठा सकते हैं, इसके लिए तुम्हें रंज न होगा...
भूत० :(बात काट कर) मैं यह सब दिलासे की बातें नहीं सुनना चाहता, बात साफ कहिये कि इनका परिचय मुझे देंगे या नहीं ?
भैया० : इस समय नहीं क्योंकि इनकी मरजी नहीं है.

भूत० : तो बस मुझे भी इनके साथ रहना मंजूर नहीं, आपने बहुत ही बुरा किया कि मेरी आज की कार्रवाई का हाल इनसे कह दिया. इस समय बातचीत करते हुए आपने जरूर कह दिया होगा, यह मुझे अन्दाज से मालूम हो गया.
भैया० : हाँ कह तो दिया है.
भूत० : तब बेशक आपने बुरा किया. अच्छा अब जो आपके जी में आवे कीजिए मैं जाता हूँ.

भैया० : कहाँ जाओगे ?
भूत० : जहाँ मेरे जी में आवेगा.
भैया० : मतलब यह है कि इस समय तुम मेरा साथ छोड़ते हो ?
भूत० : हाँ, साथ छोड़ता हूँ.

भैया० : अच्छा तो एक ठिकाने बैठ कर हम लोगों का इन्तजाम करो और देखो कि हम लोग क्या करते हैं.
भूत० : मैं इस बात का वादा नहीं कर सकता.

भैया० : तो तुम बना-बनाया काम बिगाड़ना चाहते हो !
भूत० : मेरी नीयत तो यह नहीं थी मगर आप खुद अपने हाथ से सब काम चौपट किया चाहते हैं ! मैं आपसे जो कुछ प्रतिज्ञा कर चुका था उसे निबाहता रहा परन्तु आप अपनी प्रतिज्ञा भंग कर रहे हैं. जो हो. अब मैं स्वतन्त्र होता हूँ और अपने मालिक के पास जाता हूँ तथा इन सब झंझटों को सदैव के लिए तिलांजुली देता हूँ.

भैया० :(चलते भूतनाथ को रोककर) सुनो-सुनों, जरा ठहरो तो ! मैं एकान्त में इन्हें समझाता हूँ. और इनका भेद प्रकट करने के लिए इनसे सलाह लेता हूँ तब तक कुछ देर के लिए तुम इसी जगह खड़े रहो.
भूतनाथ को उसी जगह छोड़ कर और मेघराज तथा उनके साथी को लेकर भैयाराजा कुछ दूर पेड़ों की आड़ में चले गए और मेघराज से बातें करने लगे-

भैया० : गदाधरसिंह तो बेतरह हठ कर रहा है.
मेघ० : वह लड़कपन का हठी है, मगर आप खुद सोच सकते हैं कि इस समय मेरा भेद खोलना कहाँ तक उचित होगा.

भैया० : नहीं-नहीं, आपका भेद तो कभी खुलना ही नहीं चाहिए, परन्तु मालूम होता है कि भूतनाथ अब हम लोगों का साथ नहीं देगा.
मेघ० :केवल हम लोगों का साथ न देकर ही वह सब्र कर जाये तो कोई चिन्ता नहीं, मगर वह जरूर हम लोगों का दुश्मन बन जाएगा और दारोगा से जा मिलेगा, उससे अपने रुपये वसूल करेगा और हम लोगों का भेद खोल देगा, रामेश्वरचन्द्र वाला मामला भी छिपा न रहने देगा.

भैया० : अजी वह सब काम ही चौपट करेगा ! ऐसी अवस्था में हम लोगों का दारोगा के घर में घुसना खतरे से खाली नहीं है और साथ ही इसके मेरी स्त्री को भी उसके पंजे से छुटकारा मिलना असम्भव है,

मेघराज का साथी० : और मेरी उम्मीदों पर भी बिल्कुल ही पाला पड़ जाएगा. गदाधरसिंह बड़ा ही बेईमान है, चुप होकर बैठे रहना उससे कदापि न होगा, अस्तु बेहतर तो यह होगा कि उसे इसी जगह गिरफ्तार कर लिया जाये.
भैया० : (मेघराज से) आपकी क्या राय है ?

मेघ० : इसके सिवाय दूसरी तरकीब ही कौन है ? अगर वह दारोगा के पास जाकर सब भेद कह देगा तो अनर्थ हो जाएगा.

कुछ देर तक उन तीनों में इसी तरह की बातें होती रहीं. अन्त में यह निश्चय करके कि भूतनाथ को गिरफ्तार कर लिया जाय वे तीनों आदमी वहा पहुँचे जहाँ भूतनाथ को छोड़ गए थे. मगर अफसोस, भूतनाथ वहाँ से भाग गया था और उस जगह सिवाय पेड़-पत्तों के और कुछ भी दिखाई नहीं देता था.

[८]

भूतनाथ, क्या तू भूल कर नेक रास्ते पर चला आया था ? क्या तू इस साफ और सुथरी राह को छोड़ कर पुनः उस कंटीली पगडण्डी पर चला चाहता है ? अगर तू वास्तव में ऐसा करता है तो निःसन्देह बदकिस्मत है. अबकी दफे तू चूकेगा तो कहीं का भी न रहेगा, दुनिया में किसी को मुँह न दिखला सकेगा और जीते-जी कब्र के अन्दर धकेल दिया जाएगा. खैर देखा चाहिये तेरी किस्मत में क्या है और तू क्या करता है !

भूतनाथ का वहाँ से चला जाना भैयाराजा, मेघराज और उसके साथी को बहुत गड़ाया और ये तीनों आदमी बड़े तरद्दुद में पड़ गए, तथापि मेघराज ने हिम्मत नहीं हारी और उसने अपने साथी तथा भैयाराजा को भी अपनी उमंग-भरी बातों से उत्साहित किया पर वे लोग अब जो कुछ करेंगे पीछे जायगा. हम इस समय भूतनाथ के साथ चलते और देखते हैं कि वह क्या करता है !

दिन लगभग तीन पहर के ढल चुका था और दारोगा साहब नागर के यहाँ बैठे हुए जैपाल के आने का इन्तजार कर रहे थे. ज्यों-ज्यों जैपाल के आने में देर होती थी त्यों-त्यों उनका तरद्दुद बढ़ता जाता था.

उन्होंने नागर के आदमियों को कई दफे बाहर भेजा कि आगे बढ़ कर देखे कि जैपाल आता है या नहीं मगर किसी ने भी लौट कर कोई दिल खुश करने वाला जवाब न दिया, हाँ आखिरी मर्तबे जो आदमी भेजा गया उसने लौट कर एक चीठी दारोगा साहब के हाथ में जरूर दी जिसे दारोगा ने उछलते हुए कलेजे के साथ लिया और पढ़ने लगा-

"आप यहाँ चुपचाप बैठे हुए किसका इन्तजार कर रहे हैं ? रात को आपका दुश्मन आपके दोस्त जैपाल को आपके पास ही से गिरफ्तार करके ले गया और आपको कुछ खबर तक न हुई !

सुबह को जिस जैपाल को आपने कई काम सुपुर्द करके बाहर भेजा था वह वास्तव में आपका जैपाल नहीं बल्कि दुश्मन था, बस इसी से समझ जाइए कि आपने कितना बड़ा धोखा खाया और अब आपका काम किस तरह चौपट हुआ चाहता है !

-आपका
(अगर आप माने तो) दोस्त, गदाधरसिंह."

इस चीठी को पढ़ते ही दारोगा साहब के तो होश उड़ गए. घबराहट के मारे उनके सर में चक्कर आने लगा. उसकी ऐसी अवस्था देख कर नागर ने, जो उनके पास ही बैठी हुई थी पूछा, "कहिए क्या मामला है, यह चीठी किसकी है ?
इसके जवाब में दारोगा ने हाथ बढ़ा कर वह चीठी नागर को दे दी और बड़ी बेचैनी से उसका मुँह देखने लगा.

नागर० : (चीठी पढ़ कर) बात तो ठीक मालूम होती है !
दारोगा० : अब मैं सुबह के मामले पर ध्यान देता हूँ तो मुझे भी यही निश्चय होता है कि गदाधरसिंह का लिखना ठीक है. (उस आदमी की तरफ देख कर जो चीठी लाया था) जिसने यह चीठी तुम्हें दी वह है या गया ?

आदमी० : मैं समझता हूँ कि वह अभी तक बाहर खड़ा होगा.
दारोगा० : तो उसे बहुत जल्द मेरे पास बुलाओ.
"जो आज्ञा !" कह कर आदमी बाहर चला गया और थोड़ी ही देर के बाद गदाधरसिंह को साथ लिए हुए पुनः उस कमरे में दाखिल हुआ.

दारोगा साहब ने उठ कर और आगे बढ़ कर बड़ी खातिर के साथ गदाधरसिंह को लिया और अपने पास बैठाने बाद नौकर को बिदा करके इस तरह बातचीत करने लगे-
गदाधर० : कहिए मिजाज तो अच्छा है ?

दारोगा० : मिजाज क्या खाक अच्छा होगा ! आपकी बदौलत तरह-तरह की तकलीफे उठा रहा हूँ.
गदाधर० : (आश्चर्य की सूरत बना कर) मेरी बदौलत ! मैंने आपको क्या नुकसान पहुँचाया है !
दारोगा० : हाँ-हाँ बेशक आपकी बदौलत ! जितना मैं आपको मानता हूँ उसका चौथाई भी अगर आप मेरी खातिर करते तो मेरे बराबर दुनिया में कोई भी सुखी नहीं दिखाई देता और आपको भी किसी बात की कमी न होती. जब कभी आप कहते है, मैं आपकी मदद करता हूँ और भविष्य में भी मदद करने के लिए तैयार रहता हूँ, मगर आपको मेरा कुछ खयाल नहीं होता.

गदाधर० : यह आप कैसे कहते हैं ? अगर आपका मुझे खयाल न होता तो इस समय मैं यहाँ आकर आपको सचेत क्यों करता ! और अगर मैं सचेत न करता तो क्या आप बेतरह मुसीबत में गिरफ्तार न हो जाते !
दारोगा० : इसको मैं मानता हूँ और आपकी इस कृपा का धन्यवाद देता हूँ इसी से तो इतना कहने का मुझे हौसला भी हुआ, नहीं तो यदि मैं आपको बिल्कुल बेगाना समझता तो उलाहना ही क्यों देता ? मगर फिर भी मुझे कहने के लिए बहुत जगह है, अभी उस दिन की बात है कि भैयाराजा के साथ आपने मुझ पर और मेरे आदमियों पर हमला किया था और मेरी दुर्दशा में शरीक हुए थे.

गदाधर० : यह आपका भ्रम है, आपकी शिकायत तब ठीक होती जब आप अपनी असली सूरत में होते, मैंने दारोगा साहब समझ के पीछा नहीं किया था. बल्कि भैयाराजा का दुश्मन समझ कर पीछा किया था. फिर भी जब उस घाटी में आपकी सूरत दिखाई पड़ी तब मैंने आपकी जान बचाने की चेष्टा की नहीं तो भैयाराजा उस समय आपको जान से ही मार डालने के लिए तैयार थे, मैंने बड़ी कोशिश से आपको बचाया.

दारोगा० : अगर आपका कहना ठीक है तो अब भी मैं अपने को धन्य मानूँगा.
गदाधर० :बेशक यही बात है, हाँ, इस बात का मैं दोषी जरूर हूँ कि भैयाराजा के विरुद्ध आपकी मदद न कर सका और न कर सकूँगा क्योंकि उन्हें मित्रभाव से देखने के लिए प्रतिज्ञा कर चुका हूँ.

दारोगा० : (कुछ चिन्ता करके) यह बात तो ठीक नहीं है, मैं आपसे बहुत बड़ी उम्मीद रखता हूँ और आपके लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ !
गदाधर० : माफ कीजिएगा, मेरी तरफ से आपका दिल भी स्वच्छ नहीं है, यदि स्वच्छ होता तो आप दयाराम वाला भेद मुझसे कदापि न छिपाते.

दारोगा० : छि:छि: ! आपके दिल से अभी तक यह भ्रम दूर नहीं होता ! न-मालूम किस कम्बख्त ने आपसे कह दिया कि दयाराम अभी तक जीते हैं और मेरी कैद में हैं ! इस काम के कर्ता-धर्ता तुम खुद होकर फिर ऐसी बात कहते हो !
गदा० : स्वयम् ध्यानसिंह ने यह बात मुझसे कही है और यह भी समझा दिया है कि दयाराम के विषय में मैं बिल्कुल ही निर्दोष हूँ.
दारोगा० : वह झक मारता है जो ऐसा कहता है, आपके और हमारे बीच में लड़ाई लगा कर फायदा उठाया चाहता है !

भूत० : शायद ऐसा ही हो, खैर देखा जायगा. अच्छा अब मैं अपना काम कर चुका, दुश्मनों की कार्रवाई से आपको सचेत कर दिया, अब जाता हूँ.
दारोगा० : वाह-वाह, अभी तो मैंने इस बारे मे आपसे कुछ पूछा ही नहीं.
भूत० :(मुस्कराते हुए) अच्छा पूछिये. क्या पूछते हैं ?
दारोगा० : पहिले तो यह बताइये कि मेरा वह दुश्मन कौन है जिसने मेरे साथ ऐसी धूर्तता की, और जैपालसिंह का क्या हाल है, दुश्मनों के हाथ से किस तरह उसकी जान बचेगी, और इस मामले में आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं ?

भूत० :मैं आपके उस दुश्मन को अभी तक पहिचान न सका क्योंकि वह सैदव ही अपनी सूरत बदले रहता है. हाँ भैयाराजा और इन्द्रदेव वगैरह उसे जरूर जानते होंगे मगर उसका असल भेद वे लोग मुझसे कुछ भी नहीं कहते. मेघराज के नाम से वे लोग उसे सम्बोधन करते हैं बस इतना ही मुझे मालूम है. बड़ी मुश्किल से मैंने उसके स्थान का पता लगाया है मगर उस तक पहुँचना अथवा उसको धोखा देना बड़ा ही कठिन है.

दारोगा० : तो इस समय जैपालसिंह भी उसी के कब्जे में होंगे ?
भूत० : जरूर ! जैपालसिंह को ले जाने के समय वह अपने कई ऐयारों को लेकर खुद यहाँ आया हुआ था बल्कि अब भी वह इसी जगह इर्द-गिर्द घूम रहा है और आपके मकान में घुसा तथा आपको फँसाया चाहता है.

दारोगा० : (कुछ सोच कर) तो आपको इस मामले में जरूर मेरी मदद करनी पड़ेगी, मैं आपका बहुत कुछ भरोसा रखता हूँ.
भूत० : बेशक मैं आपकी मदद करूँगा, मगर....
दारोगा० : मगर की कसर अभी तक लगी हुई है !
भूत० : खैर, मैं आपसे कुछ देर के लिए एकान्त में बातें किया चाहता हूँ, इसके बाद (नागर की तरफ देख कर) इनसे भी दो-चार बातें एकान्त में करूँगा.

दारोगा० : (मुस्कुराता हुआ) इनसे तो आप सदैव ही एकान्त में बातें किया करते हैं और करेंगे, इन पर आपका हक है, मगर मैं अपने लिए अभी एकान्त कराए देता हूँ.

इतना कह कर दारोगा ने हँसते हुए नागर की तरफ देखा, नागर उठ खड़ी हुई और यह करती हुई कमरे के बाहर चली गई कि 'ऐसी मुसीबत में भी दिल्लगी से बाज नहीं आते !

करीब आधे घण्टे तक भूतनाथ और दारोगा में इस मामले की बातचीत होती रही. दोनों ने तरह-तरह के वादे किये, दोनों ने तरह-तरह की कसमे खाईं, और अन्त में दोनों ने एक-दूसरे को गले लगा कर अपनी-अपनी मुहब्बत दिखलाई, इसके बाद भूतनाथ दारोगा से बिदा होकर कमरे के बाहर निकला जहाँ नागर चहलकदमी करती हुई उसके आने का इन्तजार कर रही थी, नागर ने भूतनाथ की कलाई पकड़ ली और अठखेलियों के साथ चलती हुई उसे एक दूसरे कमरे में ले गई.

[९]

दारोगा को तो भूतनाथ ने ठीक कर लिया और उसे अच्छी तरह धोखे में डाल कर उसका दोस्त भी बन बैठा. मगर जब वह दारोगा से बिदा होकर नागर के मकान से बाहर निकला तो उसका ध्यान रामेश्वरचन्द्र वाली दूकान की तरफ गया और वह सोचने लगा कि वहाँ मैं हरनामसिंह को कैद कर आया हूँ और अपने को उस पर प्रकट भी कर चुका हूँ, वह इस बात को जान चुका है कि उसे गदाधरसिंह ने कैद किया है, ऐसी अवस्था में मुझे उचित है कि अगर मैं अपने को दारोगा का दोस्त बनाया चाहता हूँ तो हरनामसिंह से भी दोस्ती का ढंग रचूँ और उसके दिल से इस खयाल को दूर कर दूँ कि उसे कैद करने वाला भूतनाथ है. अगर ऐसा न हुआ तो जब कभी हरनामसिंह छूटेगा और दारोगा के पास पहुँचेगा तो मेरी चालबाजी प्रकट हो जाएगी और दारोगा मुझे झूठा और दगाबाज समझ कर मुझसे खटक जायगा, अस्तु ऐसी तरकीब करनी चाहिए कि हरनामसिंह के दिल में मेरी तरफ से दुश्मनी का खयाल न रहे और उसे विश्वास हो जाय कि मेरा कैद करने वाला भूतनाथ नहीं बल्कि कोई दूसरा ही है.

रास्ते में चलते-ही-चलते भूतनाथ ने इन बातों पर विचार किया और कोई तरकीब सूझ जाने पर पीछे की तरफ लौट कर पुनः दारोगा से मुलाकात करने के लिए नागर के मकान में घुस गया.
आधे घण्टे के बाद जब भूतनाथ अपनी असली सूरत में नागर के मकान के बाहर निकला तो तेजी के साथ चल कर सीधा रामेश्वरचन्द्र वाली ऐयारी की दूकान में पहुँचा.

अबकी दफे भूतनाथ ने रामेश्वरचन्द्र से मिलने के लिए एक परिचय का शब्द बना लिया था जिसमें किसी तरह का धोखा न हो, अस्तु सामना होने पर भूतनाथ रामेश्वरचन्द्र को एकान्त में ले गया और परिचय देने तथा लेने के बाद जो कुछ घटना हुई थी सब बयान करके अन्त में बोला, "इस समय मैं इसीलिये यहाँ आया हूँ कि हरनामसिंह को कैद से छुड़ा कर अपना दोस्त बनाऊँ.

यद्यपि मैं अपने हाथ से उसे कैद कर चुका हूँ परन्तु उसे धोखा देने के लिये अच्छा सामान भी अपने साथ लाया हूँ. तुम जल्द ताला खोल कर मुझे उसके पास तहखाने में ले चलो. (कुछ सोच कर) नहीं, मैं अकेला ही उसके पास जाऊँगा." इतना कह कर भूतनाथ ने अपना जो कुछ इरादा था और भविष्य में जो कुछ किया चाहता था पुनः रामेश्वरचन्द्र से बयान किया और इसके बाद तहखाने का ताला खोल कर हरनामसिंह के पास पहुँचा और बोला-

भूत० : वाह-वाह हरनामसिंह, तुम इतने बड़े ऐयार होकर इस तरह कैदखाने की हवा खा रहे हो !
हर० : यह सब तुम्हारी ही बदौलत है ! यद्यपि मैं ऐयार हूँ परन्तु तुम्हारा मुकाबला किसी तरह भी नहीं कर सकता.

भूत० : भला तुम इस विषय में मुझे क्यों बदनाम करते हो ? यद्यपि मेरे शागिर्द को धोखा देकर भैयाराजा के साथ-ही-साथ उसे भी कैद कर लिया था, परन्तु मैंने तुमसे उसका बदला कुछ भी नहीं लिया बल्कि इस समय तुम्हें इस कैद से छुड़ाने के लिये आया हूँ.

हर० : यदि तुम वास्तव में गदाधरसिंह हो तो मैंने जो कुछ कहा है वह निःसन्देह, सच है. परन्तु तुम्हारी बातों में मुझे आश्चर्य होता है. तुम खुद अपने हाथ से मुझे कैद कर गये हो और अब कहते हो कि मैं तुम्हें छुड़ाने के लिये आया हूँ !

भूत० : बेशक तुम्हें आश्चर्य होता होगा, परन्तु मैं तुम्हारे इस आश्चर्य को अभी-अभी दूर किये देता हूँ. मेरी बातें सुनने से तुम्हें अच्छी तरह सन्तोष हो जायेगा. मैं कई दिनों के बाद इस दूकान में आया हूँ, रामेश्वरचन्द्र से मुलाकात होने पर मुझे सब हाल मालूम हो गया. भैयाराजा और रामेश्वरचन्द्र को कैद से छुड़ाने और तुम्हें यहाँ कैद करने वाला वास्तव में भैयाराजा का दोस्त दलीपशाह था जिसने अपने को गदाधरसिंह बना कर तुम्हें धोखे में डाला और अपने मित्र भैयाराजा को छुड़ा कर ले गया. मेरे शागिर्द को इस कैद से छुड़ा कर उसने बेशक मुझ पर भी अहसान किया परन्तु तुम्हारे ऊपर मेरी शिकायत शुरू से बनी रही है. इस समय मैं दारोगा साहब का काम कर रहा हूँ इसलिए तुम्हारे साथ भी दोस्ताना ही बर्ताव करना पड़ता है. लो पहिले तुम इस चीठी को पढ़ो.

इतना कह कर भूतनाथ ने हरनामसिंह के हाथ-पैर खोल दिये और दारोगा साहब की लिखी हुई चीठी उसके हाथ में दी जिसे उसने चिराग की रोशनी के सामने ले जाकर अच्छी तरह पढ़ा.

हरनाम० : इस चीठी के पढ़ने से मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हारा कहना ठीक है. निःसन्देह दारोगा साहब ने बुरा धोखा खाया, परन्तु यदि तुम बराबर उनका साथ दोगे तो उन पर किसी तरह की आँच न आ सकेगी और यह तुम्हारे तथा उनके दोनों ही के लिये सौभाग्य की बात होगी.

भूत० : बेशक मैं उनकी मदद करूँगा और बराबर उनका दोस्त बनकर रहूँगा इस समय जैपालसिंह का पता लगाना बहुत जरूरी है, अस्तु अब तुम जल्द इस तहखाने के बाहर निकलो और मेरे साथ जैपाल की खोज में चलो. मुझे जैपालसिंह का कुछ पता लग भी चुका है अस्तु रास्ते में सब बातें होती रहेंगी और उधर जो कुछ घटना हो चुकी है वह सब मैं तुमसे बयान करूँगा.

हर० : मैं हर तरह से तुम्हारा साथ देने के लिये तैयार हूँ.
भूत० : अच्छा तो आओ, मेरे पीछे आओ.

[१०]

ऊपर लिखी घटना के दूसरे ही दिन जमानिया में बेढब कोहराम मच गया और सब तरह उदासी छा जाने के साथ-ही-साथ सभों के चेहरे पर शोक के चिह्न दिखाई देने लगे. सबब इसका यह था कि रात को एकाएक राजरानी, यानी कुँअर गोपालसिंह की माता का देहान्त हो गया. आश्चर्य इस बात का था कि वे न कुछ बीमार थीं और न किसी कारण से किसी को उनके यकायक इस तरह मर जाने की आशंका थी.

बेचारी रानी साहेबा बहुत ही नेक, रहमदिल और धर्मात्मा थीं. घर के लोग तो उन्हें जी-जान से चाहते और मुहब्बत करते ही थे, उनकी रिआया भी उन्हें माता ही के समान मानती थी, क्योंकि समय-समय पर उनकी तरफ से रिआया को अच्छी तरह मदद पहुँचा करती थी और यही सबब था कि उनके यकायक मर जाने का गम तमाम शहर में छा गया था, यहाँ तक कि छोटे-छोटे लड़के और लड़कियों की भी सूरत उदास और आँखे नम दिखाई देती थीं.

राजा साहब का दिल इस बात से एकदम टूट गया और कुँअर गोपालसिंह की उदासी का तो कहना ही क्या है, उनके लिए तो मानो आज उनके सुख और सौभाग्य का जहाज ही डूब गया.
जाहिर में यह एक मामूली घटना थी और इस विषय में विस्तार के साथ लिखने की कुछ जरूरत भी नहीं है, अगर लिखने की कोई बात है भी तो केवल इतनी ही कि कुँअर गोपालसिंह ने बड़े दुःख के साथ उनकी क्रिया की, घर में और बारह दिनों तक उदासी छाई रही, कुंअर गोपालसिंह बहुत दिनों तक अपने कमरे से बाहर निकले ही नहीं और राजा साहब ने भी दारोगा पर भरोसा करके राज्य के काम से एक तरह पर दिल ही खैंच लिया जिससे कुछ दिनों के लिए दारोगा का भाग्य उदय हो गया और उसे दौलत जमा कर लेने का अच्छा मौका हाथ लगा.

मातमपुर्सी के लिए बहुत-से लोग जमानिया और आये और गये, उन्हीं में एक भैयाराजा भी थे, यद्यपि वे इस घर से बहुत दुःखी होकर चले गये थे और पुनः आने की इच्छा नहीं थी, परन्तु इस मौके पर उन्होंने अपने भाई-भतीजे के पास आना बहुत जरूरी समझा और यही उनके लिए मुनासिब भी था, यद्यपि उनसे घर में रहने के लिए बहुत आग्रह किया गया मगर वे तीन दिन से ज्यादे न रहे और पुनः अपने गुप्त स्थान की ओर चले गये.

मातमपुर्सी के लिए अपने मालिक की तरफ से भूतनाथ को भी जमानिया जाना पड़ा और इन्द्रदेव भी गये और कई दिनों तक रहे मगर प्रभाकरसिंह जमानिया नहीं गये और न राजा साहब या कुँअर गोपालसिंह ही से मुलाकात की यद्यपि उनसे और राजा साहब से किसी तरह की रिश्तेदारी भी थी. आगे चल कर हमारे किस्से को कदाचित इस घटना से कुछ संबन्ध पड़ जाय इसलिए हमने मुख्तसर में यहाँ पर इसका बयान कर दिया.

[११]

अब हम कुछ समय के लिए इन्द्रदेव की तिलिस्मी घाटी की तरफ चलते तथा अपने पाठकों को वहाँ की सैर कराते और दिखाते हैं कि वह वहाँ के रहने वाले इन्द्रदेव के नये मेहमान और रिश्तेदार लोग किस धुन में है और क्या कर रहे हैं. पाठक महाशय भूले न होंगे कि उस तिलिस्मी घाटी में जमना, सरस्वती, इन्दुमति, प्रभाकरसिंह और दयाराम को हम लोग छोड़ आये हैं जो वहाँ बड़ी ही बेफिक्री और स्वतन्त्रता के साथ रह कर उस मलामत को सुख के साबुन से धो रहे हैं जोकि बहुत दिनों तक मुसीबत झेलने और दुश्मनों के सताने से उनके दिलों पर बैठ गई थी, परन्तु अब देखना चाहिए कि वे लोग वहाँ बैठे क्या कर रहे हैं, अपने सुख के आगे दुनिया को बिल्कुल ही भूल गए हैं या उस घाटी के बाहर की भी कुछ फिक्र रखते हैं ?

इन सभों को उस घाटी में रहते बहुत दिन बीत गये और इस बीच में इन्द्रदेव की तालीम और उनकी सच्ची मदद ने उनका दिल ही मजबूत नहीं कर दिया बल्कि हिम्मत और उत्साह की दौलत से भी वे मालामाल हो रहे, ऐयारी का भरोसा हो जाने के अतिरिक्त इन्द्रदेव ने उन सभों की सूरत भी कुछ ऐसी हिकमत से बदल दी कि सूरत के लिहाज से कई दिनों तक साथ रहने पर भी कोई उनको पहिचान नहीं सकता और न कोई ऐयार ही उनकी सूरत धोकर उसके पक्के रंग की सफाई कर सकता है, अर्थात उनकी सूरत-शक्ल तमाम बदन की हालत में ऐसा फर्क डाल दिया था कि अब अगर वे चाहें तो बिना कुछ ऐयारी ढंग किये ही हर तरफ घूम-फिर सकें और पहिचाने जाने का कुछ खौफ न रहे.

यह सूरत तब्दीली कुछ कच्चे ढंग की न थी बल्कि पक्के तौर से थी जो कि मुद्दत तक बिना दवा की मदद के कायम रह सकती थी और जिससे खूबसूरती और सुघड़ता में भी किसी तरह का फर्क नहीं आता था. यद्यपि इन लोगों को इस घाटी से बाहर निकलने की कोई खास जरूरत न थी परन्तु प्रभाकरसिंह का एक बड़ा जरूरी काम रुका हुआ था जिसका पूरा होना भैयाराजा की मदद के भरोसे पर ही निर्भर था.

अर्थात बिना भैयाराजा की मदद के वह काम हो ही नहीं सकता था और भैयाराजा आजकल स्वयं संकट में पडे हुए थे. उन्हें स्वयं दूसरे की मदद की जरूरत थी, अतएव प्रभाकरसिंह को उस घाटी से बाहर निकालने की जरूरत थी और दयाराम भी दिलोजान से उनकी मदद किया चाहते थे.

पाठकों को याद होगा और वे भूले न होगे कि प्रभाकरसिंह को एक महात्मा बाबाजी ने इस बात का विश्वास दिलाया था कि ईश्वर की कृपा से तुम अपने माता-पिता से मिल जाओगे[१] जिनके मिलने की प्रभाकरसिंह को कुछ भी आशा नहीं थी और जिन्हें वे पंचतत्व में मिल गया जानते थे. अस्तु इस समय प्रभाकरसिंह को यही लगी हुई है कि किसी तरह भैयाराजा के इष्ठ की सिद्धि हो और उनकी मदद से उन्हें अपने माता-पिता के दर्शन हों.

सूर्य भगवान अस्त होने के लिए उतावली कर रहे हैं और अपनी लालिमा को अपने स्थान पर छोड़ जाने की इच्छा करते हैं परन्तु नहीं, वह लालिमा जो संध्या होने के कुछ पहिले ही उनकी सेवा में उपस्थिति हो जाती है उनका अनुकरण कर रही है और साथ नहीं छोड़ना चाहती इस समय इन्द्रदेव की उस तिलिस्मी घाटी की कुछ विचित्र ही शोभा हो रही है. पहाड़ी की चोटी पर लालिमा की एक सुनहरी लकीर इस प्रकार की खिंच गई है मानो सूर्य भगवान ने इस काले पहाड़ को सोने का यज्ञोपवीत पहिरा दिया है जिसे देख चारों तरफ के गुलबूटे बहुत ही प्रसन्न हो रहे हैं और यहाँ के रहने वाले जमना, सरस्वती, इन्दुमति, दयाराम और प्रभाकरसिंह भी एक साफ-सुथरे स्थान पर बैठे उस अपूर्व शोभा को देख रहे हैं तथा कुछ बातें करते जाते हैं, बाते सुनने लायक हैं और इनसे कई भेदों का पता लग जायगा.

प्रभा० :भैयाराजा मुझे विश्वास दिलाते हैं कि 'तुम अपने माता-पिता से अवश्य मिलोगे, मैं अपने काम से निश्चिन्त होकर उनका पता लगा दूँगा जोकि निःसन्देह दारोगा के कब्जे में हैं."

---

१. देखिए भूतनाथ तीसरा भाग, आठवाँ बयान.

दया० : कोई बात मालूम हुई होती तभी तो ऐसा कहते हैं, मुझे विश्वास नहीं होता कि वे किसी तरह पर झूठ बोल कर तुम्हारा दिल बहलावेंगे, वे ऐसे आदमी नहीं.
प्रभा० : बेशक मेरा भी यही खयाल है, अस्तु किसी तरह उनकी स्त्री का पता लग जाय और वह दारोगा के कब्जे से निकाल ली जाय तब भैयाराजा का दिल ठिकाने हो और वे हमारे लिए कुछ उद्योग करें.

दया० : आशा है कि यह काम बहुत जल्द हो जायगा. काम तो परसों ही हो गया होता मगर कम्बख्त भूतनाथ ने हम लोगों से चिढ़ कर और दारोगा से मिल कर सब मेहनत बर्बाद कर दी और भैयाराजा के काम में बाधक बन बैठा, खैर कोई चिन्ता नहीं अबकी दफे (अपनी छाती ठोंक कर) मेघराज बिना कोई काम किए कदापि घर न आवेगा. कल सवेरे तुम भी तैयार होकर मेरे साथ चलो और देखो तो सही कि मैं क्या करता हूँ !

प्रभा० : बेशक मैं तुम्हारे साथ चलूँगा, भैयाराजा बड़ी उत्कंठा के साथ हम लोगों का इन्तजार करेंगे. भूतनाथ के इस तरह पर फिसल जाने का उन्हें बड़ा ही दुःख है, इसके अतिरिक्त आशा है कि उनके दोस्त नन्दराम ने दारोगा के किसी आदमी को जरूर गिरफ्तार कर लिया होगा और स्वयं उसकी सूरत बन कर कोई काम करते होंगे.
दया० : आशा तो मुझे भी ऐसी ही है क्योंकि उनकी मदद पूरे तौर पर कर दी गई थी.
प्रभा० : इसके अतिरिक्त अब तो आपको उस तिलिस्म के अन्दर घूमने की ताकत भी हो गई है जिसमें भैयाराजा ने मेरी मदद की थी, अतएव आप वहाँ के कई स्थानों में घूमकर दारोगा के कैदियों को तलाश कर सकते हैं.

दया० : बेशक तलाश कर सकता हूँ मगर दारोगा ऐसा उल्लू नहीं है जो अपने कैदियों को उस जगह में रक्खे जो तिलिस्म का बाहरी हिस्सा है और जहाँ हमारे-तुम्हारे ऐसे बहुत-से आदमी जा-आ सकते हैं. उसने अपने कैदियों के लिए जरूर कोई खास जगह मुकर्रर की होगी और इसका सबूत इससे बढ़ कर और क्या होगा कि मुझ ऐसे कैदी को भी उसने तिलिस्म में नहीं पहुँचाया और न निश्चिन्ती से कुछ दिन तक एक जगह रहने दिया, बराबर स्थान बदलता ही रहा, फिर भी जो कुछ हो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अबकी बिना कोई काम निकाले कभी घर लौट कर न आऊँगा.

प्रभा० : ईश्वर तुम्हारी मदद करे. इन्द्रदेवजी ने तुम्हें सब लायक बना दिया और तुम जो चाहे कर सकते हो. जिस समय तुम मेघराज की सूरत में सज कर और तन कर खड़े हो जाते हो उस समय तुम्हारे ऊपर ऐसा रोआब छा जाता है कि यकायक दुश्मन निगाह भर कर तुम्हारी तरफ देख नहीं सकता. उस दिन तुम्हें देख कर भूतनाथ कैसा चक्कर में आया !

दया० : निःसन्देह मेरे चाचा (इन्द्रदेव) की मुझ पर बड़ी कृपा है और उनकी बदौलत आज मैं अपने दुश्मनों से अच्छी तरह बदला लेने लायक हो गया हूँ. परन्तु सब कुछ कर सकने पर भी कोई काम ऐसा न करूँगा जिसमें उनके बँधे हुए मार्ग में किसी तरह का काँटा पैदा हो. हर तरह से अपने को और चाचाजी के प्रण को बचाता हुआ मैं तुम्हारा और भैयाराजा का काम करूँगा, भैयाराजा के कथन पर मुझे भी विश्वास होता है. अब जो मैं अपने कैद के जमाने को याद करता हुआ अपने साथी कैदियों की अवस्था सोचता हूँ तो निश्चय होता है कि मेरे साथ तुम्हारे माता-पिता भी अवश्य कम्बख्त दारोगा के यहाँ कैद थे.

प्रभा० :(आश्चर्य और उत्कण्ठा के साथ) क्या तुमने अपने साथ और भी किसी कैदी को देखा था जिस पर कि आज इस तरह का शक तुम्हें होता है ?

दया० : हाँ, बेशक देखा था. अफसोस है कि मैं तुम्हारे माता-पिता को नहीं पहिचानता था और न ही वे मुझे पहिचान सके, नहीं तो मैं उनके विषय में बहुत कुछ तुमसे कहता.

प्रभा० : तथापि उन कैदियों का हुलिया अथवा शिख-नख यदि कुछ बयान करोगे तो मैं उस पर गौर करूँगा.
दया० : मेरे साथ ही साथ दारोगा के यहाँ चार कैदी और थे जिनमें एक स्त्री और तीन मर्द थे. उन मर्दों में एक का चेहरा वृद्धावस्था होने पर भी बहुत ही सुन्दर और गम्भीर तथा रोबीला था. कैद की सख्तियाँ सहने पर भी उसकी हिम्मत ने उसका साथ नहीं छोड़ा था और जब कभी दारोगा का सामना होता तो वह उसे तुच्छ समझता था और उसकी धमकियों से उसका दिल नहीं टूटता था. मुद्दत तक अंधेरे कैदखाने में बन्द रहने के कारण पीला पड़ गया था.

लम्बा कद और बदन की हड्डियाँ मजबूत तथा मोटी मालूम पड़ती थीं, बदन के लिहाज से सर उसका बहुत बड़ा था और बाल बारीक और धुँघराले थे. यद्यपि कैद की अवस्था में हजामत न बनने के कारण उसके बाल बहुत बढ़ गये थे परन्तु उनमें ऐंठन इतनी ज्यादे थी कि कभी भी कन्धे से नीचे लटकते हुए दिखाई न पड़ें. बातचीत के समय बनिस्बत ऊपर के, निचले दाँत ज्यादे दिखाई देते थे और कुछ रुकता और हकलाता भी था. दाहिनी कनपटी में एक जख्म का निशान था जिसके बारे में उसने कहा था कि किसी समय में नेजे की चोट लगी है. 'हर हर' शब्द का उच्चारण वह बहुत किया करता था और कभी-कभी यह भी कहता था कि 'हाय मन्नो पर न-मालूम क्या गुजरी होगी'!

कई दफे पूछने पर भी उसने अपना परिचय न दिया और न यही बताया कि मन्नो उसका कौन था. यद्यपि हम कैदी लोग अलग रक्खे गये थे मगर एक दफे चार-पाँच महीने के लिए हम लोगों को एक साथ रहना पड़ा था इसीलिए उसके विषय में आज मैं इतना कह सका. अब बताओ कि उस कैदी के विषय में तुम क्या खयाल करते हो ?

दयाराम की बातें सुनते-सुनते प्रभाकरसिंह का जी उमड़ आया और उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी. जब दयाराम की बात खतम हुई तब आखिरी जुमले के जवाब में प्रभाकरसिंह ने रूमाल से आँसू पोंछ कर कहा-

प्रभाकरः निःसन्देह वे मेरे पिता ही थे, कनपटी का दाग और 'मन्नो' शब्द का उच्चारण किसी तरह का शक रहने नहीं देता. उनका मन्नो नामी कम्बख्त बेटा मैं ही हूँ और मुझको वे हद से ज्यादे प्यार करते थे. हाय, क्या मैं उनका दर्शन पा सकता हूँ ! मैं उन्हें मरा हुआ समझता था इसलिए निश्चिन्त था, बेफिक्र था, मगर अब इस समय मेरे दिल की क्या अवस्था हो रही है सो मेरे प्यारे भाई दयाराम तुम खुद समझ सकते हो मैं क्या कहूँ.

दया० : (बेचैनी से) क्या तुम्हें विश्वास होता है कि वे ही तुम्हारे पिता होंगे ?
प्रभा० : इसमें किसी तरह का भी सन्देह मत समझो. अफसोस इन्द्रदेव जी को ये बातें मालूम न हुईं ! अगर हो जाती तो कदाचित वे तुम्हारे साथ ही साथ उनको भी कैद से छुड़ा ही लाते.

दया० : बेशक उन्हें ये बातें मालूम न होंगी मगर साथ ही इसके यह भी तो है कि इधर साल-भर से वे मुझसे अलग हो रहे हैं अर्थात दारोगा ने उन्हें किसी दूसरी जगह ले जाकर रख दिया है तथा और कैदी लोग भी वहाँ नहीं थे जहाँ मैं था !
प्रभा० : बेशक इन्द्रदेवजी को भी मेरी तरह विश्वास था कि उनका देहान्त हो चुका है और भैयाराजा की बातों पर भी मुझे पूरा विश्वास न था जो उनसे कुछ कहता. इस समय मुझसे और तुमसे जो कुछ बातें हुई हैं उन्हें जब इन्द्रदेव जी सुनेंगे तो उन्हें भी विश्वास हो जाएगा कि मेरे माता-पिता अभी तक जीते हैं और दारोगा की कैद में हैं.
दया० : बेशक उन्हें भी विश्वास हो जाएगा और वे मदद करने के लिए तैयार हो जायेंगे. मेरा खयाल है कि भैयाराजा को पहिले से इस बात की खबर नहीं थी, इन्हीं दिनों में उन्हें भी इस मामले की कुछ आहट लगी है.

प्रभा० : मैं भी ऐसा समझता हूँ.
दया० : अच्छा तो अब रात–भर में हम लोगों को हर तरह से तैयार हो जाना चाहिए, प्रातःकाल यहाँ से हम दोनों आदमी श्री गणेश जी का ध्यान करके विदा होंगे और चाचाजी से सब हाल कह कर.. देखो-देखो, चाचाजी तो स्वयं यहाँ चले आ रहे हैं, लक्षण अच्छे मालूम पड़ते हैं, हमारा काम जरूर सिद्ध होगा ! इन्द्रदेव को आते हुए देख सब कोई उठ खड़े हुए और इस्तकबाल के लिये उस तरफ बढ़े जिधर से वे आ रहे थे. पास पहुँचने पर सभों ने उन्हें दण्ड-प्रणाम किया और बातचीत करते हुए सब कोई धीरे-धीरे बँगले की तरफ रवाना हुए.

[१२]

दोपहर की कड़ी धूप में भी भूतनाथ को चैन नहीं. देखिये किस तेजी के साथ सन्नाटे में सर पर कपड़ा रक्खे हुए चला जा रहा है ! जमानिया को छः सात कोस पीछे छोड़ आया है और दक्खिन झुकता हुआ पश्चिम की तरफ चला जा रहा है सामने कोस-डेढ़ कोस की दूरी पर एक जंगल है जिसकी तरफ वह कभी-कभी सर उठा कर देख लेता है और पुनः सर झुका तेजी के साथ रवाना होता है.

जंगल के पास पहुँच कर उसने अपनी चाल धीमी कर दी और चौकन्ना हो कर इधर-उधर देखता हुआ जंगल के भीतर जाने लगा. एक कोस से ज्यादा न गया होगा कि बहुत घने और भयानक जंगल में जा घूमता-फिरता ऐसे ठिकाने पर पहुँचा जहाँ पानी का एक सुन्दर चश्मा बह रहा था और किनारे पर बड़े-बड़े साखू और शीशम के पेड़ बहुतायत के साथ मौजूद थे जिनके नीचे पत्थर के बड़े-बड़े चट्टान थे जो इस समय पेड़ों की सूखी पत्तियों से प्रायः ढके-से दिखाई दे रहे थे. चारों तरफ अच्छी निगाह दौड़ाने के बाद भूतनाथ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और सर झुकाकर कुछ सोचने तथा किसी के आने का इन्तजार करने लगा, थोड़ी-थोड़ी देर में जब कभी पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज उसके कान में पड़ती तो वह सिर उठा कर उस तरफ देख लेता और जब किसी पर निगाह न पड़ती तो फिर सिर झुका कर सोचने लग जाता.

इसी तरह पर सर उठा कर देखते और सोचते हुए उसे डेढ़ घण्टे से ज्यादे बीत गया और तब वह घबड़ा कर इधर-उधर घूमने के लिए उठा और यह कहता हुआ सामने की तरफ बढ़ा, 'ओफ उसके आने में बड़ी देर हो गई कदाचित कोई विघ्न तो नहीं पड़ा' ! इसी समय सामने से उसका एक शागिर्द आता हुआ दिखाई पड़ा जिसका चेहरा खून से रंगा हुआ था और कपड़े भी खून से तरबतर थे.
पास पहुँचने पर भूतनाथ ने ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखा और कहा, "पारस, यह क्या मामला है, तुम इस तरह पर जख्मी क्यों हो रहे हो ?"

पारस० : आपकी आज्ञानुसार हम तीनों आदमी जैपालसिंह की गठरी बारी-बारी से पीठ पर लादे हुए इस तरफ आ रहे थे. जब यहाँ से सिर्फ एक कोस की दूरी पर रह गए तब एक सवार ने वहाँ पहुँच कर हम लोगों का मुकाबला किया जो बहुत ही बहादुर और नौजवान जान पड़ता था तथा उसका घोड़ा भी बहुत ही अनमोल खूबसूरत और ताकतवर था. उसने हम लोगों से डपट कर पूछा, "तुम लोग कौन हो ?" परन्तु हम लोगों ने उसे किसी तरह का साफ और सच्चा जवाब न दिया, इस पर उसने रंज होकर हम लोगों पर चाबुक का वार किया. मैंने जैपालसिंह की गठरी जमीन पर रख दी और तीनों आदमी एक साथ उस पर टूट पड़े मगर उसका कुछ भी न बिगाड़ सके. उसने भी तलवार म्यान से निकाल ली और हम तीनों के हमले का अच्छी तरह जवाब दिया.

हम तीनों उसके हाथ से जख्मी हुए मगर उसके करारेपन में कुछ भी फर्क न पड़ा, हम लोगों के सामने खड़ा रहा और अन्त में बोला कि 'तुम लोग कौन हो इसे हम खूब जानते हैं'. इतना कह कर वह घोड़े से नीचे उतरा और जैपालसिंह की गठरी खोल कर उसने उसे अच्छी तरह देखा, तब अपनी जेब में से लखलखे की डिबिया निकाल कर जैपाल को सुँघाया और जब वह होश में आया तो उसे कहा कि 'उठो और जल्दी से भाग जाओ. क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि गदाधरसिंह ने तुम्हे कैद कर लिया और ये तीनों गदाधरसिंह के आदमी हैं जो तुम्हें कहीं लिए जा रहे हैं ? मैंने तुम्हे इस आफत से रिहाई दी है, अब तुम जाकर दारोगा से कह दो कि गदाधरसिंह पर कदापि भरोसा न करे. उठो और जल्दी के साथ यहाँ से भागो' !

उस सवार की बातें सुन कर जैपालसिंह चैतन्य हो गया और बड़े गौर से हम लोगों को देख कर सवार से बोला, "मैं खूब अच्छी तरह से पहिचान गया, बेशक ये लोग गदाधरसिंह के शागिर्द हैं. आपने मुझ पर बड़ी ही कृपा की कि इस आफत से मेरी जान बचाई. क्या आप अपना परिचय मुझको नहीं दे सकते है ?" इसके जवाब में सवार ने कहा कि 'हम अपना परिचय तुम्हें नहीं दे सकते, हाँ, इस घोड़े पर अपने साथ सवार करा तुम्हें कुछ दूर तक पहुँचा तो सकते हैं जिससे ये लोग तुम्हारा पीछा करके तुम्हें पुनः गिरफ्तार न कर सकें."

हम लोगों में इतनी हिम्मत न थी कि उठ कर उस सवार का मुकाबला करते या उससे कुछ कहते. देखते-ही-देखते उस सवार ने जैपालसिंह को अपने घोड़े पर बैठा लिया और एक तरफ का रास्ता लिया. घण्टे-भर बाद हम लोगों में उठने की ताकत हुई, मै यहाँ आपके पास पहुँचा और मेरे साथी भी पीछे-पीछे आ रहे हैं.

पारस की बातें सुन कर भूतनाथ ने उदासी के साथ कहा, "यह बहुत ही बुरा हुआ ! हम जैपालसिंह के दिल में यह बात जमा दिया चाहते थे कि तुम्हें तुम्हारे एक दुश्मन मेघराज नामी ने गिरफ्तार कर लिया था और हमने उसके हाथ से तुम्हारी जान बचाई है, मगर अफसोस, तुम लोगों के किए कुछ न हुआ."
पारस० : आखिर हम लोग करते ही क्या ?

भूत० : तुम लोग तीन ऐयार होकर एक आदमी का मुकाबला न कर सके तो अब क्या कहा जाय !
पारस ० : दुश्मन ही ऐसा जबर्दस्त था, अगर आपका उसका मुकाबला हो जाता तो आपको भी मालूम हो जाता कि उसका मुकाबला.....
भूत० : (चिढ़कर) अजी रहने भी दो. अगर मेरा उसका मुकाबला हो जाता तो उसे मजा भी चखा देता और तुम लोगों को भी दिखा देता कि ऐयारी और बहादुरी किसे कहते हैं.

पारस० : शायद ऐसा ही हो. मगर आपकी बराबरी हम लोग क्योंकर कर सकते हैं. (घबराहट के साथ सामने की तरफ देखता हुआ) ईश्वर कुशल करे, लीजिये वह यहाँ भी आ पहुँचा ! अब आप भी इसका मुकाबला करके अपने दिल का हौसला मिटा लीजिये.
भूतनाथ ने चौकन्ने होकर उस तरफ देखा जिधर पारस ने इशारा किया था. एक खुशरू नौजवान और बहादुर शहसवार पर उसकी निगाह पड़ी जिसका घोड़ा भी बहुत खूबसूरत और ताकतवर मालूम होता था और अठखेलियाँ करता हुआ भूतनाथ की तरफ बढ़ा आता था.

उस सवार की पोशाक अमीराना थी और कई तरह के हरबों से वह अपने को सजाए हुए था. रंग गोरा, चेहरा साफ और सुडौल तथा बड़ी-बड़ी आँखों में हिम्मत और मर्दानगी की झलक पाई जाती थी. पर उसकी सिकुड़ी हुई चौड़ी पेशानी की मददगार चढ़ी भृकुटी की तरफ ध्यान देने से मालूम होता था कि इस समय वह बड़े ही क्रोध में है. यद्यपि ढाल-तलवार, खंजर, नेजा, कमान और तीर इत्यादि उसके पास सभी कुछ थे परन्तु हाथ में वह एक मजबूत कोड़ा ही लिए था जिसकी सुनहरी डण्डी पर नेहायत ही नफीस जड़ाऊ काम किया हुआ था और उसमें जड़े हुए कीमती हीरे दूर से ही अपनी चमक-चमक दिखा रहे थे.

देखते-ही-देखते वह सवार भूतनाथ के पास आकर खड़ा हो गया और मीठी परन्तु गम्भीर आवाज में बोला, "तुम्हारे पास सिर्फ एक ही शागिर्द को देखता हूँ बाकी के दो कहाँ गये जो मेरे हाथ से जख्मी हुए थे ?"

भूत०: (बड़े क्रोध के साथ सवार की तरफ देखता हुआ) यद्यपि चेहरे पर नकाब नहीं है तथापि मैं तुम्हें पहिचान न सका. तुम कौन हो और मेरे साथ ऐसी बेअदबी करने का कारण क्या है ?
सवार० : यद्यपि तुम मुझे पहिचानते नहीं मगर मेरा और तुम्हारा कई दर्फ सामना हो चुका है ! मेरी और तुम्हारी दुश्मनी पुरानी है, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैं तुम्हारा पुराना खैरख्वाह मगर अब बदख्वाह हूँ, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैंने तुम्हारा बहुत कुछ भला किया है और अब बुरा करने के लिये तैयार हूँ यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! तुम्हारी हर एक कार्रवाई को जानता हूँ, तुम्हारी नीयत को पहिचानता हूँ तुम्हारी चालबाजियों का हाल रोज ही सुना और समझा करता हूँ, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते !

भैयाराजा के साथ जिस तरह पर दारोगा से मिल कर तुमने दुश्मनी की और पुनः भैयाराजा के कब्जे में फँस कर तथा उनकी कुदरत को जान कर उनके ताबेदार बने और सदैव ताबेदार बने रहने की कसम खाई, वह भी मुझसे छिपा हुआ नहीं है. और अब जो तुम एक अदनी बात पर भैयाराजा से चिढ़ गये और दारोगा को अन्धा बना कर उसे धोखा देते हुए अपना काम सिद्ध किया चाहते हो उसे भी मैं देख सुन रहा हूँ, यद्यपि तुम मुझे नहीं पहिचानते ! मैंने ही तुम्हारे कब्जे से जैपाल को छुड़ा कर दारोगा के पास भेज दिया है और अब पुनः तुम्हारा सामना करने के लिए तैयार हूँ, यद्यपि....
भूत०: (झुँझला कर) मगर इन बातों से तुम्हें मतलब ही क्या कौन हो सो बताओ.

सवार० : मैं वही हूँ जिसे तुम जानते हो मगर पहिचानते नहीं. मैं वही हूँ जिसने तुम्हारी वह सब दौलत छीन ली जो किसी महात्मा ने तुम्हें दी थी मैं वही हूँ जिसने भोलासिंह बन कर तुम्हारी कैद से प्रभाकरसिंह को छुड़ाया, और मैं वही हूँ जिसके आधीन तुम्हारे वे सब शागिर्द काम कर रहे हैं जिनके साथ तुमने उस खोह में बड़ी ही बेइज्जती का बर्ताव किया था. मगर अफसोस, मैं तुम्हें अभी अपना नाम नहीं बता सकता.

भूत० :(म्यान से तलवार खैंच कर) खैर तो मालूम हो गया कि मेरे सबसे बड़े दुश्मन तुम हो और तुमसे मुझे जरूर बदला लेना चाहिए.

इतना कह कर भूतनाथ ने उस सवार पर तलवार से हमला किया जिसे उसने बड़ी खूबी के साथ अपने चाबुक की डण्डी पर रोका और तब उसी से भूतनाथ की गर्दन पर एक ऐसा हाथ मारा कि भूतनाथ का सिर घूम गया और वह बेचैन होकर जमीन पर बैठ गया. सवार ने ललकारा और कहा, "बस सिर्फ एक ही चाबुक में तुम्हारा यह हाल है! मैं तुमसे लड़ने और तुम्हारा हौसला देखने के लिए आया हूँ. मालूम होता है कि तुम्हारे लिये मुझे तलवार या खंजर निकालने की जरूरत न पड़ेगी और सिर्फ इस चाबुक ही से अच्छी तरह तुम्हारा मुकाबला कर सकूँगा!"
भूतनाथ फिर सम्हल कर उठ खड़ा हुआ और बोला, "खैर यह इत्तिफाक की बात थी कि तुम्हारी एक जरा-सी लकड़ी से मैं चोट खा गया. आओ मैं अब अच्छी तरह मुकाबला करने के लिए तैयार हूँ."

सवार० : मगर गदाधरसिंह तुम इस बात का भी खयाल कर लेना कि इस समय मेरे पास यह तलवार भी मौजूद है जो तुमने धोखा देकर प्रभाकरसिंह की कमर से निकाल ली थी और जिसे तुम्हारे एक शागिर्द ने तुम्हें उल्लू बना कर तुम्हारे कब्जे से ले लिया था. (तलवार निकाल कर और दिखा कर) देखो यह वही तलवार है और इसके जोड़ की यह अँगूठी. मगर सम्भव है कि तुम्हारे लिए इसे काम में लाने की जरूरत न पड़े. लो उस तरफ देखो. तुम्हारे वे दोनों शागिर्द भी यहाँ आ पहुँचे जो मेरे हाथ से जख्मी हुए थे.

सवार की बातें सुन कर और उस अजीब तलवार की सूरत देख कर भूतनाथ का कलेजा काँप उठा और वह घबड़ा कर उस सवार का मुँह देखने लगा. सवार ने पुनः भूतनाथ से कहा, "तुम्हारा वह शागिर्द भी मेरे साथ है जिसने यह तलवार ले ली थी और जो चन्द्रशेखर के नाम से तुम्हारी खबर लिया करता है."

भूत० : मेरे साथ तुम्हारे दुश्मनी करने का सबब क्या है?
सवार० : यही कि मैं भैयाराजा और प्रभाकरसिंह का दोस्त हूँ.
भूत० : क्या तुम्हें यह नहीं मालूम है कि भैयाराजा और प्रभाकरसिंह से अच्छा बर्ताव रखने के लिए मैं कसम खा चुका हूँ और भैयाराजा से प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि अब कदापि आप लोगों के साथ बुरा बर्ताव न करूँगा.

सवार० :हाँ मालूम है, मगर अब जो तुम्हारी नीयत पुनः खराब हो गई है तो क्या किया जाय ?
भूत० : मेरी नीयत कुछ खराब नहीं है, आपको कोई भी बात ऐसी मालूम नहीं होगी जो कि इन दिनों में मैंने उन लोगों को नुकसान पहुँचाने के खयाल से की हो.

सवार० : उस दिन मेघराज का परिचय न पाने के कारण जो तुम भैयाराजा से रूठ कर और तनक कर चले गये क्या वह मामूली बात थी ! उसके बाद तुम जाकर दारोगा के दोस्त बन बैठे और हरनामसिंह को कैद से छुड़ाने के बाद जैपाल को जिसे तुमने खुद गिरफ्तार किया था दोस्त बना दारोगा के पास ले चले थे, वह क्या ध्यान देने योग्य नहीं हैं ?
भूत० : मगर तुम नहीं समझ सकते कि ये सब काम मैं किस नीयत से कर रहा हूँ.

सवार० : मैं खूब जानता हूँ. तुम्हारी नीयत का हाल किसी से छिपा हुआ नहीं है, लालच, बदनीयती और बेईमानी तो मानो तुम्हारे ही लिये बनाई गई है. अब हम लोग तुम्हारे धोखे में कभी नहीं आ सकते.
भूत०: खैर जब तुम्हारी ऐसी ही समझ है तो तुम्हारे साथ बहस करने की कोई जरूरत नहीं.
भूतनाथ ने इतना कहने को तो कह दिया मगर वास्तव में वह बहुत ही डरा हुआ था और आश्चर्य के साथ सोच रहा था कि यह सवार कौन है और मेरे भेद की बातें इसे कैसे मालूम हुई तथा अब देखा चाहिये कि यह मेरे साथ कैसा बर्ताव करता है.

इतने में भूतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पड़ी और उसने दो नकाबपोश सवारों को अपनी तरफ आते देखा. उसे विश्वास हो गया कि वे दोनों नकाबपोश सवार भी जरूर इस सवार के साथी और मददगार ही होंगे. भूतनाथ को उत्कण्ठा के साथ मैदान की तरफ देखते पा उस सवार ने भी घूम कर देखा और कहा, "लो गदाधरसिंह, मेरे दोनों साथी भी यहाँ आ पहुँचे, अब तो तुम्हारी हिम्मत बिल्कुल ही टूट गई होगी !"
भूत ० : अगर ईमानदारी और धर्म का मार्ग छोड़ा न जाए तो मेरी हिम्मत कभी टूट नहीं सकती.
सवार० : इसका क्या मतलब ? ईमानदारी और धर्म की क्या बात है ?

भूत० : इसका मतलब यह है कि अगर मुकाबिले की लड़ाई की जाय, एक पर दो टूट न पड़े, पैदल के मुकाबले में सवार न लड़े और मामूली हर्बे के मुकाबले में तिलिस्मी हर्बा न बर्ता जाय- तो मेरी हिम्मत कभी नहीं टूट सकती, यों तो आप तीनों सवारों के मुकाबले में मैं अभी से हार मानता हूँ, हर्बा छोड़े देता हूँ और आपका हुक्म मानने के लिए तैयार हूँ. परन्तु यदि आपको बहादुरी का घमंड है और मेरी बहादुरी भी देखा चाहते हैं तो उन दोनों सवारों को दूर खड़ा कीजिये, तिलिस्मी तलवार कमर में रखिये और घोड़े से नीचे उतर कर मुकाबिले में आइये.
सवार० : बेशक मैं ऐसा ही करूँगा.

इतने ही में वे दोनों सवार भी वहाँ आ पहुँचे. पहिले सवार ने उनसे अपनी खास भाषा में जिसे भूतनाथ समझ न सका कुछ कहा जिसे सुनते ही वे दोनों कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और तब पहिला सवार तिलिस्मी तलवार कमर में रख कर घोड़े से नीचे उतर पड़ा और खंजर हाथ में लेकर भूतनाथ के सामने आया.

भूत० : हाँ, अब आप मेरे हौसले को देख सकते हैं.
सवार० : खैर वार करो. मैं जवाब देने के लिए तैयार हूँ.

भूतनाथ और सवार में लड़ाई होने लगी यद्यपि वह सवार बहादुर और लड़का था परन्तु भूतनाथ ने भी उसका खूब ही मुकाबिला किया. पूरे घण्टे-भर तक लड़ाई हुई मगर हताश न हुए. लड़ते और पैंतरा बदलते हुए भूतनाथ ने कई चक्कर काटे और मौका देखता हुआ सवार के घोड़े के पास पहुँचा जो बिना बँधे हुए चुपचाप खड़ा अपने टापों से जमीन खोद रहा था. फुर्ती के साथ छलाँग मार कर भूतनाथ उस घोड़े पर सवार हो गया और एक तरफ को भाग निकला.

यह सवार जो भूतनाथ से लड़ रहा था पैदल होने के कारण भूतनाथ का पीछा न कर सका मगर उसके दोनों दोस्त नकाबपोश सवारों ने फौरन बड़ी तेजी के साथ भूतनाथ का पीछा किया.

वह घोड़ा बहुत ही उम्दा था जिस पर सवार होकर भूतनाथ भाग निकला था परन्तु इन दोनों नकाबपोशों के घोड़े भी उससे कम न थे इसलिए बराबर भूतनाथ का पीछा किये चले गये, यद्यपि उसके पास नहीं पहुँच सके परन्तु उसके और बीच में फासला भी न बढ़ने दिया. जब नकाबपोशों ने देखा कि भूतनाथ हम लोगों को अपने पास पहुँचने नहीं देगा और सोचा कि अगर इसी तरह हम लोग पीछा किये चले जायेंगे तो तीनों घोड़े बेकार हो जायेगें, और अपने साथी से भी (जो भूतनाथ से लड़ा था) बहुत दूर निकल जायँगे, लौट कर पुनः उसके पास पहुँचना कठिन हो जायेगा तब उन दोनों में से एक घोड़े की लगाम तो काठी के साथ अड़ा दी और तीर-कमान निकाल कर वार करने के लिए तैयार हो गया.

यह देखकर दूसरे नकाबपोश ने आवाज दी और कहा, "देखना मेघराज गदाधरसिंह पर तीर मत चलाना." इसके जवाब में मेघराज ने कहा, "नहीं, गदाधरसिंह को नहीं मारूँगा बल्कि घोड़े को कुछ जख्मी करूँगा, यद्यपि वह अपना ही घोड़ा है मगर लाचारी है !" इतना कह कर मेघराज ने तीर चलाया जो कि भूतनाथ के घोड़े के पिछले पैर में लगा और जख्मी हो जाने के कारण उसकी चाल भी धीमी पड़ गई.

कुछ ही मौका मिलना इन दोनों पीछा करने वालों के लिए काफी था. बात-की-बात में ये दोनों भूतनाथ के पास जा पहुँचे और उसको ललकारा. जब भूतनाथ ने देखा कि अब भागना व्यर्थ है और घोड़ा भी जिस पर वह सवार था बेकार हो गया है तब वह खड़ा हो गया और न-मालूम क्या-क्या सोचता हुआ उन दोनों सवारों की तरफ देखने लगा.

मेघ० : क्यों जी गदाधरसिंह, तुम तो अपने को बहादुर कहते थे और एक पर एक लड़ने के लिए ललकारते थे. इस तरह धोखा देकर भागने की क्या जरूरत थी ?
भूत० : जब मैंने देखा कि तुम तीनों आदमी नाहक मेरे पीछे पड़े हुए और इन्साफ पर कुछ भी ध्यान नहीं देते तब मुझे यही रास्ता अच्छा मालूम हुआ.
मेघ० : ईश्वर को धन्यवाद दो कि हम तीनों आदमी तुम्हारे दोस्त हैं, अगर इस समय हमारे बदले कोई तुम्हारा दुश्मन होता तो जान से तुम्हें मारे बिना न रहता.

भूत० : (हँस कर) क्या अच्छे दोस्तों से सामना पड़ा है ! यद्यपि मेरा दिल भी यही गवाही देता है कि आप लोग मेरे दुश्मन नहीं हैं परन्तु इस दोस्ती की बलिदहारी है कि नाहक मेरे बने-बनाये काम को आप लोगों ने बिगाड़ दिया और बहादुर भैयाराजा के पुनःकुछ दिनों तक संकट में पड़े रहने का सामान कर दिया.
मेघराज : सो क्योंकर ? कौन-सा तुम्हारा काम हम लोगों ने बिगाड़ दिया ?
भूत० : यही कि जैपालसिंह को मेरे कब्जे से बाहर कर दिया जिसकी बदौलत मैं आज ही किसी समय भैयाराजा की स्त्री को दारोगा के पंजे से रिहाई दिलाने वाला था.

मेघ० : मगर हम लोगों को कैसे विश्वास हो सकता है कि जो कुछ तुम कह रहे हो वह सच है और तुम हम लोगों को धोखे में नहीं डाला चाहते.
भूत० : अब आप लोगों को विश्वास हो, या न हो हमारा काम तो बिगड़ ही गया.

मेध० : ऐसा तुम नहीं कह सकते, क्योंकि यद्यपि हमारे दोस्त ने जैपालसिंह को तुम्हारे कब्जे से बाहर निकाल दिया मगर अपने कब्जे से बाहर नहीं निकाला.
भूत० : (आश्चर्य और कुछ भरोसे के साथ) क्या वास्तव में जैपाल अभी आप लोगों के कब्जे में है ?

मेघ० :बेशक !
भूत० : तब आप लोग अपना ठीक-ठीक परिचय मुझे क्यों नहीं देते कि मैं भी अपना खुलासा हाल आप लोगों से बयान करूँ ? जैपाल का आपके कब्जे में बने रहना मेरे लिए खुशी की बात होगी यदि आप लोग वास्तव में मेरे विपक्षी न होंगे.

इतना सुन कर मेघराज के साथी ने भूतनाथ से कहा, "और कोई चाहे अपना परिचय तुम्हें दे या न दे परन्तु मैं अपना परिचय तुम्हें जरूर दूँगा. यद्यपि तुम बड़े बेमौके मुझसे रूठ कर भाग गये और मेरे बने-बनाये काम में बाधा डाल कर तुमने मेरा मन मैला कर दिया तथापि मैं इसी समय अपना परिचय देता हूँ !"

इतना कह कर उस सवार ने जो वास्तव में भैयाराजा थे, अपने चेहरे पर से तिलिस्मी झिल्ली उतार दी और भूतनाथ से कहा-"देखो और पहिचानों कि मैं कौन हूँ !"

भैयाराजा को पहिचान कर भूतनाथ हँसा और झुक कर सलाम करने के बाद बोला, "बस सिर्फ एक मौके पर रूठ कर मेरे चले जाने से आपका दिल इतना बदल गया ! अच्छा अब इसके पहिले कि मैं आपसे कोई मौके की बात कहूँ आप अपना निशान भी दीजिए, सिर्फ इस झिल्ली के उतर जाने से मेरा सन्तोष नहीं.

भैया० : क्या अब मैं शंखध्वनि करूँ ?
भूत० : नहीं, कोई जरूरत नहीं, विश्वास हो गया. अब यह बताइये कि ये आपके साथी साहब कौन हैं ?

भैया० : इन्हीं का परिचय न पाने से तुम रूठ गये थे, और इस समय भी तुम इनका परिचय नहीं पा सकते.
भैयाराजा की यह आखिरी बात सुन कर भूतनाथ बड़ा ही क्रोधित हुआ परन्तु अपने दिल के इस भाव को भी उसने खूब दबाया और कहा, "खैर इनका परिचय पाने की मुझे जरूरत भी नहीं, अब मैं इनके बारे में कभी कुछ न पूछूँगा. हाँ, उन साहब के बारे में आप कुछ कहियेगा जिनसे लड़ता हुआ मैं भाग आया हूँ ?"

भैया० : नहीं, उनके बारे में भी मैं कुछ नहीं कह सकता जब तक कि वे खुद अपना परिचय देने के लिए तैयार न हो जायँ.
भूत० : खैर उन्हें भी जाने दीजिये और यह बताइये कि मेरे साथ अब आप कैसा सलूक किया चाहते हैं ?

भैया० : इसका जवाब देना तब तक मुश्किल है जब तक तुम्हारी नीयत का ठीक-ठीक हाल न मालूम हो जाय, सच तो यह है कि मैं अभी तक तुम पर भरोसा करता हूँ और तुम्हारी कसमों पर विश्वास रखता हूँ मगर तुम्हारी करतूतों को देख कर मुझे लोगों के सामने शर्मिन्दा होना पड़ता है. लोग यह कहते है कि तुम्हारा गदाधरसिंह पर भरोसा करना परले सिरे की बेवकूफी है, तुम उसके हाथ से जरूर सताए जाओगे और धोखा उठाओगे.'

भूत० : बेशक लोग आपसे ऐसा कहते होंगे और मैं अपने ऊपर ध्यान देता हूँ तो यही निश्चय होता है कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ वह मेरी नादानी और बेवकूफी है. बैठे-बैठाए नाहक जी तोड़ कर मेहनत करना और उसके बदले में बदनामी उठाना बस इसके सिवाय और कुछ भी नहीं होता मेरे सिर पर जो पाप का कटोरा लदा हुआ है उसका बोझ दिनों-दिन बढ़ता ही जाता है. दोस्तों के दिल में मैल बैठती जाती है और दुश्मनों की गिनती तरक्की कर रही है. जिसके साथ नेकी करो वही बदी करने के लिए तैयार हो जाता है, जिसकी खिदमत करो वही नालायक बनाता है और जिसका साथ करो वही घृणा करता है, ऐसी अवस्था में मैं यह नहीं समझता कि मेरे लिए अब क्या कर्तव्य है.

यदि मैं सब झंझटों को छोड़ कर अपने घर बैठता हूँ तो लोग आराम से बैठने भी नहीं देते. इसके अतिरिक्त पेशा ऐयारी का भी ऐसा खराब है कि बिना मालिक का या अपना काम किए चुपचाप बैठ ही नहीं सकता और जब काम करने के लिए निकलूँगा तो किसी से दोस्ती और किसी से दुश्मनी जरूर ही पैदा होती अस्तु क्योंकर कह सकता हूँ कि मेरी जिन्दगी किसी तरह आराम से बीत सकती है.

आप ही देखिए कि आपके लिए मैं कितनी मेहनत कर रहा हूँ और अपनी मेहनत का अच्छा फल भी पा चुका हूँ मगर इस समय आप ही को मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता और मेरी सचाई का आप सबूत खोजते है जिसका मुझे बड़ा ही दुःख है. मैं खूब समझता हूँ कि जिस तरह आप मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते उसी तरह मेरी कसमों पर भी विश्वास न करेंगें परन्तु कोई चिन्ता नहीं, मैं बहुत अच्छा सबूत देकर आपको अपनी बातों पर विश्वास दिलाऊँगा और फिर इसके बाद ही से दुनिया के सब मामलों से हाथ धो बैठूँगा. आज से आप गदाधरसिंह को किसी काम में हाथ डालते न देखेंगे. अच्छा आप लोग घोड़ों के नीचे उतरें और मैं भी कुछ अपनी सफाई का सबूत दिखाता हूँ उसे देखें.

भैया० : (मुस्कुराते हुए) इस समय तो तुम बड़े ज्ञानी मालूम पड़ते हो ! ईश्वर करे तुम्हारा यह ज्ञान बराबर बना रहे और तुम्हारे सिर पाप का बोझ बढ़ने न पावे. अगर इस समय तुमने कोई वाजिब सबूत देकर अपने को सच्चा साबित कर दिया तो बेशक मैं तुमको अपना दोस्त मानूँगा और तुम्हारी तरफ से जो कुछ मैल मेरे दिल में बैठ गई उसे साफ कर दूँगा.

इतना कह कर भैयाराजा घोड़े से नीचे उतर पड़े. भूतनाथ और मेघराज भी घोड़े से नीचे उतरे और तीनों आदमी घोड़ों का उचित प्रबन्ध करने के बाद एक सायेदार पेड़ के नीचे बैठ कर पुनः बातचीत करन लगे.
भूत० :बेशक मैं अपनी सचाई के लिये जो कुछ सबूत दूँगा, उसे आप किसी तरह भी रद्द न कर सकेगें. आप लोगों के खयाल से मैं दारोगा का दोस्त बना हूँ, यह सही है मगर मेरे दिए सबूत को देख कर आपका यह खयाल भी बदल जायगा और आपको विश्वास हो जायगा कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ वह केवल आपकी स्त्री को उस दुष्ठ के पंजें से छुड़ाने के लिए, बस अब मेरे लिए इस दुनिया में इतना ही काम बाकी है. फिर मै किसी का मुँह न देखूँगा और न मेरा ही मुँह कोई देख सकेगा. सबूत ढूँढने के लिए भी मुझे कहीं दूर जाने की जरूरत नहीं हैं.

सब इसी जगह मेरे बटुए के अन्दर मौजूद हैं.
इतना कह कर भूतनाथ अपने ऐयारी के बटुए को खोल कर उसकी हर एक चीज जाँचने और इधर-उधर करने लगा, साथ-ही-साथ बात भी करता जाता था.

भूत० : सबसे पहिले मुझे इस बात का बन्दोबस्त करना है कि आपका शक दूर करने के बाद फिर मुझे कोई काम न करना पड़े. (अपने बटुए में से कोई दवा निकाल कर और अपने मुँह में रख) मेरे और दारोगा के बीच जो इकरार नामा हुआ है वह इसी बटुए में मौजूद है. जैपालसिंह ने आपकी स्त्री का पता जिस चीठी में लिख कर मेरे पास भेजा था वह भी इस बटुए के अन्दर है और उस अजायबघर में जिसमें आपकी स्त्री कैद है मुझे किस तरह पहुँच कर उसे छुड़ाना चाहिए यह भी एक कागज पर लिखा हुआ इसी बटुए में रक्खा है जिसे आप स्वयं निकाल कर देख सकते हैं.

इतना कहते हुए भूतनाथ ने दवा की एक शीशी जिसमें किसी तरह का अर्क भरा हुआ था और उसी बटुए में थी, खोल कर उसकी दवा उसी बटुए के अन्दर लुढ़का दी और इसके बाद एक चीठी निकाल कर भैयाराजा के हाथ में देते हुए कहा, "लीजिये इस चीठी को पढ़िये, आप तो दारोगा के अक्षर अच्छी तरह पहिचानते हैं. देखिये उसी के हाथ का लिखा हुआ है या नहीं ?"

भैया० : (चीठी देख कर) बेशक यह उसी कम्बख्त के हाथ का लिखा हुआ है.
इतना कह कर भैयाराजा ने वह चीठी पढ़ी, यह लिखा हुआ था:-
"मेरे प्यारे गदाधरसिंह ,

देखो, मैं तुम्हारी बात नहीं टालता, मगर तुम्हें भी हमारी इज्जत का खयाल रखना चाहिए ! परसों शाम को तुम मुझसे मिलो, मैं भैयाराजा की स्त्री को तुम्हारे हवाले कर दूँगा. मगर खूब होशियार ! शिकार खराब न जाय.

वही-दा०"
भैया० : यह चीठी तुम्हें कब मिली थी ?
भूत० : परसों.

भैया० : तो आज तुम उसे लेने के लिए दारोगा के पास जाओगे ?
भूत० : हाँ, मैं जरूर जाने वाला था.
भैया० : तो अब क्या हुआ ?

भूत० : अब तो जो होना था हो गया आपने देखा नहीं कि मैंने इस बटुए में से एक दवा निकाल कर खा ली है. वह जहर कातिल है जो कि प्राण लिये बिना कभी न रहेगा. एक दवा और इसी बटुए में थी जिससे उस जहर का असर दूर हो सकता था, मैंने वह दवा इसी बटुए में उंड़ेल कर बर्बाद कर दी, इस ख्याल से कि कहीं आप लोग जहर उतारने के लिए मुझे जबर्दस्ती वह दवा पिला न दें क्योंकि मैं अब इस दुनिया में रहना नहीं चाहता. (बटुए में से खाली शीशी निकाल और भैयाराजा को दिखा कर) देखिये यह शीशी खाली हो गई. इस पर लिखा हुआ है, "यह दवा सब तरह के जहरों को दूर करती है," अब यह दवा भी इस दुनिया से उठ गई, सिर्फ इसकी गमक थोड़ी देर के लिए रहेगी. इसी बटुए में और भी कई चिट्ठियाँ हैं.

भैया० : (बात काट कर) भला यह दवा तुमने बटुए के अन्दर क्यों उंड़ेल दी ?
भूत० :अगर मैं बाहर फेंकता तो शायद आप लोग मेरा हाथ पकड़ लेते और शीशी में कुछ दवा बच रहती तो ताज्जुब नहीं कि आप लोग मुझे बचा लेते. जो हो अब मैं जीते रहना नहीं चाहता.....
भैया० : गदाधरसिंह, यह तुमने बहुत बुरा किया कि....

भूत० : खैर बुरा तो जो कुछ होना था हो गया. (भयानक चेहरा बना कर) ओफ ! अब मुझे तकलीफ हो रही है. मेरी थोड़ी बातें और सुन लीजिये, शायद थोड़ी देर बाद मैं कुछ भी न बोल सकूँ. मेरे इस बटुए में बहुत-सी चीठियाँ है जो दारोगा और जैपाल के हाथ की लिखी हुई हैं, कोई खुली हैं, कोई डिबिया में हैं. कोई कपड़े में बँधी हुई हैं, जिनके देखने से आपको मालूम हो जायगा कि मैंने दारोगा के साथ मिल कर आपका नुकसान किया था या....ओफ ! अब मेरा हाथ नहीं चलता, आप लोग स्वयं इस बटुए में....आह !

इतना कह कर भूतनाथ चुप हो गया और सर पर हाथ रख कर आँखें बन्द कर लीं परन्तु यह अवस्था भी उसको ज्यादे देर तक न रही और कुछ ही देर में वह जमीन पर लेट कर लम्बी साँसे लेने लगा.
मेघराज (जो वास्तव में दयाराम थे) और भैयाराजा को उसकी इस अवस्था पर बहुत दुःख हुआ और दोनों आदमी इस खयाल से उसके बटुए की तलाशी लेने लगे कि शायद कोई चीज ऐसी निकल आये जिससे गदाधरसिंह की हालत कुछ सुधर जाय. थोड़ी देर बाद जब उन्होंने गौर किया तो मालूम हुआ कि गदाधरसिंह बिल्कुल ही बेहोश है, ताज्जुब नहीं कि थोड़ी ही देर में उसका दम निकल जाय.

यह सब कुछ तो हुआ मगर मेघराज और भैयाराजा को अवस्था भी अच्छी न रही. भूतनाथ ने तो दवा बटुए के अन्दर उंड़ेल दी थी उसकी तेज महक ने इन दोनों का दिमाग फिरा दिया और भूतनाथ के बटुए की तलाशी लेते-लेते ये दोनों भी बेहोश होकर जमीन पर लेट गये. उस समय भूतनाथ मुस्कुराता हुआ उठ बैठा और खड़े होकर मूँछों पर ताव देता हुआ बोला. "वह मारा ! कैसा छकाया है बच्चाजी को. अपने को बड़ा होशियार मानते थे."

[१३]

बेशक भूतनाथ ने मेघराज और भैयाराजा को बुरा धोखा दिया. उसे इस बात की प्रबल इच्छा थी कि किसी तरह मेघराज और उसके साथी का परिचय मिले परन्तु फिर यह सोच कर छोड़ दिया कि ऐसी झिल्ली तो मेरे पास मौजूद ही है. फिर भैयाराजा से बुराई लेने की जरूरत ही क्या है. अस्तु वह भैयाराजा को छोड़ कर मेघराज की तरफ झुका और चाहा कि किसी तरह उन्हें पहिचाने परन्तु इस बात का विश्वास हो जाने पर कि उनके चेहरे पर तिलिस्मी झिल्ली नहीं है वह रुका और इधर-उधर देख कर धीरे से बोला. "यहाँ तो नजदीक में कोई कूँआ भी नहीं है कि मैं जल भर लाऊँ और इसका चेहरा धोकर पहिचानने का उद्योग करूँ !

खैर जाने दो, इन दोनों को यहीं पड़ा रहने दो और पहले उस दुष्ट पर कब्जा करो जो मुझे नीचा दिखा चुका है और जिसे अपने साथियों के साथ छोड़ कर मैं यहाँ भाग आया हूँ. ये दोनों अभी कई घण्टे तक होश में न आवेंगे और न यहाँ कोई मुसाफिर ही पहुँच कर दोनों की मदद कर सकेगा."

भूतनाथ ने अपने बटुए में से आग पैदा करने वाला सामान निकाला और सूखे पत्ते बटोर कर आग सुलगाने के बाद उस पर अपने ऐयारी के बटुए को सेंक कर सुखाया तथा उस बेहोशी वाली दवा के असर को दूर किया और उस बटुए का सामान भी जो बहुत छितर-बितर हो गया था अपने कायदे के साथ ठीक करके पुनः सोचने लगा कि क्या करना चाहिए, एक दफे उसका ध्यान पुनः अपने शागिर्दों और उस दुश्मन की तरफ गया जिससे लड़ता हुआ हार कर वह इस तरफ भाग आया था और वह उस पर कब्जा करने का ढंग सोचने लगा मगर फिर विचार किया कि कदाचित् इस समय वह मेरे ढंग पर न चढ़ा या पुनः मुझ ही को नीचा देखना पड़ा तो इधर की मेहनत बिल्कुल बर्बाद हो जायेगी और अगर ये होश में आकर चले जायेंगे तो भैयाराजा से गहरी दुश्मनी पैदा हो जायगी और मेघराज पर भी पुनः कब्जा करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव हो जायगा.

मुझे इस बात का पता लगाना बहुत ही जरूरी है कि यह मेघराज वास्तव में कौन है और भैयाराजा से इसका क्या सम्बन्ध है. साथ ही इसके भैयाराजा को भी मैं किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता, मेघराज को पहिचान लेने के बाद मैं भैयाराजा से माफी माँग लूँगा और यदि वे माफी न देंगे तो मैं उनकी खिदमत करके उन्हें खुश कर लूँगा. मगर क्या मेरे शागिर्द उस जगह फँसे ही रह जायेंगे और वह दुश्मन इस समय मेरे कब्जे में न आवेगा. मेरे पास और भी कई तरह की दवाइयाँ हैं जिनसे मैं इन दोनों को कई दिनों तक बेहोश रख सकता हूँ.

तो इनकी बेहोशी बढ़ा कर और इन्हें इसी जगह छोड़ कर उस दुश्मन की तरफ मेरा इस समय जाना उचित होगा ? नहीं, अब दिन बहुत कम रह गया है, थोड़ी ही देर में अंधकार अपना दखल जमा लेगा, इतने थोड़े ही समय में वह काम नहीं हो सकता, इन दोनों को भी इस जगह पड़े रहने देना ठीक न होगा अस्तु भैयाराजा को तो उनकी बेहोशी कम करके इसी जगह छोड़ दिया जाय जिसमें घण्टे-भर के अन्दर ही वे होश में आकर जहाँ जो चाहें चले जायें और इस मेघराज को घोड़े पर लाद कर अपने अड्डे पर ले चलें. फिर जो कुछ होगा देखा जायगा.

इसी तरह की बातें कुछ देर तक भूतनाथ सोचता रहा, अन्त में वह मेघराज के पास और गौर से उनकी सूरत देख कर आप-ही-आप बोला, "मगर पानी का यहाँ बिलकुल ही अभाव है, खैर अपने डेरे पर ही चल कर इनका चेहरा साफ करें. अब इन्हें घोड़े पर लादना चाहिए !" इतना सोच कर भूतनाथ एक घोड़ा खोल लाया और उस पर मेघराज को लादने की फिक्र करने लगा मगर अफसोस, भूतनाथ का इरादा पूरा नहीं हुआ. जैसे ही भूतनाथ ने मेघराज के बदन पर हाथ रक्खा वैसे ही उसके बदन में एक बिजली-सी दौड़ गई. उसका तमाम शरीर काँप गया और वह बेहोश जमीन पर गिर पड़ा.

भूतनाथ की यह बेहोशी बहुत देर तक कायम नहीं रही आधी घड़ी के अन्दर ही वह होश में आ गया और उठ कर बड़े गौर और आश्चर्य से मेघराज को देखने लगा. उसने देखा कि मेघराज ने सिर से पैर तक एक अजीब किस्म का कपड़ा पहिरा हुआ है जो कि बहुत ही बारीक तार का बुना हुआ है और वह सुनहरा तार इतना पतला और मुलायम है कि सूत की तरह से उसका कपड़ा बुना गया है.

उस कपड़े के ऊपर से सूत का एक बारीक कपड़ा मेघराज पहिरे हुए है जिसके अन्दर से उस तार के कपड़े की चमक छन कर बाहर निकलती और बहुत ही भली मालूम होती है. आश्चर्य के साथ भूतनाथ ने कुछ देर तक उस कपड़े को देखा और पुनः उसे छुआ. छूने के साथ ही वह फिर बेहोश हो गया और आधी घड़ी तक बेहोश रहा.

जब भूतनाथ होश में आकर उठा तो धीरे से बोला, "अफसोस, मैं इसे किसी तरह भी अपने कब्जे में नहीं कर सकता. मेरी तमाम मेहनत ही व्यर्थ हो गई. अब मुझे भैयाराजा और इन्द्रदेव के सामने भी शर्मिन्दी उठानी पड़ेगी. तो क्या मैं भैयाराजा और इस मेघराज दोनों ही को इस दुनिया से उठा दूँ ? इन्द्रदेव को क्या मालूम हो सकता है कि मैंने इन दोनों को मार डाला !!"
इतने ही में भूतनाथ ने सामने से अपने उस दुश्मन को आते हुए देखा जिससे लड़ कर और भाग कर वह यहाँ तक चला आया था.

[१४]

अब हम अपने पाठकों को एक कैदखाने के अन्दर ले चल कर थोड़ी देर के लिए वहाँ का दृश्य दिखाया चाहते है, इस कैदखाने में इस समय केवल जैपालसिंह ही कैद हैं जिसे इस बात की कुछ भी खबर नहीं कि यह कैदखाना किस शहर में है, इसका मालिक कौन है, तथा उसे किसने गिरफ्तार करके कैद कर रक्खा है.

उसके हाथों में हथकड़ी और पैरों में बेड़ी पड़ी हुई है. कपड़े बिलकुल ही मामूली दर्जे के है. एक कम्बल बिछाने के लिए तथा दूसरा ओढ़ने के लिए उसे दिया गया है. उससे सिर्फ चार-पाँच हाथ की दूरी पर पानी से भरा हुआ एक मिट्टी का घड़ा तथा पीतल का एक गिलास दिखाई दे रहा है, बस इसके अतिरिक्त उस कैदखाने में कुछ भी नहीं है. हाँ, एक तरफ चिराग जरूर जल रहा है जिसकी रोशनी इस कैदखाने के अन्धकार को दूर कर रही है.

कैदखाने की यह कोठरी लगभग पाँच हाथ चौड़ी और आठ या दस हाथ लम्बी होगी. तीन तरफ संगीन दीवार और चौथी तरफ लोहे का जंगला है और उसी जंगले में जाने के लिए छोटा-सा एक दरवाजा भी बना हुआ है.

जंगले के आगे एक मुख्तसर-सा दालान, मोरी और दोनों तरफ दो कोठरियाँ हैं तथा कोने में ऊपर चढ़ जाने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियाँ भी दिखाई दे रही हैं जिससे मालूम होता है कि यह कैदखाना किसी मकान के निचले हिस्से में बना हुआ है.

जैपालसिंह कदाचित् इस बात को जानता है कि यह समय रात का है और कुछ ही समय बाद उसकी दुर्दशा होने वाली है. वह सर झुकाए हुए किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न है मगर थोड़ी-थोड़ी देर में उन सीढ़ियों की तरफ देख लेता है जो बाहर दालान में ऊपर चढ़ जाने के लिए बनी हुई थीं.

कैदखाने के ऊपर वाली छत पर कुछ धमधमाहट की आवाज हुई और जैपाल ने पुनः सर उठा कर सीढ़ियों की तरफ देखा. एक औरत कोड़ा लिए हुए नीचे उतरी तथा उसके बाद दूसरी और फिर तीसरी औरत भी नीचे उतरी जिनके हाथों में नंगी तलवारें थीं. इन्हें देख कर एक दफे जैपाल थर्रा उठा और उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई. हम नहीं कह सकते कि उन औरतों को वह पहिचानता था या नहीं.

उन औरतों के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और उनका तमाम बदन स्याह लबादों से ढका हुआ था. तीनों औरतें दरवाजा खोल कर कैदखाने के अन्दर आ गईं. जिस औरत के हाथ में कोड़ा था वह आगे बढ़ी और जैपाल के पास खड़ी होकर बोली, "कहिये आपने अपने सोच-विचार का क्या नतीजा निकाला ? मेरी बातों का ठीक-ठीक जवाब दोगे या नहीं ?"

जैपाल० : हाँ. जो कुछ मैं जानता हूँ वह जरूर कह दूँगा, मगर जिन बातों का मुझे गुमान भी नहीं है उनके विषय में मैं क्या कह सकता हूँ.

औरत :मैं खूब जानती हूँ कि तुम्हें क्या-क्या भेद मालूम है, इसलिए मैं वही बात पूछूँगी जिसका जवाब तुम दे सकते हो. यह बात हम लोगों से छिपी हुई नहीं हि कि तुम दारोगा के कैसे दोस्त हो, दारोगा तुम्हें कितना मानता है और अपने पापकर्म तथा भेदों में तुम्हें कहाँ तक साथी बनाता है.
जैपाल : दुनिया में गप्पें बहुत उड़ा करती हैं मगर उनमें सार कुछ भी नहीं होता या बहुत ही कम होता है. दारोगा साहब का दोस्त बनने के लिए जितनी हैसियत, ताकत, होशियारी, बुद्धिमानी और ऐयारी की जरूरत है उसका सौवाँ हिस्सा भी मुझमें नहीं है, ऐसी अवस्था में वे क्योंकर मुझे अपना सच्चा हितैषी या दोस्त मान सकते हैं ? मगर हाँ, गप्प उड़ाने वालों की जुबान रोकी नहीं जा सकती और न उसमें से असल तत्व को छाँट कर कोई अपनी दिलजमयी कर सकता है.

औरत० : बुरे और दुष्ट तथा दुराचारी लोगों के दोस्त बनने में पंडित होने की कोई आवश्यकता नहीं, कोई विद्वान, बुद्धिमान, होशियार और सच्चा ऐयार दारोगा जैसे पतित और दुष्ट प्रकृति के आदमी का दोस्त नहीं बन सकता. जो तुम्हारे ऐसे अदूरदर्शी और नालायक हैं वे ही उसके साथी बन सकते हैं. इसी तरह गप्पें भी बेबुनियाद नहीं हुआ करतीं, बिना एकवचन के बहुवचन का होना असम्भव है, किसी विद्वान का कथन है कि जब तक कोई एक चीज नहीं होती तब तक लोग उसे बहुत चीजें कह कर मशहूर नहीं कर सकते.

अस्तु तेरी ही कही बातों की पुष्टि करके मैं कहती हूँ कि तुझमें किसी तरह की हैसियत, ताकत, होशियारी और बुद्धिमानी नहीं और न तू सच्चा ऐयार ही है इसलिए दारोगा से तेरी पटती है और तुझे वह उल्लू समझ कर अपने पाप का साथी और भागी बनाए हुए है और वास्तव में तू उसी के योग्य है भी. इसके अतिरिक्त जिस बात को हम लोग जानते हैं उसके छिपाने की कोशिश करना भी तेरा व्यर्थ है.

जैपाल० : (कुछ सोच कर) मैं भी आप लोगों से बहस करना नहीं चाहता, जो कुछ जानता हूँ उसे सच-सच कह दूँगा क्योंकि आपके हाथ का कोड़ा मुझे किसी तरह पर भी बहाना नहीं करने देगा यह मैं खूब समझता हूँ. मगर आप लोग भी व्यर्थ अन्याय करके मुझे दुःख नहीं देंगी इसका भरोसा है.

औरत० :अच्छा पहिले यह बता कि दयारामजी कितने दिनों तक दारोगा के कैदखाने में रहे और इन दिनों वे कहाँ हैं ?
जैपाल० : इन दिनों वे कहाँ हैं सो तो मैं नहीं जानता मगर यह कह सकता हूँ कि दारोगा के कैदखाने में वे चार-पाँच वर्ष से ज्यादे ही दिनों तक रहे, अभी हाल में उनका कोई दोस्त उन्हें छुड़ा ले गया.
औरत० : बेशक यह बात तूने सच कही, अच्छा यह तो बता कि आजकल उसके कैदखाने में कौन-कौन है ?

जैपाल० : मेरी जानकारी में तो इन दिनों उसके यहाँ कोई भी कैद नहीं है.
औरत० : (बिगड़ कर) कैद है और जरूर है ! तू इस बात को खूब जानता है और कैदियों को अच्छी तरह पहिचानता भी है.
जैपाल० : नहीं नहीं, मैं सच कहता हूँ कि और किसी कैदी के विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता, हाँ भैयाराजा की स्त्री जरूर उनके कब्जे में है.
औरत० : उन्हें उसने कहाँ पर रक्खा है ?

जैपाल० : सो मैं नहीं जानता .
औरत० : (सिर हिला कर) बेशक तू नहीं जानता, क्योंकि कल की मार तुझे याद नहीं है. खैर कोई चिन्ता नहीं. मेरे हाथ का कोड़ा पता लगा लेगा कि कम्बख्त दारोगा ने उन्हें कहाँ पर कैद रक्खा है, मगर पहिले तुझे यह बताना पड़ेगा कि और कितने आदमियों को दारोगा ने कैद कर रक्खा है और वे इस समय कहाँ हैं ! इस विषय में बहाना करना तेरे हक में अच्छा नहीं, कैदियों का हाल ठीक-ठीक बता देने ही से मैं तुझे छोड़ दूँगी, नहीं तो समझ रख कि इस कैदखाने में तेरी जिन्दगी समाप्त हो जाएगी और इस कोड़े से हर रोज तेरी खातिर की जाएगी.

जैपाल० : (कुछ देर तक सोच कर) मैं नहीं कह सकता कि मेरी बातों पर किस तरह आपको विश्वास होगा तथापि जो कुछ मैं जानता हूँ वह साफ कहे देता हूँ, दारोगा साहब के यहाँ अब भी चार-पाँच कैदी हैं मगर सिवाय भैयाराजा की स्त्री के और किसी को भी मैं नहीं पहिचानता.

पहिले तो वे कैदी उनके घर ही में तहखाने के अन्दर कैद थे परन्तु जब से दयाराम को कोई छुड़ा कर ले गया है तब से अपने मकान में वे किसी कैदी को नहीं रखते. महाराज से उन्होंने अजायबघर की ताली ले ली है और सब कैदियों को उसी अजायबघर में पहुँचा दिया है.

औरत० : मैंने भी ऐसा ही सुना है परन्तु तेरी इस बात को मैं आजमाऊँगी. अगर तू सच्चा निकला तो जरूर तुझे छोड़ दूँगी !
जैपाल० : क्या उस अजायबघर को तुम जानती हो ?
औरत० : मैं खूब जानती हूँ.

जैपाल० : मगर उसके अन्दर जाना बिल्कुल ही असम्भव है.
औरत० : कदाचित ऐसा ही हो इससे कोई मतलब नहीं, तेरा कहना ठीक होने से ही मैं तुझे छोड़ दूँगी.
जैपाल० : जबकि वहाँ तक तुम पहुँच ही नहीं सकती हो बल्कि और भी किसी का पहुँचना असम्भव है तब मेरी बातों की सच्चाई का हाल तुम्हें जल्द कैसे मालूम हो सकता है. ऐसी अवस्था में सच कह देने पर भी मैं व्यर्थ की मुसीबत झेलता रहूँगा.

औरत० : नहीं, ऐसा नहीं होगा, मैं वहाँ पहुँचने का बन्दोबस्त कर लूँगी और तुझे ज्यादे दिनों तक यहाँ सड़ना न पड़ेगा.
जैपाल० : अगर मुझे अपने साथ ले चलो तो मै इस काम में तुम्हारी मदद भी कर सकूँगा.
औरत० : (हँस कर) तेरी मदद की मुझे जरूरत नहीं तथापि मैं सोच कर कल इस बात का जवाब तुझको दूँगी.
इतना कह कर वह औरत वहाँ से हट गई. कैदखाने का दरवाजा बन्द कर दिया गया और तीनों औरतें जिस राह से आई थीं ऊपर चली गईं. ये तीनों औरतें जमना, सरस्वती और इन्दुमति थीं जोकि आजकल इन्द्रदेव के कैलाश-भवन में दिखाई दे रही हैं और जैपाल कैलाश–भवन ही के एक कैदखाने में बन्द है जिसे दयाराम, भैयाराजा और प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ के कब्जे से निकालकर यहाँ भेज दिया था तथा जिसका कुछ हाल ऊपर बयान हो चुका है और होगा.

उस समय दो-ढाई घण्टे रात जा चुकी थी, कैदखाने से निकल कर वे तीनों इन्द्रदेव के पास पहुँची जोकि इस समय अपने पूजा वाले कमरे में संगमरमर की एक चौकी पर बैठे श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ करते हुए उसकी गुत्थियों को सुलझाने का उद्योग कर रहे थे.

जमना, सरस्वती और इन्दुमति उनके पास जाकर चौकी के नीचे दाहिनी तरफ बैठ गईं. इन्द्रदेव ने मुस्कराते हुए उनकी तरफ देखा और पूछा, "कहो तुम तीनों जैपाल से मिल आईं ?"

जमना० :जी हाँ, वह तो बड़ा ही डरपोक है. उसमें इतनी हिम्मत कहाँ कि अपने मित्रों के भेदों को छिपाने के लिए जान समर्पण करे या कष्ट उठाये !
इन्द्र० : दुनिया में जितने लोभी-लालची और खुदगर्ज आदमी हैं उन सभी का यही हाल है. अच्छा कुछ हाल उसकी जुबानी मालूम हुआ ?

जमना० :जी हाँ, यह भी उसी बात की पुष्टि करता है अर्थात कहता है कि दारोगा ने अपने सब कैदियों को अजायबघर में ले जाकर बन्द कर दिया है.

इन्द्र० : वास्तव में यही बात ठीक है, जिस दिन मुझे यह खबर लगी कि दारोगा ने अजायबघर की ताली राजा साहब से ले ली है उसी दिन मैं समझ गया कि अब वह अपने कैदियों को वहाँ ही ले जाकर रक्खेगा. पर कोई चिन्ता नहीं, दयाराम, प्रभाकरसिंह और भैयाराजा जिस उत्साह के साथ गये हैं आशा है कि अपने काम में अवश्य सफल-मनोरथ होंगे. यद्यपि वे तीनों बहुत कुछ कर गुजरने के योग्य हैं तथापि मुझे विश्वास नहीं हुआ, आज सवेरे मैंने अपने दो शिष्यों को भी उनकी मदद के लिए भेज दिया है.

जमना० :तो क्या मेरा मनोरथ सिद्ध न होगा ?

इन्द्र० :तुम तो व्यर्थ ही इस मामले में पड़ना चाहती हो, बहुत दिनों तक दुःख भोगने के बाद ईश्वर ने तुम्हारे लिए अपूर्व सुख का सामान कर दिया है तो अब तुम पुनः दुःख भोगने का बन्दोबस्त करती हो ! भला दारोगा और गदाधरसिंह का मुकाबला करना और उस अजायबघर के अन्दर जाना तुम औरतों का काम है ? मैंने तुम दोनों के वास्ते गदाधरसिंह का मुकाबला करने के लिए कितना बड़ा सामान पैदा कर दिया था. और उस समय भूतनाथ को इसका गुमान भी न था कि तुम इस दुनिया में हो, तब तो तुम लोगों के किए कुछ हुआ ही नहीं आज गदाधरसिंह हर तरह से होशियार और जानकार हो रहा है तब तुम भला इस समय क्या कर सकती हो ? मैं तुम्हारे इस इरादे को कदापि पसन्द नहीं करता.

जमना० :(हाथ जोड़ कर) आपका कहना बहुत ठीक है, मैं उसी शर्मिन्दगी को मिटाने के लिए इस समय आपसे प्रार्थना कर रही हूँ और दारोगा तथा गदाधरसिंह ने जो कुछ मुझे दुःख दिया है उसका बदला अपने हाथ से लिया चाहती हूँ. अगर मैं ऐसा न कर सकी तो सब तरह का सुख पाने पर भी जिन्दगी-भर मेरे दिल में यह दाग बना ही रहेगा. उस समय यदि हम लोगों से भूल हो गई तो क्या सदैव ही भूल हुआ करेगी ? इसके अतिरिक्त जमाने का दुःख –सुख भोग कर पहिले की बनिस्बत आज हम लोग होशियार हो रही हैं तथा हर तरह का तजुर्बा भी हो गया और सबसे बढ़ कर यह कि आपका भरोसा हम लोगों के साथ है.

इन्द्र० :बेशक पहिले की बनिस्बत आज तुम लोगों की शक्ति बढ़ी हुई है मगर गदाधरसिंह भी पहिले की अपेक्षा आज चैतन्य है और दारोगा जैसे दुष्ट को अपना साथी बनाए हुए है. क्या दारोगा की होशियारी, मक्कारी और शैतानी गदाधरसिंह से कम है ?

जमना० :यह सब कुछ सच है परन्तु यदि मेरे दिल की अभिलाषा पूरी न हुई तो इस दुनिया में मेरी जिन्दगी व्यर्थ है, तब तो मुझमें और एक निःसहाय कंगाल अबला में कुछ भी भेद न रहा.

जमना और सरस्वती की आँखों से आँसूओं की धारा बह चली.

इन्द्र० :उन दोनों ने जो कुछ तकलीफें तुम्हें दी हैं उनका बदला यदि तुम्हारे पति अपने हाथ से लेंगे तो क्या इससे तुम दोनों को सन्तुष्टि न होगी !
जमना० :नहीं, कुछ भी नहीं, इसके अतिरिक्त उनका भी दिल और दिमाग कुछ आप ही सा है, वे गदाधरसिंह को कभी भी दुःख न देंगे।
इन्द्र० :मैं तो अजीब संकट में पड़ रहा हूँ, सभी जिद्दियों से वास्ता पड़ा है.

जमना० :नहीं-नहीं, यदि आपको संकट है तो मैं जिद न करूँगी अब इस विषय में कुछ न कहूँगी.
इसके बाद कई पल तक सन्नाटा रहा और तब पुनः इन्द्रदेव ने कहा-

इन्द्र० : अच्छा तुम दोनों जाओ और अपना हौसला निकालो परन्तु और हर तरह का बन्दोंबस्त करने के अतिरिक्त मैं अपना एक आदमी तुम्हारे साथ कर दूँगा.
जमना० :(प्रसन्नता के साथ) कौन मेरे साथ रहेगा ?

इन्द्र० :उसे तुम नहीं पहिचानती और न पहिचान सकोगी.
जमना० :तो फिर किस तरह उस पर हम लोगो को विश्वास होगा ?

इन्द्र० :जिस आदमी को मैं तुम दोनों के साथ करूँगा उस पर विश्वास करने की कोई जरूरत नहीं, मैं स्वयं उस आदमी को तुम्हारे सुपूर्द कर देता परन्तु इस समय वह यहाँ है नहीं और मैं घण्टे-दो घण्टे में किसी काम के लिए बाहर जाने वाला हूँ अस्तु मैं उसके घर पर से होता हुआ जाऊँगा और सब बातें उसे समझा दूँगा, प्रातःकाल जब घंटा-भर रात रहते ही तुम दोनों वहाँ से बाहर निकलोगी तो दरवाजे ही पर वह आदमी तुम्हें मिलेगा. 'दत्त' के नाम से वह तुमको परिचय देगा और दो अदद तिलिस्मी खंजर भी तुम दोनों को देगा जिसका गुण वह स्वयं तुम्हें बतायेगा. उस आदमी को अपने साथ ले लेना और उसकी राय के खिलाफ कभी कोई काम मत करना !

जमना० :(प्रसन्नता से हाथ जोड़ कर) बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा. कुछ देर तक और उन लोगों में बातें होती रहीं. इसके बाद इन्द्रदेव की आज्ञानुसार से सब उठ कर अपने ठिकाने चली गईं और सफर का इन्तजाम करने लगीं.

[१५]

हम नहीं कह सकते कि इन्द्रदेव ने जमना और सस्वती को इतने बड़े कठिन साहस का काम करने के लिए इजाजत क्योंकर दे दी. जब तक दयाराम मरे हुए समझे जाते थे और जमना तथा सरस्वती बिल्कुल इन्द्रदेव के अधीन थीं तब तक जो कुछ इन्द्रदेव ने मुनासिब समझा किया और कर सकते थे परन्तु ऐसी अवस्था में जबकि दयाराम प्रकट हो गये और वे दोनों अपने पति के पास पहुँचा दी गईं, तब उन पर सिवाय दयाराम के और किसी का अधिकार न रह गया, अस्तु न जमना और सरस्वती ही को दयाराम की आज्ञा के बिना घर के बाहर निकलने और ऐसे काम में हाथ डालना उचित था और न इन्द्रदेव ही को ऐसी आज्ञा देने और उनका उत्साह बढ़ाने की जरूरत थी. सम्भव है कि इसमें इन्द्रदेव ने किसी तरह का फायदा समझ लिया हो, अस्तु.

सुबह की सुफेदी आसमान पर कुछ-कुछ फैल चुकी थी जब जमना और सरस्वती अपने सामान से हर तरह से दुरुस्त हो मरदाने भेष में तिलिस्मी झिल्ली चेहरे पर लगाये हुए घर से बाहर निकलीं. मकान के सदर फाटक पर दो कसे-कसाये घोड़े लिए साईस तैयार था, तथा और भी एक आदमी घोड़े पर सवार इन दोनों के आने का इन्तजार कर रहा था. जमना और सरस्वती दोनों घोड़ों पर सवार हो गईं और मैदान की तरफ चल निकलीं, वह आदमी भी पूछने पर 'दत्त' के नाम का परिचय देकर दोनों के साथ हो गया. दो-तीन जगह ठहर कर दिनभर बल्कि आधी रात तक सफर करने के बाद ये तीनों आदमी उस जंगल में जा पहुँचे जिसमें कि अजायबघर की इमारत थी.
इस अजायबघर का खुलासा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में पूरा-पूरा लिखा जा चुका है, आशा है उसे हमारे पाठक भूले न होंगे, इसलिये यहाँ दोहरा कर उसके लिखने की कोई जरूरत नहीं जान पड़ती.

जब ये तीनों उस अजायबघर के पास पहुँचे तो कुछ दूर पहिले ही घोड़ों पर से नीचे उतर पड़े और घोड़ों को पेड़ के साथ बाँध कर पैदल अजायबघर की तरफ चल पड़े. जब उस चश्मे के पास पहुँचे जो अजायबघर के नीचे से होकर बहता था तब इन तीनों को अजायबघर के बंगले के बाहर निकलती हुई एक रोशनी दिखाई दी यह लोग अटक कर बड़े गौर से उस रोशनी की तरफ देखने लगे.

यद्यपि ये लोग पास पहुँच चुके थे मगर पेड़ों के ऐसे झुरमुट में खड़े थे कि इस अँधेरी रात के समय किसी के देख लेने का इन लोगों को बिल्कुल ही डर न था अस्तु बड़ी बेफिक्री के साथ ये लोग उस रोशनी की तरफ देखने लगे. कुछ ही क्षण में भूतनाथ पर इन लोगों की निगाह पड़ी जो कि अपने हाथ में रोशनी लिए हुए अजायबघर की सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था. उसके पीछे-पीछे चलते हुए जमानिया के दारोगा भी दिखाई पड़े ये दोनों सीढ़ियों के नीचे नहीं उतरे थे कि तीन लाशों को लिए और भी छः आदमी मकान के अन्दर से निकल कर इनके पीछे-पीछे आते दिखाई पड़े.

इन सभों को देख कर जमना, सरस्वती और दत्त तीनों घबड़ा उठे और उनके दिल में तरह-तरह के सोच-विचार पैदा और नष्ट होने लगे. जमना ने दत्त की तरफ घूम कर कहा-
जमना० : क्या यह सम्भव है कि यह सब उन्हीं लोगों को निकाल कर लिये जाते हों जिनको छुड़ाने के लिये हम लोग यहाँ आये हैं ?

दत्त० : मुझे तो यही विश्वास होता है, क्योंकि जैपालसिंह का गिरफ्तार होकर तुम लोगों के कब्जे में पहुँचना ही इस बात की पुष्टि करता है कि भैयाराजा प्रभाकरसिंह और दयाराम ने भूतनाथ को छोड़ दिया. तो ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ ने दारोगा से मिल कर यह सब हाल नमक-मिर्च लगा कर बयान किया हो और दारोगा यह खयाल करके कि शायद जैपालसिंह की जुबानी किसी तरह वे लोग हमारे कैदियों का पता लगा लें और हमारे कैदियों को छुड़ा कर ले जाये. अपने कैदियों को दूसरी जगह रखने के लिये यहाँ से निकाल कर लिये जाते हों.
जमना० :बेशक यही बात है, वह देखो बंगले के अन्दर से एक आदमी और निकला, इसके हाथ में नंगी तलवार भी है.

दत्त : यह आदमी बहादुर मालूम पड़ता है और जान पड़ता है कि इन सभों का निगहबान है.
जमना० : ऐसी हालत में जिस तरह बन पड़े इन लोगों को रोकना और कैदियों को इनके कब्जे से छुड़ाना चाहिये नहीं तो हम लोगों की मेहनत बिल्कुल बर्बाद हो जायगी और पुनः कैदियों का पता लगाना बहुत मुश्किल हो जायेगा.

दत्त० : यह तो ठीक है मगर इतने आदमियों के कब्जे से इन कैदियों को छुड़ा लेना मुझ अकेले के लिये बहुत ही कठिन है, भूतनाथ साधारण ऐयार नहीं है, दारोगा भी लड़े बिना रह नहीं सकता और इनके पीछे-पीछे जो आदमी चला जा रहा है वह भी मुझे उन दोनों से बढ़ कर ताकतवर और बहादुर जान पड़ता है इसके अतिरिक्त जो लोग तीनों कैदियों को उठा कर लिये जा रहे हैं वे भी मुकाबला करने से बाज न आयेंगे.

जमना० : आप अकेले क्यों हैं ? हम दोनों भी तो आपका साथ दे सकती हैं ! यद्यपि हम दोनों औरतें हैं मगर जो तिलिस्मी खंजर इन्द्रदेव ने हम लोगों को दे रक्खा है उसका मुकाबला करना इन सभों के लिए कठिन ही नहीं, असंभव है.
दत्त० : हाँ ठीक है, मुझे भी इन्द्रदेव जी ने एक ऐसे ही गुण की तिलिस्मी तलवार दी है जिसके भरोसे पर मैं अकेला ही इन सभों का मुकाबला कर सकता हूँ यदि इन लोगों के पास कोई उसके मुकाबले का हरबा न हो तो.

जमना० : इन लोगों के पास भला इसके मुकाबले का हरबा कहाँ से आवेगा !
दत्त० : नहीं की हालत में तो कोई बात ही नहीं है, हम लोग जरूर फतह पावेंगे, परन्तु यदि कोई हरबा इसके जोड़ का इन लोगों के पास हुआ तो बड़ी ही मुश्किल होगी, हम लोग बिना गिरफ्तार हुए बाकी न रहेंगे. (कुछ रुक कर) अच्छा देखो मैं इनका मुकाबला करता हूँ, जरा इन लोगों को और आगे बढ़ लेने दो, तुम दोनों मेरी मदद के लिए तैयार रहना मगर दूर रहना, अगर देखना कि ये भी ऐसे ही तिलिस्मी हरबे से मेरा मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये हैं ते तुम दोनों जरूर यहाँ से भाग जाना, मेरे लिए किसी तरह की चिन्ता न करना.

जमना० :मैं आपको ऐसे संकट में अकेले छोड़ कर....

दत्त० : नहीं-नहीं मैं जो कहता हूँ कि तुम दोनों किसी बात का विचार न करके एकदम यहाँ से भाग जाना, मैं अपने को किसी-न-किसी तरह बचा ही लूँगा.
जमना० : खैर, जैसा आप कहते हैं मैं वैसा ही करूँगी.

भूतनाथ और दारोगा वगैरह कैदियों को लिए हुए लगभग दो-ढाई सौ कदम के आगे न बढ़े होंगे कि दत्त तेजी के साथ आगे बढ़ा और भूतनाथ का रास्ता रोक सामने खड़ा होकर बोला, "बस खबरदार, कदम रोक लो, बिना मेरी बात का जवाब दिये आगे मत बढ़ना नहीं तो अपनी जान से हाथ धो बैठोगे."

भूत० :(रुक कर और मशाल की रोशनी में अच्छी तरह दत्त का चेहरा देख कर) तुम कौन हो जो इस तरह से आकर मेरा रास्ता रोकते हो ? तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ और मेरे साथ इस समय कितने आदमी हैं ?

दत्त० : मैं तुम्हें खूब जानता हूँ और तुम्हारे साथियों को भी देख रहा हूँ.
भूत० : तो क्या तुम हम लोगों का मुकाबला करने के लिए तैयार हो ?

दत्त० : बेशक ! अगर तुम मेरी बातों का साफ-साफ जवाब न दोगे तो मैं अकेला तुम सबका मुकाबला करूँगा.
भूत० : तुम क्या पूछना चाहते हो ?

दत्त० : सिर्फ इतना जानना चाहता हूँ कि तुम लोग किस-किस को उठा कर कहाँ लिए जा रहे हो ?

भूत० :इसका जवाब तुम कदापि नहीं पा सकते.

दत्त० : तो मैं तुम लोगों को जीता छोड़ भी नहीं सकता.

इतना कह कर दत्त ने म्यान से तलवार निकाल ली और मुकाबला करने के लिए भूतनाथ को ललकारा, भूतनाथ ने घूम कर दारोगा की तरफ देख कर कुछ इशारा किया और तब पीछे की तरफ हट मशाल ऊँची करके अपनी खास बोली में कुछ कहा दारोगा ने म्यान से तलवार निकाल ली और दत्त के मुकाबले में आ खड़ा हुआ, भूतनाथ की आवाज सुन कर वह आदमी भी आगे बढ़ आया जो सबके पीछे-पीछे आ रहा था, इसके अतिरिक्त वे लोग भी जो तीनों लाशों को उठाये हुए थे अपना बोझ जमीन पर रख कर आगे बढ़ आये और दत्त को पकड़ने के लिये तैयार हो गये. दारोगा ने दत्त पर तलवार से वार किया मगर उसका कोई नतीजा न निकला दत्त ने हँसकर दारोगा से कहा, "दारोगा साहब, क्या आप भी अपना नाम बहादुरों में लिखवाना चाहते हैं ?"

दारोगा० : क्या मैं मर्द नहीं हूँ ?
दत्त० : आज तक तो कोई काम मर्दानेपन का आपने नहीं किया.
दारोगा० : खैर बहस की कोई जरूरत नहीं, तुम जो कुछ किया चाहते हो करो और समझ रक्खो कि (हाथ के इशारे से बता कर) इतने आदमियों का तुम कदापि मुकाबला नहीं कर सकते.

इतना कह कर दारोगा ने पुनः दत्त पर तलवार से वार किया और दत्त ने भी उसका जवाब तलवार से ही दिया. दत्त ने समझा था कि ये लोग सब बेईमान हैं. जरूर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे. मगर ऐसा न हुआ, सब अलग खड़े तमाशा देखने लगे और दत्त तथा दारोगा साहब में लड़ाई होने लगी.
दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ जब दारोगा साहब ने बड़ी मर्दानगी और दिलावरी के साथ उसका मुकाबला किया, दत्त जानता था कि दारोगा अपने घर के अन्दर ही के बहादुर हैं, किसी वीर के साथ वीरता प्रकट नहीं कर सकते.

लगभग आधे घण्टे के लड़ाई होती रही मगर दारोगा साहब को दत्त किसी रह से नीचा दिखा न सका. लाचार होकर दत्त ने कमर से तिलिस्मी तलवार निकाली और उससे दारोगा पर वार किया जिससे दारोगा के बदन पर एक छोटा-सा जख्म तो लगा मगर वह बेहोश नहीं हुआ.

यह तिलिस्मी तलवार वैसी ही थी जैसी कि प्रभाकरसिंह के पास थी और जो कुछ दिनों के लिये भूतनाथ के पास भी चली गई थी. इस समय दारोगा के पास भी वैसी ही तलवार और उसके जोड़ की अंगूठी मौजूद थी और यही सबब था कि दारोगा साहब जख्म खाकर भी बेहोश नहीं हुए मगर यह जान गये कि यह तलवार तिलिस्मी है और दत्त को भी विश्वास हो गया कि इसके पास कोई तिलिस्मी हरबा जरूर है.

मजबूर होकर दत्त ने यह तलवार भी म्यान के अन्दर रख ली और मुकाबला करने के लिए तिलिस्मी खंजर कमर से निकाला.
यह खंजर वैसा था जैसा कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को कमलिनी ने दिया था और जिसका खुलासा बयान चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है अर्थात् जिसका कब्जा दबाने से बिजली की तरह रोशनी पैदा होती थी और दुश्मनों की आँखें झप जाती थीं अथवा बदन के साथ लगाने से आदमी बेहोश हो सकता था.

दत्त ने खंजर का कब्जा दबाया और इसमें से बिजली की तरह रोशनी पैदा हुई जिससे दारोगा और भूतनाथ वगैरह सभों की आँखें बन्द हो गईं. मगर उस आदमी पर, जो इन सभों के पीछे आया था, और अब आगे बढ़ कर दत्त के पास पहुँच चुका था, इस रोशनी का कुछ असर न हुआ, थोड़ी देर के लिए हम इस आदमी का नाम भीम रख देते हैं क्योंकि इस जगह पर कह नहीं सकते कि वास्तव में उसका क्या नाम था.

दत्त के खंजर की अवस्था देख कर भीम आगे आया और दत्त के मुकाबले में खड़ा होकर बोला, "हम लोगों पर फतह नहीं पा सकते. क्यों व्यर्थ अपनी जान के दुश्मन बनते हो और हमारा हर्ज कर रहे हो !"

भीम ने वैसा ही तिलिस्मी खंजर कमर से निकाला और दत्त का मुकाबला किया अर्थात दत्त और भीम में तिलिस्मी खंजर से लड़ाई होने लगी. खंजरबाजी में दोनों ही निपुण और होशियार मालूम पड़ते थे. लगभग आध घंटे दोनों तक लड़ाई होती रही मगर दोनों में से कोई एक-दूसरे पर फतह न पा सका.

दारोगा के साथियों में से कोई भी इस बहादुराना और अजीब लड़ाई का लुत्फ उठा न सका क्योंकि खंजरों की चमक ने उन सभों की बल्कि दारोगा तक की आँखें बन्द हो जाती थीं. हाँ जमना और सरस्वती जरूर उन लोगों की लड़ाई ताज्जुब के साथ देख रही थीं जो कि उन सभों से थोड़ी ही दूर पर झुर-मुट में छिपी हुई थीं.

जब खंजरों की लड़ाई का कुछ भी नतीजा न निकला तब दत्त और भीम दोनों एक-दूसरे का मुकाबला छोड़ कर खड़े हो गये और खंजरो की चमक में एक-दूसरे का मुँह देखने लगे. भीम ने धीरे-से दत्त से कहा, "मालूम होता है कि बादलों में अब बरसने की ताकत नहीं रहीं."
दत्त० : बेशक ऐसा ही है क्योंकि हवा-पानी और धुएँ का सच्चा जमावड़ा नहीं हो सका.

दत्त का जवाब सुनते ही भीम उसके पैरों पर गिर पड़ा और दत्त ने उसे उठा कर छाती से लगा लिया. इसके बाद वे दोनों आदमी वहाँ से कुछ दूर हट कर खड़े हो गये और आपुस में धीरे-धीरे कुछ बातें करने लगे. इस मामले को सभों ने आश्चर्य और खेद के साथ देखा तथा जमना और सरस्वती को उन दोनों का ऐसा करना बहुत ही बुरा मालूम हुआ. केवल इतना ही नहीं बल्कि उन दोनों को दत्त पर एक तरह का शक पैदा हो गया. सरस्वती ने जमना से कहा, "यद्यपि हम लोगों ने उन दोनों की बातें नहीं सुनी मगर उनके ढंग से मालूम होता है कि दत्त ने अपने को कमजोर पाकर गिरफ्तार हो जाने के डर से दुश्मन को दोस्त बना लिया."

जमना० : मेरा भी यही खयाल है. अगर यह बात सच है तो हम दोनों के लिए भी खैरियत नहीं है.
सरस्वती० : बेहतर तो यही होगा कि हम दोनों यहाँ से हट जाएँ और किसी दूसरी जगह छिप कर तमाशा देखें, जिसमें दत्त हमारे दुश्मनों को लेकर अगर यहाँ आवे तो यकायक हम दोनों को पा न सके.

जमना० : हाँ, ऐसा ही करो.
इतना कह वे दोनों वहाँ से हट गईं और बहुत धीरे-धीरे कदम उठाती हुई दूसरी तरफ चलीं.

जब दत्त और भीम की बातें समाप्त हो गईं तब वे दोनों पुनः उसी जगह पहुँचे जहाँ भीम के साथी लोग खड़े थे. भीम ने भूतनाथ और दारोगा का हाथ पकड़ कर कहा-"आओ-आओ. जरा जमना और सरस्वती से मुलाकात करो. वे दोनों भी तुम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए इसी जगह आई हुई हैं !"

दत्त, भीम, दारोगा और भूतनाथ उधर रवाना हुए जहाँ जमना और सरस्वती को दत्त छोड़ गया था, मगर ठिकाने पहुँच कर जब जमना और सरस्वती को नहीं पाया तब दत्त को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह खंजर की अद्‌भुत रोशनी में घूम-घूम कर जमना और सरस्वती को ढूँढने लगा. उसी समय बहुत-से आदमी हाथ में नंगी तलवारे, लिए हुए वहाँ आ पहुँचे जिन्होंने उस सारी जमीन को घेर लिया जहाँ दत्त, भीम, दारोगा, भूतनाथ और उनके साथी लोग थे तथा एक जगह मौका देख कर जमना और सरस्वती भी छिपी हुई थीं.

[१६]

भूतनाथ अपने दुश्मन को सामने से आते हुए देख कर एक दफे तो घबड़ा उठा मगर तुरन्त ही उसकी हिम्मत और दिलेरी ने उसकी पीठ ठोंकी और वह बड़ी दिलावरी के साथ मुस्कराता हुआ दुश्मन के पास आ जाने का इन्तजार करने लगा. थोड़ी ही देर में उसका दुश्मन उसके सामने आकर खड़ा हो गया और आश्चर्य से तथा जाँच की निगाह से भूतनाथ भैयाराजा और मेघराज की तरफ देखने लगा.

भूतनाथ को यह निश्चय हो गया कि मेरा दुश्मन जरूर प्रभाकरसिंह ही है क्योंकि वह भैयाराजा की साथी है, भैयाराजा ने उसकी मदद की थी. और इन दोनों में इस समय बहुत गहरी मित्रता हो रही है. वास्तव में बात भी यही थी. इस समय प्रभाकरसिंह भूतनाथ के सामने पहुँच कर ताज्जुब के साथ सोच रहे थे कि क्योंकि गदाधरसिंह ने मेघराज और भैयाराजा पर कब्जा कर लिया जो कि हर हालत में भूतनाथ को दबा सकते थे. भूतनाथ ने मुस्करा कर प्रभाकरसिंह से कहा-

भूत० : आप जरूर ताज्जुब करते होंगे कि इन दोनों को मैंने क्योंकर बेहोश कर दिया !
प्रभा०: बेशक यही बात है क्योंकि इन दोनों से तुम किसी तरह भी जीत नहीं सकते थे.
भूत० : अब भी मैं यही कहूँगा कि इनको जीतने की ताकत मुझमें नहीं है मगर अपनी चालाकी और ऐयारी का नमूना दिखा देने की इच्छा प्रबल होने ही से मैंने वह कार्रवाई की.

प्रभा० : इन दोनों को बेहोश कर देने के बाद तुम यहाँ से भाग क्यों नहीं गये ?
भूत० : भागने की तो मुझे कोई जरूरत नहीं थी. आप लोग चाहे मुझे जिस निगाह से देखे मैं आप लोगों से अब दुश्मनी का बर्ताव नहीं रखता मुझे विश्वास कि आप लोग मेरे साथ कदापि बुराई नहीं करेंगे, इसी से इन दोनों को बेहोश करने के बाद भी बेफिक्री के साथ यहाँ खड़ा आपके आने का इन्तजार कर रहा था.

प्रभा० : तुम हम लोगों को जानते-पहिचानते भी हो या योंही दोस्त मान बैठे.
भूत० : हाँ, इन मेघराज को तो मैं नहीं जान सका कि कौन हैं मगर आपको प्रभाकरसिंह और (हाथ का इशारा करके) इनको भैयाराजा समझ लेने में मै किसी तरह की भूल नहीं करता.

प्रभा० :तुम्हारी धूर्तता और चालाकी की मैं जरूर तारीफ कर सकता मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारी नीयत बहुत ही खराब है और तुम्हारा दिल साफ नहीं है.
भूत० : यही शक तो आप लोगों का नुकसान कर रहा है, नहीं तो अभी तक कितना काम हो चुका होता और भैयाराजा की स्त्री को भी दुश्मनों की कैद से छुटकारा मिल गया होता.

प्रभा० : खैर, मैं तब तक तुमसे विशेष बातें न करूँगा जब तक कि ये दोनों होश में न आ जायेंगे क्योंकि इन दोनों के सामने ही बातचीत करना मुनासिब होगा.
भूत० : आशा है कि बहुत जल्दी ये दोनों होश में आ जायेंगे.

प्रभा० : तुम लखलखा सुँघा कर इन दोनों की बेहोशी क्यों नहीं दूर करते.
भूत० : बेहतर होगा कि आप ही अपने हाथ से यह काम कीजिए.
प्रभा० : (मुस्कुरा कर) मालूम होता है कि मेघराज के बदन पर हाथ लगा कर तुम धोखा खा चुके हो इसी से ऐसा कहते हो, खैर कोई चिन्ता नहीं- मैं खुद इन दोनों की बेहोशी दूर करने की कोशिश करता हूँ.

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने अपने ऐयारी के सामान में से निहायत उम्दीय लखलखा निकाल कर भैयाराजा और मेघराज को सुँघाया जिससे बात-की-बात में दोनों की बेहोशी दूर हो गई और वे आश्चर्य के साथ अपने चारों तरफ निगाह दौड़ा कर देखने लगे.

।। छठवाँ भाग समाप्त ।।